कबीर ग्रंथावली
संपादक
डॉ.श्याम सुंदर दास

(1) साखी- अनुक्रम

मुख्य सूची प्रस्तावना (2)पद (3) रमैणी परिशिष्ट

(1) गुरुदेव कौ अंग
(2) सुमिरण कौ अंग
(3) बिरह कौ अंग
(4) ग्यान बिरह कौ अंग
(5) परचा कौ अंग
(6) रस कौ अंग
(7) लांबि कौ अंग
(8) जर्णा कौ अंग
(9) हैरान कौ अंग
(10) लै कौ अंग
(11) निहकर्मी पतिब्रता कौ अंग
(12) चितावणी कौ अंग
(13) मन कौ अंग
(14) सूषिम मारग कौ अंग
(15) सूषिम जनम कौ अंग
(16) माया कौ अंग
(17) चाँणक कौ अंग
(18) करणीं बिना कथणीं कौ अंग
(19) कथणीं बिना करणी कौ अंग
(20) कामी नर कौ अंग
(21) सहज कौ अंग
(22) साँच कौ अंग
(23) भ्रम विधौंसण कौ अंग
(24) भेष कौ अंग
(25) कुसंगति कौ अंग
(26) सगति कौ अंग
(27) असाध कौ अंग
(28) साध कौ अंग
(29) साध साषीभूत कौ अंग
(30) साध महिमाँ कौ अंग
(31) मधि कौ अंग
(32) सारग्राही कौ अंग
(33) विचार कौ अंग
(34) उपदेश कौ अंग
(35) बेसास कौ अंग

(36) पीव पिछाँणन कौ अंग
(37) बिर्कताई कौ अंग
(38) सम्रथाई कौ अंग
(39) कुसबद कौ अंग
(40) सबद कौ अंग
(41) जीवन मृतक कौ अंग
(42) चित कपटी कौ अंग
(43) गुरुसिष हेरा कौ अंग
(44) हेत प्रीति सनेह कौ अंग
(45) सूरा तन कौ अंग
(46) काल कौ अंग
(47) सजीवनी कौ अंग
(48) अपारिष कौ अंग
(49) पारिष कौ अंग
(50) उपजणि कौ अंग
(51) दया निरबैरता कौ अंग
(52) सुंदरि कौ अंग
(53) कस्तूरियाँ मृग कौ अंग
(54) निंद्या कौ अंग
(55) निगुणाँ कौ अंग
(56) बीनती कौ अंग
(57) साषीभूत कौ अंग
(58) बेलि कौ अंग
(59) अबिहड़ कौ अंग

1.साखी

[टिप्पणियों के संबंध में स्पष्टीकरण : ‘क’ - संवत् 1561 में लिखी हस्तलिखित प्रति, ‘ख’ - संवत् 1881 में लिखी गयी प्रति, देखें- मुख्य सूची/ भूमिका]

(1) गुरुदेव कौ अंग

सतगुर सवाँन को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति॥1॥

बलिहारी गुर आपणैं द्यौं हाड़ी कै बार।
जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार॥2॥
टिप्पणी: क-ख-देवता के आगे ‘कया’ पाठ है जो अनावश्यक है।

सतगुर की महिमा, अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार॥3॥

राम नाम के पटतरे, देबे कौ कुछ नाहिं।
क्या ले गुर सन्तोषिए, हौंस रही मन माहिं॥4॥

सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।
सतगुर हम स्यूँ लड़ि पड़ा महकम मेरा बाछ॥5॥
टिप्पणी: ख-सदकै करौं। ख-साच। तुक मिलाने के लिऐ 'साछ' 'साक्ष' लिखा है।

सतगुर लई कमाँण करि, बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्यां प्रीति सूँ, भीतरि रह्या सरीर॥6॥

सतगुर साँवा सूरिवाँ, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पढ़ा कलेजै छेक॥7॥

सतगुर मार्‌या बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़ै लागिया, गई दवा सूँ फूंटि॥8॥

हँसै न बोलै उनमनी, चंचल मेल्ह्या मारि।
कहै कबीर भीतरि भिद्‌या, सतगुर कै हथियार॥9॥

गूँगा हूवा बावला, बहरा हुआ कान।
पाऊँ थैं पंगुल भया, सतगुर मार्‌या बाण॥10॥

पीछे लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगै थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि॥11॥

दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहूणाँ, बहुरि न आँवौं हट्ट॥12॥
टिप्पणी: क-ख-अघट, हट।

ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
जब गोबिंद कृपा करी, तब गुर मिलिया आइ॥13॥
टिप्पणी: क-गोब्यंद।

कबीर गुर गरवा मिल्या, रलि गया आटैं लूँण।
जाति पाँति कुल सब मिटै, नांव धरोगे कौण॥14॥

जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़ंत॥15॥
टिप्पणी: क-चेला हैजा चंद (? है गा अंध)।

नाँ गुर मिल्या न सिष भया, लालच खेल्या डाव।
दुन्यूँ बूड़े धार मैं, चढ़ि पाथर की नाव॥16॥

चौसठ दीवा जोइ करि, चौदह चन्दा माँहि।
तिहिं धरि किसकौ चानिणौं, जिहि घरि गोबिंद नाहिं॥17॥
टिप्पणी: ख-चाँरिणौं। ख-तिहि...जिहि।

निस अधियारी कारणैं, चौरासी लख चंद।
अति आतुर ऊदै किया, तऊ दिष्टि नहिं मंद॥18॥

भली भई जू गुर मिल्या, नहीं तर होती हाँणि।
दीपक दिष्टि पतंग ज्यूँ, पड़ता पूरी जाँणि॥19॥

माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत॥20॥

सतगुर बपुरा क्या करै, जे सिषही माँहै चूक।
भावै त्यूँ प्रमोधि ले, ज्यूँ वंसि बजाई फूक॥21॥
टिप्पणी: ख-प्रमोदिए। जाँणे बास जनाई कूद।

संसै खाया सकल जुग, संसा किनहूँ न खद्ध।
जे बेधे गुर अष्षिरां, तिनि संसा चुणि चुणि खद्ध॥22॥
टिप्पणी: ख-सैल जुग।

चेतनि चौकी बैसि करि, सतगुर दीन्हाँ धीर।
निरभै होइ निसंक भजि, केवल कहै कबीर॥23॥

सतगुर मिल्या त का भयां, जे मनि पाड़ी भोल।
पासि बिनंठा कप्पड़ा, क्या करै बिचारी चोल॥24॥

बूड़े थे परि ऊबरे, गुर की लहरि चमंकि।
भेरा देख्या जरजरा, (तब) ऊतरि पड़े फरंकि॥25॥
टिप्पणी: ख-जाजरा। इस दोहे के आगे ख प्रति में यह दोहा है-
कबीर सब जग यों भ्रम्या फिरै ज्यूँ रामे का रोज।
सतगुर थैं सोधी भई, तब पाया हरि का षोज॥27॥

गुरु गोविन्द तौ एक है, दूजा यह आकार।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार॥26॥

कबीर सतगुर नाँ मिल्या, रही अधूरी सीप।
स्वांग जती का पहरि करि, घरि घरि माँगै भीष॥27॥
टिप्पणी: इसके आगे ख प्रति में यह दोहा है-
कबीर सतगुर ना मिल्या, सुणी अधूरी सीष।
मुँड मुँडावै मुकति कूँ, चालि न सकई वीष॥29॥

सतगुर साँचा सूरिवाँ, तातै लोहिं लुहार।
कसणो दे कंचन किया, ताई लिया ततसार॥28॥

टिप्पणी: ख-सतगुर मेरा सूरिवाँ।

थापणि पाई थिति भई, सतगुर दीन्हीं धीर।
कबीर हीरा बणजिया, मानसरोवर तीर॥29॥
टिप्पणी: इसके आगे ख प्रति में यह दोहा है-
कबीर हीरा बणजिया, हिरदे उकठी खाणि।
पारब्रहम क्रिपा करी सतगुर भये सुजाँण॥

निहचल निधि मिलाइ तत, सतगुर साहस धीर।
निपजी मैं साझी घणाँ, बांटै नहीं कबीर॥30॥

चौपड़ि माँडी चौहटै, अरध उरध बाजार।
कहै कबीरा राम जन, खेलौ संत विचार॥31॥

पासा पकड़ा प्रेम का, सारी किया सरीर।
सतगुर दावा बताइया, खेलै दास कबीर॥32॥

सतगुर हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
बरस्या बादल प्रेम का भीजि गया अब अंग॥33॥

कबीर बादल प्रेम का, हम परि बरष्या आइ।
अंतरि भीगी आत्माँ हरी भई बनराइ॥34॥
टिप्पणी: ख-में नहीं हैं।

पूरे सूँ परचा भया, सब दुख मेल्या दूरि।
निर्मल कीन्हीं आत्माँ ताथैं सदा हजूरि॥35॥
टिप्पणी: ख-में नहीं है।

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

(2) सुमिरण कौ अंग

कबीर कहता जात हूँ, सुणता है सब कोइ।
राम कहें भला होइगा, नहिं तर भला न होइ॥1॥

कबीर कहै मैं कथि गया, कथि गया ब्रहम महेस।
राम नाँव सतसार है, सब काहू उपदेस॥2॥

तत तिलक तिहूँ लोक मैं, राम नाँव निज सार।
जब कबीर मस्तक दिया सोभा अधिक अपार॥3॥

भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा बचा क्रमनाँ, कबीर सुमिरण सार॥4॥

कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल।
आदि अंति सब सोधिया दूजा देखौं काल॥5॥

चिंता तौ हरि नाँव की, और न चिंता दास।
जे कछु चितवैं राम बिन, सोइ काल कौ पास॥6॥

पंच सँगी पिव पिव करै, छटा जू सुमिरे मन।
मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहिं आहि॥7॥

मेरा मन सुमिरै राम कूँ, मेरा मन रामहिं आहि।
अब मन रामहिं ह्वै रह्या, सीस नवावौं काहि॥8॥

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ मैं रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ॥9॥

कबीर निरभै राम जपि, जब लग दीवै बाति।
तेल घट्या बाती बुझी, (तब) सोवैगा दिन राति॥10॥

कबीर सूता क्या करै, जागि न जपै मुरारि।
एक दिनाँ भी सोवणाँ, लंबे पाँव पसारि॥11॥

कबीर सूता क्या करै, काहे न देखै जागि।
जाका संग तैं बीछुड़ा, ताही के संग लागि॥12॥

कबीर सूता क्या करै उठि न रोवै दुक्ख।
जाका बासा गोर मैं, सो क्यूँ सोवै सुक्ख॥13॥

कबीर सूता क्या करै, गुण गोबिंद के गाइ।
तेरे सिर परि जम खड़ा, खरच कदे का खाइ॥14॥

कबीर सूता क्या करै, सुताँ होइ अकाज।
ब्रह्मा का आसण खिस्या, सुणत काल को गाज॥15॥

केसो कहि कहि कूकिये, नाँ सोइयै असरार।
राति दिवस के कूकणौ, (मत) कबहूँ लगै पुकार॥16॥ {ख-में नहीं है।}

जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहीं राम।
ते नर इस संसार में, उपजि षये बेकाम॥17॥ (क-आइ संसार में।)

कबीर प्रेम न चाषिया, चषि न लीया साव।
सूने घर का पाहुणाँ, ज्यूँ आया त्यूँ जाव॥18॥

पहली बुरा कमाइ करि, बाँधी विष की पोट।
कोटि करम फिल पलक मैं, (जब) आया हरि की वोट॥19॥

कोटि क्रम पेलै पलक मैं, जे रंचक आवै नाउँ।
अनेक जुग जे पुन्नि करै, नहीं राम बिन ठाउँ॥20॥

जिहि हरि जैसा जाणियाँ, तिन कूँ तैसा लाभ।
ओसों प्यास न भाजई, जब लग धसै न आभ॥21॥

राम पियारा छाड़ि करि, करै आन का जाप।
बेस्वाँ केरा पूत ज्यूँ, कहे कौन सूँ बाप॥22॥

कबीर आपण राम कहि, औरां राम कहाइ।
जिहि मुखि राम न ऊचरे, तिहि मुख फेरि कहाइ॥23॥
टिप्पणी: ख- जा युष, ता युष

जैसे माया मन रमै, यूँ जे राम रमाइ।
(तौ) तारा मण्डल छाँड़ि करि, जहाँ के सो तहाँ जाइ॥24॥

लूटि सकै तो लूटियो, राम नाम है लूटि।
पीछै ही पछिताहुगे, यहु तन जैहै छूटि॥25॥

लूटि सकै तो लूटियो, राम नाम भण्डार।
काल कंठ तै गहैगा, रूंधे दसूँ दुवार॥26॥

लम्बा मारग दूरि घर, विकट पंथ बहु मार।
कहौ संतो क्यूँ पाइये, दुर्लभ हरिदीदार॥27॥

गुण गाये गुण ना कटै, रटै न राम बियोग।
अह निसि हरि ध्यावै नहीं, क्यूँ पावै दुरलभ जोग॥28॥

कबीर कठिनाई खरी, सुमिरतां हरि नाम।
सूली ऊपरि नट विद्या, गिरूँ तं नाहीं ठाम॥29॥

कबीर राम ध्याइ लै, जिभ्या सौं करि मंत।
हरि साग जिनि बीसरै, छीलर देखि अनंत॥30॥

कबीर राम रिझाइ लै, मुखि अमृत गुण गाइ।
फूटा नग ज्यूँ जोड़ि मन, संधे संधि मिलाइ॥31॥

कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिस लागी लाइ।
हरि सुमिरण हाथूं घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ॥32॥67॥

(3) बिरह कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

रात्यूँ रूँनी बिरहनीं, ज्यूँ बंचौ कूँ कुंज।
कबीर अंतर प्रजल्या, प्रगट्या बिरहा पुंज॥1॥

अबंर कुँजाँ कुरलियाँ, गरिज भरे सब ताल।
जिनि थै गोविंद बीछुटे, तिनके कौण हवाल॥2॥

चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूँ, ते दिन मिले न राति॥3॥

बासुरि सुख नाँ रैणि सुख, ना सुख सुपिनै माँहि।
कबीर बिछुट्या राम सूँ ना सुख धूप न छाँह॥4॥

बिरहनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझै धाइ।
एक सबद कहि पीव का, कब रे मिलैगे आइ॥5॥

बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नाहीं विश्राम॥6॥

बिरहिन ऊठै भी पड़े, दरसन कारनि राम।
मूवाँ पीछे देहुगे, सो दरसन किहिं काम॥7॥

मूवाँ पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौंणे काम॥8॥

अंदेसड़ा न भाजिसी, संदेसो कहियाँ।
कै हरि आयां भाजिसी, कै हरि ही पासि गयां॥9॥

आइ न सकौ तुझ पै, सकूँ न तूझ बुझाइ।
जियरा यौंही लेहुगे, बिरह तपाइ तपाइ॥10॥

यहु तन जालौं मसि करूँ, ज्यूँ धूवाँ जाइ सरग्गि।
मति वै राम दया, करै, बरसि बुझावै अग्गि॥11॥

यहु तन जालै मसि करौं, लिखौं राम का नाउँ।
लेखणिं करूँ करंक की, लिखि लिखि राम पठाउँ॥12॥

कबीर पीर पिरावनीं, पंजर पीड़ न जाइ।
एक ज पीड़ परीति की, रही कलेजा छाइ॥13॥

चोट सताड़ी बिरह की, सब तन जर जर होइ।
मारणहारा जाँणिहै, कै जिहिं लागी सोइ॥14॥

कर कमाण सर साँधि करि, खैचि जू मार्‌या माँहि।

भीतरि भिद्या सुमार हनै जीवै कि जीवै नाँहि॥15॥

जबहूँ मार्या खैंचि करि, तब मैं पाई जाँणि।
लांगी चोट मरम्म की, गई कलेजा जाँणि॥16॥

जिहि सर मारी काल्हि सो सर मेरे मन बस्या।
तिहि सरि अजहूँ मारि, सर बिन सच पाऊँ नहीं॥17॥

बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्रा न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै त बीरा होइ॥18॥

बिरह भुवंगम पैसि करि, किया कलेजै घाव।
साधू अंग न मोड़ही, ज्यूँ भावै त्यूँ खाव॥19॥

सब रग तंत रबाब तन, बिरह बजावै नित्त।
और न कोई सुणि सकै, कै साई के चित्त॥20॥

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिह घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान॥21॥

अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि पुकारि॥22॥

इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूँ जीव।
लोही सींचौ तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव॥23॥

नैंना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरू मिलहुगे राम॥24॥

अंषड़िया प्रेम कसाइयाँ, लोग जाँणे दुखड़ियाँ।
साँई अपणैं कारणै, रोइ रोइ रतड़िया॥25॥

सोई आँसू सजणाँ, सोई लोक बिड़ाँहि।
जे लोइण लोंहीं चुवै, तौ जाँणों हेत हियाँहि॥26॥

कबीर हसणाँ दूरि करि, करि रोवण सौं चित्त।
बिन रोयाँ क्यूँ पाइये, प्रेम पियारा मित्त॥27॥

जौ रोऊँ तो बल घटे, हँसौं तो राम रिसाइ।
मनही माँहि बिसूरणाँ, ज्यूँ घुंण काठहि खाइ॥28॥

हंसि हंसि कंत न पाइए, जिनि पाया तिनि रोइ।
जो हाँसेही हरि मिलै, तो नहीं दुहागनि कोइ॥29॥

हाँसी खेलौ हरि मिलै, तौ कौण सहे षरसान।
काम क्रोध त्रिष्णाँ तजै, ताहि मिलैं भगवान॥30॥

पूत पियारो पिता कौं, गौंहनि लागा धाइ।
लोभ मिठाई हाथ दे, आपण गया भुलाइ॥31॥

डारि खाँड़ पटकि करि, अंतरि रोस उपाइ।
रोवत रोवत मिलि गया, पिता पियारे जाइ॥32॥

टिप्पणी: ख-में इसके अनंतर यह दोहा है-
मो चित तिलाँ न बीसरौ, तुम्ह हरि दूरि थंयाह।

इहि अंगि औलू भाइ जिसी, जदि तदि तुम्ह म्यलियांह॥

नैना अंतरि आचरूँ, निस दिन निरषौं तोहि।
कब हरि दरसन देहुगे सो दिन आवै मोंहि॥33॥

कबीर देखत दिन गया, निस भी देखत जाइ।
बिरहणि पीव पावे नहीं, जियरा तलपै भाइ॥34॥

कै बिरहनि कूं मींच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणां, मोपै सह्या न जाइ॥35॥

बिरहणि थी तो क्यूँ रही, जली न पीव के नालि।
रहु रहु मुगध गहेलड़ी, प्रेम न लाजूँ मारि॥36॥

हौं बिरहा की लाकड़ी, समझि समझि धूंधाउँ।
छूटि पड़ौं यों बिरह तें, जे सारीही जलि जाउँ॥37॥

कबीर तन मन यों जल्या, बिरह अगनि सूँ लागि।
मृतक पीड़ न जाँणई, जाँणैगि यहूँ आगि॥38॥

बिरह जलाई मैं जलौं, जलती जल हरि जाउँ।
मो देख्याँ जल हरि जलै, संतौं कहीं बुझाउँ॥39॥

परबति परबति में फिर्‌या, नैन गँवाये रोइ।
सो बूटी पाऊँ नहीं, जातें जीवनि होइ॥40॥

फाड़ि फुटोला धज करौं, कामलड़ी पहिराउँ।
जिहि जिहिं भेषा हरि मिलैं, सोइ सोइ भेष कराउँ॥41॥

नैन हमारे जलि गये, छिन छिन लोड़ै तुझ।
नां तूं मिलै न मैं खुसी, ऐसी बेदन मुझ॥42॥

भेला पाया श्रम सों, भौसागर के माँह।
जो छाँड़ौ तौ डूबिहौ, गहौं त डसिये बाँह॥43॥

नोट: ख-में इसके आगे यह दोहा है-
बिरह जलाई मैं जलौं, मो बिरहिन कै दूष।
छाँह न बैसों डरपती, मति जलि ऊठे रूष॥46॥

रैणा दूर बिछोहिया, रह रे संषम झूरि।
देवलि देवलि धाहड़ी, देखी ऊगै सूरि॥44॥

सुखिया सब संसार है, खाये अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै॥45॥112॥

(4) ग्यान बिरह कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

दीपक पावक आंणिया, तेल भी आंण्या संग।
तीन्यूं मिलि करि जोइया, (तब) उड़ि उड़ि पड़ैं पतंग॥1॥

मार्‌या है जे मरेगा, बिन सर थोथी भालि।
पड्‌या पुकारे ब्रिछ तरि, आजि मरै कै काल्हि॥2॥

हिरदा भीतरि दौ बलै, धूंवां प्रगट न होइ।
जाके लागी सो लखे, के जिहि लाई सोइ॥3॥

झल उठा झोली जली, खपरा फूटिम फूटि।
जोगी था सो रमि गया, आसणि रही बिभूत॥4॥

अगनि जू लागि नीर में, कंदू जलिया झारि।
उतर दषिण के पंडिता, रहे विचारि बिचारि॥5॥

दौं लागी साइर जल्या, पंषी बैठे आइ।
दाधी देह न पालवै सतगुर गया लगाइ॥6॥

गुर दाधा चेल्या जल्या, बिरहा लागी आगि।
तिणका बपुड़ा ऊबर्‌या, गलि पूरे के लागि॥7॥

आहेड़ी दौ लाइया, मृग पुकारै रोइ।
जा बन में क्रीला करी, दाझत है बन सोइ॥8॥

पाणी मांहे प्रजली, भई अप्रबल आगि।
बहती सलिता रहि गई, मेछ रहे जल त्यागि॥9॥

समंदर लागी आगि, नदियां जलि कोइला भई।
देखि कबीरा जागि, मंछी रूषां चढ़ि गई॥10॥122॥
टिप्पणी: ख-में इसके आगे यह दोहा है-
बिरहा कहै कबीर कौं तू जनि छाँड़े मोहि।
पारब्रह्म के तेज मैं, तहाँ ले राखौं तोहि॥

(5) परचा कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर तेज अनंत का, मानी ऊगी सूरज सेणि।
पति संगि जागी सूंदरी, कौतिग दीठा तेणि॥1॥

कोतिग दीठा देह बिन, मसि बिना उजास।
साहिब सेवा मांहि है, बेपरवांही दास॥2॥

पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबे कूं सोभा नहीं, देख्याही परवान॥3॥

अगम अगोचर गमि नहीं, तहां जगमगै जोति।
जहाँ कबीरा बंदिगी, 'तहां' पाप पुन्य नहीं छोति॥4॥

हदे छाड़ि बेहदि गया, हुवा निरंतर बास।
कवल ज फूल्या फूल बिन, को निरषै निज दास॥5॥

कबीर मन मधुकर भया, रह्या निरंतर बास।
कवल ज फूल्या जलह बिन, को देखै निज दास॥6॥
टिप्पणी : ख-कवल जो फूला फूल बिन

अंतर कवल प्रकासिया, ब्रह्म बास तहां होइ।
मन भवरा तहां लुबधिया, जांणैगा जन कोइ॥7॥

सायर नाहीं सीप बिन, स्वाति बूँद भी नाहिं।
कबीर मोती नीपजै, सुन्नि सिषर गढ़ माँहिं॥8॥

घट माँहे औघट लह्या, औघट माँहैं घाट।
कहि कबीर परचा भया, गुरु दिखाई बाट॥9॥
टिप्पणी: क-औघट पाइया।

सूर समांणो चंद में, दहूँ किया घर एक।
मनका च्यंता तब भया, कछू पूरबला लेख॥10॥

हद छाड़ि बेहद गया, किया सुन्नि असनान।

मुनि जन महल न पावई, तहाँ किया विश्राम॥11॥

देखौ कर्म कबीर का, कछु पूरब जनम का लेख।
जाका महल न मुनि लहैं, सो दोसत किया अलेख॥12॥

पिंजर प्रेमे प्रकासिया, जाग्या जोग अनंत।
संसा खूटा सुख भया, मिल्या पियारा कंत॥13॥

प्यंजर प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास।
मुख कसतूरी महमहीं, बांणीं फूटी बास॥14॥

मन लागा उन मन्न सों, गगन पहुँचा जाइ।
देख्या चंदबिहूँणाँ, चाँदिणाँ, तहाँ अलख निरंजन राइ॥15॥

मन लागा उन मन सों, उन मन मनहि बिलग।
लूँण बिलगा पाणियाँ, पाँणीं लूँणा बिलग॥16॥

पाँणी ही तें हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ॥17॥

भली भई जु भै पड्या, गई दशा सब भूलि।
पाला गलि पाँणी भया, ढुलि मिलिया उस कूलि॥18॥

चौहटै च्यंतामणि चढ़ी, हाडी मारत हाथि।
मीरा मुझसूँ मिहर करि, इब मिलौं न काहू साथि॥19॥

पंषि उडाणी गगन कूँ, प्यंड रह्या परदेस।
पाँणी पीया चंच बिन, भूलि गया यहु देस॥20॥

पंषि उड़ानी गगन कूँ, उड़ी चढ़ी असमान।
जिहिं सर मण्डल भेदिया, सो सर लागा कान॥21॥

सुरति समाँणो निरति मैं, निरति रही निरधार।
सुरति निरति परचा भया, तब खूले स्यंभ दुवार॥22॥

सुरति समाँणो निरति मैं, अजपा माँहै जाप।
लेख समाँणाँ अलेख मैं, यूँ आपा माँहै आप॥23॥

आया था संसार में, देषण कौं बहु रूप।
कहै कबीरा संत ही, पड़ि गया नजरि अनूप॥24॥

अंक भरे भरि भेटिया, मन मैं नाँहीं धीर।
कहै कबीर ते क्यूँ मिलैं, जब लग दोइ सरीर॥25॥

सचु पाया सुख ऊपनाँ, अरु दिल दरिया पूरि।
सकल पाप सहजै गये, जब साँई मिल्या हजूरि॥26॥
टिप्पणी: ख-सकल अघ।

धरती गगन पवन नहीं होता, नहीं तोया, नहीं तारा।
तब हरि हरि के जन होते, कहै कबीर बिचारा॥27॥

जा दिन कृतमनां हुता, होता हट न पट।
हुता कबीरा राम जन, जिनि देखै औघट घट॥28॥

थिति पाई मन थिर भया, सतगुर करी सहाइ।
अनिन कथा तनि आचरी, हिरदै त्रिभुवन राइ॥29॥

हरि संगति सीतल भया, मिटा मोह की ताप।
निस बासुरि सुख निध्य लह्या, जब अंतरि प्रकट्या आप॥30॥

तन भीतरि मन मानियाँ, बाहरि कहा न जाइ।
ज्वाला तै फिरि जल भया, बुझी बलंती लाइ॥31॥

तत पाया तन बीसर्‌या, जब मुनि धरिया ध्यान।
तपनि गई सीतल भया, जब सुनि किया असनान॥32॥

जिनि पाया तिनि सू गह्या गया, रसनाँ लागी स्वादि।
रतन निराला पाईया, जगत ढंढाल्या बादि॥33॥

कबीर दिल स्याबति भया, पाया फल सम्रथ्थ।
सायर माँहि ढंढोलताँ, हीरै पड़ि गया हथ्थ॥34॥

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि॥35॥

जा कारणि मैं ढूंढता, सनमुख मिलिया आइ।
धन मैली पिव ऊजला, लागि न सकौं पाइ॥36॥

जा कारणि मैं जाइ था, सोई पाई ठौर।
सोई फिर आपण भया, जासूँ कहता और॥37॥

कबीर देख्या एक अंग, महिमा कही न जाइ।
तेज पुंज पारस धणों, नैनूँ रहा समाइ॥38॥

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताहल मुकता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं॥39॥

गगन गरिजि अमृत चवै, कदली कंवल प्रकास।

तहाँ कबीरा बंदिगी, कै कोई निज दास॥40॥

नींव बिहुणां देहुरा, देह बिहूँणाँ देव।
कबीर तहाँ बिलंबिया करे अलप की सेव॥41॥

देवल माँहै देहुरी, तिल जेहैं बिसतार।
माँहैं पाती माँहिं जल, माँहे पुजणहार॥42॥

कबीर कवल प्रकासिया, ऊग्या निर्मल सूर।
निस अँधियारी मिटि गई, बाजै अनहद तूर॥43॥

अनहद बाजै नीझर झरै, उपजै ब्रह्म गियान।
अविगति अंतरि प्रगटै, लागै प्रेम धियान॥44॥

आकासै मुखि औंधा कुवाँ, पाताले पनिहारि।
ताका पाँणीं को हंसा पीवै, बिरला आदि बिचारि॥45॥

सिव सकती दिसि कौंण जु जोवै, पछिम दिस उठै धूरि।
जल मैं स्यंघ जु घर करै, मछली चढ़ै खजूरि॥46॥

अमृत बरसै हीरा निपजै, घंटा पड़ै टकसाल।
कबीर जुलाहा भया पारषू, अगभै उतर्‌या पार॥47॥

ममिता मेरा क्या करै, प्रेम उघाड़ी पौलि।
दरसन भया दयाल का, सूल भई सुख सौड़ि॥48॥170॥

(6) रस कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर हरि रस यौं पिया बाकी रही न थाकि।
पाका कलस कुँभार का, बहुरि न चढ़हिं चाकि॥1॥

राम रसाइन प्रेम रस पीवत, अधिक रसाल।
कबीर पीवण दुलभ है, माँगै सीस कलाल॥2॥

कबीर भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आइ।
सिर सौंपे सोई पिवै, नहीं तो पिया न जाइ॥3॥

हरि रस पीया जाँणिये, जे कबहूँ न जाइ खुमार।
मैंमंता घूँमत रहै, नाँही तन की सार॥4॥

मैंमंता तिण नां चरै, सालै चिता सनेह।
बारि जु बाँध्या प्रेम कै, डारि रह्या सिरि षेह॥5॥

मैंमंता अविगत रहा, अकलप आसा जीति।
राम अमलि माता रहै, जीवन मुकति अतीकि॥6॥

जिहि सर घड़ा न डूबता, अब मैं गल मलि न्हाइ।
देवल बूड़ा कलस सूँ, पंषि तिसाई जाइ॥7॥

सबै रसाइण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
तिल इक घट मैं संचरे, तौ सब तन कंचन होइ॥8॥168॥
टिप्पणी: ख-रिचक घट में संचरे।

(7) लांबि कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कया कमंडल भरि लिया, उज्जल निर्मल नीर।
तन मन जोबन भरि पिया, प्यास न मिटी सरीर॥1॥

मन उलट्या दरिया मिल्या, लागा मलि मलि न्हांन।
थाहत थाह न आवई, तूँ पूरा रहिमान॥2॥

हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूँद समानी समंद मैं, सो कत हेरी जाइ॥3॥

हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
समंद समाना बूँद मैं, सो कत हेरह्या जाइ॥4॥172॥

(8) जर्णा कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

भारी कहौं त बहु डरौ, हलका कहूँ तो झूठ।
मैं का जाँणौं राम कूं, नैनूं कबहुं न दीठ॥1॥
टिप्पणी: क-हलवा कहूँ।

दीठा है तो कस कहूँ, कह्या न को पतियाइ।
हरि जैसा है तैसा रहौ, तूं हरिषि हरिषि गुण गाइ॥2॥

ऐसा अद्भूत जिनि कथै, अद्भुत राखि लुकाइ
बेद कुरानों गमि नहीं, कह्याँ न को पतियाइ॥3॥

करता की गति अगम है, तूँ चलि अपणैं उनमान।
धीरैं धीरैं पाव दे, पहुँचैगे परवान॥4॥

पहुँचैगे तब कहैंगे, अमड़ैगे उस ठाँइ।
अजहूँ बेरा समंद मैं, बोलि बिगूचै काँइ॥5॥

(9) हैरान कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

पंडित सेती कहि रहे, कह्या न मानै कोइ।
ओ अगाध एका कहै, भारी अचिरज होइ॥1॥

बसे अपंडी पंड मैं, ता गति लषै न कोइ।
कहै कबीरा संत हौ, बड़ा अचम्भा मोहि॥2॥179॥

(10) लै कौ अंग

जिहि बन सोह न संचरै, पंषि उड़ै नहिं जाइ।
रैनि दिवस का गमि नहीं, तहां कबीर रह्या ल्यो आइ॥1॥

सुरति ढीकुली ले जल्यो, मन नित ढोलन हार।
कँवल कुवाँ मैं प्रेम रस, पीवै बारंबार॥2॥
टिप्पणी: ख-खमन चित।

गंग जमुन उर अंतरै, सहज सुंनि ल्यौ घाट।
तहाँ कबीरै मठ रच्या, मुनि जन जोवैं बाट॥3॥182॥

(11) निहकर्मी पतिब्रता कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर प्रीतडी तौ तुझ सौं, बहु गुणियाले कंत।
जे हँसि बोलौं और सौं, तौं नील रँगाउँ दंत॥1॥

नैना अंतरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
नाँ हौं देखौं और कूं, नाँ तुझ देखन देउँ॥2॥

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागै है मेरा॥3॥

कबीर रेख स्यंदूर की, काजल दिया न जाइ।

नैनूं रमइया रमि रह्या, दूजा कहाँ समाइ॥4॥

कबीर सीप समंद की, रटै पियास पियास।
संमदहि तिणका बरि गिणै स्वाँति बूँद की आस॥5॥

कबीर सुख कौ जाइ था, आगै आया दुख।
जाहि सुख घरि आपणै हम जाणैं अरु दुख॥6॥

दो जग तो हम अंगिया, यहु डर नाहीं मुझ।
भिस्त न मेरे चाहिये, बाझ पियारे तुझ॥7॥
टिप्पणी: ख-भिसति।

जे वो एकै न जाँणियाँ तो जाँण्याँ सब जाँण।
जो वो एक न जाँणियाँ, तो सबहीं जाँण अजाँण॥8॥

कबीर एक न जाँणियाँ, तो बहु जाँण्याँ क्या होइ।
एक तैं सब होत है, सब तैं एक न होइ॥9॥

जब लगि भगति सकांमता, तब लग निर्फल सेव।
कहै कबीर वै क्यूं मिलैं, निहकामी निज देव॥10॥

आसा एक जू राम की, दूजी आस निरास।
पाँणी माँहै घर करैं, ते भी मरै पियास॥11॥
टिप्पणी: इसके आगे ख में ये दोहे हैं-

आसा एक ज राम की, दूजी आस निवारी।
आसा फिरि फिर मारसी, ज्यूँ चौपड़ि का सारि॥11॥

आसा एक ज राम की जुग जुग पुरवे आस।
जै पाडल क्यों रे करै, बसैहिं जु चंदन पास॥12॥

जे मन लागै एक सूँ, तो निरबाल्या जाइ।
तूरा दुइ मुखि बाजणाँ न्याइ तमाचे खाइ॥12॥

कबीर कलिजुग आइ करि, कीये बहुतज मीत।
जिन दिल बँधी एक सूँ, ते सुखु सोवै नचींत॥13॥

कबीर कुता राम का, मुतिया मेरा नाउँ।
गलै राम की जेवडी, जित खैचे तित जाउँ॥14॥

तो तो करै त बाहुड़ों, दुरि दुरि करै तो जाउँ।
ज्यूँ हरि राखैं त्यूँ रहौं, जो देवै सो खाउँ॥15॥

मन प्रतीति न प्रेम रस, नां इस तन मैं ढंग।

क्या जाणौं उस पीव सूं, कैसे रहसी रंग॥16॥

उस संम्रथ का दास हौं, कदे न होइ अकाज।
पतिब्रता नाँगी रहै, तो उसही पुरिस कौ लाज॥17॥

धरि परमेसुर पाँहुणाँ, सुणौं सनेही दास।
षट रस भोजन भगति करि, ज्यूँ कदे न छाड़ैपास॥18॥200॥

(12) चितावणी कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर नौबति आपणी, दिन दस लेहु बजाइ।
ए पुर पटन ए गली, बहुरि न देखै आइ॥1॥

जिनके नौबति बाजती, मैंगल बँधते बारि।
एकै हरि के नाँव बिन, गए जन्म सब हारि॥2॥

ढोल दमामा दड़बड़ी, सहनाई संगि भेरि।
औसर चल्या बजाइ करि, है कोइ राखै फेरि॥3॥

सातो सबद जु बाजते, घरि घरि होते राग।
ते मंदिर खाली पड़े, बैसण लागे काग॥4॥

कबीर थोड़ा जीवणा माड़े बहुत मँडाण।
सबही ऊभा मेल्हि गया, रावं रंक सुलितान॥5॥

इक दिन ऐसा होइगा, सब सूँ पड़ै बिछोइ।
राजा राणा छत्रापति, सावधान किन होइ॥6॥
टिप्पणी: ख-में इसके आगे यह दोहा है-
ऊजड़ खेड़ै ठीकरी, घड़ि घड़ि गए कुँभार।
रावण सरीखे चलि गए, लंका के सिकदार॥7॥

कबीर पटल कारिवाँ, पंच चोर दस द्वार।
जन राँणौं गढ़ भेलिसी, सुमिरि लै करतार॥7॥
टिप्पणी: ख-जम...भेलसी, बोल गले गोपाल।

कबीर कहा गरबियौ, इस जीवन की आस।
टेसू फूले दिवस चारि, खंखर भये पलास॥8॥

कबीर कहा गरबियो, देही देखि सुरंग।
बिछड़ियाँ मिलिनौ नहीं, ज्यूँ काँचली भुवंग॥9॥

कबीर कहा गरिबियो, ऊँचे देखि अवास।
काल्हि पर्‌यूँ भ्वै लेटणाँ, ऊपरि जामैं घास॥10॥

कबीर कहा गरबियौ, चाँम लपेटे हड।
हैबर ऊपरि छत्रा सिरि, ते भी देबा खड॥11॥

कबीर कहा गरबियो, काल गहै कर केस।
नां जाँणों कहाँ मारिसी, कै घरि कै परदेस॥12॥
टिप्पणी: ख-कत मारसी।

यहु ऐसा संसार है जैसा सैबल फूल।
दिन दस के व्योहार को, झूठै रंगि न भूल॥13॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-

मीति बिसारी बाबरे, अचिरज कीया कौन।
तन माटी में मिलि गया, ज्यूँ आटे मैं लूण॥15॥

जाँभण मरण बिचारि करि, कूडे काँम निहारि।
जिनि पंथू तुझ चालणां, सोई पंथ सँवारि॥14॥

बिन रखवाले बहिरा, चिड़ियैं खाया खेत।
आधा प्रधा ऊबरै, चेति कै तो चेति॥15॥

हाड़ जलै ज्यूँ लाकड़ी, केस जलै ज्यूँ घास।
सब तन जलता देखि करि, भया कबीर उदास॥16॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-

मड़ा जलै लकड़ी जलै, जलै जलावणहार।
कौतिगहारे भी जलैं, कासनि करौ पुकार॥23॥

कबीर देवल हाड का, मारी तणा बधाँण।
खड हडता पाया नहीं, देवल का रहनाँण॥24॥

कबीर मंदिर ढहि पड़ा, सैंट भई सैबार।
कोई मंदिर चिणि गया, मिल्या न दूजी बार॥17॥
टिप्पणी: ख-देवल ढहि।
(16, 17)नंबर के दोहे 'क' प्रति में 22, 23 नंबर पर हैं।

आजि कि काल्हि कि पचे दिन, जंगल होइगा बास।
ऊपरि ऊपरि फिरहिंगे, ढोर चरंदे घास॥18॥

मरहिंगे मरि जाहिंगे, नांव न लेखा कोइ।
ऊजड़ जाइ बसाहिंगे, छाँड़ि बसंती लोइ॥19॥

कबीर खेति किसाण का, झगौ खाया खाड़ि।
खेत बिचारा क्या करे, जो खसम न करई बाड़ि॥20॥

कबीर देवल ढहि पड़ा, ईंट भई सैवार।
करि चेजारा सौ प्रीतिड़ी, ज्यौं ढहै न दूजी बार॥18॥

कबीर मंदिर लाष का, जड़िया हीरै लालि।
दिवस चारि का पेषणां, विनस जाइगा काल्हि॥19॥

कबीर धूलि सकेलि करि, पुड़ी ज बाँधी एह।
दिवस चारि का पेषणाँ, अंति षेह का षेह॥20॥
टिप्पणी: ख-धूलि समेटि।

कबीर जे धंधै तौ धूलि, बिन धंधे धूलै नहीं।
ते नर बिनठे मूलि, जिनि धंधे मैं ध्याया नहीं॥21॥

कबीर सुपनै रैनि कै, ऊघड़ि आयै नैन।
जीव पड़्या बहु लूटि मैं, जागै तो लैण न दैण॥22॥
टिप्पणी: ख- बहु भूलि मैं।

कबीर सुपनै रैनि के, पारस जीय मैं छेक।
जे सोऊँ तो दोइ जणाँ, जे जागूँ तो एक॥23॥
टिप्पणी: इसके आगे ख में यह दोहा है-

कबीर इहै चितावणी, जिन संसारी जाइ।
जे पहिली सुख भोगिया, तिन का गूड ले खाइ॥30॥

कबीर इस संसार में घणै मनिप मतिहींण।
राम नाम जाँणौं नहीं, आये टापी दीन॥24॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
पीपल रूनों फूल बिन, फलबिन रूनी गाइ।
एकाँ एकाँ माणसाँ, टापा दीन्हा आइ॥32॥

कहा कियौ हम आइ करि, कहा करेंगे जाइ।
इत के भए न उत के, चाले मूल गँवाइ॥25॥

आया अणआया भया, जे बहुरता संसार।
पड़ा भुलाँवा गफिलाँ, गये कुबंधी हारि॥26॥

कबीर हरि की भगति बिन, धिगि जीमण संसार।
धूँवाँ केरा धौलहर जात न लागै वार॥27॥

जिहि हरि की चोरी करि, गये राम गुण भूलि।

ते बिंधना बागुल रचे, रहे अरध मुखि झूलि॥28॥

माटी मलणि कुँभार की, घड़ीं सहै सिरि लात।
इहि औसरि चेत्या नहीं, चूका अबकी घात॥29॥

इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
राम नाम जाण्या नहीं, अति पड़ी मुख षेह्ड्ड30॥

राम नाम जाण्यो नहीं, लानी मोटी षोड़ि।
काया हाँडी काठ की, ना ऊ चढ़े बहोड़ि॥31॥

राम नाम जाण्या नहीं, बात बिनंठी मूलि।
हरत इहाँ ही हारिया, परति पड़ी मुख धूलि॥32॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-

राम नाम जाण्या नहीं, मेल्या मनहिं बिसारि।
ते नर हाली बादरी, सदा परा पराए बारि॥42॥

राम नाम जाण्या नहीं, ता मुखि आनहिं आन।
कै मूसा कै कातरा, खाता गया जनम॥43॥

राम नाम जाण्यो नहीं हूवा बहुत अकाज।
बूडा लौरे बापुड़ा बड़ा बूटा की लाज॥44॥

राम नाम जाँण्याँ नहीं, पल्यो कटक कुटुम्ब।
धंधा ही में मरि गया, बाहर हुई न बंब॥33॥

मनिषा जनम दुर्लभ है, देह न बारम्बार।
तरवर थैं फल झड़ि पड़ा बहुरि न लागै डार॥34॥

कबीर हरि की भगति करि, तजि बिषिया रस चोज।
बारबार नहीं पाइए, मनिषा जन्म की मौज॥35॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
पाणी ज्यौर तालाब का दह दिसी गया बिलाइ।
यह सब योंही जायगा, सकै तो ठाहर लाइ॥48॥

कबीर यहु तन जात है, सकै तो ठाहर लाइ।
कै सेवा करि साध की, कै गुण गोविंद के गाइ॥36॥
टिप्पणी: ख-के गोबिंद गुण गाइ।

कबीर यह तन जात है, सकै तो लेहु बहोड़ि।
नागे हाथूँ ते गए, जिनके लाख करोड़ि॥37॥
टिप्पणी: ख-नागे पाऊँ।

यह तनु काचा कुंभ है, चोट चहूँ दिसि खाइ।
एक राम के नाँव बिन, जदि तदि प्रलै जाइ॥38॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
यह तन काचा कुंभ है, मांहि कया ढिंग बास।
कबीर नैंण निहारियाँ, तो नहीं जीवन आस॥52॥

यह तन काचा कुंभ है, लिया फिरै था साथि।
ढबका लागा फुटि गया, कछू न आया हाथि॥39॥

काँची कारी जिनि करै, दिन दिन बधै बियाधि।
राम कबीरै रुचि भई, याही ओषदि साधि॥40॥

कबीर अपने जीवतै, ए दोइ बातैं धोइ।
लोग बड़ाई कारणै, अछता मूल न खोइ॥41॥

खंभा एक गइंद दोइ, क्यूँ करि बंधिसि बारि।
मानि करै तो पीव नहीं, पीव तौ मानि निवारि॥42॥

दीन गँवाया दुनी सौं, दुनी न चाली साथि।
पाइ कुहाड़ा मारिया, गाफिल अपणै हाथि॥43॥

यह तन तो सब बन भया, करम भए कुहाड़ि।
आप आप कूँ काटिहैं, कहैं कबीर विचारि॥44॥

कुल खोया कुल ऊबरै, कुल राख्यो कुल जाइ।
राम निकुल कुल भेंटि लैं, सब कुल रह्या समाइ॥45॥

दुनिया के धोखे मुवा, चलै जु कुल की काँण।
तबकुल किसका लाजसी, जब ले धर्‌या मसाँणि॥46॥
टिप्पणी: ख-का कौ लाजसी।

दुनियाँ भाँडा दुख का भरी मुँहामुह भूष।
अदया अलह राम की, कुरलै ऊँणी कूष॥47॥
टिप्पणी: इसके आगे ख में यह दोहा है-
दुनियां के मैं कुछ नहीं, मेरे दुनी अकथ।
साहिब दरि देखौं खड़ा, सब दुनियां दोजग जंत॥61॥

जिहि जेबड़ी जग बंधिया, तूँ जिनि बँधै कबीर।
हनैसी आटा लूँण ज्यूँ, सोना सँवाँ शरीर॥48॥

कहत सुनत जग जात है, विषै न सूझै काल।
कबीर प्यालै प्रेम कै, भरि भरि पिवै रसाल॥49॥

कबीर हद के जीव सूँ, हित करि मुखाँ न बोलि

जे लागे बेहद सूँ, तिन सूँ अंतर खोलि॥50॥
टिप्पणी: इसके आगे ख प्रति में यह दोहा है-

कबीर साषत की सभा, तू मत बैठे जाइ।
एकै बाड़ै क्यू बड़ै, रीझ गदहड़ा गाइ॥65॥

कबीर केवल राम की, तूँ जिनि छाड़ै ओट।
घण अहरणि बिचि लोह ज्यूँ, घड़ी सहे सिर चोट॥51॥

कबीर केवल राम कहि, सुध गरीबी झालि।
कूड़ बड़ाई बूड़सी, भारी पड़सी काल्हि॥52॥

काया मंजन क्या करै, कपड़ धोइम धोइ।
उजल हूवा न छूटिए, सुख नींदड़ी न सोह॥53॥

उजल कपड़ा पहरि करि, पान सुपारी खाँहि।
एके हरि का नाँव बिन, बाँधे जमपुरि जाँहि॥54॥
टिप्पणी: इसके आगे ख प्रति में यह दोहा है-

थली चरंतै म्रिघ लै, बीध्या एक ज सौंण।
हम तो पंथी पंथ सिरि, हर्या चरैगा कौण॥74॥

तेरा संगी कोइ नहीं, सब स्वारथ बँधी लोइ।
मनि परतीति न ऊपजै, जीव बेसास न होइ॥55॥

मांइ बिड़ाणों बाप बिड़, हम भी मंझि बिड़ाह।
दरिया केरी नाव ज्यूँ, संजोगे मिलियाँह॥56॥

इत प्रधर उत घर बड़जण आए हाट।
करम किराणाँ बेचि करि, उठि ज लागे बाट॥57॥
टिप्पणी: ख एथि परिघरि उथि घरि, जोवण आए हाट।

नान्हाँ काती चित दे, महँगे मोलि बिकाइ।
गाहक राजा राम है और न नेड़ा आइ॥58॥

डागल उपरि दौड़णां, सुख नींदड़ी न सोइ।
पुनै पाए द्यौंहणे, ओछी ठौर न खोइ॥59॥
टिप्पणी: ख पुन पाया देहड़ी, बोछां ठौर न खाइ।
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
ज्यूँ कोली पेताँ बुणै, बुणतां आवै बोड़ि।
ऐसा लेख मीच का, कछु दौड़ि सके तो दौड़ि॥76॥

मैं मैं बड़ी बलाइ है, सके तो निकसी भाजि।

कब लग राखौं हे सखी, रूई पलेटी आगि॥60॥

मैं मैं मेरी जिनि करै, मेरी मूल बिनास।
मेरी पग का पैषड़ा, मेरी गल की पास॥61॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-

मेरे तेर की जीवणी, बसि बंध्या संसार।
कहाँ सुकुँणबा सुत कलित, दाक्षणि बारंबार॥79॥

मेरे तेरे की रासड़ी, बलि बंध्या संसार।
दास कबीरा किमि बँधै, जाकैं राम अधार॥82॥

कबीर नांव जरजरी, भरी बिराणै भारि।
खेवट सौं परचा नहीं, क्यो करि उतरैं पारि॥83॥

कबीर नाव जरजरी, कूड़े खेवणहार।
हलके हलके तिरि गए, बूड़े तिनि सिर भार॥62॥262॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर पगड़ा दूरि है, जिनकै बिचिहै राति।
का जाणौं का होइगा, ऊगवै तैं परभाति॥84॥

(13) मन कौ अंग

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

मन कै मते न चालिये, छाड़ि जीव की बाँणि।
ताकू केरे सूत ज्यूँ, उलटि अपूठा आँणि॥1॥
टिप्पणी: ख तेरा तार ज्यूँ।

चिंता चिति निबारिए, फिर बूझिए न कोइ।
इंद्री पसर मिटाइए, सहजि मिलैगा सोइ॥2॥
टिप्पणी: ख-परस निबारिए।

आसा का ईंधन करूँ, मनसा करुँ विभूति।
जोगी फेरी फिल करौं, यों बिनवाँ वै सूति॥3॥

कबीर सेरी साँकड़ी चंचल मनवाँ चोर।
गुण गावै लैलीन होइ, कछू एक मन मैं और॥4॥

कबीर मारूँ मन कूँ, टूक टूक ह्नै जाइ।
विष की क्यारी बोई करि, लुणत कहा पछिताइ॥5॥

इस मन कौ बिसमल करौं, दीठा करौं अदीठ।
जै सिर राखौं आपणां, तौ पर सिरिज अंगीठ॥6॥

मन जाणैं सब बात, जाणत ही औगुण करै।
काहे की कुसलात, कर दीपक कूँ बैं पड़ै॥7॥

हिरदा भीतरि आरसी, मुख देषणाँ न जाइ।
मुख तौ तौपरि देखिए, जे मन की दुविधा जाइ॥8॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-
कबीर मन मृथा भगा, खेत बिराना खाइ।
सूलाँ करि करि से किसी जब खसम पहूँचे आइ॥9॥

मन को मन मिलता नहीं तौ होता तन का भंग।
अब ह्नै रहु काली कांवली, ज्यौं दूजा चढ़ै न रंग॥10॥

मन दीया मन पाइए, मन बिन मन नहीं होइ।
मन उनमन उस अंड ज्यूँ, खनल अकासाँ जोइ॥9॥

मन गोरख मन गोविंदो, मन हीं औघड़ होइ।
जे मन राखै जतन करि, तौ आपै करता सोइ॥10॥

एक ज दोसत हम किया, जिस गलि लाल कबाइ।
एक जग धोबी धोइ मरै, तौ भी रंग न जाइ॥11॥

पाँणी ही तैं पातला, धूवाँ ही तै झींण।
पवनाँ बेगि उतावला, सो दोसत कबीरै कीन्ह॥12॥

कबीर तुरी पलांड़ियाँ, चाबक लीया हाथि।
दिवस थकाँ साँई मिलौं, पीछे पड़िहै राति।॥13॥

मनवां तो अधर बस्या, बहुतक झीणां होइ।
आलोकत सचु पाइया, कबहूँ न न्यारा सोइ॥14॥

मन न मार्‌या मन करि, सके न पंच प्रहारि।
सीला साच सरधा नहीं, इंद्री अजहुँ उद्‌यारि॥15॥

कबीर मन बिकरै पड़ा, गया स्वादि के साथ।
गलका खाया बरज्ताँ, अब क्यूँ आवै हाथि॥16॥

कबीर मन गाफिल भया, सुमिरण लागै नाहिं।
घणीं सहैगा सासनाँ, जम की दरगह माहिं॥17॥

कोटि कर्म पल मैं करै, यहु मन बिषिया स्वादि।
सतगुर सबद न मानई, जनम गँवाया बादि॥18॥

मैंमंता मन मारि रे, घटहीं माँहै घेरि।
जबहीं चालै पीठि दै, अंकुस दे दे फेरि॥19॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
जौ तन काँहै मन धरै, मन धरि निर्मल होइ।
साहिब सौ सनमुख रहै, तौ फिरि बालक होइ॥

मैंमंता मन मारि रे, नान्हाँ करि करि पीसि।
तब सुख पावै सुंदरी, ब्रह्म झलकै सीसि॥20॥

कागद केरी नाँव री, पाँणी केरी गंग।
कहै कबीर कैसे तिरूँ, पंच कुसंगी संग॥21॥

कबीर यह मन कत गया, जो मन होता काल्हि।
डूंगरि बूठा मेह ज्यूँ, गया निबाँणाँ चालि॥22॥

मृतक कूँ धी जौ नहीं, मेरा मन बी है।
बाजै बाव बिकार की, भी मूवा जीवै॥23॥

काटि कूटि मछली, छींकै धरी चहोड़ि।
कोइ एक अषिर मन बस्या, दह मैं पड़ी बहोड़ि॥24॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-

मूवा मन हम जीवत, देख्या जैसे मडिहट भूत।
मूवाँ पीछे उठि उठि लागै, ऐसा मेरा पूत॥47॥
मूवै कौंधी गौ नहीं, मन का किया बिनास।

कबीर मन पंषी भया, बहुतक चढ़ा अकास।
उहाँ ही तैं गिरि पड़ा, मन माया के पास॥25॥

भगति दुबारा सकड़ा राई दसवैं भाइ।
मन तौ मैंगल ह्नै रह्यो, क्यूँ करि सकै समाइ॥26॥

करता था तो क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोवै पेड़ बबूल का, अब कहाँ तैं खाइ॥27॥

काया देवल मन धजा, विषै लहरि फरराइ।
मन चाल्याँ देवल चलै, ताका सर्बस जाइ॥28॥

मनह मनोरथ छाँड़ि दे, तेरा किया न होइ।
पाँणी मैं घीव गीकसै, तो रूखा खाइ न कोइ॥29॥

काया कसूं कमाण ज्यूँ, पंचतत्त करि बांण।
मारौं तो मन मृग को, नहीं तो मिथ्या जाँण॥30॥292॥

टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-

कबीर हरि दिवान कै, क्यूँकर पावै दादि।
पहली बुरा कमाइ करि, पीछे करै फिलादि॥35॥

(शीर्ष पर वापस)

(14) सूषिम मारग कौ अंग

कौंण देस कहाँ आइया, कहु क्यूँ जाँण्याँ जाइ।
उहू मार्ग पावै नहीं, भूलि पड़े इस माँहि॥1॥

उतीथैं कोइ न आवई, जाकूँ बूझौं धाइ।
इतथैं सबै पठाइये, भार लदाइ लदाइ॥2॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-

कबीर संसा जीव मैं, कोइ न कहै समुझाइ।
नाँनाँ बांणी बोलता, सो कत गया बिलाइ॥3॥

सबकूँ बूझत मैं फिरौं, रहण कहै नहीं कोइ।
प्रीति न जोड़ी राम सूँ, रहण कहाँ थैं होइ॥3॥

चलो चलौं सबको कहे, मोहि अँदेसा और।
साहिब सूँ पर्चा नहीं, ए जांहिगें किस ठौर॥4॥

जाइबे को जागा नहीं, रहिबे कौं नहीं ठौर।
कहै कबीरा संत हौ, अबिगति की गति और॥5॥

कबीरा मारिग कठिन है, कोइ न सकई जाइ।
गए ते बहुडे नहीं, कुसल कहै को आइ॥6॥

जन कबीर का सिषर घर, बाट सलैली सैल।
पाव न टिकै पपीलका, लोगनि लादे बैल॥7॥

जहाँ न चींटी चढ़ि सकै, राइ न ठहराइ।
मन पवन का गमि नहीं, तहाँ पहूँचे जाइ॥8॥

कबीर मारग अगम है, सब मुनिजन बैठे थाकि।
तहाँ कबीरा चलि गया गहि सतगुर कीसाषि॥9॥

सुर न थाके मुनि जनां, जहाँ न कोई जाइ।
मोटे भाग कबीर के, तहाँ रहे घर छाइ॥10॥602॥

(शीर्ष पर वापस)

(15) सूषिम जनम कौ अंग

कबीर सूषिम सुरति का, जीव न जाँणै जाल।
कहै कबीरा दूरि करि, आतम अदिष्टि काल॥1॥

प्राण पंड को तजि चलै, मूवा कहै सब कोइ।
जीव छताँ जांमैं मरै, सूषिम लखै न कोइ॥2॥304॥
टिप्पणी: ख-में इसके आगे ये दोहे हैं-

कबीर अंतहकरन मन, करन मनोरथ माँहि।
उपजित उतपति जाँणिए, बिनसे जब बिसराँहि॥3॥

कबीर संसा दूरि करि, जाँमण मरन भरम।
पंच तत्त तत्तहि मिलै, सुनि समाना मन॥4॥

(शीर्ष पर वापस)

(16) माया कौ अंग

जग हठवाड़ा स्वाद ठग, माया बेसाँ लाइ।
रामचरण नीकाँ गही, जिनि जाइ जनम ठगाइ॥1॥
टिप्पणी: ख-में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर जिभ्या स्वाद ते, क्यूँ पल में ले काम।
अंगि अविद्या ऊपजै, जाइ हिरदा मैं राम॥2॥

कबीर माया पापणीं, फंध ले बैठि हाटि।
सब जग तो फंधै पड़ा, गया कबीरा काटि॥2॥

कबीर माया पापणीं, लालै लाया लोंग।
पूरी कीनहूँ न भोगई, इनका इहै बिजोग॥3॥

कबीरा माया पापणीं, हरि सूँ करे हराम।
मुखि कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम॥4॥

जाँणी जे हरि को भजौ, मो मनि मोटी आस।
हरि बिचि घालै अंतरा, माया बड़ी बिसास॥5॥
टिप्पणी: ख-हरि क्यों मिलौं।

कबीर माया मोहनी, मोहे जाँण सुजाँण।
भागाँ ही छूटै नहीं, भरि भरि मारै बाँण॥6॥

कबीर माया मोहनी, जैसी मीठी खाँड़।
सतगुर की कृपा भई, नहीं तो करती भाँड़॥7॥

कबीर माया मोहनी, सब जग घाल्या घाँणि।
कोइ एक जन ऊबरै, जिनि तोड़ी कुल की काँणि॥8॥

कबीर माया मोहनी, माँगी मिलै न हाथि।
मनह उतारी झूठ करि, तब लागी डौलै साथि॥9॥

माया दासी संत की, ऊँभी देइ असीस।
बिलसी अरु लातौं छड़ी सुमरि सुमरि जगदीस॥10॥

माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया सरीर।
आसा त्रिस्नाँ ना मुई, यों कहि गया कबीर॥11॥
टिप्पणी: ख-यूँ कहै दास कबीर।

आसा जीवै जग मरै, लोग मरे मरि जाइ।
सोइ मूबे धन संचते, सो उबरे जे खाइ॥12॥
टिप्पणी: ख-सोई बूड़े जु धन संचते।

कबीर सो धन संचिए, जो आगै कूँ होइ।
सीस चढ़ाए पोटली, ले जात न देख्या कोइ॥13॥

त्रीया त्रिण्णाँ पापणी, तासूँ प्रीति न जोड़ि।
पैड़ी चढ़ि पाछाँ पड़े, लागै मोटी खोड़ि॥14॥

त्रिष्णाँ सींची नाँ बुझे, दिन दिन बढ़ती जाइ।
जबासा के रूप ज्यूँ, घण मेहाँ कुमिलाइ॥15॥

कबीर जग की को कहे, भौ जलि बूड़ै दास।
पारब्रह्म पति छाड़ि कर, करैं मानि की आस॥16॥

माया तजी तौ का भया, मानि तजी नहीं जाइ।
मानि बड़े गुनियर मिले, मानि सबनि की खाइ॥17॥

रामहिं थोड़ा जाँणि करि, दुनियाँ आगैं दीन।
जीवाँ कौ राजा कहै, माया के आधीन॥18॥

रज बीरज की कली, तापरि साज्या रूप।
राम नाम बिन बूड़ि है, कनक काँमणी कूप॥19॥

माया तरवर त्रिविध का, साखा दुख संताप।
सीतलता सुपिनै नहीं, फल फीको तनि ताप॥20॥

कबीर माया ढाकड़ी, सब किसही कौ खाइ।
दाँत उपाणौं पापड़ी, जे संतौं नेड़ी जाइ॥21॥

नलनी सायर घर किया, दौं लागी बहुतेणि।
जलही माँहै जलि मुई, पूरब जनम लिपेणि॥22॥

कबीर गुण की बादली, ती तरबानी छाँहिं।
बाहरि रहे ते ऊबरे, भीगें मंदिर माँहिं॥23॥

कबीर माया मोह की, भई अँधारी लोइ।
जे सूते ते मुसि लिये, रहे बसत कूँ रोइ॥24॥
टिप्पणी: ख-में इसके आगे यह दोहा हैं-

माया काल की खाँणि है, धरि त्रिगणी बपरौति।
जहाँ जाइ तहाँ सुख नहीं, यह माया की रीति॥

संकल ही तैं सब लहे, माया इहि संसार।
ते क्यूँ छूटे बापुड़े, बाँधे सिरजनहार॥25॥

बाड़ि चढ़ती बेलि ज्यूँ, उलझी, आसा फंध।
तूटै पणि छूटै नहीं, भई ज बाना बंध॥26॥

सब आसण आस तणाँ, त्रिबर्तिकै को नाहिं।
थिवरिति कै निबहै नहीं, परिवर्ति परपंच माँहि॥27॥

कबीर इस संसार का, झूठा माया मोह।
जिहि घरि जिता बधावणाँ, तिहि घरि तिता अँदोह॥28॥

माया हमगौ यों कह्या, तू मति दे रे पूठि।
और हमारा हम बलू गया कबीरा रूठि॥29॥
टिप्पणी: माया मन की मोहनी, सुरनर रहे लुभाइ।
इहि माया जग खाइया माया कौं कोई न खाइ॥26॥
टिप्पणी: ख-गया कबीरा छूटि
ख-रूई लपेटी आगि।

बुगली नीर बिटालिया, सायर चढ़ा कलंक।
और पँखेरू पी गए, हंस न बोवै चंच॥30॥

कबीर माया जिनि मिलैं, सो बरियाँ दे बाँह।
नारद से मुनियर मिले, किसौ भरोसे त्याँह॥31॥

माया की झल जग जल्या, कनक काँमणीं लागि।
कहुँ धौं किहि विधि राखिये, रूई पलेटी आगि॥32॥346॥

(शीर्ष पर वापस)

(17) चाँणक कौ अंग

जीव बिलव्या जीव सों, अलप न लखिया जाइ।
गोबिंद मिलै न झल बुझै, रही बुझाइ बुझाइ॥1॥

इही उदर के कारणै, जग जाँच्यो निस जाम।
स्वामी पणौ जु सिर चढ़ो, सर्‌या न एको काम॥2॥

स्वामी हूँणाँ सोहरा, दोद्‌धा हूँणाँ दास।
गाडर आँणीं ऊन कूँ, बाँधी चरै कपास॥3॥

स्वामी हूवा सीतका, पैका कार पचास।
राम नाँम काँठै रह्‌या, करै सिषां की आस॥4॥

कबीर तष्टा टोकणीं, लीए फिरै सुभाइ।
रामनाम चीन्हें नहीं, पीतलि ही कै चाइ॥5॥

कलि का स्वामी लोभिया, पीतलि धरी षटाइ।
राज दुबाराँ यौं फिरै, ज्यूँ हरिहाई गाइ॥6॥

कलि का स्वामी लोभिया, मनसा धरी बधाइ।
दैहिं पईसा ब्याज कौं, लेखाँ करताँ जाइ॥7॥

कबीर कलि खोटी भई, मुनियर मिलै न कोइ।
लालच लोभी मसकरा, तिनकूँ आदर होइ॥8॥
टिप्पणी: ख-कबीर कलिजुग आइया।

चारिउ बेद पढ़ाइ करि, हरि सूँ न लाया हेत।
बालि कबीरा ले गया, पंडित ढूँढ़ै खेत॥9॥
टिप्पणी: ख-चारि बेद पंडित पढ़्या, हरि सों किया न हेत।

बाँम्हण गुरु जगत का, साधू का गुरु नाहिं।
उरझि पुरझि करि मरि रह्‌या, चारिउँ बेदाँ माहिं॥10॥
टिप्पणी:
ख- बाँम्हण गुरु जगत का, भर्म कर्म का पाइ।
उलझि पुलझि करि मरि गया, चारों बेंदा माँहि॥
ख में इसके आगे ये दोहे हैं-
कलि का बाँम्हण मसकरा, ताहि न दीजै दान।
स्यौं कुँटउ नरकहि चलैं, साथ चल्या जजमान॥11॥

बाम्हण बूड़ा बापुड़ा, जेनेऊ कै जोरि।
लख चौरासी माँ गेलई, पारब्रह्म सों तोडि॥12॥

साषित सण का जेवणा, भीगाँ सूँ कठठाइ।

दोइ अषिर गुरु बाहिरा, बाँध्या जमपुरि जाइ॥11॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे ये दोहे हैं-
कबीर साषत की सभा, तूँ जिनि बैसे जाइं।
एक दिबाड़ै क्यूँ बडै, रीझ गदेहड़ा गाइ॥14॥

साषत ते सूकर भला, सूचा राखे गाँव।
बूड़ा साषत बापुड़ा, बैसि समरणी नाँव॥15॥

साषत बाम्हण जिनि मिलैं, बैसनी मिलौ चंडाल।
अंक माल दे भेटिए, मानूँ मिले गोपाल॥16॥

पाड़ोसी सू रूसणाँ, तिल तिल सुख की हाँणि।
पंडित भए सरावगी, पाँणी पीवें छाँणि॥12॥

पंडित सेती कहि रह्या, भीतरि भेद्या नाहिं।
औरूँ कौ परमोधतां, गया मुहरकाँ माँहि॥13॥
टिप्पणी: ख-कबीर व्यास कहै, भीतरि भेदै नाहिं।

चतुराई सूवै पढ़ी, सोई पंजर माँहि।
फिरि प्रमोधै आन कौ, आपण समझै नाहिं॥14॥

रासि पराई राषताँ, खाया घर का खेत।
औरौं कौ प्रमोधतां, मुख मैं पड़िया रेत॥15॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर कहै पोर कुँ, तूँ समझावै सब कोइ।
संसा पड़गा आपको, तौ और कहे का होइ॥21॥

तारा मंडल बैसि करि, चंद बड़ाई खाइ।
उदै भया जब सूर का, स्यूँ ताराँ छिपि जाइ॥16॥

देषण के सबको भले, जिसे सीत के कोट।
रवि के उदै न दीसहीं, बँधे न जल की पोट॥17॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
सुणत सुणावत दिन गए, उलझि न सुलझा मान।
कहै कबीर चेत्यौ नहीं, अजहुँ पहलौ दिन॥24॥

तीरथ करि करि जग मुवा, डूँधै पाँणी न्हाइ।
राँमहि राम जपंतड़ाँ, काल घसीट्याँ जाइ॥18॥

कासी काँठै घर करैं, पीवैं निर्मल नीर।
मुकति नहीं हरि नाँव बिन, यों कहें दास कबीर॥19॥

कबीर इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूँछ जु पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार॥20॥

टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
पद गायाँ मन हरषियाँ, साषी कह्यां आनंद।
सो तत नाँव न जाणियाँ, गल मैं पड़ि गया फंद॥

कबीर मन फूल्या फिरै, करता हूँ मैं ध्रंम।
कोटि क्रम सिरि ले चल्या, चेत न देखै भ्रंम॥21॥

मोर तोर की जेवड़ी, बलि बंध्या संसार।
काँ सिकडूँ बासुत कलित, दाझड़ बारंबार॥22॥68॥

(शीर्ष पर वापस)

(18) करणीं बिना कथणीं कौ अंग

कथणीं कथी तो क्या भया, जे करणी नाँ ठहराइ।
कालबूत के कोट ज्यूँ, देषतहीं ढहि जाइ॥1॥

जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै चाल।
पारब्रह्म नेड़ा रहै, पल में करै निहाल॥2॥

जैसी मुष तें नीकसै, तैसी चालै नाहिं।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बाँध्या जमपुर जाँहिं॥3॥

पद गोएँ मन हरषियाँ, सापी कह्याँ अनंद।
सों तन नाँव न जाँणियाँ, गल मैं पड़िया फंध॥4॥

करता दीसै कीरतन, ऊँचा करि करि तूंड।
जाँणै बूझे कुछ नहीं, यौं ही आँधां रूंड॥5॥373॥

(शीर्ष पर वापस)

(19) कथणीं बिना करणी कौ अंग

मैं जान्यूँ पढ़िबौ भलो, पढ़िवा थैं भलो जोग।
राँम नाँम सूँ प्रीति करि, भल भल नींदी लोग॥1॥

कबिरा पढ़िबा दूरि करि, पुस्तक देइ बहाइ।
बांवन अषिर सोधि करि, ररै ममैं चित लाइ॥2॥

कबीर पढ़िया दूरि करि, आथि पढ़ा संसार।
पीड़ न उपजी प्रीति सूँद्द, तो क्यूँ करि करै पुकार॥3॥

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एकै आषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥4॥337॥

(शीर्ष पर वापस)

(20) कामी नर कौ अंग

कामणि काली नागणीं, तीन्यूँ लोक मँझारि।
राग सनेही, ऊबरे, बिषई खाये झारि॥1॥

काँमणि मीनीं पाँणि की, जे छेड़ौं तौ खाइ।
जे हरि चरणाँ राचियाँ, तिनके निकटि न जाइ॥2॥

परनारी राता फिरै, चोरी बिढता खाँहिं।
दिवस चारि सरसा रहै, अंति समूला जाँहिं॥3॥

पर नारी पर सुंदरी बिरला बंचै कोइ।
खाताँ मीठी खाँड सी, अंति कालि विष होइ॥4॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
जहाँ जलाई सुंदरी, तहाँ तूँ जिनि जाइ कबीर।
भसमी ह्नै करि जासिसी, सो मैं सवा सरीर॥5॥

नारी नाहीं नाहेरी, करै नैन की चोट।
कोई एक हरिजन ऊबरै पारब्रह्म की ओट॥6॥

पर नारी कै राचणै, औगुण है गुण नाँहि।
षीर समंद मैं मंझला, केता बहि बहि जाँहि॥5॥

पर नारी को राचणौं, जिसी ल्हसण की पाँनि।
पूणैं बैसि रषाइए परगट होइ दिवानि॥6॥
टिप्पणी: क-प्रगट होइ निदानि।

नर नारी सब नरक है, जब लग देह सकाम।
कहै कबीर ते राँम के, जे सुमिरै निहकाम॥7॥

नारी सेती नेह, बुधि बबेक सबही हरै।
काँढ गमावै देह, कारिज कोई नाँ सरै॥8॥

नाना भोजन स्वाद सुख, नारी सेती रंग।
बेगि छाँड़ि पछताइगा, ह्नै है मूरति भंग॥9॥

नारि नसावै तीनि सुख, जा नर पासैं होइ।
भगति मुकति निज ग्यान मैं, पैसि न सकई कोइ॥10॥

एक कनक अरु काँमनी, विष फल कीएउ पाइ।
देखै ही थे विष चढ़े, खायै सूँ मरि जाइ॥11॥

एक कनक अरु काँमनी दोऊ अंगनि की झाल।
देखें ही तन प्रजलै, परस्याँ हनै पैमाल॥12॥

कबीर भग की प्रीतड़ी, केते गए गड़ंत।
केते अजहूँ जायसी, नरकि हसंत हसंत॥13॥
टिप्पणी: ख-गरकि हसंत हसंत।

जोरू जूठणि जगत की, भले बुरे का बीच।
उत्यम ते अलगे रहै, निकटि रहै तैं नीच॥14॥

नारी कुण्ड नरक का, बिरला थंभै बाग।
कोई साधू जन ऊबरै, सब जग मूँवा लाग॥15॥

सुंदरि थे सूली भली, बिरला बचै कोय।
लोह निहाला अगनि मैं, जलि बलि कोइला होय॥16॥

अंधा नर चैते नहीं, कटै ने संसे सूल।
और गुनह हरि बकससी, काँमी डाल न मूल॥17॥

भगति बिगाड़ी काँमियाँ, इंद्री केरै स्वादि।
हीरा खोया हाथ थैं, जनम गँवाया बादि॥18॥

कामी अमीं न भावई, विषई कौं ले सोधि।
कुबधि न जाई जीव की, भावै स्यंभ रहो प्रमोधि॥19॥

विषै विलंबी आत्माँ, मजकण खाया सोधि।
ग्याँन अंकूर न ऊगई, भावै निज प्रमोध॥20॥

विषै कर्म की कंचुली, पहरि हुआ नर नाग।
सिर फोड़ै, सूझै नहीं, को आगिला अभाग॥21॥

कामी कदे न हरि भजै, जपै न कैसो जाप।
राम कह्याँ थैं जलि मरे, को पूरिबला पाप॥22॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
राम कहंता जे खिजै, कोढ़ी हनै गलि जाँहि।
सूकर होइ करि औतरै, नाक बूड़ंते खाँहि॥25॥

काँमी लज्जा ना करै, मन माँहें अहिलाद।
नीद न माँगैं साँथरा, भूष न माँगै स्वाद॥23॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
कामी थैं कुतो भलौ, खोलें एक जू काछ।
राम नाम जाणै नहीं, बाँबी जेही बाच॥27॥

नारि पराई आपणीं, भुगत्या नरकहिं जाइ।
आगि आगि सबरो कहै, तामै हाथ न बाहि॥24॥

कबीर कहता जात हौं, चेतै नहीं गँवार।
बैरागी गिरही कहा, काँमी वार न पार॥25॥

ग्यानी तो नींडर भया, माँने नाँही संक।
इंद्री केरे बसि पड़ा, भूंचै विषै निसंक॥26॥

ग्याँनी मूल गँवाइया, आपण भये करंता।
ताथै संसारी भला, मन मैं रहे डरंता॥27॥404॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
काँम काँम सबको कहैं, काँम न चीन्हें कोइ।
जेती मन में कामना, काम कहीजै सोइ॥32॥

(शीर्ष पर वापस)

(21) सहज कौ अंग

सहज सहज सबकौ कहै, सहज न चीन्है कोइ।
जिन्ह सहजै विषिया तजी, सहज कही जै सोइ॥1॥

सहज सहज सबको कहै, सहज न चीन्हें कोइ।
पाँचू राखै परसती, सहज कही जै सोइ॥2॥

सहजै सहजै सब गए, सुत बित कांमणि कांम।
एकमेक ह्वै मिलि रह्या, दास, कबीरा रांम॥3॥

सहज सहज सबको कहै, सहज न चीन्हैं कोइ।
जिन्ह सहजै हरिजी मिलै, सहज कहीजै सोइ॥4॥408॥

(शीर्ष पर वापस)

(22) साँच कौ अंग

कबीर पूँजी साह की, तूँ जिनि खोवै ष्वार।
खरी बिगूचनि होइगी, लेखा देती बार॥1॥

लेखा देणाँ सोहरा, जे दिल साँचा होइ।
उस चंगे दीवाँन मैं, पला न पकड़े कोइ॥2॥

कबीर चित्त चमंकिया, किया पयाना दूरि।
काइथि कागद काढ़िया, तब दरिगह लेखा पूरि॥3॥

काइथि कागद काढ़ियां, तब लेखैं वार न पार।
जब लग साँस सरीर मैं, तब लग राम सँभार॥4॥

यहु सब झूठी बंदिगी, बरियाँ पंच निवाज।
साँचै मारै झूठ पढ़ि, काजी करै अकाज॥5॥

कबीर काजी स्वादि बसि, ब्रह्म हतै तब दोइ।
चढ़ि मसीति एकै कहै, दरि क्यूँ साचा होइ॥6॥

काजी मुलाँ भ्रमियाँ, चल्या दुनीं कै साथि।
दिल थैं दीन बिसारिया, करद लई जब हाथि॥7॥

जोरी कलिर जिहै करै, कहते हैं ज हलाल।
जब दफतर देखंगा दई, तब हैगा कौंण हवाल॥8॥

जोरी कीयाँ जुलम है, माँगे न्याव खुदाइ।
खालिक दरि खूनी खड़ा, मार मुहे मुहि खाइ॥9॥

साँई सेती चोरियाँ, चोराँ सेती गुझ।
जाँणैगा रे जीवड़ा, मर पड़ैगी तुझ॥10॥

सेष सबूरी बाहिरा, क्या हज काबैं जाइ।
जिनकी दिल स्याबति नहीं, तिनकौं कहाँ खुदाइ॥11॥

खूब खाँड है खोपड़ी, माँहि पड़ै दुक लूँण।
पेड़ा रोटी खाइ करि, गला कटावै कौंण॥12॥

पापी पूजा बैसि करि, भषै माँस मद दोइ।
तिनकी दष्या मुकति नहीं, कोटि नरक फल होइ॥13॥

सकल बरण इकत्रा है, सकति पूजि मिलि खाँहिं।
हरि दासनि की भ्रांति करि, केवल जमपुरि जाँहिं॥14॥

कबीर लज्या लोक की, सुमिरै नाँही साच।
जानि बूझि कंचन तजै, काठा पकड़े काच॥15॥

कबीर जिनि जिनि जाँणियाँ, करत केवल सार।
सो प्राणी काहै चलै, झूठे जग की लार॥16॥

झूठे को झूठा मिलै, दूणाँ बधै सनेह।
झूठे कूँ साचा मिलै, तब ही तूटै नेह॥17॥425॥

(शीर्ष पर वापस)

(23) भ्रम विधौंसण कौ अंग

पांहण केरा पूतला, करि पूजै करतार।
इही भरोसै जे रहे, ते बूड़े काली धार॥1॥

काजल केरी कोठरी, मसि के कर्म कपाट।
पांहनि बोई पृथमी, पंडित पाड़ी बाट॥2॥

पाँहिन फूँका पूजिए, जे जनम न देई जाब।
आँधा नर आसामुषी, यौंही खोवै आब॥3॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
पाथर ही का देहुरा, पाथर ही का देव।
पूजणहारा अंधला, लागा खोटी सेव॥4॥

कबीर गुड कौ गमि नहीं, पाँषण दिया बनाइ।
सिष सोधी बिन सेविया, पारि न पहुँच्या जाइ॥5॥

हम भी पाहन पूजते, होते रन के रोझ।
सतगुर की कृपा भई, डार्‌या सिर थैं बोझ॥4॥
टिप्पणी: ख-होते जंगल के रोझ।

जेती देषौं आत्मा, तेता सालिगराँम।
साथू प्रतषि देव हैं, नहीं पाथर सू काँम॥5॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर माला काठ की, मेल्ही मुगधि झुलाइ।
सुमिरण की सोधी नहीं, जाँणै डीगरि घाली जाइ॥6॥

सेवैं सालिगराँम कूँ, मन की भ्रांति न जाइ।
सीतलता सुषिनै नहीं, दिन दिन अधकी लाइ॥6॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-
माला फेरत जुग भया, पाय न मन का फेर।
कर का मन का छाँड़ि दे, मन का मन का फेर॥8॥

सेवैं सालिगराँम कूँ, माया सेती हेत।
बोढ़े काला कापड़ा, नाँव धरावैं सेत॥7॥

जप तप दीसै थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास।
सूवै सैबल सेविया, यों जग चल्या निरास॥8॥

तीरथ त सब बेलड़ी, सब जग मेल्या छाइ।
कबीर मूल निकंदिया, कोण हलाहल खाइ॥9॥

मन मथुरा दिल द्‌वारिका, काया कासी जाँणि।
दसवाँ द्‌वारा देहुरा, तामै जोति पिछाँणि॥10॥

कबीर दुनियाँ देहुरै, सोस नवाँवण जाइ।
हिरदा भीतर हरि बसै, तूँ ताही सौ ल्यौ लाइ॥11॥436॥

(शीर्ष पर वापस)

(24) भेष कौ अंग

कर सेती माला जपै, हिरदै बहै डंडूल।
पग तौ पाला मैं गिल्या, भाजण लागी सूल॥1॥

कर पकरै अँगुरी गिनै, मन धावै चहुँ वीर।
जाहि फिराँयाँ हरि मिलै, सो भया काठ की ठौर॥2॥

माला पहरैं मनमुषी, ताथैं कछू न होइ।
मन माला कौं फेरताँ, जुग उजियारा सोइ॥3॥

माला पहरे मनमुषी, बहुतैं फिरै अचेत।
गाँगी रोले बहि गया, हरि सूँ नाँहीं हेत॥4॥

कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि।
मन न फिरावै आपणों, कहा फिरावै मोहि॥5॥

कबीर माला मन की, और संसारी भेष।
माला पहर्‌या हरि मिलै, तौ अरहट कै गलि देष॥6॥

माला पहर्‌याँ कुछ नहीं, रुल्य मूवा इहि भारि।
बाहरि ढोल्या हींगलू भीतरि भरी भँगारि॥7॥

माला पहर्‌याँ कुछ नहीं, काती मन कै साथि।
जब लग हरि प्रकटै नहीं, तब लग पड़ता हाथि॥8॥

माला पहर्‌याँ कुछ नहीं, गाँठि हिरदा की खोइ।
हरि चरनूँ चित्त राखिये, तौ अमरापुर होइ॥9॥
टिप्पणी: ख में इसके आगे यह दोहा है-

माला पहर्‌याँ कुछ नहीं बाम्हण भगत न जाण।
ब्याँह सराँधाँ कारटाँ उँभू वैंसे ताणि॥2॥

माला पहर्‌या कुछ नहीं, भगति न आई हाथि।
माथौ मूँछ मुँड़ाइ करि, चल्या जगत कै साथि॥10॥

साँईं सेती साँच चलि, औराँ सूँ सुध भाइ।
भावै लम्बे केस करि, भावै घुरड़ि मुड़ाइ॥11॥

टिप्पणी: ख-साधौं सौं सुध भाइ।

केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूड़े सौ बार।
मन कौं न काहे मूड़िए, जामै बिषै विकार॥12॥

मन मेवासी मूँड़ि ले, केसौं मूड़े काँइ।
जे कुछ किया सु मन किया, केसौं कीया नाँहि॥13॥

मूँड़ मुँड़ावत दिन गए, अजहूँ न मिलिया राम
राँम नाम कहु क्या करैं, जे मन के औरे काँम॥14॥

स्वाँग पहरि सोरहा भया, खाया पीया षूँदि।
जिहि सेरी साधू नीकले, सो तौ मेल्ही मूँदि॥15॥
टिप्पणी: ख-जिहि सेरी साधू नीसरै, सो सेरी मेल्ही मूँदी॥

बेसनों भया तौ क्या भया, बूझा नहीं बबेक।
छापा तिलक बनाइ करि, दगध्या लोक अनेक॥16॥

तन कौं जोगी सब करैं, मन कों बिरला कोइ।
सब सिधि सहजै पाइए, जे मन जोगी होइ॥17॥

कबीर यहु तौ एक है, पड़दा दीया भेष।
भरम करम सब दूरि करि, सबहीं माँहि अलेष॥18॥

भरम न भागा जीव का, अनंतहि धरिया भेष।
सतगुर परचे बाहिरा, अंतरि रह्या अलेष॥19॥

जगत जहंदम राचिया, झूठे कुल की लाज।
तन बिनसे कुल बिनसि है, गह्या न राँम जिहाज॥20॥

पष ले बूडी पृथमीं, झूठी कुल की लार।
अलष बिसारौं भेष मैं, बूड़े काली धार॥21॥

चतुराई हरि नाँ मिले, ऐ बाताँ की बात।
एक निसप्रेही निरधार का, गाहक गोपीनाथ॥22॥

नवसत साजे काँमनीं, तन मन रही सँजोइ।
पीव कै मन भावे नहीं, पटम कीयें क्या होइ॥23॥

जब लग पीव परचा नहीं, कन्याँ कँवारी जाँणि।
हथलेवा होसै लिया, मुसकल पड़ी पिछाँणि॥24॥

कबीर हरि की भगति का, मन मैं परा उल्लास।
मैं वासा भाजै नहीं, हूँण मतै निज दास॥25॥

मैं वासा मोई किया, दुरिजिन काढ़े दूरि।
राज पियारे राँम का, नगर बस्या भरिपूरि॥26॥462॥

(शीर्ष पर वापस)

(25) कुसंगति कौ अंग

निरमल बूँद अकास की, पड़ि गइ भोमि बिकार।
मूल विनंठा माँनबी, बिन संगति भठछार॥1॥

मूरिष संग न कीजिए, लोहा जलि न तिराइ
कदली सीप भवंग मुषी, एक बूँद तिहुँ भाइ॥2॥

हरिजन सेती रूसणाँ, संसारी सूँ हेत।
ते नर कदे न नीपजै, ज्यूँ कालर का खेत॥3॥

नारी मरूँ कुसंग की, केला काँठै बेरि।
वो हालै वो चीरिये, साषित संग न बेरि॥4॥

मेर नसाँणी मीच की, कुसंगति ही काल।
कबीर कहै रे प्राँणिया, बाँणी ब्रह्म सँभाल॥5॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर केहने क्या बणै, अणमिलता सौ संग।
दीपक कै भावैं नहीं, जलि जलि परैं पतंग॥6॥

माषी गुड़ मैं गड़ि रही, पंष रही लपटाइ।
ताली पीटै सिरि धुनै, मीठै बोई माइ॥6॥

ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणीं ऊँच न होइ।
सोवन कलस सुरे भर्या, साथूँ निंद्या सोइ ॥7॥269॥

(शीर्ष पर वापस)

(26) संगति कौ अंग

देखा देखी पाकड़े, जाइ अपरचे छूटि।
बिरला कोई ठाहरे, सतगुर साँमी मूठि॥1॥

देखा देखी भगति है, कदे न चढ़ई रंग।
बिपति पढ़्या यूँ छाड़सी, ज्यूं कंचुली भवंग॥2॥

करिए तौ करि जाँणिये, सारीपा सूँ संग।
लीर लीर लोइ थई, तऊ न छाड़ै रंग॥3॥

यहु मन दीजे तास कौं, सुठि सेवग भल सोइ।
सिर ऊपरि आरास है, तऊ न दूजा होइ॥4॥
टिप्पणी: ख-तऊ न न्यारा होइ।

पाँहण टाँकि न तौलिए, हाडि न कीजै वेह।
माया राता मानवी, तिन सूँ किसा सनेह॥5॥

कबीर तासूँ प्रीति करि, जो निरबाहे ओड़ि।
बनिता बिबिध न राचिये, दोषत लागे षोड़ि॥6॥

कबीर तन पंषी भया, जहाँ मन तहाँ उड़ि जाइ।
जो जैसी संगति करे, सो तैसे फल खाइ॥7॥

काजल केरी कोठढ़ी, तैसा यहु संसार।
बलिहारी ता दास की, पैसि रे निकसणहार॥8॥477॥

(शीर्ष पर वापस)

(27) असाध कौ अंग

कबीर भेष अतीत का, करतूति करै अपराध।
बाहरि दीसै साध गति, माँहैं महा असाध॥1॥

उज्जल देखि न धीजिये, बग ज्यूँ माँड़ै ध्यान।
धीरे बैठि चपेटसी, यूँ ले बूड़ै, ग्याँन॥2॥

जेता मीठा बोलणाँ, तेता साध न जाँणि।
पहली थाह दिखाई करि, ऊँड़ै देसी आँणि॥3॥480॥
टिप्पणी: ख-तेता भगति न जाँणि।

(शीर्ष पर वापस)

(28) साध कौ अंग

कबीर संगति साध की, कदे न निरफल होइ।
चंदन होसी बाँवना, नीब न कहसी कोइ॥1॥

कबीर संगति साध की, बेगि करीजैं जाइ।
दुरमति दूरि गँवाइसी, देसी सुमति बताइ॥2॥

मथुरा जावै द्वारिका, भावैं जावैं जगनाथ।
साध संगति हरि भगति बिन, कछू न आवै हाथ॥3॥

मेरे संगी दोइ जणाँ एक बैष्णों एक राँम।
वो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै नाँम॥4॥
टिप्पणी: ख-सुमिरावै राम।

कबीरा बन बन में फिरा, कारणि अपणें राँम।
राम सरीखे जन मिले, तिन सारे सब काँम॥5॥

कबीर सोई दिन भला, जा दिन संत मिलाहिं।
अंक भरे भरि भेटिया, पाप सरीरौ जाँहिं॥6॥

कबीर चन्दन का बिड़ा, बैठ्या आक पलास।
आप सरीखे करि लिए जे होत उन पास॥7॥

कबीर खाई कोट की, पांणी पीवे न कोइ
आइ मिलै जब गंग मैं, तब सब गंगोदिक होइ॥8॥

जाँनि बूझि साचहि तजै, करैं झूठ सूँ नेह।
ताको संगति राम जी, सुपिनै हो जिनि देहु॥9॥

कबीर तास मिलाइ, जास हियाली तूँ बसै।
वहि तर वेगि उठाइ, नित को गंजन को सहै॥10॥

केती लहरि समंद की, कत उपजै कत जाइ।
बलिहारी ता दास की, उलटी माँहि समाइ॥11॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
पंच बल धिया फिरि कड़ी, ऊझड़ ऊजड़ि जाइ।
बलिहारी ता दास की, बवकि अणाँवै ठाइ॥12॥
काजल केरी कोठड़ी, तैसा यह संसार।
बलिहारी ता दास की, पैसि जु निकसण हार॥13॥

काजल केरी कोठढ़ी, काजल ही का कोट।
बलिहारी ता दास की, जे रहै राँम की ओट॥12॥

भगति हजारी कपड़ा, तामें मल न समाइ।
साषित काली काँवली, भावै तहाँ बिछाइ॥13॥493॥

(शीर्ष पर वापस)

(29) साध साषीभूत कौ अंग

निरबैरी निहकाँमता, साँई सेती नेह।
विषिया सूँ न्यारा रहै, संतहि का अँग एह॥1॥

संत न छाड़ै संतई, जे कोटिक मिलै असंत।
चंदन भुवंगा बैठिया, तउ सीतलता न तजंत॥2॥

कबीर हरि का भाँवता, दूरैं थैं दीसंत।
तन षीणा मन उनमनाँ, जग रूठड़ा फिरंत॥3॥

कबीर हरि का भावता, झीणाँ पंजर तास।
रैणि न आवै नींदड़ी, अंगि न चढ़ई मास॥4॥
टिप्पणी: ख-अंगनि बाढ़ै घास।

अणरता सुख सोवणाँ, रातै नींद न आइ।
ज्यूँ जल टूटै मंछली यूँ बेलंत बिहाइ॥5॥
टिप्पणी: ख-तलफत रैण बिहाइ।

जिन्य कुछ जाँण्याँ नहीं तिन्ह, सुख नींदणी बिहाइ।
मैंर अबूझी बूझिया, पूरी पड़ी बलाइ॥6॥

जाँण भगत का नित मरण अणजाँणे का राज।
सर अपसर समझै नहीं, पेट भरण सूँ काज॥7॥

जिहि घटिजाँण बिनाँण है, तिहि घटि आवटणाँ घणाँ।
बिन षंडै संग्राम है नित उठि मन सौं झूमणाँ॥8॥

राम बियोगी तन बिकल, ताहि न चीन्है कोइ।
तंबोली के पान ज्यूँ, दिन दिन पीला होइ॥9॥

पीलक दौड़ी साँइयाँ, लोग कहै पिंड रोग।
छाँनै लंधण नित करै, राँम पियारे जोग॥10॥

काम मिलावै राम कूँ, जे कोई जाँणै राषि।
कबीर बिचारा क्या करे, जाकी सुखदेव बोले साषि॥11॥

काँमणि अंग बिरकत भया, रत भया हरि नाँहि।
साषी गोरखनाथ ज्यूँ, अमर भए कलि माँहि॥12॥
टिप्पणी: ख-सिध भए कलि माँहिं।

जदि विषै पियारी प्रीति सूँ, तब अंतर हरि नाँहि।
जब अंतर हरि जी बसै, तब विषिया सूँ चित नाँहि॥13॥

जिहि घट मैं संसौ बसै, तिहिं घटि राम न जोइ।
राम सनेही दास विचि, तिणाँ न संचर होइ॥14॥

स्वारथ को सबको सगा, सब सगलाही जाँणि।
बिन स्वारथ आदर करै, सो हरि की प्रीति पिछाँणि॥15॥

जिहिं हिरदै हरि आइया, सो क्यूँ छाँनाँ होइ।
जतन जतन करि दाबिए, तऊ उजाजा सोइ॥16॥

फाटै दीदे मैं फिरौं, नजरि न आवै कोइ।
जिहि घटि मेरा साँइयाँ, सो क्यूँ छाना होइ॥17॥

सब घटि मेरा साँइयाँ, सूनी सेज न कोइ।
भाग तिन्हौ का हे सखी, जिहि घटि परगड होइ॥18॥

पावक रूपी राँम है, घटि घटि रह्या समाइ।
चित चकमक लागै नहीं, ताथैं धुँवाँ ह्नै ह्नै जाइ॥19॥

कबीर खालिक जागिया, और न जागै कोइ।
कै जागै बिसई विष भर्या, कै दास बंदगी होइ॥20॥

कबीर चाल्या जाइ था, आगैं मिल्या खुदाइ।
मीराँ मुझ सौं यौं कह्या, किनि फुरमाई गाइ॥21॥514॥

(शीर्ष पर वापस)

(30) साध महिमाँ कौ अंग

चंदन की कुटकी भली, नाँ बँबूर की अबराँउँ।
बैश्नों की छपरी भली, नाँ साषत का बड गाउँ॥1॥
टिप्पणी: ख-चंदन की चूरी भली।

पुरपाटण सूबस बसै, आनँद ठाये ठाँइ।
राँम सनेही बाहिरा, ऊँजड़ मेरे भाँइ॥2॥

जिहिं घरि साथ न पूजिये, हरि की सेवा नाँहिं।
ते घर मरड़हट सारषे, भूत बसै तिन माँहि॥3॥

है गै गैंवर सघन घन, छत्रा धजा फहराइ।
ता सुख थैं भिष्या भली, हरि सुमिरत दिन जाइ॥4॥

हैं गै गैंवर सघन घन, छत्रापति की नारि।
तास पटंतर नाँ तुलै, हरिजन की पनिहारि॥5॥

क्यूँ नृप नारी नींदये, क्यूँ पनिहारी कौं माँन।
वामाँग सँवारै पीव कौ, वा नित उठि सुमिरै राँम॥6॥
टिप्पणी: 'वा मांग' या 'वामांग' दोनों पाठ हो सकता है।

कबीर धनि ते सुंदरी, जिनि जाया बैसनों पूत।

राँम सुमिर निरभैं हुवा, सब जग गया अऊत॥7॥

कबीर कुल तौ सो भला, जिहि कुल उपजै दास।
जिहिं कुल दास न ऊपजै, सो कुल आक पलास॥8॥

साषत बाँभण मति मिलै, बैसनों मिलै चंडाल।
अंक माल दे भटिये, माँनों मिले गोपाल॥9॥

राँम जपत दालिद भला, टूटी घर की छाँनि।
ऊँचे मंदिर जालि दे, जहाँ भगति न सारँगपाँनि॥10॥

कबीर भया है केतकी, भवर गये सब दास।
जहाँ जहाँ भगति कबीर की, तहाँ तहाँ राँम निवास॥11॥525॥

(शीर्ष पर वापस)

(31) मधि कौ अंग

कबीर मधि अंग जेको रहै, तौ तिरत न लागै बार।
दुइ दुइ अंग सूँ लाग करि, डूबत है संसार॥1॥

कबीर दुविधा दूरि करि, एक अंग ह्वै लागि।
यहु सीतल वहु तपति है दोऊ कहिये आगि॥2॥

अनल अकाँसाँ घर किया, मधि निरंतर बास।
बसुधा ब्यौम बिरकत रहै, बिनठा हर बिसवास॥3॥

बासुरि गमि न रैंणि गमि, नाँ सुपनै तरगंम।
कबीर तहाँ बिलंबिया, जहाँ छाहड़ी न घंम॥4॥

जिहि पैडै पंडित गए, दुनिया परी बहीर।
औघट घाटी गुर कही, तिहिं चढ़ि रह्या कबीर॥5॥
टिप्पणी: ख-दुनियाँ गई बहीर। औघट घाटी नियरा।

श्रग नृकथै हूँ रह्या, सतगुर के प्रसादि।
चरन कँवल की मौज मैं, रहिसूँ अंतिरु आदि॥6॥

हिंदू मूये राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, दुइ मैं कदे न जाइ॥7॥

दुखिया मूवा दुख कों, सुखिया सुख कौं झूरि।
सदा आनंदी राम के, जिनि सुख दुख मेल्हे दूरि॥8॥

कबीर हरदी पीयरी, चूना ऊजल भाइ।

रामसनेही यूँ मिले, दुन्यूँ बरन गँवाइ॥9॥

काबा फिर कासी भया, राँम भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीभ॥10॥

धरती अरु आसमान बिचि, दोइ तूँबड़ा अबध।
षट दरसन संसै पड़ा, अरु चौरासी सिध॥11॥526॥

(शीर्ष पर वापस)

(32) सारग्राही कौ अंग

षीर रूप हरि नाँव है नीर आन ब्यौहार।
हंस रूप कोई साध है, तात को जांनणहार॥1॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
सार संग्रह सूप ज्यूँ, त्यागै फटकि असार।
कबीर हरि हरि नाँव ले, पसरै नहीं बिकार॥2॥

कबीर साषत कौ नहीं, सबै बैशनों जाँणि।
जा मुख राम न ऊचरै, ताही तन की हाँणि॥2॥

कबीर औगुँण ना गहैं गुँण ही कौ ले बीनि।
घट घट महु के मधुप ज्यूँ, पर आत्म ले चीन्हि॥3॥

बसुधा बन बहु भाँति है, फूल्यो फल्यौ अगाध।
मिष्ट सुबास कबीर गहि, विषमं कहै किहि साथ॥4॥540॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
कबीर सब घटि आत्मा, सिरजी सिरजनहार।
राम कहै सो राम में, रमिता ब्रह्म बिचारि॥5॥
तत तिलक तिहु लोक में, राम नाम निजि सार।
जन कबीर मसोतिकि देया, सोभा अधिक अपार॥6॥

(शीर्ष पर वापस)

(33) विचार कौ अंग

राम नाम सब को कहै, कहिबे बहुत बिचार।
सोई राम सती कहै, सोई कौतिग हार॥1॥

आगि कह्याँ दाझै नहीं, जे नहीं चंपै पाइ।
जब लग भेद न जाँणिये, राम कह्या तौ काइ॥2॥

कबीर सोचि बिचारिया, दूजा कोई नाँहि।
आपा पर जब चीन्हिया, तब उलटि समाना माँहि॥3॥

कबीर पाणी केरा पूतला, राख्या पवन सँवारि।
नाँनाँ बाँणी बोलिया, जोति धरी करतारि॥4॥

नौ मण सूत अलूझिया, कबीर घर घर बारि।
तिनि सुलझाया बापुड़े, जिनि जाणीं भगति मुरारि॥5॥

आधी साषी सिरि कटैं, जोर बिचारी जाइ।
मनि परतीति न ऊपजे, तौ राति दिवस मिलि गाइ॥6॥
टिप्पणी: ख-भरि गाइ।

सोई अषिर सोइ बैयन, जन जू जू बाचवंत।
कोई एक मेलै लवणि, अमीं रसाइण हूँत॥7॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर भूल दंग में लोग कहैं यहु भूल।
कै रमइयौ बाट बताइसी, कै भूलत भूलैं भूल॥8॥

हरि मोत्याँ की माल है, पोई काचै तागि।
जतन करि झंटा घँणा, टूटेगी कहूँ लागि॥8॥

मन नहीं छाड़ै बिषै, बिषै न छाड़ै मन कौं।
इनकौं इहै सुभाव, पूरि लागी जुग जन कौं॥9॥

खंडित मूल बिनास कहौ किम बिगतह कीजै।
ज्यूँ जल में प्रतिब्यंब त्यूँ सकल रामहिं जांणीजै॥10॥

सो मन सो तन सो बिषे, सो त्रिभवन पति कहूँ कस।
कहै कबीर ब्यंदहु नरा, ज्यूँ जल पूर्‌या सक रस॥11॥549॥

(शीर्ष पर वापस)

(34) उपदेश कौ अंग

हरि जी यहै बिचारिया, साषी कहौ कबीर।
भौसागर मैं जीव है, जे कोई पकड़ैं तीर॥1॥

कली काल ततकाल है, बुरा करौ जिनि कोइ।
अनबावै लोहा दाहिणै बोबै सु लुणता होइ॥2॥
टिप्पणी: ख-बुरा न करियो कोइ।
ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
जीवन को समझै नहीं, मुबा न कहै संदेस।
जाको तन मन सौं परचा नहीं, ताकौ कौण धरम उपदेस॥3॥

कबीर संसा जीव मैं, कोई न कहै समझाइ।

बिधि बिधि बाणों बोलता सो कत गया बिलाइ॥3॥
टिप्पणी: ख-नाना बाँणी बोलता।

कबीर संसा दूरि करि जाँमण मरण भरंम।
पंचतत तत्तहि मिले सुरति समाना मंन॥4॥

ग्रिही तौ च्यंता घणीं, बैरागी तौ भीष।
दुहुँ कात्याँ बिचि जीव है, दौ हमैं संतौं सीष॥5॥

बैरागी बिरकत भला, गिरहीं चित्त उदार।
दुहै चूकाँ रीता पड़ै, ताकूँ वार न पार॥6॥

जैसी उपजै पेड़ मूँ, तैसी निबहै ओरि।
पैका पैका जोड़ताँ, जुड़िसा लाष करोड़ि॥7॥

कबीर हरि के नाँव सूँ, प्रीति रहै इकतार।
तौ मुख तैं मोती झड़ैं, हीरे अंत न पार॥8॥
टिप्पणी: ख-सुरति रहै इकतार। हीरा अनँत अपार॥

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ॥9॥

कोइ एक राखै सावधान, चेतनि पहरै जागि।
बस्तन बासन सूँ खिसै, चोर न सकई लागि॥10॥559॥

(शीर्ष पर वापस)

(35) बेसास कौ अंग

जिनि नर हरि जठराँह, उदिकै थैं षंड प्रगट कियौ।
सिरजे श्रवण कर चरन, जीव जीभ मुख तास दीयो॥

उरध पाव अरध सीस, बीस पषां इम रषियौ।
अंन पान जहां जरै, तहाँ तैं अनल न चषियौ॥

इहिं भाँति भयानक उद्र में, न कबहू छंछरै।
कृसन कृपाल कबीर कहि, इम प्रतिपालन क्यों करै॥1॥

भूखा भूखा क्या करै, कहा सुनावै लोग।
भांडा घड़ि जिनि मुख दिया, सोई पूरण जोग॥2॥

रचनहार कूँ चीन्हि लै, खैचे कूँ कहा रोइ।
दिल मंदिर मैं पैसि करि, तांणि पछेवड़ा सोइ॥3॥

राम नाम करि बोहड़ा, बांही बीज अधाइ।
अंति कालि सूका पड़ै, तौ निरफल कदे न जाइ॥4॥

च्यंतामणि मन में बसै, सोई चित्त मैं आंणि।
बिन च्यंता च्यंता करै, इहै प्रभू की बांणि॥5॥

कबीर का तूँ चितवै, का तेरा च्यंत्या होइ।
अणच्यंत्या हरिजी करै, जो तोहि च्यंत न होइ॥6॥

करम करीमां लिखि रह्या, अब कछू लिख्या न जाइ।
मासा घट न तिल बथै, जौ कोटिक करै उपाइ॥7॥

जाकौ चेता निरमया, ताकौ तेता होइ।
रती घटै न तिल बधै, जौ सिर कूटै कोइ॥8॥
टिप्पणी: इसके आगे ख प्रति में यह दोहा है-

करीम कबीर जु विह लिख्या, नरसिर भाग अभाग।
जेहूँ च्यंता चितवै, तऊ स आगै आग॥10॥

च्यंता न करि अच्यंत रहु, सांई है संभ्रथ।
पसु पंषरू जीव जंत, तिनको गांडि किसा ग्रंथ॥9॥

संत न बांधै गाँठड़ी, पेट समाता लेइ।
सांई सूँ सनमुख रहै, जहाँ माँगै तहाँ देइ॥10॥

राँम राँम सूँ दिल मिलि, जन हम पड़ी बिराइ।
मोहि भरोसा इष्ट का, बंदा नरकि न जाइ॥11॥

कबीर तूँ काहे डरै, सिर परि हरि का हाथ।
हस्ती चढ़ि नहीं डोलिये, कूकर भूसैं जु लाष॥12॥

मीठा खाँण मधूकरी, भाँति भाँति कौ नाज।
दावा किसही का नहीं, बित बिलाइति बड़ राज॥13॥
टिप्पणी: ख-शिर परि सिरजणहार।
हस्ती चढ़ि क्या डोलिए। भुसैं हजार।
ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
हसती चढ़िया ज्ञान कै, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, पड़ा भुसौ झषि माँरि॥15॥

मोनि महातम प्रेम रस, गरवा तण गुण नेह।
ए सबहीं अह लागया, जबहीं कह्या कुछ देह॥14॥

माँगण मरण समान है, बिरला वंचै कोइ।
कहै कबीर रघुनाथ सूँ, मतिर मँगावै माहि॥15॥

टिप्पणी: ख-जगनाथ सौं।

पांडल पंजर मन भवर, अरथ अनूपम बास।
राँम नाँम सींच्या अँमी, फल लागा वेसास॥16॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
कबीर मरौं पै मांगौं नहीं, अपणै तन कै काज।
परमारथ कै कारणै, मोहिं माँगत न आवै लाज॥20॥
भगत भरोसै एक कै, निधरक नीची दीठि।
तिनकू करम न लागसी, राम ठकोरी पीठि॥21॥

मेर मिटी मुकता भया, पाया ब्रह्म बिसास।
अब मेरे दूजा को नहीं, एक तुम्हारी आस॥17॥

जाकी दिल में हरि बसै, सो नर कलपै काँइ।
एक लहरि समंद की, दुख दलिद्र सब जाँइ॥18॥

पद गाये लैलीन ह्नै, कटी न संसै पास।
सबै पिछीड़ै, थोथरे, एक बिनाँ बेसास॥19॥

गावण हीं मैं रोज है, रोवण हीं में राग।
इक वैरागी ग्रिह मैं, इक गृही मैं वैराग॥20॥

गाया तिनि पाया नहीं, अणगाँयाँ थैं दूरि।
जिनि गाया बिसवास सूँ, तिन राम रह्या भरिपूरि॥21॥580॥

(शीर्ष पर वापस)

(36) पीव पिछाँणन कौ अंग

संपटि माँहि समाइया, सो साहिब नहीसीं होइ।
सफल मांड मैं रमि रह्या, साहिब कहिए सोइ॥1॥

रहै निराला माँड थै, सकल माँड ता माँहि।
कबीर सेवै तास कूँ, दूजा कोई नाँहि॥2॥

भोलै भूली खसम कै, बहुत किया बिभचार।
सतगुर गुरु बताइया, पूरिबला भरतार॥3॥

जाकै मह माथा नहीं, नहीं रूपक रूप।
पुहुप बास थैं पतला ऐसा तत अनूप॥4॥584॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
चत्रा भुजा कै ध्यान मैं, ब्रिजबासी सब संत।
कबीर मगन ता रूप मैं, जाकै भुजा अनंत॥5॥

(शीर्ष पर वापस)

(37) बिर्कताई कौ अंग

मेरे मन मैं पड़ि गई, ऐसी एक दरार।
फटा फटक पषाँण ज्यूँ, मिल्या न दूजी बार॥1॥

मन फाटा बाइक बुरै, मिटी सगाई साक।
जौ परि दूध तिवास का, ऊकटि हूवा आक॥2॥

चंदन माफों गुण करै, जैसे चोली पंन।
दोइ जनाँ भागां न मिलै, मुकताहल अरु मंन॥3॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

मोती भागाँ बीधताँ, मन मैं बस्या कबोल।
बहुत सयानाँ पचि गया, पड़ि गई गाठि गढ़ोल॥4॥

मोती पीवत बीगस्या, सानौं पाथर आइ राइ।
साजन मेरी निकल्या, जाँमि बटाऊँ जाइ॥5॥

पासि बिनंठा कपड़ा, कदे सुरांग न होइ।
कबीर त्याग्या ग्यान करि, कनक कामनी दोइ॥4॥

चित चेतनि मैं गरक ह्नै, चेत्य न देखैं मंत।
कत कत की सालि पाड़िये, गल बल सहर अनंत॥5॥

जाता है सो जाँण दे, तेरी दसा न जाइ।
खेवटिया की नाव ज्यूँ, धणों मिलैंगे आइ॥6॥

नीर पिलावत क्या फिरै, सायर घर घर बारि।
जो त्रिषावंत होइगा, तो पीवेगा झष मारि॥7॥

सत गंठी कोपीन है, साध न मानै संक।
राँम अमलि माता रहै, गिणैं इंद्र कौ रंक॥8॥

दावै दाझण होत है, निरदावै निरसंक।
जे नर निरदावै रहैं, ते गणै इंद्र कौ रंक॥9॥

कबीर सब जग हंडिया, मंदिल कंधि चढ़ाइ।
हरि बिन अपनाँ को नहीं, देखे ठोकि बजाइ॥10॥514॥

(शीर्ष पर वापस)

(38) सम्रथाई कौ अंग

नाँ कुछ किया न करि सक्या, नाँ करणे जोग सरीर।
जे कुछ किया सु हरि किया, ताथै भया कबीर कबीर॥1॥

कबीर किया कछू न होत है, अनकीया सब होइ।
जे किया कछु होत है, तो करता औरे कोइ॥2॥

जिसहि न कोई तिसहि तूँ, जिस तूँ तिस सब कोइ।
दरिगह तेरी साँईंयाँ, नाँव हरू मन होइ॥3॥

एक खड़े ही लहैं, और खड़ा बिललाइ।
साईं मेरा सुलषना, सूता देइ जगाइ॥4॥

सात समंद की मसि करौं, लेखनि सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुण लिख्या न जाइ॥5॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

बाजण देह बजंतणी, कुल जंतड़ी न बेड़ि।
तुझै पराई क्या पड़ी, तूँ आपनी निबेड़ि॥8॥

अबरन कौं का बरनिये, मोपै लख्या न जाइ।
अपना बाना बाहिया, कहि कहि थाके माइ॥6॥

झल बाँवे झल दाँहिनैं, झलहिं माँहि ब्यौहार।
आगैं पीछै झलमई, राखै सिरजनहार॥7॥

साईं मेरा बाँणियाँ, सहजि करै ब्यौपार।
बिन डाँडी बिन पालड़ै, तोलै सब संसार॥8॥
टिप्पणी: ख- ब्यौहार।

कबीर वार्‌या नाँव परि, कीया राई लूँण।
जिसहिं चलावै पंथ तूँ, तिसहिं भुलावै कौंण॥9॥

कबीर करणी क्या करै, जे राँम न कर सहाइ।
जिहिं जिहिं डाली पग धरै, सोई नवि नवि जाइ॥10॥

जदि का माइ जनमियाँ, कहूँ न पाया सुख।
डाली डाली मैं फिरौं, पाती पाती दुख॥11॥

साईं सूँ सब होत है, बंदे थै कछु नाहिं।
राई थैं परबत करै, परबत राई माहिं॥12॥606॥
टिप्पणी: ख प्रति में बारहवें दोहे के स्थान पर यह दोहा है-
रैणाँ दूरां बिछोड़ियां, रहु रे संषम झूरि।

देवल देवलि धाहिणी, देसी अंगे सूर॥13॥

(शीर्ष पर वापस)

(39) कुसबद कौ अंग

टिप्पणी: ख प्रति में इस अंग का पहला दोहा यह है-
साईं सौं सब होइगा, बंदे थैं कुछ नाहिं।
राई थैं परबत करे, परबत राई माहिं॥1॥

अणी सुहेली सेल की, पड़ताँ लेइ उसास।
चोट सहारै सबद की, तास गुरु मैं दास॥1॥

खूंदन तो धरती सहै, बाढ़ सहै बनराइ।
कुसबद तो हरिजन सहै, दूजै सह्या न जाइ॥2॥

सीतलता तब जाणिए, समिता रहे समाइ।
पष छाड़ै निरपष रहै, सबद न दूष्या जाइ॥3॥
टिप्पणी: ख काट सहैं। साधू सहै।

कबीर सीतलता भई, पाया ब्रह्म गियान।
जिहिं बैसंदर जग जल्या, सो मेरे उदिक समान॥4॥610॥

(शीर्ष पर वापस)

(40) सबद कौ अंग

कबीर सबद सरीर मैं, बिनि गुण बाजै तंति।
बाहरि भीतरि भरि रह्या, ताथैं छूटि भरंति॥1॥

सती संतोषी सावधान, सबद भेद सुबिचार।
सतगुर के प्रसाद थैं, सहज सील मत सार॥2॥

सतगुर ऐसा चाहिए, जैसा सिकलीगर होइ।
सबद मसकला फेरि करि, देह द्रपन करे सोइ॥3॥

सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जु बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पड़ा कलेजे छेक॥4॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
सहज तराजू आँणि करि, सन रस देख्या तोलि।
सब रस माँहै जीभ रत, जे कोइ जाँणै बोलि॥5॥

हरि रस जे जन बेधिया, सतगुण सी गणि नाहि।
लागी चोट सरीर में, करक कलेजे माँहि॥5॥

ज्यूँ ज्यूँ हरिगुण साभलूँ, त्यूँ त्यूँ लागै तीर।
साँठी साँठी झड़ि पड़ि, झलका रह्या सरीर॥6॥

ज्यूँ ज्यूँ हरिगुण साभलूँ, त्यूँ त्यूँ लागै तीर।
लागै थैं भागा नहीं, साहणहार कबीर॥7॥

सारा बहुत पुकारिया, पीड़ पुकारै और।
लागी चोट सबद की, रह्या कबीरा ठौर॥8॥618॥
टिप्पणी: ख प्रति में यह दोहा नहीं है।

(शीर्ष पर वापस)

(41) जीवन मृतक कौ अंग

जीवन मृतक ह्नै रहै, तजै जगत की आस।
तब हरि सेवा आपण करै, मति दुख पावै दास॥1॥
टिप्पणी: ख प्रति में इस अंग में पहला दोहा यह है-

जिन पांऊँ सै कतरी हांठत देत बदेस।
तिन पांऊँ तिथि पाकड़ौ, आगण गया बदेस॥1॥

कबीर मन मृतक भया, दुरबल भया सरीर।
तब पैडे लागा हरि फिरै, कहत कबीर कबीर॥2॥

कबीर मरि मड़हट रह्या, तब कोइ न बूझै सार।
हरि आदर आगै लिया, ज्यूँ गउ बछ की लार॥3॥

घर जालौं घर उबरे, घर राखौं घर जाइ।
एक अचंभा देखिया, मड़ा काल कौं खाइ॥4॥

मरताँ मरताँ जग मुवा, औसर मुवा न कोइ।
कबीर ऐसैं मरि मुवा, ज्यूँ बहूरि न मरना होइ॥5॥

बैद मुवा रोगी मुवा, मुवा सकल संसार।
एक कबीरा ना मुवा, जिनि के राम अधार॥6॥

मन मार्‌या ममता मुई, अहं गई सब छूटि।
जोगी था सो रमि गया, आसणि रही विभूति॥7॥

जीवन थै मरिबो भलौ, जौ मरि जानै कोइ।
मरनै पहली जे मरे, तौ कलि अजरावर होइ॥8॥

खरी कसौटी राम की, खोटा टिकैं न कोइ।

राम कसौटी सो टिकै, जो जीवन मृतक होइ॥9॥

आपा मेट्या हरि मिलै, हरि मेट्या सब जाइ।
अकथ कहाणी प्रेम की, कह्या न को पत्याइ॥10॥

निगु साँवाँ वहि जायगा, जाकै थाघी नहीं कोइ।
दीन गरीबी बंदिगी, करता होइ सु होइ॥11॥

दीन गरीबी दीन कौ, दुँदर को अभिमान।
दुँदर दिल विष सूँ भरी, दीन गरीबी राम॥12॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहा है-
कबीर नवे स आपको, पर कौं नवे न कोइ।
घालि तराजू तौलिये, नवे स भारी होइ॥14॥

बुरा बुरा सब को कहै, बुरा न दीसे कोइ।
जे दिल खोजौ आपणो, बुरा न दीसे कोइ॥15॥

कबीर चेरा संत का, दासिन का परदास।
कबीर ऐसे ह्नै रह्या, ज्यूँ पांऊँ तलि घास॥13॥

रोड़ा ह्नै रही बाट का, तजि पादंड अभिमान।
ऐसा जे जन ह्नै रहे, ताहि मिले भगवान॥14॥632॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देइ।
हरिजन ऐसा चाहिए, जिसी जिमीं की खेह॥18॥

खेह भई तो क्या भया, उड़ि उड़ि लागे अंग।
हरिजन ऐसा चाहिए, पाँणीं जैसा रंग॥19॥

पाणीं भया तो क्या भया, ताता सीता होइ।
हरिजन ऐसा चाहिए, जैसा हरि ही होइ॥20॥

हरि भया तो क्या भया, जैसों सब कुछ होइ।
हरिजन ऐसा चाहिए, हरि भजि निरमल होइ॥21॥

(शीर्ष पर वापस)

(42) चित कपटी कौ अंग

कबीर तहाँ न जाइए, जहाँ कपट का हेत।
जालूँ कली कनीर की, तन रातो मन सेत॥1॥
टिप्पणी: ख प्रति में इस अंग का पहला दोहा यह है-

नवणि नयो तो का भयो, चित्त न सूधौं ज्यौंह।
पारधिया दूणा नवै, मिघ्राटक ताह॥1॥

संसारी साषत भला, कँवारी कै भाइ।
दुराचारी वेश्नों बुरा, हरिजन तहाँ न जाइ॥2॥

निरमल हरि का नाव सों, के निरमल सुध भाइ।
के ले दूणी कालिमा, भावें सों मण साबण लाइ॥3॥635॥

(शीर्ष पर वापस)

(43) गुरुसिष हेरा कौ अंग

ऐसा कोई न मिले, हम कों दे उपदेस।
भौसागर में डूबता, कर गहि काढ़े केस॥1॥

ऐसा कोई न मिले, हम को लेइ पिछानि।
अपना करि किरपा करे, ले उतारै मैदानि॥2॥

ऐसा कोई ना मिले, राम भगति का गीत।
तनमन सौपे मृग ज्यूँ, सुने बधिक का गीत॥3॥

ऐसा कोई ना मिले, अपना घर देइ जराइ।
पंचूँ लरिका पटिक करि, रहै राम ल्यौ लाइ॥4॥

ऐसा कोई ना मिले, जासौ रहिये लागि।
सब जग जलता देखिये, अपणीं अपणीं आगि॥5॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

ऐसा कोई न मिले, बूझै सैन सुजान।
ढोल बजंता ना सुणौं, सुरवि बिहूँणा कान॥6॥

ऐसा कोई ना मिले, जासूँ कहूँ निसंक।
जासूँ हिरदे की कहूँ, सो फिरि माडै कंक॥6॥

ऐसा कोई ना मिले, सब बिधि देइ बताइ।
सुनि मण्डल मैं पुरिष एक, ताहि रहै ल्यो लाइ॥7॥

हम देखत जग जात है, जग देखत हम जाँह।
ऐसा कोई ना मिले, पकड़ि छुड़ावै बाँह॥8॥

तीनि सनेही बहु मिले, चौथे मिले न कोइ।
सबे पियारे राम के, बैठे परबसि होइ॥9॥

माया मिले महोर्बती, कूड़े आखै बेउ।
कोइ घाइल बेध्या ना मिलै, साईं हंदा सैण॥10॥

सारा सूरा बहु मिलें, घाइला मिले न कोइ।
घाइल ही घाइल मिले, तब राम भगति दिढ़ होइ॥11॥

टिप्पणी: ख-जब घाइल ही घाइल मिलै।
प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिलै न कोइ।

प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, तब सब बिष अमृत होइ॥12॥
टिप्पणी: ख-जब प्रेमी ही प्रेमी मिलें।

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जै चलै हमारे साथि॥13॥648॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

जाणै ईछूँ क्या नहीं, बूझि न कीया गौन।
भूलौ भूल्या मिल्या, पंथ बतावै कौन॥15॥

कबीर जानींदा बूझिया, मारग दिया बताइ।
चलता चलता तहाँ गया, जहाँ निरंजन राइ॥16॥

(शीर्ष पर वापस)

(44) हेत प्रीति सनेह कौ अंग

कमोदनी जलहरि बसै, चंदा बसै अकासि।
जो जाही का भावता, सो ताही कै पास॥1॥
टिप्पणी: ख-जो जाही कै मन बसै।

कबीर गुर बसै बनारसी, सिष समंदा तीर।
बिसार्‌या नहीं बीसरे, जे गुंण होइ सरीर॥2॥

जो है जाका भावता, जदि तदि मिलसी आइ।
जाकी तन मन सौंपिया, सो कबहूँ छाँड़ि न जाइ॥3॥

स्वामी सेवक एक मत, मन ही मैं मिलि जाइ।
चतुराई रीझै नहीं, रीझै मन कै भाइ॥4॥

(शीर्ष पर वापस)

(45) सूरा तन कौ अंग

काइर हुवाँ न छूटिये, कछु सूरा तन साहि।

भरम भलका दूरि करि, सुमिरण सेल सँबाहि॥1॥

षूँड़ै षड़ा न छूटियो, सुणि रे जीव अबूझ।
कबीर मरि मैदान मैं, करि इंद्राँ सूँ झूझ॥2॥

कबीर साईं सूरिवाँ, मन सूँ माँडै झूझ।
पंच पयादा पाड़ि ले, दूरि करै सब दूज॥3॥
टिप्पणी: ख-पंच पयादा पकड़ि ले।

सूरा झूझै गिरदा सूँ, इक दिसि सूर न होइ।
कबीर यौं बिन सूरिवाँ, भला न कहिसी कोइ॥4॥

कबीर आरणि पैसि करि, पीछै रहै सु सूर।
सांईं सूँ साचा भया, रहसी सदा हजूर॥5॥
टिप्पणी: ख-जाके मुख षटि नूर।

गगन दमाँमाँ बाजिया, पड़ा निसानै घाव।
खेत बुहार्‌या सूरिवै, मुझ मरणे का चाव॥6॥

कबीर मेरै संसा को नहीं, हरि सूँ लागा हेत।
काम क्रोध सूँ झूझणाँ, चौड़े माँड्या खेत॥7॥

सूरै सार सँबाहिया, पहर्‌या सहज संजोग।
अब कै ग्याँन गयंद चढ़ि, खेत पड़न का जोग॥8॥

सूरा तबही परषिये, लड़ै धणीं के हेत।
पुरिजा पुरिजा ह्नै पड़ै, तऊ न छाड़ै खेत॥9॥

खेत न छाड़ै सूरिवाँ, झूझै द्वै दल माँहि।
आसा जीवन मरण की, मन आँणे नाहि॥10॥

अब तो झूझ्याँही वणौं, मुढ़ि चाल्या घर दूरि।
सिर साहिब कौ सौंपता, सोच न कीजै सूरि॥11॥

अब तो ऐसी ह्नै पड़ी, मनकारु चित कीन्ह।
मरनै कहा डराइये, हाथि स्यँधौरा लीन्ह॥12॥

जिस मरनै थे जग डरै, सो मरे आनंद।
कब मारिहूँ कब देखिहूँ, पूरन परमाँनंद॥13॥

कायर बहुत पमाँवही बहकि न बोलै सूर।
कॉम पड़्याँ ही जाँणिहै, किसके मुख परि नूर॥14॥

जाइ पूछौ उस घाइलै, दिवस पीड निस जाग।

बाँहणहारा जाणिहै, कै जाँणै जिस लाग॥15॥

घाइल घूमै गहि भर्‌या, राख्या रहे न ओट।
जतन कियाँ जावै नहीं, बणीं मरम की चोट॥16॥

ऊँचा विरष अकासि फल, पंषी मूए झूरि।
बहुत सयाँने पचि रहे, फल निरमल परि दूरि॥17॥
टिप्पणी: ख-पंथी मूए झूरि।

दूरि भया तौ का भया, सिर दे नेड़ा होइ।
जब लग सिर सौपे नहीं, कारिज सिधि न होइ॥18॥

कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारै हाथि करि, सो पैसे घर माँहि॥19॥

कबीर निज घर प्रेम का, मारग अगम अगाध।
सीर उतारि पग तलि धरै, तब निकटि प्रेम का स्वाद॥20॥

प्रेम न खेती नींपजे, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ॥21॥

सीस काटि पासंग दिया, जीव सरभरि लीन्ह।
जाहि भावे सो आइ ल्यौ, प्रेम आट हँम कीन्ह॥22॥

सूरै सीस उतारिया, छाड़ी तन की आस।
आगै थैं हरि मुल किया, आवत देख्या दास॥23॥

भगति दुहेली राम की, नहिं कायर का काम।
सीस उतारै हाथि करि, सो लेसी हरि नाम॥24॥

भगति दुहेली राँम की, नहिं जैसि खाड़े की धार।
जे डोलै तो कटि पड़े, नहीं तो उतरै पार॥25॥

भगति दुहेली राँम की, जैसी अगनि की झाल।
डाकि पड़ै ते ऊबरे, दाधे कौंतिगहार॥26॥

कबीर घोड़ा प्रेम का, चेतनि चढ़ि असवार।
ग्याँन षड़ग गहि काल सिरि, भली मचाई मार॥27॥

कबीरा हीरा वणजिया, महँगे मोल अपार।
हाड़ गला माटी गली, सिर साटै ब्यौहार॥28॥

जेते तारे रैणि के, तेते बैरी मुझ।
घड़ सूली सिर कंगुरै, तऊ न बिसारौं तुझ॥29॥

जे हारर्‌या तौ हरि सवां, जे जीत्या तो डाव।
पारब्रह्म कूँ सेवता, जे सिर जाइ त जाव॥30॥

सिर माटै हरि सेविए, छाड़ि जीव की बाँणि।
जे सिर दीया हरि मिलै, तब लगि हाँणि न जाणि॥31॥
टिप्पणी: ख-सिर साटै हरि पाइए।

टूटी बरत अकास थै, कोई न सकै झड़ झेल।
साथ सती अरु सूर का, अँणी ऊपिला खेल॥32॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

ढोल दमामा बाजिया, सबद सुणइ सब कोइ।
जैसल देखि सती भजे, तौ दुहु कुल हासी होइ॥32॥

सती पुकारै सलि चढ़ी, सुनी रे मीत मसाँन।
लोग बटाऊ चलि गए, हम तुझ रहे निदान॥33॥

सती बिचारी सत किया, काठौं सेज बिछाइ।
ले सूती पीव आपणा, चहुँ दिसि अगनि लगाइ॥34॥

सती सूरा तन साहि करि, तन मन कीया घाँण।
दिया महौल पीव कूँ, तब मड़हट करै बषाँण॥35॥

सती जलन कूँ नीकली, पीव का सुमरि सनेह।
सबद सुनन जीव निकल्या, भूति गई सब देह॥36॥

सती जलन कूँ नीकली, चित धरि एकबमेख।
तन मन सौंप्या पीव कूँ, तब अंतर रही न रेख॥37॥
टिप्पणी: ख-जलन को नीसरी।

हौं तोहि पूछौं हे सखी, जीवत क्यूँ न मराइ।
मूंवा पीछे सत करै, जीवत क्यूँ न कराइ॥38॥

कबीर प्रगट राम कहि, छाँनै राँम न गाइ।
फूस कौ जोड़ा दूरि करि, ज्यूँ बहुरि लागै लाइ॥39॥

कबीर हरि सबकूँ भजै, हरि कूँ भजै न कोइ।
जब लग आस सरीर की, तब लग दास न होइ॥40॥

आप सवारथ मेदनी, भगत सवारथ दास।
कबीर राँम सवारथी, जिनि छाड़ीतन की आस॥41॥696॥

(शीर्ष पर वापस)

(46) काल कौ अंग

झूठे सुख कौ सुख कहैं, मानत है मन मोद।
खलक चवीणाँ काल का, कुछ मुख मैं कुछ गोद॥1॥

आज काल्हिक जिस हमैं, मारगि माल्हंता।
काल सिचाणाँ नर चिड़ा, औझड़ औच्यंताँ॥2॥

काल सिहाँणै यों खड़ा, जागि पियारो म्यंत।
रामसनेही बाहिरा तूँ क्यूँ सोवै नच्यंत॥3॥

सब जग सूता नींद भरि, संत न आवै नींद।
काल खड़ा सिर उपरै, ज्यूँ तोरणि आया बींद॥4॥
टिप्पणी: ख-निसह भरि।

आज कहै हरि काल्हि भजौगा, काल्हि कहे फिरि काल्हि।
आज ही काल्हि करंतड़ाँ, औसर जासि चालि॥5॥

कबीर पल की सुधि नहीं, करै काल्हि का साज।
काल अच्यंता झड़पसी, ज्यूँ तीतर को बाज॥6॥

कबीर टग टग चोघताँ, पल पल गई बिहाइ।
जीव जँजाल न छाड़ई, जम दिया दमामा आइ॥7॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

जूरा कूंती, जीवन सभा, काल अहेड़ी बार।
पलक बिना मैं पाकड़ै, गरव्यो कहा गँवार॥8॥

मैं अकेला ए दोइ जणाँ छेती नाँहीं काँइ।
जे जम आगै ऊबरो, तो जुरा पहूँती आइ॥8॥

बारी-बारी आपणीं, चेले पियारे म्यंत।
तेरी बारी रे जिया, नेड़ी आवै निंत॥9॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

मालन आवत देखि करि, कलियाँ करी पुकार।
फूले फूले चुणि लिए, काल्हि हमारी बार॥11॥

बाढ़ी आवत देखि करि, तरवर डोलन लाग।
हम कटे की कुछ नहीं, पंखेरू घर भाग॥12॥

फाँगुण आवत देखि करि, बन रूना मन माँहि।
ऊँची डाली पात है, दिन दिन पीले थाँहि॥13॥

पात पंडता यों कहै, सुनि तरवर बणराइ।
अब के बिछुड़े ना मिलै, कहि दूर पड़ैगे जाइ॥14॥

दों की दाधी लाकड़ी, ठाढ़ी करै पुकार।
मति बसि पड़ौं लुहार के, जालै दूजी बार॥10॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
मेरा बीर लुहारिया, तू जिनि जालै मोहि।
इक दिन ऐसा होइगा, हूँ जालौंगी तोहि॥15॥

जो ऊग्या सो आँथवै, फूल्या सो कुमिलाइ।
जो चिणियाँ सो ढहि पड़ै, जो आया सो जाइ॥11॥

जो पहर्‌या सो फाटिसी, नाँव धर्‌या सो जाइ।
कबीर सोइ तत्त गहि, जो गुरि दिया बताइ॥12॥

निधड़क बैठा राम बिन, चेतनि करै पुकार।
यहु तन जल का बुदबुदा, बिनसत नाहीं बार॥13॥

पाँणी केरा बुदबुदा, इसी हमारी जाति।
एक दिनाँ छिप जाँहिंगे, तारे ज्यूँ परभाति॥14॥
टिप्पणी: ख-एक दिनाँ नटि जाहिगे, ज्यूँ तारा परभाति।
ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर पंच पखेरुवा, राखे पोष लगाइ।
एक जु आया पारधी, ले गयो सबै उड़ाइ॥21॥

कबीर यहु जग कुछ नहीं, षिन षारा षिन मीठ।
काल्हि जु बैठा माड़ियां, आज नसाँणाँ दीठ॥15॥
टिप्पणी: ख-काल्हि जु दीठा मैंड़िया।

कबीर मंदिर आपणै, नित उठि करती आलि।
मड़हट देष्याँ डरपती, चौड़े दीन्हीं जालि॥16॥
टिप्पणी: ख-बैठी करतौं आलि।

मंदिर माँहि झबूकती, दीवा केसी जोति।
हंस बटाऊ चलि गया, काढ़ौ घर की छोति॥17॥

ऊँचा मंदिर धौलहर, माटी चित्री पौलि।
एक राम के नाँव बिन, जँम पाड़गा रौलि॥18॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

काएँ चिणावै मालिया, चुनै माटी लाइ।
मीच सुणैगी पायणी, उधोरा लैली आइ॥26॥

काएँ चिणावै मालिया, लाँबी भीति उसारि।
घर तौ साढ़ी तीनि हाथ, घणौ तौ पौंणा चारि॥27॥

ऊँचा महल चिणाँइयाँ, सोवन कलसु चढ़ाइ।
ते मंदर खाली पड़ा, रहे मसाणी जाइ॥28॥

कबीर कहा गरबियो, काल गहै कर केस।
नाँ जाँणै कहाँ मारिसी, कै घर कै परदेस॥19॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

इहर अभागी माँछली, छापरि माँणी आलि।
डाबरड़ा छूटै नहीं, सकै त समंद सँभालि॥30॥

मँछी हुआ न छूटिए, झीवर मेरा काल।
जिहिं जिहिं डाबर हूँ फिरौ, तिहि तिहिं माँड़ै जाल॥31॥

पाँणी माँहि ला माँछली, सक तौ पाकड़ि तीर।
कड़ी कूद की काल की, आइ पहुँता कीर॥32॥

मंद बिकंता देखिया, झीवर के करवारि।
ऊँखड़िया रत बालियाँ, तुम क्यूँ बँधे जालि॥33॥

पाँणी मँहि घर किया, चेजा किया पतालि।
पासा पड़ा करम का, यूँ हम बीधे जाल॥34॥

सूकण लगा केवड़ा, तूटीं अरहर माल।
पाँणी की कल जाणतां, गया ज सीचणहार॥35॥

कबीर जंत्रा न बाजई, टूटि गए सब तार।
जंत्रा बिचारा क्या करै, चलै बजावणहार॥20॥
टिप्पणी: ख-कबीर जंत्रा न बाजई।

धवणि धवंती रहि गई, बुझि गए अंगार।
अहरणि रह्या ठमूकड़ा, जब उठि चले लुहार॥21॥
टिप्पणी: ख-ठमेकड़ा उठि गए।
ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर हरणी दूबली, इस हरियालै तालि।
लख अहेड़ी एक जीव, कित एक टालौ भालि॥38॥

पंथी ऊभा पंथ सिरि, बुगचा बाँध्या पूठि।
मरणाँ मुँह आगै खड़ा, जीवण का सब झूठ॥22॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
जिसहि न हरण इत जागि, सी क्यूँ लौड़े मीत।
जैसे पर घर पाहुण, रहै उठाए चीत॥40॥

यहु जिव आया दूर थैं, अजौ भी जासी दूरि।
बिच कै बासै रमि रह्या, काल रह्या सर पूरि॥23॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

कबीर गफिल क्या फिरै, सोवै कहा न चीत।
एवड़ माहि तै ले चल्या, भज्या पकड़ि षरीस॥45॥

साईं सू मिसि मछीला, के जा सुमिरै लाहूत।
कबही उझंकै कटिसी, हुँण ज्यों बगमंकाहु॥46॥

राम कह्या तिनि कहि लिया, जुरा पहूँती आइ।
मंदिर लागै द्वार यै, तब कुछ काढणा न जाइ॥24॥

बरिया बीती बल गया, बरन पलट्या और।
बिगड़ीबात न बाहुणै, कर छिटक्याँ कत ठौर॥25॥
टिप्पणी: ख-कर छूटाँ कत ठौर।

बरिया बीती बल गया, अरू बुरा कमाया।
हरि जिन छाड़ै हाथ थैं, दिन नेड़ा आया॥26॥

कबीर हरि सूँ हेत करि, कूड़ै चित्त न लाव।
बाँध्या बार षटीक कै, तापसु किती एक आव॥27॥
टिप्पणी: ख- कड़वे तन लाव।

बिष के बन मैं घर किया, सरप रहे लपटाइ।
ताथैं जियरे डरैं गह्या, जागत रैणि बिहाइ॥28॥

कबीर सब सुख राम है, और दुखाँ की रासि।
सुर नर मुनिवर असुर सब, पड़े काल की पासि॥29॥

काची काया मन अथिर, थिर थिर काँम करंत।
ज्यूँ ज्यूँ नर निधड़क फिरै, त्यूँ त्यूँ काल हसंत॥30॥
टिप्पणी: ख प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

बेटा जाया तो का भया, कहा बजावै थाल।
आवण जाणा ह्नै रहा, ज्यौ कीड़ी का थाल॥51॥

रोवणहारे भी मुए, मुए जलाँवणहार।
हा हा करते ते मुए, कासनि करौं पुकार॥31॥

जिनि हम जाए ते मुए, हम भी चालणहार।
जे हमको आगै मिलै, तिन भी बंध्या मार॥32॥725॥

(शीर्ष पर वापस)

(47) सजीवनी कौ अंग

जहाँ जुरा मरण ब्यापै नहीं, मुवा न सुणिये कोइ।
चलि कबीर तिहि देसड़ै, जहाँ बैद विधाता होइ॥1॥
टिप्पणी: ख-जुरा मीच।

कबीर जोगी बनि बस्या, षणि खाये कंद मूल।
नाँ जाणौ किस जड़ी थैं, अमर गए असथूल॥2॥

कबीर हरि चरणौं चल्या, माया मोह थैं टूटि।
गगन मंडल आसण किया, काल गया सिर कूटि॥3॥

यहु मन पटकि पछाड़ि लै, सब आपा मिटि जाइ।
पंगुल ह्वै पिवपिव करै, पीछै काल न खाइ॥4॥

कबीर मन तीषा किया, बिरह लाइ षरसाँड़।
चित चणूँ मैं चुभि रह्या तहाँ नहीं काल का पाण॥5॥
टिप्पणी: ख-मन तीषा भया।

तरवर तास बिलंबिए, बारह मास फलंत।
सीतल छाया गहर फल, पंषी केलि करंत॥6॥

दाता तरवर दया फल, उपगारी जीवंत।
पंषी चले दिसावराँ, बिरषा सुफल फलंत॥7॥732॥

(शीर्ष पर वापस)

(48) अपारिष कौ अंग

पाइ पदारथ पेलि करि, कंकर लीया हाथि।
जोड़ी बिछुटी हंस की, पड़ा बगाँ के साथि॥1॥
टिप्पणी: ख-चल्याँ बगाँ के साथि।
टिप्पणी: ख प्रति में इसके पहिले ये दोहे हैं-
चंदन रूख बदस गयो, जण जण कहे पलास।
ज्यों ज्यों चूल्है लोंकिए, त्यूँ त्यूँ अधिकी बास॥1॥
हंसड़ो तो महाराण को, उड़ि पड्यो थलियाँह।
बगुलौ करि करि मारियो, सझ न जाँणै त्याँह॥2॥
हंस बगाँ के पाहूँना, कहीं दसा कै केरि।
बगुला कांई गरबियाँ, बैठा पाँख पषेरि॥3॥
बगुला हंस मनाइ लै, नेड़ों थकाँ बहोड़ि।
त्याँह बैठा तूँ उजला, त्यों हंस्यौ प्रीति न तोड़ि॥4॥

एक अचंभा देखिया, हीरा हाटि बिकाइ।
परिषणहारे बाहिरा, कौड़ी बदले जाइ॥2॥

कबीर गुदड़ी बीषरी, सौदा गया बिकाइ।
खोटा बाँध्याँ गाँठड़ी, इब कुछ लिया न जाइ॥3॥

पैड़ै मोती बिखर्‌या, अंधा निकस्या आइ।
जोति बिनाँ जगदीश की, जगत उलंघ्या जाइ॥4॥

कबीर यहु जग अंधला, जैसी अंधी गाइ।
बछा था सो मरि गया, ऊभी चाँम चटाइ॥5॥737॥

(शीर्ष पर वापस)

(49) पारिष कौ अंग

जग गुण कूँ गाहक मिलै, तब गुण लाख बिकाइ।
जब गुण कौ गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाइ॥1॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

कबीर मनमना तौलिए, सबदाँ मोल न तोल।
गौहर परषण जाँणहीं, आपा खोवै बोल॥7॥

कबीर लहरि समंद की मोती बिखरे आइ।
बगुला मंझ न जाँणई, हंस जुणे चुणि खाइ॥2॥

हरि हीराजन जौहरी, ले ले माँडिय हाटि।
जबर मिलैगा पारिषु, तब हीराँ की साटि॥3॥740॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

कबीर सपनही साजन मिले, नइ नइ करै जुहार।
बोल्याँ पीछे जाँणिए, जो जाको ब्योहार॥4॥

मेरी बोली पूरबी, ताइ न चीन्है कोइ।
मेरी बोली सो लखै, जो पूरब का होइ॥5॥

(शीर्ष पर वापस)

(50) उपजणि कौ अंग

नाव न जाणै गाँव का, मारगि लागा जाँउँ।
काल्हि जु काटा भाजिसी, पहिली क्यों न खड़ाउँ॥1॥

सीप भई संसार थैं, चले जु साईं पास।

अबिनासी मोहिं ले चल्या, पुरई मेरी आस॥2॥

इंद्रलोक अचरिज भया, ब्रह्मा पड्या बिचार।
कबीर चाल्या राम पै, कौतिगहार अपार॥3॥
टिप्पणी: ख-ब्रह्मा भया विचार।

ऊँचा चढ़ि असमान कू, मेरु ऊलंधे ऊड़ि।
पसू पंषेरू जीव जंत, सब रहे मेर में बूड़ि॥4॥
टिप्पणी: ख-ऊँचा चाल।

सद पाँणी पाताल का, काढ़ि कबीरा पीव।
बासी पावस पड़ि मुए, बिषै बिलंबे जीव॥5॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
कबीर हरिका डर्पतां, ऊन्हाँ धान न खाँउँ।
हिरदय भीतर हरि बसै, ताथै खरा डराउँ॥7॥

कबीर सुपिनै हरि मिल्या, सूताँ लिया जगाइ।
आषि न मीचौं डरपता, मति सुपिनाँ ह्नै जाइ॥6॥

गोब्यंद कै गुण बहुत है, लिखे जु हरिदै माँहि।
डरता पाँणी ना पिऊँ, मति वे धोये जाँहि॥7॥

कबीर अब तौ ऐसा भया, निरमोलिक निज नाउँ।
पहली काच कबीर था, फिरता ठाँव ठाँवै ठाउँ॥8॥

भौ समंद विष जल भर्या, मन नहीं बाँधै धीर।
सबल सनेही हरि मिले, तब उतरे पारि कबीर॥9॥

भला सहेला ऊतरांर, पूरा मेरा भाग।
राँम नाँव नौका गह्या, तब पाँणी पंक न लाग॥10॥

कबीर केसौ की दया, संसा घाल्या खोइ।
जे दिन गए भगति बिन, ते दिन सालै मोहि॥11॥
टिप्पणी: ख-संता मेल्हा।

कबीर जाचण जाइया, आगै मिल्या अंच।
ले चाल्या घर आपणै, भारी खाया खंच॥12॥

(शीर्ष पर वापस)

(51) दया निरबैरता कौ अंग

कबीर दरिया प्रजल्या, दाझै जल थल झोल।
बस नाँहीं गोपाल सौ, बिनसै रतन अमोल॥1॥

ऊँनमि बिआई बादली, बर्सण लगे अँगार।
उठि कबीरा धाह थे, दाझत है संसार॥2॥

दाध बली ता सब दुखी, सुखी न देखौ कोइ।
जहाँ कबीरा पग धरै, तहाँ टुक धीरज होइ॥3॥755॥

(शीर्ष पर वापस)

(52) सुंदरि कौ अंग

कबीर सुंदरि यों कहै, सुणि हो कंत सुजाँण।
बेगि मिलौ तुम आइ करि, नहीं तर तजौं पराँण॥1॥

कबीर जाकी सुंदरी, जाँणि करै विभचार।
ताहि न कबहूँ आदरै, प्रेम पुरिष भरतार॥2॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

दाध बली तो सब दुखी, सुखी न दीसै कोइ।
को पुत्र को बंधवाँ, को धणहीना होइ॥3॥

जे सुंदरि साईं भजै, तजै आन की आस।
ताहि न कबहूँ परहरै, पलक न छाड़ै पास॥3॥

इस मन को मैदा करौ, नान्हाँ करि करि पीसि।
तब सुख पावै सुंदरी, ब्रह्म झलकै सीस॥4॥

हरिया पारि हिंडोलना, मेल्या, कंत मचाइ।
सोई नारि सुलषणी, नित प्रति झूलण जाइ॥5॥760॥

(शीर्ष पर वापस)

(53) कस्तूरियाँ मृग कौ अंग

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसै घटि घटि राँम हैं, दुनियाँ देखै नाँहि॥1॥

कोइ एक देखै संत जन, जाँकै पाँचूँ हाथि।
जाके पाँचूँ बस नहीं, ता हरि संग न साथि॥2॥

सो साईं तन में बसै, भ्रम्यों न जाणै तास।
कस्तूरी के मृग ज्यूँ फिरि फिरि सूँघै घास॥3॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-

हूँ रोऊँ संसार कौ, मुझे न रोवै कोइ।
मुझको सोई रोइसी, जे राम सनेही होइ॥5॥

मूरो कौ का रोइए, जो अपणै घर जाइ।
रोइए बंदीवान को, जो हाटै हाट बिकाइ॥6॥

बाग बिछिटे मिग्र लौ, ति हि जि मारै कोइ।
आपै हौ मरि जाइसी, डावाँ डोला होइ॥7॥

कबीर खोजी राम का, गया जु सिंघल दीप।
राम तौ घट भीतर रमि रह्या, जो आवै परतीत॥4॥

घटि बधि कहीं न देखिए, ब्रह्म रह्या भरपूरि।
जिनि जान्या तिनि निकट है, दूरि कहैं थे दूरि॥5॥

मैं जाँण्याँ हरि दूरि है, हरि रह्या सकल भरपूरि।
आप पिछाँणै बाहिरा, नेड़ा ही थैं दूरि॥6॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

कबीर बहुत दिवस भटकट रह्या, मन में विषै विसाम।
ढूँढत ढूँढत जग फिर्‌या, तिणकै ओल्है राँम॥7॥

तिणकै ओल्हे राम है, परबत मेहैं भाइ।
सतगुर मिलि परचा भया, तब हरि पाया घट माँहि॥7॥

राँम नाँम तिहूँ लोक मैं, सकलहु रह्या भरपूरि।
यह चतुराई जाहु जलि, खोजत डोलैं दूरि॥8॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

हरि दरियाँ सूभर भरिया, दरिया वार न पार।
खालिक बिन खाली नहीं, जेंवा सूई संचार॥10॥

ज्यूँ नैनूँ मैं पूतली, त्यूँ खालिक घट माँहि।
मूरखि लोग न जाँणहिं, बाहरि ढूँढण जाँहि॥9॥769॥

(शीर्ष पर वापस)

(54) निंद्‌या कौ अंग

लोगे विचारा नींदई, जिन्ह न पाया ग्याँन।
राँम नाँव राता रहै, तिनहूँ, न भावै आँन॥1॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-

निंदक तौ नाँकी, बिना, सोहै नकटयाँ माँहि।

साधू सिरजनहार के, तिनमैं सोहै नाँहि॥2॥

दोख पराये देखि करि, चल्या हसंत हसंत।
अपने च्यँति न आवई, जिनकी आदि न अंत॥2॥

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाइ॥3॥

न्यंदक दूरि न कीजिये, दीजै आदर माँन।
निरमल तन मन सब करै, बकि बकि आँनहिं आँन॥4॥

जे को नींदे साध कूँ, संकटि आवै सोइ।
नरक माँहि जाँमैं मरैं, मुकति न कबहूँ होइ॥5॥

कबीर घास न नींदिये, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि में, खरा दुहेली होइ॥6॥

आपन यौं न सराहिए, और न कहिए रंक।
नाँ जाँणौं किस ब्रिष तलि, कूड़ा होइ करंक॥7॥
टिप्पणी: आपण यौ न सराहिये, पर निंदिए न कोइ।
अजहूँ लांबा द्योहड़ा, ना जाणौ क्या होइ॥8॥

कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ।
आप ठग्याँ सुख ऊपजै, और ठग्याँ दुख होइ॥8॥

अब कै जे साईं मिलैं, तौ सब दुख आपौ रोइ।
चरनूँ ऊपर सीस धरि, कहूँ ज कहणाँ होइ॥9॥778॥
टिप्पणी: ख-प्रति में यह दोहा नहीं है।

(शीर्ष पर वापस)

(55) निगुणाँ कौ अंग

हरिया जाँणै रूषड़ा, उस पाँणीं का नेह।
सूका काठ न जाणई, कबहू बूठा मेह॥1॥

झिरिमिरि झिरिमिरि बरषिया, पाँहण ऊपरि मेह।
माटी गलि सैंजल भई, पाँहण वोही तेह॥2॥

पार ब्रह्म बूठा मोतियाँ, बाँधी सिषराँह।
सगुराँ सगुराँ चुणि लिया, चूक पड़ी निगुराँह॥3॥

कबीर हरि रस बरषिया, गिर डूँगर सिषराँह।

नीर मिबाणाँ ठाहरै, नाऊँ छा परड़ाँह॥4॥

कबीर मूँडठ करमिया, नव सिष पाषर ज्याँह।
बाँहणहारा क्या करै, बाँण न लागै त्याँह॥5॥

कहत सुनत सब दिन गए, उरझि न सुरझा मन।
कहि कबीर चेत्या नहीं, अजहूँ सुपहला दिन॥6॥
टिप्पणी: ख-प्रति में यह दोहा नहीं है।

कहि कबीर कठोर कै, सबद न लागै सार।
सुधबुध कै हिरदै भिदै, उपजि विवेक विचार॥7॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे ये दोहे हैं-
बेकाँमी को सर जिनि बाहै, साठी खोवै मूल गँवावे।
दास कबीर ताहि को बाहैं, गलि सनाह सनमुखसरसाहै॥8॥

पसुआ सौ पानी पड़ो, रहि रहि याम खीजि।
ऊसर बाह्यौ न ऊगसी, भावै दूणाँ बीज॥9॥

मा सीतलता के कारणै, माग बिलंबे आइ।
रोम रोम बिष भरि रह्या, अमृत कहा समाइ॥8॥

सरपहि दूध पिलाइये, दूधैं विष ह्नै जाइ।
ऐसा कोई नाँ मिले, स्यूँ सरपैं विष खाइ॥9॥

जालौ इहै बड़पणाँ, सरलै पेड़ि खजूरि।
पंखी छाँह न बीसवै, फल लागे ते दूरि॥10॥

ऊँचा कूल के कारणै, बंस बध्या अधिकार।
चंदन बास भेदै नहीं, जाल्या सब परिवार॥11॥

कबीर चंदन के निड़ै, नींव भि चंदन होइ।
बूड़ा बंस बड़ाइताँ, यौं जिनि बूड़ै कोइ॥12॥

(शीर्ष पर वापस)

(56) बीनती कौ अंग

कबीर साँईं तो मिलहगे, पूछिहिगे कुसलात।
आदि अंति की कहूँगा, उर अंतर की बात॥1॥
टिप्पणी: ख-प्रति में यह दोहा नहीं है।

कबीर भूलि बिगाड़िया, तूँ नाँ करि मैला चित।
साहिब गरवा लोड़िये, नफर बिगाड़ै नित ॥2॥

करता करै बहुत गुण, औगुँण कोई नाहिं।
जे दिल खोजौं आपणीं, तो सब औगुण मुझ माँहिं॥3॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
बरियाँ बीती बल गया, अरु बुरा कमाया।
हरि जिनि छाड़ै हाथ थैं, दिन नेड़ा आया॥3॥

औसर बीता अलपतन, पीव रह्या परदेस।
कलंक उतारी केसवाँ, भाँना भरँम अंदेस॥4॥

कबीर करत है बीनती, भौसागर के ताँई।
बंदे ऊपरि जोर होत है, जँम कूँ बरिज गुसाँई॥5॥
टिप्पणी: ख-कबीरा विचारा करै बिनती।

हज काबै ह्नै ह्नै गया, केती बार कबीर।
मीराँ मुझ मैं क्या खता, मुखाँ न बोलै पीर॥6॥

ज्यूँ मन मेरा तुझ सों, यौं जे तेरा होइ।
ताता लोबा यौं मिले, संधि न लखई कोइ॥7॥797॥

(शीर्ष पर वापस)

(57) साषीभूत कौ अंग

कबीर पूछै राँम कूँ, सकल भवनपति राइ।
सबही करि अलगा रहौ, सो विधि हमहिं बताइ॥1॥

जिहि बरियाँ साईं मिलै, तास न जाँणै और।
सब कूँ सुख दे सबद करि, अपणीं अपणीं ठौर॥2॥

कबीर मन का बाहुला, ऊँचा बहै असोस।
देखत ही दह मैं पड़े, दई किसा कौं दोस॥3॥800॥

(शीर्ष पर वापस)

(58) बेलि कौ अंग

अब तौ ऐसी ह्नै पड़ी, नाँ तूँ बड़ी न बेलि।
जालण आँणीं लाकड़ी, ऊठी कूँपल मेल्हि॥1॥

आगै आगै दौं जलैं, पीछै हरिया होइ।
बलिहारी ता विरष की, जड़ काट्याँ फल होइ॥2॥

टिप्पणी: ख-दौं बलै।

जे काटौ तो डहडही, सींचौं तौ कुमिलाइ।
इस गुणवंती बेलि का, कुछ गुँण कहाँ न जाइ॥3॥

आँगणि बेलि अकासि फल, अण ब्यावर का दूध।
ससा सींग की धूनहड़ी, रमै बाँझ का पूत॥4॥

कबीर कड़ई बेलड़ी, कड़वा ही फल होइ।
साँध नाँव तब पाइए, जे बेलि बिछोहा होइ॥5॥

सींध भइ तब का भया, चहूँ दिसि फूटी बास।
अजहूँ बीज अंकूर है, भीऊगण की आस॥6॥806॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह दोहा है-
सिंधि जू सहजै फुकि गई, आगि लगी बन माँहि।
बीज बास दून्यँ जले, ऊगण कौं कुछ नाँहि॥7॥

(शीर्ष पर वापस)

(59) अबिहड़ कौ अंग

कबीर साथी सो किया, जाके सुख दुख नहीं कोइ।
हिलि मिलि हनै करि खेलिस्यूँ कदे बिछोह न होइ॥1॥

कबीर सिरजनहार बिन, मेरा हितू न कोइ।
गुण औगुण बिहड़ै नहीं, स्वारथ बंधी लोइ॥2॥

आदि मधि अरु अंत लौं, अबिहड़ सदा अभंग।
कबीर उस करता की, सेवग तजै न संग॥3॥809॥

कबीर ग्रंथावली
संपादक
डॉ.श्याम सुंदर दास

(2) पद - अनुक्रम

मुख्य सूची प्रस्तावना (1)साखी (3) रमैणी परिशिष्ट
1. (राग गौड़ी)
2. (राम रामकली)
3. (राग आसावरी)
4. (राग सोरठि)
5. (राग केदारौ) 6. (राम मारू)
7. (राग टोड़ी)
8. (राग भैरूँ)
9. (राग बिलावल)
10. (राग ललित) 11. (राग बसंत)
12. (राग माली गौड़ी)
13. (राग कल्याण)
14. (राग सारंग)
15. (राग मलार)
16. (राग धनाश्री)

(2) पद

[टिप्पणियों के संबंध में स्पष्टीकरण : 'क' - संवत् 1561 में लिखी हस्तलिखित प्रति, 'ख' - संवत् 1881 में लिखी गयी प्रति, देखें- मुख्य सूची/ भूमिका]

1.राग गौड़ी

दुलहनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार॥टेक॥
तन रत करि मैं मन रत करिहूँ, पंचतत्त बराती।
राम देव मोरैं पाँहुनैं आये मैं जोबन मैं माती॥
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा वेद उचार।
रामदेव सँगि भाँवरी लैहूँ, धनि धनि भाग हमार॥
सुर तेतीसूँ कौतिग आये, मुनिवर सहस अठ्यासी।
कहै कबीर हँम ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी॥1॥

बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये॥टेक॥
मंगलाचार माँहि मन राखौं, राम रसाँइण रमना चाषौं।
मंदिर माँहि भयो उजियारा, ले सुतो अपना पीव पियारा॥
मैं रनि राती जे निधि पाई, हमहिं कहाँ यह तुमहि बड़ाइ।
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हा सखी सुहाग मोहि दीन्हा॥2॥

अब तोहि जान न देहुँ राम पियारे, ज्यूँ भावै त्यूँ होहु हमारे॥टेक॥
बहुत दिनन के बिछुरे हरि पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये॥
चरननि लागि करौं बरियायी, प्रेम प्रीति राखौं उरझाई।
इत मन मंदिर रहौ नित चोषै, कहै कबीर करहु मति घोषैं॥3॥

मन के मोहन बिठुला, यह मन लागौ तोहि रे।
चरन कँवल मन मानियाँ, और न भावै मोहि रे॥टेक॥
षट दल कँवल निवासिया, चहु कौं फेरि मिलाइ रे।
दहुँ के बीचि समाधियाँ, तहाँ काल न पासैं आइ रे॥
अष्ट कँवल दल भीतरा, तहाँ श्रीरंग केलि कराइ रे।
सतगुर मिलै तौ पाइए, नहिं तौ जन्म अक्यारथ जाइ रे॥
कदली कुसुम दल भीतराँ, तहाँ दस आँगुल का बीच रे।
तहाँ दुवारस खोजि ले जनम होत नहीं मीच रे॥
बंक नालि के अंतरै, पछिम दिसाँ की बाट रे।
नीझर झरै रस पीजिये, तहाँ भँवर गुफा के घाट रे॥
त्रिवेणी मनाइ न्हवाइए सुरति मिलै जो हाथि रे।
तहाँ न फिरि मघ जोइए सनकादिक मिलिहै साथि रे॥
गगन गरिज मघ जोइये, तहाँ दीसै तार अनंत रे।
बिजुरी चमकि घन बरषिहै, तहाँ भीजत हैं सब संत रे॥
षोडस कँवल जब चेतिया, तब मिलि गये श्री बनवारि रे।
जुरामरण भ्रम भाजिया, पुनरपि जनम निवारि रे॥
गुर गमि तैं पाइए झषि सरे जिनि कोइ रे।
तहीं कबीरा रमि रह्या सहज समाधी सोइ रे॥4॥
टिप्पणी: ख-जन्म अमोलिक।

गोकल नाइक बीठुला, मेरौ मन लागै तोहि रे।
बहुतक दिन बिछुरै भये, तेरी औसेरि आवै मोहि रे॥टेक॥
करम कोटि कौ ग्रेह रच्यो रे, नेह कये की आस रे।
आपहिं आप बँधाइया, द्वै लोचन मरहिं पियास रे॥
आपा पर संमि चीन्हिये, दीसैं सरब सँमान।
इहि पद नरहरि भेटिये, तूँ छाड़ि कपट अभिमान रे॥
नाँ कलहूँ चलि जाइये नाँ सिर लीजै भार।
रसनाँ रसहिं बिचारिये, सारँग श्रीरँग धार रे॥
साधै सिधि ऐसी पाइये, किंवा होइ महोइ।
जे दिठ ग्यान न ऊपजै, तौ आहुटि रहै जिनि कोइ रे॥
एक जुगति एकै मिलैं किंबा जोग कि भोग।
इन दून्यूँ फल पाइये, राम नाँम सिधि जोग रे॥
प्रेम भगति ऐसी कीजिये, मुखि अमृत अरिषै चंद रे।
आपही आप बिचारिये, तब कंता होइ अनंद रे॥
तुम्ह जिनि जानौं गीत है, यहू निज ब्रह्म विचार।
केवल कहि समझाइया, आतम साधन सार रे।
चरन कँवल चित लाइये, राम नाम गुन गाइ॥
कहै कबीर मंसा नहीं, भगति मुकति गति पाइ रे॥5॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह पद है-

अब मैं राम सकल सिधि पाई, आन कहूँ तौ राम दुहाई॥टेक॥
इहि विधि बसि सबै रस दीठा, राम नाम सा और न मीठा।
और रस हनै कफगाता, हरिरस अधिक अधिक सुखराता॥
दूजा बणज नहीं कछु वाषर, राम नाम दोऊ तत आषर।
कहै कबीर हरिस भोगी, ताकौं मिल्या निरंजन जोगी॥6॥

अब मैं पाइबो रे पाइबो ब्रह्म गियान,
सहज समाधैं सुख में रहिबो, कोटि कलप विश्राम॥टेक॥
गुर कृपाल कृपा जब कीन्हौं, हिरदै कँवल बिगासा।
भाग भ्रम दसौं दिस सुझ्या, परम जोति प्रकासा॥
मृतक उठ्या धनक कर लीयै, काल अहेड़ी भाषा।
उदय सूर निस किया पयाँनाँ, सोवत थैं जब जागा॥
अविगत अकल अनुपम देख्या, कहताँ कह्या न जाई।
सैन करै मन हो मर रहसैं, गूँगैं जाँनि मिठाई॥
पहुप बिनाँ एक तरवर फलिया, बिन कर तूर बजाया।
नाँरी बिना नीर घट भरिया, सहज रूप सौ पाया॥
देखत काँच भया तन कंचन, बिना बानी मन माँनाँ।
उड़ंा बिहंगम खोज न पाया, ज्यूँ जल जलहिं समाँनाँ॥
पूज्या देव बहुरि नहीं पूजौं, न्हाये उदिक न नाउँ।
आपे मैं तब आया निरष्या, अपन पै आपा सूझ्या।
आपै कहत सुनत पुनि अपनाँ, अपन पै आपा बूझ्या॥
अपनै परचै लागी तारी, अपन पै आप समाँनाँ।
कहै कबीर जे आप बिचारै, मिटि गया आवन जाँना॥6॥

नरहरि सहजै ही जिनि जाना।
गत फल फूल तत तर पलव, अंकूर बीज नसाँनाँ॥टेक॥
प्रकट प्रकास ग्यान गुरगमि थैं, ब्रह्म अगनि प्रजारी।
ससि हरि सूर दूर दूरंतर, लागी जोग जुग तारी॥
उलटे पवन चक्र षट बेधा, मेर डंड सरपूरा।
गगन गरजि मन सुंनि समाना, बाजे अनहद तूरा॥
सुमति सरीर कबीर बिचारी, त्रिकुटी संगम स्वामी।
पद आनंद काल थैं छूटै, सुख मैं सुरति समाँनी॥7॥

मन रे मन ही उलटि समाँना।
गुर प्रसादि अकलि भई तोकौं नहीं तर था बेगाँना॥टेक॥
नेड़ै थे दूरि दूर थैं नियरा, जिनि जैसा करि जाना।
औ लौ ठीका चढ्या बलीडै, जिनि पीया तिनि माना॥
उलटे पवन चक्र षट बेधा, सुन सुरति लै लागि।
अमर न मरै मरै नहीं जीवै, ताहि खोजि बैरागी॥
अनभै कथा कवन सी कहिये, है कोई चतुर बिबेकी।
कहै कबीर गुर दिया पलीता, सौ झल बिरलै देखी॥8॥

इति तत राम जपहु रे प्राँनी, बुझौ अकथ कहाँणी।
हीर का भाव होइ जा ऊपरि जाग्रत रैनि बिहानी॥टेक॥
डाँइन डारै, सुनहाँ डोरै स्पंध रहै बन घेरै।
पंच कुटुंब मिलि झुझन लागे, बाजत सबद सँघेरै॥
रोहै मृग ससा बन घेरे, पारथी बाँण न मेलै।
सायर जलै सकल बन दाझँ, मंछ अहेरा खेलै॥
सोई पंडित सो तत ज्ञाता, जो इहि पदहि बिचारै।
कहै कबीर सोइ गुर मेरा, आप तीरै मोहि तारै॥9॥

अवधू ग्यान लहरि धुनि मीडि रे।
सबद अतीत अनाहद राता, इहि विधि त्रिष्णाँ षाँड़ी॥टेक॥
बन कै संसै समंद पर कीया मंछा बसै पहाड़ी।
सुई पीवै ब्राँह्मण मतवाला, फल लागा बिन बाड़ी॥
षाड बुणैं कोली मैं बैठी, मैं खूँटा मैं गाढ़ी।
ताँणे वाणे पड़ी अनँवासी, सूत कहै बुणि गाढ़॥
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, अगम ग्यान पद माँही।
गुरु प्रसाद सुई कै नांकै, हस्ती आवै जाँही॥10॥

एक अचंभा देखा रे भाई, ठाढ़ा सिंध चरावै गाई॥टेक॥
पहले पूत पीछे भइ माँई, चेला कै गुरु लागै पाई।
जल की मछली तरवर ब्याई, पकरि बिलाई मुरगै खाई॥
बैलहि डारि गूँनि घरि आई, कुत्ता कूँ लै गई बिलाई॥
तलिकर साषा ऊपरि करि मूल बहुत भाँति जड़ लगे फूल।
कहै कबीर या पद को बूझै, ताँकूँ तीन्यूँ त्रिभुवन सूझै॥11॥

हरि के षारे बड़े पकाये, जिनि जारे तिनि पाये।
ग्यान अचेत फिरै नर लोई, ता जनमि डहकाए॥टेक॥
धौल मँदलिया बैल रबाबी, बऊवा ताल बजावै।
पहरि चोलन आदम नाचै, भैसाँ निरति कहावै॥
स्यंध बैठा पान कतरै, घूँस गिलौरा लावै॥
उँदरी बपुरी मंगल गावै, कछु एक आनंद सुनावै॥
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, गडरी परबत खावा।
चकवा बैसि अँगारे निगले, समंद अकासा धावा॥12॥

चरखा जिनि जरे।
कतौंगी हजरी का सूत नणद के भइया कीसौं॥टेक॥
जलि जाई थलि ऊपजी, आई नगर मैं आप।
एक अचंभा देखिया, बिटिया जायौ बाप॥
बाबल मेरा ब्याह करि, बर उत्यम ले चाहि।
जब लग बर पावै नहीं, तब लग तूँ ही ब्याहि॥
सुबधी कै घरि लुबधी आयो, आन बहू कै भाइ।
चूल्हे अगनि बताइ करि, फल सौ दीयो ठठाइ॥
सब जगही मर जाइयौ, एक बड़इया जिनि मरै।
सब राँडनि कौ साथ चरषा को धारै॥

कहै कबीर सो पंडित ज्ञाता जो या पदही बिचारै।
पहलै परच गुर मिलै तौ पीछैं सतगुर तारे॥13॥

अब मोहि ले चलि नणद के बीर, अपने देसा।
इन पंचनि मिलि लूटी हूँ, कुसंग आहि बदेसा॥टेक॥
गंग तीर मोरी खेती बारी, जमुन तीर खरिहानाँ।
सातौं बिरही मेरे निपजैं, पंचूँ मोर किसानाँ॥
कहै कबीर यह अकथ कथा है, कहताँ कही न जाई।
सहज भाइ जिहिं ऊपजै, ते रमि रहै समाई॥14॥

अब हम सकल कुसल करि माँनाँ, स्वाँति भई तब गोब्यंद जाँनाँ॥ टेक ॥
तन मैं होती कोटि उपाधि, भई सुख सहज समाधि॥
जम थैं उलटि भये हैं राम, दुःख सुख किया विश्राँम॥
बैरी उलटि भये हैं मीता साषत उलटि सजन भये चीता॥
आपा जानि उलटि ले आप, तौ नहीं ब्यापै तीन्यूँ ताप॥
अब मन उलटि सनातन हूवा, तब हम जाँनाँ जीवन मूवा॥
कहै कबीर सुख सहज समाऊँ, आप न डरौं न और डराऊँ॥15॥

संतौं भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उडाँणी, माया रहै न बाँधी॥टेक॥
हिति चित की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँति परि घर ऊपरि, कुबधि का भाँडाँ फूटा॥
जोग जुगति करि संतौं बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी॥
कूड़ कपट काया का निकस्या हरि की गति जब जाँणी॥
आँधी पीछै जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भींनाँ।
कहै कबीर माँन के प्रगटे उदित भया तम षींनाँ॥16॥

ब घटि प्रगट भये राम राई, साधि सरीर कनक की नाई॥टेक॥
नक कसौटी जैसे कसि लेइ सुनारा, सोधि सरीर भयो तनसारा॥
उपजत उपजत बहुत उपाई, मन थिर भयो तबै तिथि पाई॥
बाहरि षोजत जनम गँवाया, उनमनीं ध्यान घट भीतरि पाया।
बिन परचै तन काँच कबीरा, परचैं कंचन भया कबीरा॥17॥

हिंडोलनाँ तहाँ झूलैं आतम राम।
प्रेम भगति हिंडोलना, सब संतन कौ विश्राम॥टेक॥
चंद सूर दोइ खंभवा, बंक नालि की डोरि।
झूलें पंच पियारियाँ, तहाँ झूलै जीय मोर॥
द्वादस गम के अंतरा, तहाँ अमृत कौ ग्रास।
जिनि यह अमृत चाषिया, सो ठाकुर हम दास॥
सहज सुँनि कौ नेहरौ गगन मंडल सिरिमौर।
दोऊ कुल हम आगरी, जो हम झूलै हिंडोल॥
अरध उरध की गंगा जमुना, मूल कवल कौ घाट।
षट चक्र की गागरी, त्रिवेणीं संगम बाट।
नाद ब्यंद की नावरी, राम नाम कनिहार।

कहै कबीर गुण गाइ ले, गुर गँमि उतरौ पार॥18॥

कौ बीनैं प्रेम लागी री माई कौ बीन। राम रसाइण मातेरी, माई को बीनैं॥टेक॥
पाई पाई तूँ पुतिहाई, पाई की तुरियाँ बेचि खाई री, माई कौ बीनैं॥
ऐसैं पाईपर बिथुराई, त्यूँ रस आनि बनायौ री, माई कौ बीनैं।
नाचैं ताँनाँ नाँचै बाँनाँ, नाचैं कूँ पुराना री, माई को बीनैं॥19॥

मैं बुनि करि सियाँनाँ हो राम, नालि करम नहीं ऊबरे॥टेक॥
दखिन कूट जब सुनहाँ झूका, तब हम सगुन बिचारा।
लरके परके सब जागत है हम घरि चोर पसारा हो राम॥
ताँनाँ लीन्हाँ बाँनाँ लीन्हाँ, माँस चलवना डऊवा हो राम।
एक पग दोई पग त्रोपग, सँघ सधि मिलाई।
कर परपंच मोट बाँधि आये, किलिकिलि सबै मिटाई हो राम॥
ताँनाँ तनि करि बाँनाँ बुनि करि, छाक परी मोहि ध्याँन।
कहै कबीर मैं बुंनि सिराँना जानत है भगवाँनाँ हो राम॥20॥

तननाँ बुनना तज्या कबीर, राम नाम लिखि लिया शरीर॥टेक॥
जब लग भरौं नली का बेह, तब लग टूटै राम सनेह॥
ठाड़ी रोवै कबीर की माइ, ए लरिका क्यूँ जीवै खुदाइ।
कहै कबीर सुनहुँ री माई, पूरणहारा त्रिभुवन राइ॥21॥

जुगिया न्याइ मरै मरि जाइ।
धर जाजरौ बलीडौ टेढ़ौ, औलोती डर राइ॥टेक॥
मगरी तजौ प्रीति पाषे सूँ डाँडी देहु लगाइ।
छींको छोड़ि उपरहि डौ बाँधा, ज्यूँ जुगि जुगि रहौ समाइ।
बैसि परहडी द्वार मुँदावौं, ख्यावौ पूत घर घेरी।
जेठी धीय सासरे पठवौं, ज्यूँ बहुरि न आवै फेरी॥
लहुरी धीइ सवै कुश धोयौ, तब ढिग बैठन माई।
कहै कबीर भाग बपरी कौ, किलिकिलि सबै चुकाँई॥22॥

मन रे जागत रहिये भाई।
गाफिल होइ बसत मति खोवै, चोर मूसै घर जाई॥टेक॥
षट चक की कनक कोठड़ी, बसत भाव है सोई।
ताला कूँजी कुलफ के लागे, उघड़त बार न होई॥
पंच पहरवा सोइ गये हैं, बसतै जागण लोगी।
करत बिचार मनहीं मन उपजी, नाँ कहीं गया न आया।
कहै कबीर संसा सब छूटा, राम रतन धन पाया॥23॥

चलन चलन सब को कहत है, नाँ जाँनौं बैकुंठ कहाँ है॥टेक॥
जोजन एक प्रमिति नहिं जानै, बातन ही बैकुंठ बषानै।
जब लग है बैकुंठ की आसा, तब लग नाहीं हरि चरन निवासा॥
कहें सुनें कैसें पतिअइये, जब लग तहाँ आप नहिं जइये।
कहै कबीर बहु कहिये काहि, साध संगति बैकुंठहि आहि॥24॥

अपने विचारि असवारी कीजै, सहज के पाइड़े पाव जब दीजे॥टेक॥
दै मुहरा लगाँम पहिराँऊँ, सिकली जीन गगन दौराऊँ।
चलि बैकुंठ तोहि लै तारों, थकहि त प्रेम ताजनैं मारूँ॥
जन कबीर ऐसा असवारा, बेद कतेब दहूँ थैं न्यारा॥25॥

अपनैं मैं रँगि आपनपो जानूँ, जिहि रंगि जाँनि ताही कूँ माँनूँ॥टेक॥
अभि अंतरि मन रंग समानाँ, लोग कहैं कबीर बौरानाँ।
रंग न चीन्हैं मुरखि लोई, जिह रँगि रंग रह्या सब कोई॥
जे रंग कबहूँ न आवै न जाई, कहै कबीर तिहिं रह्या समाई॥26॥

झगरा एक नवेरो राम, जें तुम्ह अपने जन सूँ काँम॥टेक॥
ब्रह्म बड़ा कि जिनि रू उपाया, बेद बड़ा कि जहाँ थैं आया।
यह मन बड़ा कि जहाँ मन मानै, राम बड़ा कि रामहि जान।
कहै कबीर हूँ खरा उदास, तीरथ बड़े कि हरि के दास॥27॥

दास रामहिं जानि है रे, और न जानै कोइ॥टेक॥
काजल दइ सबै कोई, चषि चाहन माँहि बिनाँन।
जिनि लोइनि मन मोहिया, ते लोइन परबाँन॥
बहुत भगति भौसागरा, नाँनाँ विधि नाँनाँ भाव।
जिहि हिरदै श्रीहरि, भेटिया, सो भेद कहूँ कहूँ ठाउँ॥
तरसन सँमि का कीजिये, जौ गुनहिं होत समाँन।
सींधव नीर कबीर मिल्यौ है, फटक न मिल पखाँन॥28॥

कैसे होइगा मिलावा हरि सनाँ, रे तू विषै विकार न तजि मनाँ॥टेक॥
रे तै जोग जुगति जान्याँ नहीं, तैं गुर का सबद मान्याँ नहीं।
गंदी देही देखि न फूलिये, संसार देखि न भूलिये॥
कहै कबीर राम मम बहु गुँनी, हरि भगति बिनाँ दुख फुनफुनी॥29॥

कासूँ कहिये सुनि रामा, तेरा मरम न जानै कोई जी।
दास बबेकी सब भले, परि भेद न छानाँ होई जी॥टेक॥
ए सकल ब्रह्मंड तैं पूरिया, अरु दूजा महि थान जी।
राम रसाइन रसिक है, अद्भुत गति बिस्तार जी॥
भ्रम निसा जो गत करे, ताहि सूझै संसार जी॥
सिव सनकादिक नारदा, ब्रह्म लिया निज बास जी।
कहै कबीर पद पंक्याजा, अष नेड़ा चरण निवास जी॥30॥

मैं डोरै डारे जाऊँगा, तौ मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥टेक॥
सूत बहुत कुछ थोरा, ताथै, लाइ ले कंथा डोरा।
कंथा डोरा लागा, तथ जुरा मरण भौ भागा॥
जहाँ सूत कपास न पूनी, तहाँ बसै इक मूनी।
उस मूनीं सूँ चित लाऊँगा, तो मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥
मेरे डंड इक छाजा, तहाँ बसै इक राजा।
तिस राजा सूँ चित लाऊँगा, तो मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥
जहाँ बहु हीरा धन मोती, तहाँ तत लाइ लै जोती।

तिस जोतिहिं जोति मिलाँऊँगा, तौ मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥
जहाँ ऊगै सूर न चंदा, तहाँ देख्या एक अनंदा।
उस आनँद सूँ लौ लाऊँगा, तो मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥
मूल बंध इक पावा, तहाँ सिध गणेश्वर रावाँ।
तिस मूलहिं मूल मिलाऊँगा, तौ मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥
कबीरा तालिब तेरा, जहाँ गोपत हरी गुर मोरा।
तहाँ हेत हरि चित लाऊँगा, तो मैं बहुरि न भौजलि आऊँगा॥31॥

संतौं धागा टूटा गगन बिनसि गया, सबद जु कहाँ समाई।
ए संसा मोहि निस दिन व्यापै, कोइ न कहैं समझाई॥टेक॥
नहीं ब्रह्मंड पुँनि नाँही, पंचतत भी नाहीं।
इला प्यंगुला सुखमन नाँही, ए गुण कहाँ समाहीं।
नहीं ग्रिह द्वारा कछू नहीं, तहियाँ रचनहार पुनि नाँहीं।
जीवनहार अतीत सदा संगि, ये गुण तहाँ समाँहीं॥
तूटै बँधै बँधै पुनि तूटै, तब तब होइ बिनासा।
तब को ठाकुर अब को सेवग, को काकै बिसवासा॥
कहै कबीर यहु गगन न बिनसै, जौ धागा उनमाँनाँ।
सीखें सुने पढ़ें का कोई, जौ नहीं पदहि समाँना॥32॥

ता मन कौं खोजहु रे भाई, तन छूटे मन कहाँ समाई॥टेक॥
सनक सनंदन जैं देवनाँमी भगति करी मन उनहुँ न जानीं।
सिव विरंचि नारद मुनि ग्यानी, यन का गति उनहुँ नहीं जानीं॥
धू प्रहिलाद बभीषन सेषा, तन भीतर मन उनहुँ न देषा।
ता मन का कोइ जानै भेव, रंचक लीन भया सुषदेव॥
गोरष भरथरी गोपीचंदा, ता मन सौं मिलि करै अनंदा।
अकल निरंजन सकल सरीरा, ता मन सौं मिलि रहा कबीरा॥33॥

भाई रे बिरले दोसत कबीरा के, यहु तत बार बार काँसो कहिये।
भानण घड़ण सँवारण संम्रथ, ज्यूँ राषै त्यूँ रहिये॥टेक॥
आलम दुनों सबै फिरि खोजी, हरि बिन सकल अयानाँ।
छह दरसन छ्यानबै पाषंड, आकुल किनहुँ न जानाँ॥
जप तप संजम पूजा अरचा, जोतिग जब बीरानाँ।
कागद लिखि लिखि जगत भुलानाँ, मनहीं मन न समानाँ॥
कहै कबीर जोगी अरु, जंगम ए सब झूठी आसा।
गुर प्रसादि रटौ चात्रिग ज्यूँ, निहचैं भगति निवासा॥34॥

कितेक सिव संकर गये ऊठि, राम समाधि अजहूँ नहिं छूटि॥टेक॥
प्रलै काल कहुँ कितेक भाष, गये इंद्र से अगणित लाष।
ब्रह्मा खोजि परो गहि नाल, कहै कबीर वै राम निराल॥35॥

अच्यंत च्यंत ए माधौ, सो सब माँहिं समानाँ।
ताह छाड़ि जे आँन भजत हैं, ते सब भ्रंमि भुलाँनाँ॥टेक॥
ईस कहै मैं ध्यान न जानूँ, दुरलभ निज पद मोहीं।
रंचक करुणाँ कारणि केसो, नाम धरण कौं तोहीं॥

कहौ थौं सबद कहाँ थै आवै, अरु फिर कहाँ समाई।
सबद अतीत का मरम न जानै, भ्रंमि भूली दुनियाई॥
प्यंड मुकति कहाँ ले कीजै, जो पद मुकति न होई।
प्यंडै मुकति कहत हैं मुनि जन, सबद अतीत था सोई॥
प्रगट गुपत गुपत पुनि प्रगट, सो कत रहै लुकाई।
कबीर परमानंद मनाये, अथक कथ्यौ नहीं जाई॥36॥

सो कछू बिचारहु पंडित लोई, जाकै रूप न रेष बरण नहीं कोई॥टेक॥
उपजै प्यंड प्रान कहाँ थैं आवै, मूवा जीव जाइ कहाँ समावै।
इंद्री कहाँ करिहि विश्रामा, सो कत गया जो कहता रामा।
पंचतत तहाँ सबद न स्वादं, अलख निरंजन विद्या न बादं।
कहै कबीर मन मनहि समानाँ, तब आगम निगम झूठ करि जानाँ॥37॥

जौं पैं बीज रूप भगवाना, तौ पंडित का कथिसि गियाना॥टेक॥
नहीं तन नहीं मन नहीं अहंकारा, नहीं सत रज तम तीनि प्रकारा॥
विष अमृत फल फले अनेक, बेद रु बोधक हैं तरु एक।
कहै कबीर इहै मन माना, कहिधूँ छूट कवन उरझाना॥38॥

पाँडे कौन कुमति तोहि लागी, तूँ राम न जपहि अभागी॥टेक॥
वेद पुरान पढ़त अस पाँडे खर चंदन जैसैं भारा।
राम नाम तत समझत नाँहीं, अंति पड़ै मुखि छारा॥
बेद पढ़्याँ का यहु फल पाँडे, सब घटि देखैं रामा।
जन्म मरन थैं तौ तूँ छूटै, सुफल हूँहि सब काँमाँ॥
जीव बधत अरु धरम कहत हौ, अधरम कहाँ है भाई।
आपन तौ मुनिजन ह्नै बैठे, का सनि कहौं कसाई ॥
नारद कहै ब्यास व्यास यौं भाषैं, सुखदेव पूछौ जाई।
कहै कबीर कुमति तब छूटै, जे रहौ राम ल्यौ लाई ॥39॥

पंडित बाद बदंते झूठा।
राम कह्माँ दुनियाँ गति पावै, षाँड कह्माँ मुख मीठा ॥टेक॥
पावक कह्माँ मूष जे दाझैं, जल कहि त्रिषा बुझाई।
भोजन कह्माँ भूष जे भाजै, तौ सब कोई तिरि जाई ॥
नर कै साथि सूवा हरि बोलै, हरि परताप न जानै।
जो कबहूँ उड़ि जाइ जंगल में, बहुरि न सुरतै आनै ॥
साची प्रीति विषै माया सूँ, हरि भंगतनि सूँ हासी।
कहै कबीर प्रेम नहीं उपज्यौ, बाँध्यौ जमपुरि जासी ॥40॥

जौ पै करता बरण बिचारै, तौ जनमत तीनि डाँड़ि किन सारै॥टेक॥
उतपति ब्यंद कहाँ थैं आया, जो धरी अरु लागी माया।
नहीं को ऊँचा नहीं को नीचा, जाका प्यंड ताही का सींचा।
जे तूँ बाँभन बभनी जाया, तो आँन वाँट ह्नै काहे न आया।
जे तूँ तुरक तुरकनी जाया, तो भीतरि खतनाँ क्यूँ न कराया।
कहै कबीर मधिम नहीं कोई, सौ मधिम जा मुखि राम न होई ॥41॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह पद है-

काहे कौ कीजै पाँडे छोति बिचारा।
छोतिहीं तै उपना सब संसारा॥टेक॥
हमारे कैसे लोहू तुम्हारै कैसे दूध।
तुम्ह कैसे बाँह्मण पाँडे हम कैसे सूद॥
छोति छोति करता तुम्हहीं जाए।
तौ ग्रभवास काहें कौं आए॥
जनमत छोत मरत ही छोति।
कहै कबीर हरि की बिमल जोति॥42॥

कथता बकता सुनता सोई, आप बिचारै सो ग्यानी होई ॥टेक॥
जैसे अगनि पवन का मेला, चंचल बुधि का खेला।
नव दरवाजे दसूँ दुवार,प बूझि रे ग्यानी ग्यान विचार॥
देहौ माटी बोलै पवनाँ, बूझि रे ज्ञानी मूवा स कौनाँ।
मुई सुरति बाद अहंकार, वह न मूवा जो बोलणहार॥
जिस कारनि तटि तीरथि जाँहीं, रतन पदारथ घटहीं माहीं।
पढ़ि पढ़ि पंडित बेद बषाँणै, भीतरि हूती बसत न जाँणै॥
हूँ न मूवा मेरी मुई बलाइ, सो न मुवा जौ रह्मा समाइ।
कहै कबीर गुरु ब्रह्म दिखाया, मरता जाता नजरि न आया ॥42॥

हम न मरैं मरिहैं संसारा, हँम कूँ मिल्या जियावनहारा ॥टेक॥
अब न मरौ मरनै मन माँना, ते मूए जिनि राम न जाँना।
साकत मरै संत जन जीवै, भरि भरि राम रसाइन पीवै ॥
हरि मरिहैं तौ हमहूँ मरिहैं, हरि न मरै हँम काहे कूँ मरिहैं।
कहै कबीर मन मनहि मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा ॥43॥

कौन मरै कौन जनमै आई, सरग नरक कौने गति पाई ॥टेक॥
पंचतत अतिगत थैं उतपनाँ एकै किया निवासा।
बिछूरे तत फिरि सहज समाँनाँ, रेख रही नहीं आसा ॥
जल मैं कुंभ कुंभ मैं जल है, बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समानाँ, यह तत कथौ गियानी ॥
आदै गगनाँ अंतै गगनाँ मधे गगनाँ माई।
कहै कबीर करम किस लागै, झूठी संक उपाई ॥44॥

कौन मरै कहू पंडित जनाँ, सो समझाइ कहौ हम सनाँ ॥टेक॥
माटी माटी रही समाइ, पवनै पवन लिया सँग लाइ ॥
कहै कबीर सुंनि पंडित गुनी, रूप मूवा सब देखै दुनी ॥45॥

जे को मरै मरन है मीठा, गुरु प्रसादि जिनहीं मरि दीठा ॥टेक॥
मुवा करता मुई ज करनी, मुई नारि सुरति बहु धरनी।
मूवा आपा मूवा माँन, परपंच लेइ मूवा अभिमाँन ॥
राम रमे रमि जे जन मूवा, कहै कबीर अविनासी हुआ ॥46॥

जस तूँ तस तोहि कोइ न जान, लोग कहै सब आनहिं आँन ॥टेक॥
चारि बेद चहुँ मत का बिचार इहि भ्रँमि भूलि परो संसार।

सुरति सुमृति दोइ कौ बिसवास, बाझि परौं सब आसा पास॥
ब्रह्मादिक सनाकादिक सुर नर, मैं बपुरो धूँका मैं का कर।
जिहि तुम्ह तारौ सोई पै तिरई, कहै कबीर नाँतर बाँध्यौ मरई ॥47॥

लोका तुम्ह ज कहत हौ नंद कौ, नंदन नंद कहौ धुं काकौ रे।
धरनि अकास दोऊ नहीं होते, तब यहु नंद कहाँ थौ रे ॥टेक॥
जाँमैं मरै न सँकुटि आवै, नाँव निरंजन जाकौ रे।
अबिनासी उपजै नहिं बिनसै, संत सुजस कहैं ताकौ रे ॥
लष चौरासी जीव जंत मैं भ्रमत नंदी थाकौ रे।
दास कबीर कौ ठाकुर ऐसो, भगति करै हरि ताकौ रे ॥48॥

निरगुण राँम निरगुण राँम जपहु रे भाई, अबिगति की गति लखी न जाई ॥टेक॥
चारि बेद जाको सुमृत पुराँनाँ नौ ब्याकरनाँ मरम न जाँनाँ ॥
चारि बेद जाकै गरड समाँनाँ, चरन कवल कँवला नहीं जाँनाँ ॥
कहै कबीर जाकै भेदै नाँहीं, निज जन बैठे हरि की छाहीं ॥49॥

मैं सबनि मैं औरनि मैं हूँ सब।
मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो,
कोई कहो कबीर कहो राँम राई हो ॥टेक॥
नाँ हम बार बूढ़ नाही, हम ना हमरै चिलकाई हो।
पठए न जाऊँ अरवा नहीं आऊँ सहजि रहूँ हरिआई हो ॥
वोढन हमरे एक पछेवरा, लोक बोलै इकताई हो ॥
जुलहे तनि बुनि पाँनि न पावल, फार बुनि दस ठाँई हो ॥
त्रिगुँण रहित फल रमि हम राखल, तब हमारौ नाउँ राँम राई हो ॥
जग मैं देखौं जग न देखै मोहि, इहि कबीर कछु पाई हो ॥50॥
टिप्पणी: ख-ना हम बार बूढ़ पुनि नाँही।

लोका जानि न भूलौ भाई।
खालिक खलक खलक मैं खालिक, सब घट रहौ समाई ॥टेक॥
अला एकै नूर उपनाया, ताकी कैसी निंदा।
ता नूर थै सब जग कीया, कौन भला कौन मंदा ॥
ता अला की गति नहीं जाँनी गुरि गुड़ दीया मीठा ॥
कहै कबीर मैं पूरा पाया, सब घटि साहिब दीठा ॥51॥

राँम मोहि तारि कहाँ लै जैहो।
सो बैकुंठ कहौ धूँ कैसा, करि पसाव मोहि दैहो ॥टेक॥
जे मेरे जीव दोइ जाँनत हौ, तौ मोहि मुकति बताओ।
एकमेक रमि रहमा सबनि मैं, तो काहे भरमावै॥
तारण तिरण जबै लग कहिये, तब लग तत न जाँनाँ।
एक राँम देख्या सबहिन मैं कहै कबीर मन माँनाँ ॥52॥

सोहं हंसा एक समान, काया के गुँण आँनही आन ॥टेक॥
माटी एक सकल संसार, बहुबिधि भाँडे घड़ै कुँभारा।
पंच बरन दस दुहिये गाइ, एक दूध देखौ पतिआइ।

कहै कबीर संसा करि दूरि त्रिभवननाथ रह्या भरपूर ॥53॥

प्यारे राँम मनहीं मनाँ।
कासूँ कहूँ कहन कौं नाहीं, दूसरा और जनाँ॥टेक॥
ज्यूँ दरपन प्रतिब्यंब देखिये आप दवासूँ सोई।
संसौ मिट्यौ एक कौ एकै, महा प्रलै जब होई॥
जौ रिझाऊँ तौ महा कठिन है, बिन रिझायैं थैं सब खोटी।
कहै कबीर तरक दोइ साधै, ताकी मति है मोटी॥54॥

हँम तौ एक एक करि जाँनाँ।
दोइ कहै तिनही कौं दोजग, जिन नाँहिन पहिचाँनाँ॥टेक॥
एकै पवन एक ही पानी, एक जोति संसारा।
एक ही खाक घड़े सब भाँडे, एक ही सिरजनहारा॥
जैसै बाढ़ी काष्ट ही काटै, अगिनि न काटै कोई॥
सब घटि अंतरि तूँहीं व्यापक, धरै सरूपै सोई॥
माया मोहे अर्थ देखि करि, काहै कूँ गरबाँनाँ॥
निरभै भया कछू नाहिं ब्यापै, कहै कबीर दिवाँनाँ॥55॥

अरे भाई दोइ कहा सो मोहि बतायौ, बिचिही भरम का भेद लगावौ॥टेक॥
जोनि उपाइ रची द्वै धरनीं दीन एक बीच भई करनी।
राँम रहीम जपत सुधि गई, उनि माला उनि तसबी लई॥
कहै कबीर चेतहु रे भौंदू, बोलनहारा तुरक न हिंदू॥56॥

ऐसा भेद बिगूचन भारी। बेद कतेब दीन अरु दुनियाँ, कौन पुरिषु कौननारी॥टेक॥
एक बूंद एकै मल मूतर, एक चाँम एक चाँम एक गूदा।
एक जोति थैं सब उतपनाँ, कौन बाँम्हन कौन सूदा॥
माटी का प्यंड सहजि उतपनाँ, नाद रु ब्यंद समाँनाँ।
बिनसि गयाँ थै का नाँव धरिहौ, पढ़ि गुनि हरि भ्रँन जाँना॥
रज गुन ब्रह्मा तम गुन संकर, सत गुन हरि है सोई।
कहै कबीर एक राँम जपहु रे, हिंदू तुरक न कोई॥57॥

हँमारे राँम रहीम करीमा केसो, अलाह राँम सति सोई।
बिसमिल मेटि बिसंभर एकै, और न दूजा कोई॥टेक॥
इनके काजी मूलाँ पीर पैकंबर, रोजा पछिम निवाजा।
इनकै पूरब दिसा देव दिज पूजा, ग्यारसि गंग दिवाजा॥
तुरक मसीति देहुरै हिंदू, दहूँठा राँम खुदाई।
जहाँ मसीति देहुरा नाहीं, तहाँ काकी ठकुराई॥
हिंदू तुरक दोऊ रह तूटी, फूटी अरु कनराई।
अरध उरथ दसहूँ दिस जित तित, पूरि रह्या राम राई॥
कहै कबीरा दास फकीरा, अपनी रहि चलि भाई॥
हिंदू तुरक का करता एकै ता गति लखी न जाई॥58॥

काजी कौन कतेब बषांनै।
पढ़त पढ़त केते दिन बीते, गति एकै नहीं जानैं॥टेक॥

सकति से नेह पकरि करि सुंनति, बहु नबदूँ रे भाई।
जौर षुदाई तुरक मोहिं करता, तौ आपै कटि किन जाई॥
हौं तौ तुरक किया करि सुंनति, औरति सौ का कहिये।
अरध सरीरी नारि न छूटै, आधा हिंदू रहिये॥
छाँड़ि कतेब राँम कहि काजी, खून करत हौ भारी।
पकरी टेक कबीर भगति की, काजी रहै झष मारी॥59॥

मुलाँ कहाँ पुकारै दूरि, राँम रहीम रह्या भरपूरि॥टेक॥
यहु तौ अलहु गूँगा नाँही, देखे खलक दुनी दिल माँही॥
हरि गुँन गाइ बंग मैं दीन्हाँ, काम क्रोध दोऊ बिसमल कीन्हाँ।
कहै कबीर यह मुलना झूठा, राम रहीम सबनि मैं दीठा॥60॥

पढ़ि ले काजी बंग निवाजा, एक मसीति दसौं दरवाजा॥टेक॥
मन करि मका कबिला करि देही, बोलनहार जगत गुर येही॥
उहाँ न दोजग भिस्त मुकाँमाँ, इहाँ ही राँम इहाँ रहिमाँनाँ॥
बिसमल ताँमस भरम कै दूरी, पंचूँ भयि ज्यूँ होइ सबूरी॥
कहै कबीर मैं भया दीवाँनाँ, मनवाँ मुसि मुसि सहजि समानाँ॥61॥
टिप्पणी: ख-मन करि मका कबिला कर देही।
राजी समझि राह गति येही॥

मुलाँ कर ल्यौ न्याव खुदाई, इहि बिधि जीव का भरम न जाई॥टेक॥
सरजी आँनैं देह बिनासै, माटी बिसमल कींता।
जोति सरूपी हाथि न आया, कहौ हलाल क्या कीता॥
बेद कतेब कहौ क्यूँ झूठा, झूठा जोनि बिचारै।
सब घटि एक एक करि जाँनैं, भौं दूजा करि मारै॥
कुकड़ी मारै बकरी मारै, हक हक हक करि बोलै।
सबै जीव साईं के प्यारे, उबरहुगे किस बोलै॥
दिल नहीं पाक पाक नहीं चीन्हाँ, उसदा षोजन जाँनाँ।
कहै कबीर भिसति छिटकाई, दोजग ही मन माँनाँ॥62॥
टिप्पणी: ख-उसका खोज न जाँनाँ।

या करीम बलि हिकमति तेरी। खाक एक सूरति बहु तेरी॥टेक॥
अर्थ गगन में नीर जमाया, बहुत भाँति करि नूरनि पाया॥
अवलि आदम पीर मुलाँनाँ, तेरी सिफति करि भये दिवाँनाँ॥
कहै कबीर यहु हत बिचारा, या रब या रब यार हमाराँ॥63॥

काहे री नलनी तूँ कुम्हिलाँनीं, तेरे ही नालि सरोवर पाँनी॥टेक॥
जल मैं उतपति जल में बास, जल में नलनी तोर निवास।
ना तलि तपति न ऊपरि आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि॥
कहैं कबीर से उदिक समान, ते नहीं मूए हँमरे जाँन॥64॥

इब तूँ हास प्रभु में कुछ नाँहीं, पंडित पढ़ि अभिमाँन नसाँहीं॥टेक॥
मैं मैं मैं जब लग मैं कीन्हा, तब लग मैं करता नहीं चीन्हाँ।

कहै कबीर सुनहु नरनाहा, नाँ हम जीवत न मूँवाले माहाँ॥65॥

अब का डरौं डर डरहि समाँनाँ, जब थैं मोर तोर पहिचाँनाँ॥टेक॥
जब लग मोर तोर करि लीन्हां, भै भै जनमि जनमि दुख दीन्हा॥
अगम निगम एक करि जाँनाँ, ते मनवाँ मन माँहि समाना॥
जब लग ऊँच नीच कर जाँनाँ, ते पसुवा भूले भ्रँम नाँनाँ।
कहि कबीर मैं मेरी खोई, बहि राँम अवर नहीं कोई॥66॥

बोलनाँ का कहिये रे माई बोलत बोलत तत नसाई॥टेक॥
बोलत बोलत बढ़ै बिकारा, बिन बोल्याँ क्यूँ होइ बिचारा॥
संत मिलै कछु कहिये कहिये, मिलै असंत पुष्टि करि रहिये॥
ग्याँनी सूँ बोल्या हितकारी, मूरिख सूँ बोल्याँ झष मारी॥
कहै कबीर आधा घट डोलै, भर्या होइ तौ मुषाँ न बोलै॥67॥

बागड़ देस लूचन का घर है, तहाँ जिनि जाइ दाझन का डर है॥टेक॥
सब जग देखौं कोई न धीरा, परत धूरि सिरि कहत अबीरा॥
न तहाँ तरवर न तहाँ पाँणी, न तहाँ सतगुर साधू बाँणी॥
न तहाँ कोकिला न तहाँ सूवा, ऊँचे चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा॥
देश मालवा गहर गंभीर डग डग रोटी पग पग नीर॥
कहैं कबीर घरहीं मन मानाँ, गूँगै का गुड़ गूँगै जानाँ॥68॥

अवधू जोगी जग थैं न्यारा; मुद्रा निरति सुरति करि सींगी, नाद न षंडै धारा॥टेक॥
बसै गगन मैं दुनीं न देखै, चेतनि चौकी बैठा।
चढ़ि अकास आसण नहीं छाड़ै, पीवै महा रस मीठा॥
परगट कंथाँ माहैं जोगी दिल मैं दरपन जीवै।
सहँस इकीस छ सै धागा, निहचल नाकै पीवै॥
ब्रह्म अगनि मैं काया जारै, त्रिकुटी संगम जागै।
कहै कबीर सोई जोगेश्वर, सहज सुंनि ल्यौ लागौ॥69॥

अवधू गगन मंडल घर कीजै, अमृत झरै सदा सुख उपजै, बंक नालि रस पीजै॥टेक॥
मूल बाँधि सर गगन समाना, सुखमन यों तन लागी।
काम क्रोध दोऊ भया पलीता, तहँ जोनणीं जागी॥
मनवाँ जाइ दरीबै बैठा, गगन भया रसि लागा।
कहै कबीर जिय संसा नाँहीं, सबद अनाहद बागा॥70॥

कोई पीवै रे रस राम नाम का, जो पीवै सो जोगी रे।
संतौ सेवा करौ राम की, और न दूजा भोगी रे॥टेक॥
यहु रस तौ सब फीका भया, ब्रह्म अगनि परजारी रे।
ईश्वर गौरी पीवन लागे, राँम तनीं मतिवारी रे॥
चंद सूर दोइ भाठी कीन्ही सुषमनि चिगवा लागी रे।
अंमृत कूँ पी साँचा पुरया, मेरी त्रिष्णाँ भागी रे॥
यहु रस पीवै गूँगा गहिला, ताकी कोई न बूझै सार रे।
कहै कबीर महा रस महँगा, कोई पीवेगा पीवणहार रे॥71॥

टिप्पणी: ख-चंद सूर दोइ किया पयाना।

उनमनि चढ्या महारस पीवै।
अवधू मेरा मन मतिवारा, उन्मनि चढ़ा मगन रस पीवै त्रिभवन भया उजियारा॥टेक॥
गुड़ करि ग्यान ध्याँन कर महुवा भव भाठी करि भारा॥
सुषमन नारी सहजि समानी, पीयै पीवनहारा॥
दोइ पुड़ जोड़ि चिगाई भाठी, चुया महा रस भारी॥
काम क्रोध दोइ किया पलीता, छुटि गई संसारी॥
सुंनि मंडल मैं मँदला बाजै, तहाँ मेरा मन नाचै।
गुर प्रसादि अमृत फल पाया, सहजि सुषमनाँ काछै॥
पूरा मिल्या तबैं सुख उपज्यौ, तन की तपनि बुझानी।
कहै कबीर भवबंधन छूटै, जोतिहिं जोति समानी॥72॥
टिप्पणी: ख-पूरा मिल्या तबै सुष उपनाँ॥

छाकि परो आतम मतिवारा, पीवत राँम रस करत बिचारा॥टेक॥
बहुत मोलि महँगे गुड़ पावा, लै कसाब रस राँम चुवावा॥
तन पाटन मैं कीन्ह पसारा, माँगि माँगि रस पीवै बिचारा॥
कहै कबीर फाबी मतिवारी, पीवत राम रस लगी खुमारी॥73॥

बोलौ भाई राम की दुहाई,
इहि रसि सिव सनकादिक माते, पीवत अजहूँ न अघाई॥टेक॥
इला प्यंगुला भाठी कीन्हीं, ब्रह्म अगनि परजारी।
ससि हरसूर द्वार दस मूँदें, लागी जोग जुग तारी॥
मन मतिवाला पीवै राँम रस, दूजा कछू न सुहाई।
उलटी गंग नीर बहि आया, अमृत धार चुवाई॥
पंच जने सो सँग करि लीन्हें, चलत खुमारी लागी।
प्रेम पियालै पीवन लागे, सोवत नागिनी जागी॥
सहज सुंनि मैं जिनि रस चाष्या सतगुर थैं सुधि पाई॥
दास कबीर इही रसि माता, कबहुँ उछकि न जाई॥74॥

राम रस पाईया रे, ताथैं बिसरि गये रस और॥टेक॥
रे मन तेरा को नहीं खैंचि लेइ जिनि भार।
विरषि बसेरा पंषि का, ऐसा माया जाल॥
और मरत को रोइए, जो आपा थिर न रहाइ।
जो उपज्या सो बिन सिहै ताथैं दुख करि मरै बलाइ।
जहाँ उपज्या तहाँ फिरि रच्या रे, पीवत मरदन लाग॥
कहै कबीर चित चेतिया, ताथैं राम सुमरि बैराग॥75॥

राम चरन मनि भाये रे।
अस ढरि जाहु राम के करहा, प्रेम प्रीतिल्यौ लाये रे॥टेक॥
आँब चढ़ी अँबली रे अँबली बबूर चढ़ी नगबेली रे।
द्वै रथ चढ़ि गयौ राँड कौ करहा, मन पाटी की सैली रे॥
कंकर कूई पतालि पनियाँ, सूनै बूँद बिकाई रे।

बजर परौ इति मथुरा नगरी, काँन्ह पियासा जाई रे॥
एक दहिड़िया दही जमायौ, दूसरी परि गई साई रे॥
न्यूँति जिमाऊ अपनौ करहा छार मुनिस कौ डारी रे।
इहि बँनि बाजै मदन भेरि रे, उहि बँनि बाजे तूरा रे।
इहि बँनि खेले राही रुकमनि, उहिं बनि कान्हा अहीरा रे।
आसि पासि तुरसी कौ बिरवा, माँहि द्वारिका गाँऊ रे।
तहाँ मेरो ठाकुर राम राइ है, भगत कबीरा नाऊँ रे॥76॥

थिर न रहै चित थिर न रहै, च्यंतामणि तुम्ह कारणि हौ।
मन मैले मैं फिर फिर आहौं, तुम सुनहु न दुख बिसरावन हो॥टेक॥
प्रेम खटोलवा कसि कसि बाँध्यो, बिरह बान तिहि लागू हो।
तिहि चढ़ि इँदऊ करत गवँसिया, अंतर जमवा जागू हो॥
महरु मछा मारि न जाँनै, गहरै पैठा धाई हो।
दिन इक मगरमछ लै खैहै, तब को रखिहै बंधन भाई हो॥
महरू नाम हरइये जाँनै, सबब न बूझै बौरा हो।
चारै लाइ सकल जग खायो, तऊ न भेट निसहरा हो॥
जो महराज चाहौ महरईये, तो नाथौ ए मन बौरा हो।
तारी लाइकैं सिष्टि बिचारौ, तब गाहि भेटि निसहुरा हो॥
टिकुटि भइ काँन्ह के कारणि, भ्रमि भ्रमि तीरथ कीन्हाँ हो।
सो पद देहु मोरि मदन मनोहर, जिहि पदि हरि मैं चीन्हाँ हो॥
दास कबीर कीन्ह अस गहरा, बूझै कोई महरा हो।
यह संसार जात मैं देखौं, ठाढ़ौ रहौ कि निहुरा हो॥77॥

बीनती एक राम सुनि थोरी, अब न बचाइ राखि पति मोरी॥टेक॥
जैसैं मंदला तुमहि बजावा, तैसैं नाचत मैं दुख पावा॥
जे मसि लागी सबै छुड़ावौ, अब मोहिं जनि बहु रूप कछावौ॥
कहैं कबीर मेरी नाच उठावौ, तुम्हारे चरन कँवल दिखलावो॥78॥

मन थिर रहै न घर है मेरा, इन मन घर जारे बहुतेरा॥टेक॥
घर तजि बन बाहरि कियौ बास, घर बने देखौं दोऊ निरास॥
जहाँ जाँऊँ तहाँ सोग संताप, जुरा मरण कौ अधिक बियाप॥
कहै कबीर चरन तोहि बंदा, घर मैं घर दे परमानंदा॥79॥

कैसे नगरि करौं कुटवारी, चंचल पुरिष बिचषन नारी॥टेक॥
बैल बिआइ गाइ भई बाँझ, बछरा दूहै तीन्यूँ साँझ॥
मकड़ी धरि माषी छछि हारी, मास पसारि चीन्ह रखवारी॥
मूसा खेटव नाव बिलइया, मीडक सोवै साप पहरइया॥
निति उठि स्याल स्यंघ सूँ झूझै, कहै कबीर कोई बिरला बूझै॥80॥

माई रे चूँन बिलूँटा खाई, वाघनि संगि भई सबहिन कै, खसम न भेद लहाई॥टेक॥
सब घर फोरि बिलूँटा खायौ, कोई न जानैं भेव।
खसम निपूतौ आँगणि सूतौ, राँड न देई लेव॥
पाडोसनि पनि भई बिराँनी, माँहि हुई घर घालै।
पंच सखी मिलि मंगल गाँवैं, यह दुख याकौं सालै॥

द्वै द्वै दीपक धरि धरि जोया, मंदिर सादा अँधारा।
घर घेहर सब आप सवारथ, न हरि किया पसारा॥
होत उजाड़ सबै कोई जानै, सब काहू मनि भावै।
कहै कबीर मिलै जौ सतगुर, तौ यहु चून छुड़ावै॥81॥
टिप्पणी: ख-खसम न भेद लषाई।

विषिया अजहू सख आसा, हूँण न देइ हरि के चरन निवासा॥टेक॥
सुख माँगे दुख पहली आवै, तातै सुख माँग्याँ नहीं भावै॥
जा सुख थैं सिव बिरंचि डराँनाँ, सो मुख हमहु साच करि जाना।
सुखि छ्या ड्या तब सब दुख भागा, गुर के सबद मेरा मन लागा॥
निस बासुरि विषैतनाँ उपगार, विषई नरकि न जाताँ बार।
कहैं कबीर चंचल मति त्यागी, तब केवल राम नाम त्यौं लागी॥82॥
टिप्पणी: ख-हौन देई न हरि के चरन निवास॥

तुम्ह गारड़ू मैं विष का माता, कहै न जिवावौ मेरे अमृतदाता॥टेक॥
ससार भवगम डसिले काया, अरु दुखदारन व्यापै तेरी माया॥
सापनि क पिटारै जागे, अह निसी रोवै ताकूँ फिरि फिरि लागैं।
कहै कबीर को को नहीं राखे, राम रसाँइन जिनि जिनि चाखे॥83॥

माया तजूँ तजी नहीं जाइ, फिर फिर माया मोहे लपटाइ॥टेक॥
माया आदर माया मान, माया नहीं तहाँ ब्रह्म गियाँन॥
माया रस माया कर जाँन, माया करनि ततै परान॥
माया जप तप माया जोग, माया बाँधे सबही लोग॥
माया जल थलि माया आकासि, माया व्यापि रही चहुँ पासि॥
माया माता माया पिता, असि माया अस्तरी सुता॥
माया मारि करै व्यौहार, कहैं कबीर मेरे राम अधार॥84॥

ग्रिह जिनि जाँनी रूड़ौ रे।
कंचन कलस उठाइ लै मंदिर, राम कहै बिन धूरौ रे॥टेक॥
इन ग्रिह मन डहके सबहिन के, काहू कौ पर्‌यो न पूरौ रे॥
राजा राणाँ राव छत्रापति, जरि भये भसम कौं कूरौ रे॥
सबथैं नीकौ संत मँडलिया, हरि भगतनि कौं भेरौ रे॥
गोविंद के गुन बैठे गैहैं, खैहैं, टूकौ टेरौ रे॥
ऐसौं जानि जाँपौं जगजीवन, जग सूँ तिनका तोरौं रे॥
कहै कबीर राम भजबे कौं, एक आध कोई सूरौ रे॥85॥

रजसि मीन देखी बहु पानी, काल जाल की खबरि न जानी॥टेक॥
गारै गरबनौ औघट घाट, सो जल छाड़ि बिकानौं हाट॥
बँध्यो न जानैं जल उदमादि, कहै कबीर सब मोहे स्वादि॥86॥

काहै रे मन दह दिस धावै, विषिया संगि संतोष न पावै॥टेक॥
जहाँ जहाँ कलपैं तहाँ बंधना, तरन कौ थाल कियौं तैं रथनाँ॥
जौ पै सुख पइयत इन माँही, तौ राज छाड़ि कत बन कौं जाँहीं॥
आनँद सहत तजौ विष नारी, अब क्या झीषै पतित भिषारी॥

कहै कबीर यहु सुख दिन चारि, तजि विषिया भजि चरन मुरारि॥87॥

जियरा जाहि गौ मैं जाँनाँ, जो देखा सो बहुरि न पेष्या माटी सूँ लपटाँनाँ॥टेक॥
बाक्ल बसतर किया पहरिबा, का तप बनखंडि बास॥
कहा मूगध रे पाँहन पूजै, काजल डारै गाता॥
कहै कबीर सुर मुनि उपदेसा, लोका पंथि लगाई॥
सुनौ संतौ सुमिरौ भगत जन, हरि बिन जनम गवाई॥88॥

हरि ठग जग कौ ठगौरी लाई, हरि कै वियोग कैसे जीऊँ मेरी माई॥टेक॥
कौन पूरिष कौ काकी नारी, अभिअंतरि तुम्ह लेहु बिचारी॥
कौन पूत को काको बाप, कौन मरैं कौन करै संताप॥
कहै कबीर ठग सौं मन माना, गई ठगौरी ठग पहिचाना॥89॥

साईं मेरे साजि दई एक डोली, हस्त लोक अरु मैं तैं बोली॥टेक॥
हक झंझर सम सूत खटोला, त्रिस्ना बाद चहुँ दिसि डोला॥
पाँच कहार का भरम न जाना, एकै कह्या एक नहीं माना॥
भूमर थाम उहार न छावा, नैहर जात बहुत दुख पावा॥
कहै कबीर बन बहुत दुख सहिये, राम प्रीति करि संगही रहिये॥90॥
टिप्पणी: कहै कबीर बहुत दुख सहिये॥

बिनसि जाइ कागद की गुड़िया, जब लग पवन तबै उग उड़िया॥टेक॥
गुड़िया कौ सबद अनाहद बोलै, खसम लियै कर डोरी डोलै॥
पवन थक्यो गुड़िया ठहरानी, सीस धनै धुनि रोवै प्राँनी।
कहै कबीर भजि सारँगपानी, नाहीं तर ह्नैहै खैंचा तानी॥91॥

मन रे तन कागद का पुतला।
लागै बूँद बिनसि जाइ छिन में, गरब कर क्या इतना॥टेक॥
माटी खोदहिं भीत उसारैं, अंध कहै घर मेरा॥
आवै तलब बाँधि लै चालैं, बहुरि न करिहै फेरा॥
खोट कपट करि यहु धन जोर्‌या, लै धरती मैं गाड्यौ॥
रोक्यो घटि साँस नहीं निकसै, ठौर ठौर सब छाड्यौ॥
कहै कबीर नट नाटिक थाके, मदला कौन बजावै॥
गये पषनियाँ उझरी बाजी, को काहू कै आवै॥92॥

झूठे तन कौ कहा रखइये, मरिये तौ पल भरि रहण न पइये॥टेक॥
षीर षाँढ़ घृत प्यंउ सँवारा, प्राँन गये ले बाहरि जारा॥
चोवा चंदन चरनत अंगा, सो तन जरै काठ के संगा॥
दास कबीर यहु कीन्ह बिचारा, इक दिन ह्नैहै हाल हमारा॥93॥

देखहुक यह तन जरता है, घड़ी पहर बिलँबौ रे भाई जरता है॥टेक॥
काहैं कौ एता किया पसारा, यह तन जरि करि ह्नैहै छारा॥
नव तन द्वादस लागा आगि, मुगध न चेतै नख सिख जागी॥

काम क्रोध घट भरे बिकारा, आपहिं आप जरै संसारा॥
कहै कबीर हम मृतक समाँनाँ, राम नाम छूटै अभिमाना॥94॥

तन राखनहारा को नाहीं, तुम्ह सोच विचारि देखौ मन माँही॥टेक॥
जोर कुटुंब आपनौ करि पारौं, मुंड ठोकि ले बाहरि जारौं॥
दगाबाज लूटैं अरु रोवै, जारि गाडि षुर षोजहिं षोवै॥
कहत कबीर सुनहुँ रे लोई, हरि बिन राखनहार न कोई॥95॥

अब क्या सोचै आइ बनी, सिर पर साहिब राम धनी॥टेक॥
दिन दिन पाप बहुत मैं कीन्हा, नहीं गोब्यंद की संक मनीं॥
लेट्यो भोमि बहुत पछितानी, लालचि लागौ करत धनीं॥
छूटी फौज आँनि गढ़ घेरौं, उड़ि गयौ गूडर छाड़ि तनीं॥
पकरौं हंस जम ले चाल्यौ मंदिर रोवै नारि धनीं॥
कहै कबीर राम कित सुमिरत, चीन्हत नाहिन एक चिनी॥
जब जाइ आइ पड़ोसी घेरौं, छाँड़ि चल्यौ तजि पुरिष पनीं॥96॥

सुबटा डरपत रहु मेरे भाई, तोहि डर ई देत बिलाई॥
तीनि बार रूँधै इक दिन मैं, कबहूँ कै खता खवाई॥टेक॥
या मंजारी मुगध न माँनै, सब दुनियाँ डहकाई॥
राणाँ राव रंक कौ व्यापै, करि करि प्रीति सवाई॥
कहत कबीर सुनहुँ रे सुबटा, उबरै हरि सरनाई॥
लाषौ माँहि तै लेत अचानक, काह न देत दिखाई॥97॥

का माँगूँ कुछ थिर न रहाई, देखत नैन चल्या जग जाई॥ टेक॥
इक लष पूत सवा लष नाती, ता रावन घरि दिया न बाती॥
लंका सी कोट समंद सी खाई, ता रावन का खबरि न पाई॥
आवत संग जात सँगाती, कहा भयौ दरि बाँधे हाथी॥
कहै कबीर अंत की बारी, हाथ झाड़ि जैसे चले जुवारी॥98॥

राम थोरे दिन को का धन करना, धंधा बहुत निहाइति मरना॥टेक॥
कोटि धज साह हस्ती बँधी राजा, क्रिपन को धन कौनें काजा॥
धन कै गरबि राम नहीं जाना, नागा ह्नै जंम पै गुदराँनाँ॥
कहै कबीर चेतहु रे भाई, हंस गया कछु संगि न जाई॥99॥

काह कूँ माया दुख करि जोरी, हाथि चूँन गज पाँच पछेवरी॥टेक॥
नाँ को बँध न भाई साँथी, बाँधे रहे तुरंगम हाथी॥
मैड़ो महल बावड़ी छाजा, छाड़ि गये सब भूपति राजा॥
कहै कबीर राम ल्यौ लाई, धरी रही माया काहू खाई॥100॥
टिप्पणी: ख-मैडा पहल अरु सोभित छाजा।

माया का रस षाण न पावा, तह लग जम बिलवा ह्नै धावा॥टेक॥
अनेक जतन करि गाड़ि दुराई, काहू साँची काहू खाई॥
तिल तिल करि यहु माया जोरी, चलति बेर तिणाँ ज्यूँ तासी॥
कहै कबीर हूँ ताँका दास, माया माँहैं रहैं उदास॥101॥

मेरी मेरी दुनिया करते, मोह मछर तन धरते,
आगै पीर मुकदम होते, वै भी गये यौं करते॥टेक॥
जिसकी ममा चचा पुनि किसका, किसका पंगड़ा जोई॥
यहु संसार बजार मंड्या है, जानैगा जग कोई॥
मैं परदेसी काहि पुकारौं, इहाँ नहीं को मेरा॥
यहु संसार ढूँढ़ि सब देख्या, एक भरोसा तेरा॥
खाँह हलाल हराँम निवारै, भिस्त भिस्त तिनहू कौं होई॥
पंच तत का भरम न जानै दो जगि पड़िहै सोई॥
कुटुंब कारणि पाप कमावै, तू जाँणै घर मेरा॥
ए सब मिले आप सवारथ, इहाँ नहीं को तेरा॥
सायर उतरौ पंथ सँवारौ, बुरा न किसी का करणाँ॥
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, ज्वाब खसम कूँ भरणा॥102॥
टिप्पणी: ख-मेरी मेरी सब जग करता।

रे यामै क्या मेरा क्या तेरा, लाज न मरहि कहत घर मेरा॥टेक॥
चारि पहर निस भोरा, जैसे तरवर पंखि बसेरा॥
जैसैं बनियें हाट पसारा, सब जग का सो सिरजनहारा॥
ये ले जारे वै ले गाड़े, इनि दुखिइनि दोऊ घर छाड़े॥
कहउ कबीर सुनहु रे लोई, हम तुम्ह बिनसि रहैगा सोई॥103॥

नर जाँणै अमर मेरो काया, घर घर बात दुपहरी छाया॥टेक॥
मारग छाड़ि कुमारग जीवै, आपण मरैं और कूँ रोवै॥
कछू एक किया एक करणा, मुगध न चेतै निहचै मरणाँ॥
ज्यूँ जल बूँद तैसा संसारा उपजत, बिनसत लागै न बारा॥
पंच पँषुरिया एक सरीरा, कृष्ण केवल दल भवर कबीरा॥104॥
टिप्पणी: ख-मुगध न देखे॥

मन रे अहरषि बाद न कीजै, अपनाँ सुकृत भरि भरि लीजै॥टेक॥
कुँभरा एक कमाई माटी, बहु विधि जुगाति बणाई॥
एकनि मैं मुक्ताहल मोती, एकनि ब्याधि लगाई॥
एकनि दीना पाट पटंबर एकनि सेज निवारा॥
एकनि दोनों गरै कुदरी, एकनि सेज पयारा॥
साची रही सूँम की संपति, मुगध कहै यहु मेरी॥
अंत काल जब आइ पहुंचा, छिन में कीन्ह न बेरी॥
कहत कबीर सुनौ रे संतो, मेरी मेरी सब झूठी॥
चड़ा चौथा चूहड़ा ले गया तणी तणगती टूटी॥105॥

हड़ हड़ हड़ हड़ हसती है, दीवाँनपनाँ क्या करती है।
आड़ी तिरछी फिरती है, क्या च्यौं च्यौं म्यौं म्यौं करती है॥
क्या तूँ रंगी क्या तूँ चंगी, क्या सुख लौड़ै कीन्हाँ॥
मीर मुकदम सेर दिवाँनी, जंगल केर षजीना।
भूले भरमि कहा तुम्ह राते, क्या मदुमाते माया॥
राम रंगि सदा मतिवाले, काया होइ निकाया॥

कहत कबीर सुहाग सुंदरी, हरि भजि ह्नै निस्तारा॥
सारा षलक खराब किया है, माँनस कहा बिचारा॥106॥

हरि के नाँइ गहर जिनि करऊँ, राम नाम चित मूखा न धरऊँ॥टेक॥
जैसे सती तजै संसारा, ऐसै जियरा करम निवारा॥
राग दोष दहूँ मैं एक न भाषि, कदाचि ऊपजै चिता न राषि॥
भूले विसरय गहर जौ होई, कहै कबीर क्या करिहौ मोहि॥107॥

मन रे कागज कोर पराया, कहा भयौ ब्यौपार तुम्हारै, कल तर बढ़े सवाया॥टेक॥
बड़े बौहरे साँठी दीन्हौ कलतर काढ़ो खोटै॥
चार लाख अरु असी ठीक दे जनम लिष्यो सब चोटै॥
अबकी बेर न कागद कीरौं, तौ धर्म राई सूँ तूटै॥
पूँजी बितड़ि बांदे ले दैहै, तब कहै कौन के छूटै॥
गुरुदेव ग्याँनी भयौ लगनियाँ, सुमिरन दीन्हौ हीरा॥
बड़ी निसरना नाव राम कौ, चढ़ि गयौ कीर कबीरा॥108॥

धागा ज्यूँ टूटै त्यूँ जोरि, तूटै तूटनि होयगी, नाँ ऊँ मिलै बहोरि॥टेक॥
उरझा सूत पाँन नहीं लागै, कूच फिरे सब लाई।
छिटकै पवन तार जब छूटै, तब मेरौ कहा बसाई॥
सुरझ्यौ सूत गुढ़ी सब भागी, पवन राखि मन धीरा॥
पचूँ भईया भये सनमुखा, तब यहु पान करीला॥
नाँन्हीं मैदा पीसि लई है, छाँणि लई द्वै बारा॥
कहै कबीर तेल जब मेल्या, बुतत न लागी बारा॥109॥

ऐसा औसरि बहुरि न आवै, राम मिलै पूरा जन पावै॥टेक॥
जनम अनेक गया अरु आया, की बेगरि न भाड़ा पाया॥
भेष अनेक एकधूँ कैसा, नाँनाँ रूप धरै नट जैसा॥
दाँन एक माँगों कवलाकंत, कबीर के दुख हरन अनंत॥110॥

हरि जननी मैं बालिक तेरा, काहे न औगुण बकसहु मेरा॥टेक॥
सुत अपराध करै दिन केते, जननी कै चित रहै न तेते॥
कर गहि केस करे जौ घाता, तऊ न हेत उतारै माता॥
कहैं कबीर एक बुधि बिचारी, बालक दुखी दुखी महतारी॥111॥

गोब्यदें तुम्ह थैं डरपौं भारी, सरणाई आयौ क्यूँ गहिये, यहु कौन बात तुम्हारी॥टेक॥
धूप दाझतैं छाँह तकाई, मति तरवर सचपाऊँ॥
तरवर माँहै ज्वाला निकसै, तौ क्या लेई बुझाऊँ॥
जे बन जलैं त जल कुँ धावै, मति जल सीतल होई॥
जलही माँहि अगनि जे निकसै, और न दूजा कोई॥
तारण तिरण तूँ तारण, और न दूजा जानौं॥
कहै कबीर सरनाँई आयौ, अपनाँ देव नहीं मानौं॥112॥

मैं गुलाँम मोहि बेच गुसाँई, तन मन धन मेरा रामजी के ताँई॥टेक॥
आँनि कबीरा हाटि उतारा, सोई गाहक बेचनहारा॥

बेचै राम तो राखै कौन राखै राम तो बेचै कौन॥
कहै कबीर मैं तन मन जाना, साहब अपनाँ छिन न बिसार्‌या॥113॥

अब मोहि राम भरोसा तेरा,
जाके राम सरीखा साहिब भाई, सों क्यूँ अनत पुकारन जाई॥
जा सिरि तीनि लोक कौ भारा, सो क्यूँ न करै जन को प्रतिपारा॥
कहै कबीर सेवौ बनवारी, सींची पेड़ पीवै सब डारी॥114॥

जियरा मेरा फिरै रे उदास, राम बिन निकसि न जाई साँस, अजहूँ कौन आस॥टेक॥
जहाँ जहाँ जाँऊँ राम मिलावै न कोई, कहौ संतौ कैसे जीवन होई॥
जरै सरीर यहु तन कोई न बुझावै, अनल दहै निस नींद न आवै॥
चंदन घसि घसि अंग लगाऊँ, राम बिना दारुन दुख पाऊँ।
सतसंगति मति मनकरि धीरा, सहज जाँनि रामहि भजै कबीरा॥115॥

राम कहौ न अजहूँ केते दिना, जब ह्नै है प्राँन तुम्ह लीनाँ॥टेक॥
भौ भ्रमत अनेक जन्म गया, तुम्ह दरसन गोब्यंद छिन न भया॥
भ्रम्य भूलि परो भव सागर, कछु न बसाइ बसोधरा॥
कहै कबीर दुखभंजना, करौ दया दुरत निकंदना॥116॥

हरि मेरा पीव भाई, हरि मेरा पीव, हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव॥टेक॥
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया, राम बड़े मैं छुटक लहुरिया।
किया स्यंगार मिलन कै ताँई, काहे न मिलौ राजा राम गुसाँई॥
अब की बेर मिलन जो पाँऊँ, कहै कबीर भौ जलि नहीं आँऊँ॥117॥

राम बान अन्ययाले तीर, जाहि लागे लागे सो जाँने पीर॥टेक॥
तन मन खोजौं चोट न पाँऊँ, ओषद मूली कहाँ घसि लाँऊँ॥
एकही रूप दीसै सब नारी, नाँ जानौं को पियहि पियारी॥
कहै कबीर जा मस्तिक भाग, नाँ जानूँ काहु देइ सुहाग॥118॥

आस नहिं पूरिया रे, राम बिन को कर्म काटणहार॥टेक॥
जद सर जल परिपूरता, पात्रिग चितह उदास।
मेरी विषम कर्म गति ह्नै परा, ताथैं पियास पियास॥
सिध मिलै सुधि नाँ मिलै, मिलै मिलावै सोइ॥
सूर सिध जब भेटिये, तब दुख न ब्यापै कोइ॥
बौछैं जलि जैसें मछिका, उदर न भरई नीर॥
त्यूँ तुम्ह कारनि केसवा, जन ताला बेली कबीर॥119॥

राम बिन तन की ताप न जाई, जल मैं अगनि उठी अधिकाई॥टेक॥
तुम्ह जलनिधि मैं जल कर मीनाँ, जल मैं रहौं जलहि बिन षीनाँ।
तुम्ह प्यंजरा मैं सुवनाँ तोरा, दरसन देहु भाग बड़ा मोरा॥
तुम्ह सतगुर मैं नौतम चेला, कहै कबीर राम रमूं अकेला॥120॥

गोब्यंदा गुँण गाईये रे, ताथैं भाई पाईये परम निधान॥टेक॥

ऊंकारे जग ऊपजै, बिकारे जग जाइ।
अनहद बेन बजाइ करि रह्यों गगन मठ छाइ॥
झूठै जग डहकाइया रे क्या जीवण की आस।
राम रसाँइण जिनि पीया, तिनकैं बहुरि न लागी रे पियास॥
अरघ षिन जीवन भला, भगवत भगति सहेत।
कोटि कलप जीवन ब्रिथा, नाँहिन हरि सूँ हेत॥
संपति देखि न हरषिये, बिपति देखि न रोइ।
ज्यूँ संपति त्यूँ बिपति है करता करै सु होइ॥
सरग लोक न बाँछिये, डरिये न नरक निवास।
हूँणा थाँ सो ह्वै रह्या, मनहु न कीजै झूठी आस॥
क्या जप क्या तप संजमाँ, क्या तीरथ ब्रत स्नान।
जो पै जुगति जाँनियै, भाव भगति भगवान॥
सँनि मंडल मैं सोचि लै, परम जोति परकास॥
तहूँवा रूप न रेष है, बिन फूलनि फूल्यौ रे आकास॥
कहै कबीर हरि गुण गाइ लै, सत संगति रिदा मँझारि।
जो सेवग सेवा करै, तो सँगि रमैं रे मुरारि॥121॥
टिप्पणी: ख-भगवंत भजन सहेत॥

मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भज भाई।
जा दिन तेरो कोई नाँही, ता दिन राम सहाई॥टेक॥
तंत न जानूँ मंत न जानूँ, जानूँ सुंदर काया।
मीर मलिक छत्रापति राजा, ते भी खाये माया॥
बेद न जानूँ, भेद न जानूँ, जानूँ एकहि रामाँ॥
पंडित दिसि पछिवारा कीन्हाँ, मुख कीन्हौं जित नामा।
राज अंबरीक के कारणि, चक्र सुदरसन जारै।
दास कबीर कौ ठाकुर ऐसौ, भगत की सरन उबारै॥122॥

राम भणि राम भणि राम चिंतामणि, भाग बड़े पायौ छाड़ै जिनि॥टेक॥
असंत संगति जिनि जाइ रे भूलाइ, साथ संगति मिलिं हरि गुँण गाइ।
रिदा कवल में राखि लुकाइ, प्रेम गाँठि दे ज्यूँ छूटि न जाइ।
अठ सिधि नव निथि नाँव मँझारि, कहै कबीर भजि चरन मुरारि॥123॥

निरमल निरमल राम गुण गावै, सौ भगता मेरे मनि भावै॥टेक॥
जे जन लेहिं राम नाँउँ, ताकी मैं बलिहारी जाँउँ॥
जिहि घटि राम रहे भरपूरि, ताकी मैं चरनन की धूरि॥
जाति जुलाहा मति कौ धीर, हरषि हरषि गुँण रमैं कबीर॥124॥

जा नरि राम भगति नहीं साथी, सो जनमत काहे न मूवौ अपराथी॥टेक॥
गरभ मूचे मुचि भई किन बाँझ, सकर रूप फिरै कलि माँझ।
जिहि कुलि पुत्र न ग्याँन बिचारी, बाकी विधवा काहे न भई महतारी।
कहै कबीर नर सुंदर सरूप, राम भगत बिन कुचल करूप॥125॥

राम बिनाँ धिग्र धिग्र नर नारी, कहा तैं आइ कियौ संसारी॥टेक॥

रज बिना कैसो रजपूत, ग्यान बिना फोकट अवधूत॥
गनिका कौ पूत कासौ कहैं, गुर बिन चेला ग्यान न लहै॥
कबीर कन्याँ करै स्यंगार, सोभ न पावै बिन भरतार॥
कहै कबीर हूँ कहता डरूँ, सुषदेव कहै तो मैं क्या करौं॥126॥

जरि जाव ऐसा जीवनाँ, राजा राम सूँ प्रीति न होई।
जन्म अमोलिक जात है, चेति न देखै कोई॥टेक॥
मधुमाषी धन संग्रहै, यधुवा मधु ले जाई रे।
गयौ गयौ धन मूँढ़ जनाँ, फिरि पीछैं पछिताई रे॥
विषिया सुख कै कारनै, जाइ गानिका सूँ प्रीति लगाई रे।
अंधै आगि न सूझई, पढ़ि पढ़ि लोग बुझाई रे॥
एक जनम कै कारणैं, कत पूजौ देव सहँसौ रे।
काहे न पूजौ राम जी, जाकौ भगत महेसौ रे॥
कहै कबीर चित चंचला, सुनहू मूढ़ मति मोरी।
विषिय फिर फिर आवई, राजा राम न मिले बहोरी॥127॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह पद है-
राम न जपहु कवन भ्रम लाँगे।
मरि जाहहुगे कहा कहा करहु अभागे॥टेक॥
राम राम जपहु कहा करौ वैसे, भेड कसाई कै घरि जैसे।
राम न जपहु कहा गरबना, जम के घर आगै है जाना॥
राम न जपहु कहा मुसकौ रे, जम के मुदगरि गणि गणि खहुरे।
कहै कबीर चतुर के राइ, चतुर बिना को नरकहि जाइ॥130॥

राम न जपहु कहा भयौ अंधा राम बिना जँम मैले फंधा॥टेक॥
सुत दारा का किया पसारा, अंत की बेर भये बटपारा॥
माया ऊपरि माया माड़ी, साथ न चले षोषरी हाँड़ा॥
जपौ राम ज्यूँ अंति उबारै, ठाढ़ी बाँह कबीर पुकारै॥128॥

डगमग छाड़ि दै मन बौरा।
अब तौ जरें बरें बनि आवै, लीन्हों हाथ सिंधौरा॥टेक॥
होइ निसंक मगन ह्नै नाचौ, लोभ मोह भ्रम छाड़ौ॥
सूरौ कहा मरन थैं डरपैं, संतों न संचैं भाड़ौ॥
लोक वेद कुल की मरजादा, इहै कलै मैं पासी।
आधा चलि करि पीछा फिरिहै ह्नै है जग मैं हाँसी॥
यह संसार सकल है मैला, राम कहै ते सूवा।
कहै कबीर नाव नहीं छाँड़ौं, गिरत परत चढ़ि ऊँचा॥129॥

का सिधि साधि करौं कुछ नाहीं, राम रसाँइन मेरी रसनाँ माँहीं॥टेक॥
नहीं कुछ ग्याँन ध्याँन सिधि जोग, ताथैं उपजै नाना रोग।
का बन मैं बसि भये उदास, जे मन नहीं छाड़ै आसा पास॥
सब कृत काच हित सार, कहै कबीर तजि जग ब्यौहार॥130॥

जीवत कछु न कीया प्रवानाँ, मूवा मरम को काँकर जाना॥

जौं तैं रसना राम न कहियो, तौ उपजत बिनसत भरमत रहियौ॥टेक॥
जैसी देखि तरवर की छाया, प्राँन गये कहु काकी माया॥
संधि काल सुख कोई न सोवै, राजा रंक दोऊ मिलि रोवै॥
हंस सरोवर कँवल सरीरा, राम रसाइन पीवै कबीरा॥131॥

का नाँगे का बाँधे चाम, जौ नहीं चीन्हसि आतम राम॥टेक॥
नागे फिरें जोग जे होई, बन का मृग मुकुति गया कोई॥
मूँड़ मूड़ायै जौ सिधि होई, स्वर्ग ही भेड़ न पहुँची कोई॥
ब्यंद राखि जे खेलै है भाई, तौ षुसरै कौंण परम गति पाई॥
पढ़ें गुनें उपजै अहंकारा, अधधर डूबे वार न पारा॥
कहै कबीर सुनहु रे भाई, राम नाम किन सिधि पाई॥132॥

हरि बिन भरमि बिगूते गदा।
जापै जाऊँ आपनपौं छुड़ावण, ते बीधे बहु फंधा॥टेक॥
जोगी कहै जोग सिधि नीकी, और दूजी भाई॥
लुंचित मुंडित मोनि जटाधर, ऐ जु कहै सिधि पाई॥
जहाँ का उपज्या तहाँ बिलाना, हरि पद बिसर्‌या जबहिं॥
पंडित गुँनी सूर कवि दाता, ऐ जु कहैं बड़ हँमहीं॥
वार पार की खबरि न जाँनी, फिरौं सकल बन ऐसैं॥
यहु मन बोहि थके कउवा ज्यूँ, रह्यौ ठग्यौ सो वैसैं॥
तजि बावैं दाँहिणै बिकार, हरि पद दिढ़ करि गहिये॥
कहै कबीर गूँगे गुड़ खाया, बूझै तो का कहिये॥133॥

चलौ बिचारी रहौ सँभारी, कहता हूँ ज पुकारी।
राम नाम अंतर गति नाहीं, तौ जनम जुवा ज्यूँ हारी॥टेक॥
मूँड़ मुड़ाइ फूलि का बैठे, काँननि पहरि मजूसा।
बाहरि देह षेह लपटानीं, भीतरि तौ घर मूसा॥
गालिब नगरी गाँव बसाया, हाँम काँम हंकारी।
घालि रसरिया जब जँम खैंचे, तब का पति रहै तुम्हारी॥
छाँड़ि कपूर गाँठि विष बाँध्यौ, मूल हुवा ना लाहा।
मेरे राम की अभौ पद नगरी, कहै कबीर जुलाहा॥134॥

कौन बिचारि करत हौ पूजा, आतम राम अवर नहीं दूजा॥टेक॥
बिन प्रतीतैं पाती तोड़, ग्याँन बिनाँ देवलि सिर फोड़ै॥
लुचरी लपसी आप संधारै, द्वारै ठाढ़ा राम पुकारै॥
पर आत्म जौ तत बिचारै, कहि कबीर ताकै बलिहारै॥135॥

कहा भयौ तिलक गरै जपमाला, मरम न जानैं मिलन गोपाला॥टेक॥
दिन प्रति पसू करै हरिहाई, गरैं काठ बाकी बाँनि न जाई।
स्वाँग सेत करणी मनि काली, कहा भयौ गलि माला घाली॥
बिन ही प्रेम कहा भयौ रोये, भीतरि मैल बाहरि का धोये॥
गल गल स्वाद भगति नहीं धीर, चीकन चंदवा कहै कबीर॥136॥

ते हरि आवेहि काँमाँ, जे नहीं आतम रामाँ॥टेक॥

थोरी भगति बहुत अलंकारा, ऐसे भगता मिलैं अपारा॥
भाव न चीन्हैं हरि गोपाला, जानि क अरहट कै गलि माला॥
कहै कबीर जिनि गया अभिमाना, सो भगता भगवंत समानाँ॥137॥

कहा भयौ रवि स्वाँग बनायौ, अंतरजामी निकट न आयौ॥टेक॥
विषई विषे ढिढावै, गावै, राम नाम मनि कबहूँ न भावै॥
पापी परलै जाहि अभागै, अमृत छाड़ि विषै रसि लागे॥
कहै कबीर हरि भगति न साधी, भग मुषि लागि मूये अपराधी॥138॥

जौ पैं पिय के मनि नाहीं भाये, तौ का परोसनि कै हुलसाये॥टेक॥
का चूरा पाइल झमकायें, कहा भयौ बिछुवा ठमकायें॥
का काजल स्यंदूर कै दीयैं, सोलह स्यंगार कहा भयौ कीयै॥
अंजन मंजन करै ठगौरी, का पचि मरै निगौडी बौरी॥
जौ पै पतिब्रता ह्नै नारी, कैसे ही रही सो पियहिं पियारी॥
तन मन जीवन सौंपि सरीरा, ताहि सुहागिन कहै कबीरा॥139॥

दूभर पनियाँ भर्या न जाई, अधिक त्रिषा हरि बिन न बुझाई॥टेक॥
उपरि नीर ले ज तलि हारी, कैसे नीर भरे पनिहारी॥
उधर्यौ कूप घाट भयौ भरी, चली निरास पंच पनिहारी॥
गुर उपदेश भरी ले नीरा, हरषि हरषि जल पीवै कबीरा॥140॥
टिप्पणी: ख-जल बिनु न बुझाई।

कहौ भइया अंबर काँसूँ लागा, कोई जाँणँगा जाँननहारा॥टेक॥
अंबरि दीसे केता तारा कौन चतुर ऐसा चितवनहारा॥
जे तुम्ह देखौ सो यहु नाँही, यहु पद अगम अगोचर माँही॥
तीनि हाथ एक अरधाई, ऐसा अंबर चीन्हौ रे भाई॥
कहै कबीर जे अंबर जाने, ताही सूँ मेरा मन माँनै॥141॥

तन खोजौ नर करौ बड़ाई, जुगति बिना भगति किनि पाई॥टैक॥
एक कहावत मुलाँ काजी, राम बिना सब फोकटबाजी॥
नव ग्रिह बाँभण भणता रासी, तिनहुँ न काटी कौ पासी॥
कहै कबीर यहु तन काचा, सबद निरंजन राम नाम साचा॥142॥

जाइ परो हमरो का करिहै, आप करै आप दुख भरिहै॥टेक॥
ऊभड़ जाताँ बाट बतावै, जौ न चलै तौ बहुत दुख पावै॥
अंधे कूप क दिया बताई, तरकि पड़े पुनि हरि न पत्याई॥
इंद्री स्वादि विषै रसि बहिहै, नरकि पड़े पुनि राम न कहिहै॥
पंच सखी मिलि मतौ उपायौ, जंम की पासी हंस बँधायौ॥
कहै कबीर प्रतीति न आवै, पाषंड कपट इहै जिय भावै॥143॥

ऐसे लोगनि सूँ का कहिये।
जे नर भये भगति थैं न्यारे, तिनथैं सदा डराते रहिये॥टेक॥
आपण देही चरवाँ पाँनी ताहि निंदै जिनि गंगा आनी॥
आपण बूड़ैं और कौ बोड़ै, अगनि लगाइ मंदिर मैं सोवै॥

आपण अंध और कूँ काँनाँ, तिनकौ देखि कबीर डराँनाँ।144॥

है हरि जन सूँ जगत लरत है, फुँनिगा कैसे गरड़ भषत है॥टेक॥
अचिरज एक देखह संसारा, सुनहाँ खेदै कुंजर असवारा॥
ऐसा एक अचंभा देखा जंबक करै केहरि सूँ लेखा॥
कहै कबीर राम भजि भाई, दास अधम गति कबहुँ न जाई॥145॥

हैं हरिजन थैं चूक परी, जे कछु आहि तुम्हारी हरी॥टेक॥
मोर तोर जब लग मैं कीन्हाँ, तब लग त्रास बहुत दुख दीन्हाँ॥
सिध साधिक कहैं हम सिधि पाई, राम नाम बिन सबै गँवाई॥
जे बैरागी आस पियासी, तिनकी माया कदे न नासी॥
कहै कबीर मैं दास तुम्हारा, माय खंडन करहु हमारा॥146॥

सब दुनी सयाँनी मैं बौरा, हँम बिगरे बिगरौ जिनि औरा॥टेक॥
मैं नहीं बौरा राम कियो बौरा, सतगुर जारि गयौ भ्रम मोरा॥
विद्या न पढ़ूँ बाद नहीं जानूँ, हरि गुँन कथत सुनत बौराँनूँ॥
काँम क्रोध दोऊ भये विकारा, आपहि आप जरे संसारा॥
मीठो ककहा जाहि जो भावै, दास कबीर राम गुँन गावै॥147॥

अब मैं राम सकल सिधि पाई, आँन कहूँ तो राम दुहाई॥टेक॥
इहि चिति चाषि सबै रस दीठा, राम नाम सा और न मीठा॥
औरे रसि हनैहै कफ गाता, हरि रस अधिक अधिक सुखदाता॥
दूजा बणिज नहीं कछु बाषर, राम नाम दोऊ तत आषर॥
कहै कबीर जे हरि रस भोगी, ताकूँ मिल्या निरंजन जोगी॥148॥

रे मन जाहिं जहाँ तोहि भावै, अब न कोई तेरे अंकुस लावै॥टेक॥
जहाँ जहाँ जाई तहाँ तहाँ रामा, हरि पद चीन्हि कियौ विश्रामा।
तन रंजित तब देखियत दोई, प्रगट्यौ ग्याँन जहाँ तहाँ सोई॥
लीन निरंतर बपु बिसराया, कहै कबीर सुख सागर पाया॥149॥

बहुरि हम काहैं कूँ आवहिंगे।
बिछुरे पंचतत्त की रचना, तब हम रामहि पावहिंगे॥टेक॥
पृथी का गुण पाँणी सोष्या, पाँनी तेज मिलावहिंगे॥
तेज पवन मिलि सबद मिलि, सहज समाधि लगावहिंगे॥
जैसे बहु कंचन के भूषन, ये कहि गालि तवावहिंगे॥
ऐसै हम लोक वेद के बिछुरें, सुनिहि माँहि समावहिंगे॥
जैसे जलहि तरंग तरंगनी, ऐसैं हम दिखलावहिंगे॥
कहै कबीर स्वामी सुख सागर, हंसहि हंस मिलावहिंगे॥150॥

कबीरा संत नदी गया बहि रे,
ठाढ़ी माइ कराड़े टेरै, है कोई ल्यावैगहि रे॥टेक॥
बादल बाँनी राम घन उनयाँ, बरिषै अमृत धारा॥
सखी नीर गंग भरि आई, पीवै प्राँन हमारा॥
जहाँ बहि लागे सनक सनंदन, रुद्र ध्याँन धरि बैठे॥

सूर्य प्रकास आनंद बमेक मैं घर कबीर ह्नै पैठे॥151॥

अवधू कामधेन गहि बाँधी रे।
भाँड़ा भंजन करे सबहिन का, कछू न सूझे आँधी रे॥टेक॥
जौ ब्यावै तौ दूध न देई, ग्यामण अंमृत सरवै॥
कौली धाल्याँ बडहि चालै ज्यूँ घेरौं त्यूँ दरवै॥
तिहि धेन थैं इंछ्या पूगी पाकड़ि खूँटै बाँधी रे।
ग्वाड़ा माँहै आनँद उपनो, खूँटै दोऊ बाँधी रे।
साई माइ सास पनि साई, साई बाकी नारी।
कहै कबीर परम पद पाया, संतौ लेहु बिचारी॥152॥
टिप्पणी: ख-साई घर की नारी।

शीर्ष पर वापस

2. राग रामकली

जगत गुर अनहद कींगरी बाजे, तहाँ दीरघ नाद ल्यौ लागे॥टेक॥
त्री अस्यान अंतर मृगछाला, गगन मंडल सींगी बाजे॥
तहुँआँ एक दुकाँन रच्यो हैं, निराकार ब्रत साजे॥
गगन ही माठी सींगी करि चुंगी, कनक कलस एक पावा।
तहुँवा चबे अमृत रस नीझर, रस ही मैं रस चुवावा॥
अब तौ एक अनूपम बात भई, पवन पियाला साजा।
तीनि भवन मैं एकै जोगी, कहौ कहाँ बसै राजा॥
बिनरे जानि परणऊँ परसोतम, कहि कबीर रँगि राता।
यहु दुनिया काँई भ्रमि भुलाँनी, मैं राम रसाइन माता॥153॥

ऐसा ग्यान बिचारि लै लै, लाइ लै ध्याँनाँ।
सुंनि मंडल मैं घर किया, जैसे रहै सिंचाँनाँ॥टेक॥
उलटि पवन कह्याँ राखिये, कोई भरम बिचारै।
साँधै तीर पताल कूँ, फिरि गगनहि मारै॥
कंसा नाद बजाव लै, धुंनि निमसि ले कंसा॥
कंसा फूटा पंडिता, धंुनि कहाँ निवासा॥
प्यंड परे जीव कहाँ रहै, कोई मरम लखावै।
जीवत जिस घरि जाइये, ऊँचे मुषि नहीं आवै॥
सतगुर मिलै त पाइयै, ऐसी अकथ कहाँणीं।
कहै कबीर संसा गया, मिले सारंगपाँणीं॥154॥

है कोई संत सहज सुख उपजै, जाकौ जब तप देउ दलाली।
एक बूँद भरि देइ राम रस, ज्यूँ भरि देई कलाली॥टेक॥
काया कलाली लाँहनि करिहूँ, गुरु सबद गुड़ कीन्हाँ॥
काँम क्रोध मोह मद मंछर, काटि काटि कस दीन्हाँ॥
भवन चतुरदस भाटी पुरई, ब्रह्म अगनि परजारी।
मूँदे मदन सहज धुनि उपजी, सुखमन पीसनहारी॥
नीझर झरै अँमी रस निकसै, निहि मदिरावल छाका॥

कहैं कबीर यहु बास बिकट अनि, ग्याँन गुरु ले बाँका॥155॥

अकथ कहाँणी प्रेम की, कछु कही न जाई,
गूँगे केरी सरकरा, बैठे मुसुकाई॥टेक॥
भोमि बिनाँ अरु बीज बिन, तरवर एक भाई।
अनँत फल प्रकासिया, गुर दीया बताई।
कम थिर बैसि बिछारिया, रामहि ल्यौ लाई।
झूठी अनभै बिस्तरी सब थोथी बाई॥
कहै कबीर सकति कछु नाही, गुरु भया सहाई॥
आँवण जाँणी मिटि गई, मन मनहि समाई॥156॥

संतो सो अनभै पद गहिये।
कल अतीत आदि निधि निरमअ ताकूँ सदा विचारत रहिये॥टेक॥
सो काजी जाकौं काल न ब्यापैं, सो पंडित पद बूझै।
सो ब्रहमा जो ब्रहम बिचारै, सो जागी जग सूझै॥
उदै न अस्त सूर नहीं ससिहर, ताकौ भाव भजन करि लीजै।
काया थैं कछु दूरि बिचारै, तास गुरु मन धीजै॥
जार्यौ जरै न काट्यो सूकै, उतपति प्रलै न आवै।
निराकार अषंउ मंडल मैं, पाँचौ तत्त समावै॥
लोचन अचित सबै अँधियारा, बिन लोचन जग सूझै।
पड़दा खोलि मिलै हरि ताकूँ, जो या अरथहिं बूझै॥
आदि अनंत उभै पख निरमल, द्रिष्टि न देख्या जाई।
ज्वाला उठी अकास प्रजल्यौ, सीतल अधिक समाई॥
एकनि गंथ बासनाँ प्रगटै जग थैं रहै अकेला॥
प्राँन पुरिस काया थैं बिछुरे, राखि लेहु गुर चेला।
भाग भर्म भया मन अस्थिर, निद्रा नेह नसाँनाँ॥
घट की जोति जगत प्रकास्या, माया सोक बुझाँनाँ।
बंकनालि जे संमि करि राखै, तौ आवागमन न होई॥
कहैं कबीर धुनि लहरि प्रगटी, सहजी मिलैगा सोई॥157॥

जाइ पूछौ गोविंद पढ़िया पंडिता, तेराँ कौन गुरु कौन चेला।
अपणें रूप कौं आपहिं जाँणें, आपैं रहे अकेला॥टेक॥
बाँझ का पूत बाप बिना जाया, बिन पाऊँ तरबरि चढ़िया।
अस बिन पाषर गज बिन गुड़िया, बिन षडै संग्राम जुड़िया॥
बीज बिन अंकुर पेड़ बिन तरवर, बिन साषा तरवर फलिया।
रूप बिन नारी पुहुप बिन परमल, बिन नीरै सरवर भरिया॥
देव बिन देहुरा पत्रा बिन पूजा बिन पाँषाँ भवर बिलंबया।
सूरा होइ सु परम पद पावै, कीट पतंग होइ सब जरिया॥
दीपक बिन जोति जाति बिन दीपक, हद बिन अनाहद सबद बागा।
चेतनाँ होइ सु चेति लीज्यौं, कबीर हरि के अंगि लागा॥158॥

पंडित होइ सु पदहि बिचारै, मूरिष नाँहिन बूझै।
बिन हाथनि पाँइन बिन काँननि, बिन लोचन जग सूझै॥टेक॥
बिन मुख खाइ चरन बिनु चालै, बिन जिभ्या गुण गावै।

आछै रहै ठौर नहीं छाड़ै, दह दिसिही फिरि आवै॥
बिनहीं तालाँ ताल बजावै, बिन मंदल षट ताला।
बिनहीं सबद अनाहद बाजै, तहाँ निरतत है गोपाला॥
बिनाँ चोलनै बिनाँ कंचुकी, बिनही संग संग होई।
दास कबीर औसर भल देख्या, जाँनैगा जस कोई॥159॥

है कोइ जगत गुर ग्याँनी, उलटि बेद बूझै।
पाँणीं में अगनि जरैं, अँधरे कौ सूझै॥टेक॥
एकनि ददुरि खाये, पंच भवंगा।
गाइ नाहर खायौ, काटि काटि अंगा॥
बकरी बिधार खायौ, हरनि खायौ चीता।
कागिल गर फाँदियिा, बटेरै बाज जीता॥
मसै मँजार खायौ, स्यालि खायौ स्वाँनाँ।
आदि कौं आदेश करत, कहैं कबीर ग्याँनाँ॥160॥

ऐसा अद्भुत मेरे गुरि कथ्या, मैं रह्या उमेषै।
मूसा हसती सौ लड़ै, कोई बिरला पेषै॥टेक॥
उलटि मूसै सापणि गिली, यहु अचिरज भाई।
चींटी परबत ऊषण्याँ, ले राख्यौ चौड़ै॥
मुर्गी मिनकी सूँ लड़ै, झल पाँणौं दौड़ै।
सुरहीं चूँषै बछतलि, बछा दूध उतारै।
ऐसा नवल गुँणा भया, सारदूलहि मारै।
भील लूक्या बन बीझ मैं ससा सर मारै॥
कहै कबीर ताहि गुर करौं, जो या पदहि बिचारै॥161॥

अवधू जागत नींद न कीजै।
काल न खाइ कलप नहीं ब्यापै देही जुरा न छीजै॥टेक॥
उलटी गंग समुद्रहि सोखै ससिहर सूर गरासै।
नव ग्रिह मारि रोगिया बैठे, जल में ब्यंब प्रकासै॥
डाल गह्या थैं मूल न सूझै मूल गह्याँ फल पावा।
बंबई उलटि शरप कौं लागी, धरणि महा रस खावा॥
बैठ गुफा मैं सब जग देख्या, बाहरि कछू न सूझै।
उलटै धनकि पारधी मार्यौ यहु अचिरज कोई बूझै॥
औंधा घड़ा न जल में डूबे, सूधा सूभर भरिया।
जाकौं यहु जुग घिण करि चालैं, ता पसादि निस्तरिया॥
अंबर बरसै धरती भीजै, बूझै जाँणौं सब कोई।
धरती बरसै अंबर भीजै, बूझै बिरला कोई॥
गाँवणहारा कदे न गावै, अणबोल्या नित गावै।
नटवर पेषि पेषनाँ पेषै, अनहद बेन बजावै॥
कहणीं रहणीं निज तत जाँणैं यहु सब अकथ कहाणीं।
धरती उलटि अकासहिं ग्रसै, यहु पुरिसाँ की बाँणी॥
बाझ पिय लैं अमृत सोख्या, नदी नीर भरि राष्या।
कहै कबीर ते बिरला जोगी, धरणि महारस चाष्या॥162॥

राम गुन बेलड़ी रे, अवधू गोरषनाथि जाँणीं।
नाति सरूप न छाया जाके, बिरध करैं बिन पाँणी॥टेक॥
बेलड़िया द्वे अणीं पहूँती गगन पहूँती सैली।
सहज बेलि जल फूलण लागी, डाली कूपल मेल्ही॥
मन कुंजर जाइ बाड़ा बिलब्या, सतगुर बाही बेली।
पंच सखी मिसि पवन पयप्या, बाड़ी पाणी मेल्ही॥
काटत बेली कूपले मेल्हीं, सींचताड़ी कुमिलाँणों।
कहै कबीर ते बिरला जोगी, सहज निरंतर जाँणीं॥163॥
टिप्पणी: ख-जाति सिमूल न छाया जाकै।

राम राइ अबिगत बिगति न जानै, कहि किम तोहिं रूप बषानै॥टेक॥
प्रथमे गगन कि पुहमि प्रथमे प्रभू पवन कि पाँणीं।
प्रथमे चंद कि सूर प्रथमे प्रभू, प्रथमे कौन बिनाँणीं॥
प्रथमे प्राँण कि प्यंड प्रथमे प्रभू, प्रथमे रकत कि रेत।
प्रथमे पुरिष की नारि प्रथमे प्रभू, प्रथमे बीज की खेत॥
प्रथमे दिवस कि रैणि प्रथमे प्रभू, प्रथमे पाप कि पुन्य।
कहै कबीर जहाँ बसहु निरंजन, तहाँ कुछ आहि कि सुन्य॥164॥

अवधू सो जोगी गुर मेरा, जौ या पद का करै नबेरा॥टेक॥
तरवर एक पेड़ बिन ठाढ़ा, बिन फूलाँ फल लागा।
साखा पत्रा कछू नहीं वाकै अष्ट गगन मुख बागा॥
पैर बिन निरति कराँ बिन बाजै, जिभ्या हीणाँ गावै।
गायणहारे के रूप न रेषा, सतगुर होई लखावे॥
पषी का षोज मीन का मारग, कहै कबीर बिचारी।
अपरंपार पार परसोतम, वा मूरति बलिहारी॥165॥

अब मैं जाँणिबौ रे केवल राइ की कहाँणी।
मझां जोति राम प्रकासै, गुर गमि बाँणी॥टेक॥
तरवर एक अनंत मूरति, सुरताँ लेहू पिछाँणीं।
साखा पेड़ फूल फल नाँहीं, ताकि अमृत बाँणीं॥
पुहुप बास भवरा एक राता, बरा ले उर धरिया।
सोलह मंझै पवन झकोरैं, आकासे फल फलिया॥
सहज समाधि बिरष यह सीचा, धरती जरु हर सोब्या।
कहै कबीर तास मैं चेला, जिनि यहु तरुवर पेष्या॥166॥

राजा राम कवन रंगै, जैसैं परिमल पुहुप संगैं॥टेक॥
पंचतत ले कीन्ह बँधाँन, चौरासी लष जीव समाँन।
बेगर बेगर राखि ले भाव, तामैं कीन्ह आपको ठाँव॥
जैसे पावक भंजन का बसेष, घट उनमाँन कीया प्रवेस॥
कह्यो चाहूँ कछु कह्या न जाइ, जल जीव ह्नै जल नहीं बिगराइ॥
सकल आतमाँ बरतै जे, छल बल कौं सब चान्हि बसे॥
चीनियत चीनियत ता चीन्हिलै से, तिहि चीन्हिअत धूँका करके॥
आपा पर सब एक समान, तब हम पावा पद निरबाँण॥

कहै कबीर मन्य भया संतोष, मिले भगवंत गया दुख दोष॥167॥

अंतर गति अनि अनि बाँणी।
गगन गुपत मधुकर मधु पीवत, सुगति सेस सिव जाँणीं॥टेक॥
त्रिगुण त्रिविध तलपत तिमरातन, तंती तत मिलानीं।
भाग भरम भाइन भए भारी, बिधि बिरचि सुषि जाँणीं॥
बरन पवन अबरन बिधि पावक, अनल अमर मरै पाँणीं।
रबि ससि सुभग रहे भरि सब घटि, सबद सुनि तिथि माँही॥
संकट सकति सकल सुख खोये, उदित मथित सब हारे।
कहैं कबीर अगम पुर पाटण, प्रगटि पुरातन जारे॥168॥

लाधा है कछू लाधा है ताकि पारिष को न लहै।टेक॥
अबरन एक अकल अबिनासी, घटि घटि आप रहै॥टेक॥
तोल न मोल माप कछु नाहीं, गिणँती ग्याँन न होई।
नाँ सो भारी नाँ सो हलका, ताकी पारिष लषै न कोई॥
जामैं हम सोई हम हा मैं, नीर मिले जल एक हूवा।
यों जाँणैं तो कोई न मरिहैं, बिन जाँणैं थै बहुत मूवा॥
दास कबीर प्रेम रस पाया, पीवणहार न पाऊँ।
बिधनाँ बचन पिछाँड़त नाहीं, कहु क्या काढ़ि दिखाऊँ॥169॥

हरि हिरदे रे अनत कत चाहौ, भूलै भरम दुनी कत बहौ॥टेक॥
जग परबोधि होत नर खाली, करते उदर उपाया।
आत्म राम न चीन्हैं संतौ, क्यूँ रमि लै राम राया॥
लागै प्यास नीर सो पीवै, बिन लागै नहीं पीवै।
खोजै तत मिलै अबिनासा, बिन खोजैं नहीं जीवै।
कहै कबीर कठिन यह कारणीं जैसी षंडे धारा।
उलटि चाल मिलै परब्रह्म कौं, सो सतगुरु हमारा॥170॥

रे मन बैठि कितै जिनि जासी, हिरदै सरोवर है अबिनासी॥टेक॥
काया मधे कोटि तीरथ, काया मधे कासी।
माया मधे कवलापति, काया मधे बैकुंठबासी॥
उलटि पवन षटचक्र निवासी, तीरथराज गंगतट बासी॥
गगन मंडल रबि ससि दोइ तारा, उलती कूची लागि किंवारा।
कहै कबीर भई उजियारा, पच मारि एक रह्यौ निनारा॥171॥

राम बिन जन्म मरन भयौ भारी।
साधिक सिध सूर अरु सुरपति भ्रमत भ्रमत गए हारी॥टेक॥
व्यंद भाव म्रिग तत जंत्राक, सकल सुख सुखकारी।
श्रवन सुनि रवि ससि सिव सिव, पलक पुरिष पल नारी॥
अंतर गगन होत अंतर धुँनि बिन सासनि है सोई।
घोरत सबद सुमंगल सब घटि, ब्यंदत ब्यदै कोई॥
पाणीं पवन अवनि नभ पावक, तिहि सँग सदा बसेरा।
कहै कबीर मन मन करि बेध्या, बहुरि न कीया फेरा॥172॥

नर देही बहुरि न पाइये, ताथैं हरषि हरषि गुँण गाइये॥टेक॥
जब मन नहीं तजै बिकारा, तौ क्यूँ तरिये भौ पारा॥
जे मन छाड़ै कुटिलाई, तब आइ मिलै राम राई।
ज्यूँ जींमण त्यूँ मरणाँ, पछितावा काजु न करणाँ।
जाँणि मरै जे कोई, तो बहुरि न मरणाँ होई॥
गुर बचनाँ मंझि समावै, तब राम नाम ल्यौ लावै॥
जब राम नाम ल्यौ लागा, तब भ्रम गया भौ भागा॥
ससिहर सूर मिलावा, तब अनहद बेन बजावा॥
जब अनहद बाजा बाजै, तब साँई संगि बिराजै॥
होत संत जनन के संगी, मन राचि रह्यो हरि रंगी॥
धरो चरन कवल बिसवासा, ज्यूँ होइ निरभे पदबासा॥
यहु काचा खेल न होई, जन षरतर खेलै कोई॥
जब षरतर खेल मचावा, तब गगनमंडल मठ छावा॥
चित चंचल निहचल कीजै, तब राम रसाइन पीजै॥
जब राम रसाइन पीया, तब काल मिट्या जन जीया॥
ज्यूँ दास कबीरा गावै, ताथैं मन को मन समझावै॥
मन ही मन समझाया, तब सतगुर मिलि सचु पाया॥173॥

अवधू अगनि जरै कै काठ।
पूछौ पंडित जोग संन्यासी, सतगुर चीन्है बाट॥टेक॥
अगनि पवन मैं पवन कबन मैं, सबद गगन के पवाँन।
निराकार प्रभु आदि निरंजन, कत रवंते भवनाँ॥
उतपति जाति कवन अँधियारा, धन बादल का बरिषा।
प्रगट्यो बीच धरनि अति अधिकै, पारब्रह्म नहीं देखा॥
मरनाँ मरै न मरि सकै, मरनाँ दूरि न नेरा।
द्वादश द्वादस सनमुख देखैं, आपैं आप अकेला॥
जे बाँध्या ते छुछंद मृकुता, बाँधनहारा बाँध्या।
जे जाता ते कौंण पठाता, रहता ते किनि राख्या॥
अमृत समाँनाँ बिष मैं जानाँ, बिष मैं अमृत चाख्या॥
कहै कबीर बिचार बिचारी, तिल मैं मेर समाँनाँ।
अनेक जनम का गुर गुर करता, सतगुर तब भेटाँनाँ॥174॥

अवधू ऐसा ग्यान बिचार,
भेरैं चढ़े सु अधधर डूबे, निराधार भये पारं॥टेक॥
ऊघट चले सु नगरि पहुँचे, बाट चले ते लूटे।
एक जेवड़ी सब लपटाँनें, के बाँधे के छूटे॥
मंदिर पैसि च्हूँ दिसि भीगे, बाहरि रे ते सूका।
सरि मारे ते सदा सुखारे, अनमारे ते दूषा॥
बिन नैनन के सब जग देखै, लोचन अछते अंधा।
कहै कबीर कछु समछि परी है, यहु जग देख्या धंधा॥175॥

जन धंधा रे जग धंधा, सब लोगनि जाँणै अंधा।
लोभ मोह जेवड़ी लपटानी बिनहीं गाँठि गह्यो फंदा॥टेक॥
ऊँचे टीबे मंद बसत है, ससा बसे जल माँहीं।

परबत ऊपरि डूबि मूवा नर मूवा धूँ काँही॥
जलै नीर तिण षड़ उबरै, बैसंदर ले सींचै।
ऊपरि मूल फूल बिन भीतरि, जिनि जान्यौ तिनि नीकै॥
कहै कबीर जाँनहीं जाँनै, अनजानत दुख भारी।
हारी बाट बटाऊ जीत्या, जानत की बलिहारी॥176॥

अवधू ब्रह्म मतै घरि जाइ,
काल्हि जू तेरी बँसरिया छीनी कहा चरावै गाइ॥टेक॥
तालि चुगै बन सीतर लउवा, पवति चरै सौरा मछा।
बन की हिरनी कूवै बियानी, ससा फिरे अकासा॥
ऊँट मारि मैं चारै लावा, हस्ती तरंडबा देई।
बबूर की डरियाँ बनसी लैहूँ, सींयरा भूँकि भूँकि षाई॥
आँब क बौरे चरहल करहल, निबिया छोलि छोलि खाई।
मोरै आग निदाष दरी बल, कहै कबीर समझाई॥177॥

कहा करौं कैसे तिरौं, भौ जल अति भारी।
तुम्ह सरणागति केसवा राखि राखि मुरारी॥टेक॥
घर तजि बन खंडि जाइए, खनि खनि खइए कंदा।
बिषै बिकार न छूटई, ऐसा मन गंदा॥
बिष विषिया कौ बाँसनाँ, तजौं तजी नहीं जाई।
अनेक जतन करि सुरझिहौं, फुनि फुनि उरझाई॥
जीव अछित जोबन गया, कछु कीया न नीका।
यहु हीरा निरमोलिका, कौड़ी पर बीका॥
कहै कबीर सुनि केसवा, तूँ सकल बियापी।
तुम्ह समाँनि दाता नहीं, हम से नहीं पापी॥178॥

बाबा करहु कृपा जन मारगि, लावो ज्यूँ भव बंधन षूटै।
जरा मरन दुख फेरि करँन सुख, जीव जनम यैं छूटै॥टेक॥
सतगुरु चरन लागि यों बिनऊँ, जीवनि कहाँ थैं पाई।
जा कारनि हम उपजैं बिनसै क्यूँ न कहौ समझाई॥
आसा पास षंड नहीं पाँडे, यौं मन सुंनि न लूटै।
आपा पर आनंद न बूझै, बिन अनभै क्यूँ छूटै॥
कह्याँ न उपजै नहीं जाणै, भाव अभाव बिहूनाँ
उदै अस्त जहाँ मति बुधि नाहीं, सहजि राम ल्यौ लीनाँ॥
ज्यूँ बिंबहि प्रतिबिंब समाँनाँ, उदिक कुंभ बिगराँनाँ।
कहै कबीर जाँनि भ्रम भागा, जीवहिं जीव समाँनाँ॥179॥

संत धोखा कासूँ कहिए।
गुँण मैं निरगुँण निरगुँण मैं गुण है, बाट छाँड़ि क्यूँ बहिए॥टेक॥
अजरा अमर कथैं सब कोई, अला न कथणाँ जाई।
नाति सरूप बरण नहीं जाकै, घटि घटि रह्यौ समाई॥
प्यंड ब्रह्मंड कथै सब कोई, वाकै आदि अरु अंत न होई।
प्यंड ब्रह्मंड छाड़ि जे कथिए, कहैं कबीर हरि सोई॥180॥

पषा पषी कै पेषणै, सब जगत भुलानाँ,
निरपष टोइ हरि भजै, सो साथ सयाँनाँ॥टेक॥
ज्यूँ पर सूँ षर बँधिया, यूँ बँधे सब लाई।
जाकै आत्मद्रिष्टि है, साचा जन सोई॥
एक एक जिनि जाणियाँ, तिनहीं सच पाया।
प्रेम प्रीति ल्यौ लीन मन, ते बहुरि न आया॥
पूरे की पूरी द्रिष्टि, पूरा करि देखै।
कहै कबीर कछू समूझि न परई, या ककू बात अलेखै॥181॥

अजहूँ न संक्या गई तुम्हारी, नाँहि निसंक मिले बनवारी॥टेक॥
बहुत गरब गरबे संन्यासी, ब्रह्मचरित छूटी नहीं पासी।
सुद्र मलैछ बसैं मन माँहीं, आतमराम सु चीन्हा नाहीं॥
संक्या डाँइणि बसै सरीरा, ता करणि राम रमैं कबीरा॥182॥

सब भूले हो पाषंडि रहे, तेरा बिरला जन कोई राम कहै॥टेक॥
होइ आरोगि बूँटी घसि लावै, गुर बिना जैसे भ्रमत फिरै।
है हाजिर परतीति न आवै, सो कैसैं परताप धरै॥
ज्यूँ सुख त्यूँ दुख द्रिढ़ मन राखै एकादसी एकतार करै।
द्वादसी भ्रमैं लष चौरासी, गर्भ बास आवै सदा मरै।
सैं तैं तजै तजैं अपमारग, चारि बरन उपराति चढ़ै।
ते नहीं डूबै पार तिरि लंघै, निरगुण मिटै धापै॥
तिनह उछाह सोक नहीं ब्यापै, कहै कबीर करता आपै॥183॥

तेरा जन एक आध है कोई।
काम क्रोध अरु लोभ बिंबर्जित, हरिपद चीन्हैं सोई॥टेक॥
राजस ताँमस सातिग तीन्यूँ, ये सब मेरी माया।
चौथे पद कौं जे जन चीन्हैं, तिनहिं परम पद पाया॥
असतुति निंद्या आसा छाँड़ै, तजै माँन अभिमानाँ।
लोहा कंचन समि करि देखै, ते मूरति भगवानाँ॥
च्यंतै तौ माधौ च्यंतामणि, हरिपद रमैं उदासा।
त्रिस्ना अरु अभिमाँन रहित है, कहै कबीर सो दासा॥184॥
टिप्पणी: ख-जे जन जानैं। लोहा कंचन सँम करि जानै।

हरि नाँमैं दिन जाइ रे जाकौ, सोइ दिन लेखै, लाइ राम ताकौ॥टेक॥
हरि नाम मैं जन जागै, ताकै गोब्यंद साथी आगे॥
दीपक एक अभंगा, तामै सुर नर पड़ै पतंगा।
ऊँच नींच सम सरिया, तार्थैं जन कबीर निसतरिया॥185॥

जब थैं आतम तत्त बिचारा।
तब निबर भया सबहिन थैं, काम क्रोध गहि डारा॥टेक॥
ब्यापक ब्रह्म सबनि मैं एकै, को पंडित को जोगी।
राँणाँ राव कवन सूँ कहिये, कवन बैद को रोगी॥
इनमैं आप आप सबहिन मैं, आप आप सूँ खेलै।
नाँनाँ भाँति घड़े सब भाँड़े, रूप धरे धरि मेलै॥

सोचि बिचारि सबै जग देख्या, निरगुण कोई न बतावै।
कहै कबीर गुँगी अरु पंडित, मिलि लीला जस गावै॥186॥

तू माया रघुनाथ की, खेलड़ चढ़ी अहेड़े।
चतुर चिकारे चुणि चुणि मारे, कोई न छोड़ा नेड़ै॥टेक॥
मुनियर पीर डिगंबर भारे, जतन करंता जोगी।
जंगल महि के जंगम मारे, तूँरे फिरे बलवंतीं।
वेद पढ़ंता बाँम्हण मारा, सेवा करताँ स्वामी॥
अरथ करंताँ मिसर पछाड़ा, तूँरै फिरे मैमंती।
साषित कैं तू हरता करता, हरि भगतन कै चेरी।
दास कबीर राम कै सग ज्यू लागी त्यूँ तोरी॥187॥
टिप्पणी: ख-तू माया जगनाथ की।

जग सूँ प्रीति न कीजिए, सँमझि मन मेरा।
स्वाद हेत लपटाइए, को निकसै सूरा॥टेक॥
एक कनक अरु कामनी, जग में दोइ फंदा।
इनपै जौ न बँधावई, ताका मैं बंदा॥
देह धरे इन माँहि बास, कहु कैसे छूटै।
सीव भये ते ऊबरे, जीवन ते लूटै॥
एक एक सूँ मिलि रह्या, तिनहीं सचु पाया।
प्रेम मगन लैलीन मन, सो बहुरि न आया॥
कहै कबीर निहचल भया, निरभै पद पाया।
संसा ता दिन का गया, सतगुर समझाया॥188॥

राम मोहि सतगुर मिलै अनेक कलानिधि, परम तस सुखदाई।
काम अगनि तन जरत रही है, हरि रसि छिरकि बुझाई॥टेक॥
दरस परस तैं दुरमति नासी, दीन रटनि ल्यौ आई।
पाषंड भरँम कपाट खोलि कै अनभै कथा सुनाई॥
यहु संसार गँभीर अधिक जल को गहि लावै तीरा।
नाव जिहाज खेवइया साधू, उतरे दास कबीरा॥189॥

दिन दहूँ चहूँ कै कारणै, जैसे सैबल फूले।
झूठी सूँ प्रीति लगाइ करि, साँचे कूँ भूले॥टेक॥
जो रस गा सो परहर्या, बिडराता प्यारे।
आसति कहूँ न देखिहूँ, बिन नाँव तुम्हारे॥
साँची सगाई राम की, सुनि आतम मेरे।
नरकि पड़े नर बापुड़े गाहक जस तेरे॥
हंस उड़ा चित चालिया, सगपन कछू नाहीं।
माटी सूँ माटी मेलि करि, पीछैं अनखाँहीं॥
कहै कबीर जग अधला, कोई जन सारा।
जिनि हरि मरण न जाँणिया, तिनि किया पसारा॥190॥

माधौ मैं ऐसा अपराधी, तेरी भगति होत नहीं साधी॥टेक॥

कारनि कवन जाइ जग जनम्याँ, जनमि कवन सचु पाया।
भौ जल तिरण चरण च्यंतामणि, ता चित घड़ी न लाया॥
पर निंद्या पर धन पर दारा, पर अपवादैं सूरा।
ताथैं आवागवन होइ फुनि फुनि, तां पर संग न चूरा॥
काम क्रोध माया मद मंछर, ए संतति हम माँही।
दया धरम ग्यान गुर सेवा, ए प्रभु सुपिनै नाँहीं॥
तुम्ह कृपाल दयाल दमादर, भगत बछल भौ हारो।
कहै कबीर धीर मति राखहु, सासति करौं हमारी॥191॥
टिप्पणी: ख-सो गति करहु हमारी।

राम राइ कासनि करौं पुकारा, ऐसे तुम्ह साहित जाननिहारा॥टेक॥
इंद्री सबल निबल मैं माधौ, बहुत करै बरियाई।
लै धरि जाँहि तहाँ दुख पइये बुधि बल कछू न बसाई॥
मैं बपरौ का अलप मूढ़ मति, कहा भयो जे लूटे।
मुनि जन सती सिध अरु साधिक तेऊ न आपैं छूटे॥
जोगी जती तपा संन्यासी, अह निसि खोजैं काया।
मैं मेरी करि बहुत बिगूते, बिषै बाघ जग खाया॥
ऐकत छाँड़ि जाँहिं घर घरनी, तिन भी बहुत उपाया।
कहै कबीर कछु समझि न पाई, विषम तुम्हारी माया॥192॥

माधो चले बुनाँवन माहा, जग जीतै जाइ जुलाहा॥टेक॥
नव गज दस गज उननींसा, पुरिया एक तनाई।
सान सूत दे गंड बहुतरि, पाट लगी अधिकाई॥
तुलह न तोली गजह न मापी, पहज न सेर अढ़ाई।
अढ़ाई में जैं पाव घटे तो करकस करैं बजाई॥
दिन की बैठि खमस सूँ कीजै अरज लगी तहाँ ही।
भागी पुरिया घर ही छाड़ी चले जुलाह रिसाई॥
छोछी नली काँमि नहीं आवै, लहटि रही उरझाई।
छाँड़ि पसारा राम कहि बारै, कहै कबीर समझाई॥193॥

बाजैं जंत्रा बजावै गुँनी, राम नाँम बिन भूली दुनीं॥टेक॥
रजगुन सतगुन तमगुन तीन, पंच तत से साजया बींन॥
तीनि लोक पूरा पेखनाँ, नाँच नचावै एकै जनाँ।
कहै कबीर संसा करि दूरि, त्रिभवननाथ रह्या भरपूरि॥194॥

जंत्री जंत्रा अनूपन बाजै, ताकौ सबद गगन मैं गाजै॥टेक॥
सुर की नालि सुरति का तूँबा, सतगुर साज बनाया।
सुर नर गण गंध्रप ब्रह्मादिक गुर बिन तिनहुँ न पाया॥
जिभ्या ताँति नासिका करहीं, माया का मैण लगाया।
गमाँ बतीस मोरणाँ पाँचौ, नीका साज बनाया॥
जंत्री जंत्रा तजै नहीं बाजै, तब बाजै जब बाबै।
कहै कबीर सोई जन साँचाँ जंत्री सूँ प्रीति लगावै॥195॥

अवधू नादैं व्यंद गगन गाज सबद अनहद बोलै।
अंतरि गति नहीं देखै नेड़ा, ढूंढ़त बन बन डोलै॥टेक॥
सालिगराम तजौं सिव पूजौं, सिर ब्रह्मा का काटौं।
सायर फोड़ि नीर मुलकाऊँ, कुंवाँ सिला दे पाटौं॥
चंद सूर दोइ तूँबा करिहूँ, चित चेतिनि की डाँड़ी।
सुषमन तंती बाजड़ लागी, इहि बिधि त्रिष्णाँ षाँडी॥
परम तत आधारी मेरे सिव नगरी धर मेरा।
कालहि षंडूँ नीच बिहंडूँ, बहुरि न करिहूँ फेरा॥
जपौं न जाप हतौं नहीं गूगल पुस्तक लै न पढ़ाऊँ।
कहै कबीर परम पद पाया, नहीं आऊँ नहीं जाऊँ॥196॥

बाबा पेड़ छाड़ि सब डाली लागै मूँढ़े जंत्रा अभागे।
सोइ सोइ सब रैणि बिहाँणी, भोर भयो तब जागे॥टेक॥
देवलि जाँऊँ तौं देवी देखौं, तीरथि जाँऊँ त पाणीं।
ओछी बुधि अगोचर बाँणी, नहीं परम गति जाँणीं॥
साथ पुकारैं समण्त नाँहीं, आन जन्म के सूने।
बाशँधै ज्यूँ अरहट की टीडरि, आवत जात बिगूते॥
गुर बिन इहि जग कौन भरोसा, काके संग ह्नै रहिए।
गानिका के घरि बेटाअ जाया, पिता नाँव किस कहिए॥
कहै कबीर यहु चित्र बिरोध्या, बूझी अंमृत बाँणी।
खोजत खोजत सतगुर पाया, रहि गई आँवण जाँणीं॥197॥

भूली मालिनी, हे गोब्यंद जागतौ जगदेव, तूँ करै किसकी सेव॥टेक॥
भूली मालिन पाती तोड़ै, पाती पाती जीव।
जाँ मूरति को पाती तोड़ै, सो मूरति नर जीव॥
टाँचणहारै टाँचिया, दै छाती ऊपरि पाव।
लाडू लावण लापसी, पूजा चढ़ै अपार।
पूजि पुजारी ले गया, दे मूरति कै मुहिं छार।
पाती ब्रह्मा पुहपे बिष्णु, फूल फल महादेव।
तीनि देवौ एक मूरति करै किसकी सेव।
एक न भूला दोइ न भूला सब संसारा।
एक न भूला दास कबीरा, जाकैं राम अधारा॥198॥

सेई मन समझि संमर्थ सरणाँगता, जाकी आदि अंति मधि कोई न पावै।
कोटि कारिज सरैं दह गुँण सब जरै, नेक जो नाँव पनिब्रत आवै॥टेक॥
आकार की ओट आकार नहीं ऊँबरै, सिव बिरंचि अरु विष्णु ताँई।
जास का सेवक तास कौ पइहैं, इष्ट कौ छाड़ि आगे न जाहीं॥
गुँण मई मूरति सेइ सब भेष मिलि, निरगुण निज रूप विश्राम नाहीं।
अनेक जुग बंदिगी विविध प्रकार की, अंति गुँण का गुँणही समाहीं॥
पाँच तत तीनि गुण जुगति करि साँनिया, अष्ट बिन हेत नहीं क्रम आया।
पाप पुन बीज अंकुर जाँमैं मरै, उपजि बिनसैं जेती सर्ब माया॥
क्रितम करता कहै परम पद क्यूँ लहै, भूलि मैं पड़ा लोक सारा।
कहै कबीर राम रमिता भजै, कोई एक जन गये उतरि पारा॥199॥

राम राइ तेरी गति जाँणीं न जाई।
जो जस करिहैं सो तस पइहै, राजा राम नियाई॥टेक॥
जैसीं कहैं करैं जो तैंसीं, तो तिरत न लागै बारा।
कहता कहि गया सुनता सुणि गया, करणी कठिन अपारा।
सुरही तिण चरि अंमृत सरवै, लेर भवंगहि पाई।
अनेक जतन करि निग्रह कीजे, विषै बिकार न जाई॥
संत करै असंत की संगति, तासूँ कहा बसाई।
कहैं कबीर ताके भ्रम छूटै, जे रहे राम ल्यौ लाई॥200॥

कथणीं बदणी सब जजाल, भाव भगति अरु राम निराल॥टेक॥
कथैं बदै सुणै सब कोई, कथैं न होई कीयें होई॥
कूड़ी करणीं राम न पावै, साच टिकै निज रूप दिखावै।
घट में अग्नि घर जल अवास, चेति बुझाइ कबीरा दास॥201॥

शीर्ष पर वापस

3. राग आसावरी

ऐसा रे अवधू की वाणी, ऊपरि कूवटा तलि भरि पाँणीं॥टेक॥
जब लग गगन जोति नहीं पलटै, अबिनासा सुँ चित नहीं विहुटै।
जब लग भँवर गुफा नहीं जानैं, तौ मेरा मन कैसै मानैं॥
जब लग त्रिकुटी संधि न जानैं, ससिहर कै घरि सूर न आनैं।
जब लग नाभि कवल नहीं सोधै, तौ हीरै हीरा कैसै बेधैं॥
सोलह कला संपूरण छाजा, अनहद कै घरि बाजैं बाजा॥
सुषमन कै घरि भया अनंदा, उलटि कबल भेटे गोब्यंदा।
मन पवन जब पर्या भया, क्यूँ नाले राँपी रस मइया।
कहै कबीर घटि लेहु बिचारी, औघट घाट सींचि ले क्यारी॥202॥

मन का भ्रम मन ही थैं भागा, सहज रूप हरि खेलण लागा॥टेक॥
मैं तैं तैं ए द्वै नाहीं, आपै अकल सकल घट माँहीं।
जब थैं इनमन उनमन जाँनाँ, तब रूप न रेष तहाँ ले बाँनाँ॥
तन मन मन तन एक समाँनाँ, इन अनभै माहै मनमाँना॥
आतमलीन अषंडित रामाँ, कहै कबीर हरि माँहि समाँनाँ॥203॥

आत्माँ अनंदी जोगी, पीवै महारस अंमृत भोगी॥टेक॥
ब्रह्म अगनि काया परजारी, अजपा जाप जनमनी तारी॥
त्रिकुट कोट मैं आसण माँड़ै, सहज समाधि विषै सब छाँड़ै॥
त्रिवेणी बिभूति करै मन मंजन, जन कबीर प्रभु अलष निरंजन॥204॥

या जोगिया को जुगति जु बूझै, राम रमै ताकौ त्रिभुवन सूझै॥टेक॥
प्रकट कंथा गुप्त अधारी, तामैं मूरति जीवनि प्यारी।
है प्रभू नेरै खोजै दूरि, ज्ञाँन गुफा में सींगी पूरि॥
अमर बेलि जो छिन छिन पीवै, कहै कबीर सो जुगि जुगि जीवै॥205॥

सो जोगी जाकै मन मैं मुद्रा, रात दिवस न करई निद्रा॥टेक॥
मन मैं आँसण मन मैं रहणाँ, मन का जप तप मन सूँ कहणाँ॥
मन मैं षपरा मन मैं सींगी, अनहद बेन बजावै रंगी।
पंच परजारि भसम करि भूका, कहै कबीर सौ लहसै लंका॥206॥

बाबा जोगी एक अकेला, जाके तीर्थ ब्रत न मेला॥टेक॥
झोलीपुत्र बिभूति न बटवा, अनहद बेन बजावै॥
माँगि न खाइ न भूखा सोवै, घर अँगना फिरि आवै॥
पाँच जना का जमाति चलावै, तास गुरु मैं चेला॥
कहै कबीर उनि देस सिधाय, बहुरि न इहि जगि मेला॥207॥

जोगिया तन कौ जंत्रा बजाइ, ज्यूँ तेरा आवागमन मिटाइ॥टेक॥
तत करि ताँति धर्म करि डाँड़ि, सत की सारि लगाइ।
मन करि निहचल आसँण निहचल, रसनाँ रस उपजाइ॥
चित करि बटवा तुचा मेषली, भसमै भसम चढ़ाइ।
तजि पाषंड पाँच करि निग्रह, खोजि परम पद राइ॥
हिरदै सींगी ग्याँन गुणि बाँधौ, खोजि निरंजन साँचा।
कहै कबीर निरंजन की गति, जुगति बिनाँ प्यंड काचा॥208॥

अवधू ऐसा ज्ञाँन बिचारी, ज्यूँ बहुरि न ह्नै संसारी॥टेक॥
च्यँत न सोच चित बिन चितवैं, बिन मनसा मन होई।
अजपा जपत सुंनि अभिअंतरि, यहू तत जानैं सोई॥
कहै कबीर स्वाद जब पाया, बंक नालि रस खाया।
अमृत झरै ब्रह्म परकासैं तब ही मिलै राम राया॥209॥

गोब्यंदे तुम्हारै बन कंदलि, मेरो मन अहेरा खेलै।
बपु बाड़ी अनगु मृग, रचिहीं रचि मेलैं॥टेक॥
चित तरउवा पवन षेदा, सहज मूल बाँधा।
ध्याँन धनक जोग करम, ग्याँन बाँन साँधा॥
षट चक्र कँवल बेधा, जारि उजारा कीन्हाँ।
काम क्रोध लोभ मोह, हाकि स्यावज दीन्हाँ॥
गगन मंडल रोकि बारा, तहाँ दिवस न राती।
कहै कबीर छाँड़ि चले, बिछुरे सब साथी॥210॥

साधन कंचू हरि न उतारै, अनभै ह्नै तौ अर्थ बिचारै॥टेक॥
बाँणी सुंरग सोधि करि आणै आणौं नौ रँग धागा।
चंद सूर एकंतरि कीया, सीवत बहु दिन लागा।
पंच पदार्थ छोड़ि समाँनाँ, हीरै मोती जड़िया।
कोटि बरष लूँ क्यूँ सीयाँ, सुर नर धधैं पड़या॥
निस बासुर जे सोबै नाहीं, ता नरि काल न खाई।
कहै कबीर गुर परसादैं सहजै रह्या समाई॥211॥

जीवत जिनि मारै मूवा मति ल्यावैं,

मास बिहूँणाँ घरिमत आवै हो कंता॥टेक॥
उर बिन षुर बिन चंच बिन, बपु बिहूँना सोई।
सो स्यावज जिनि मारै कंता, जाकै रगत मांस न होई॥
पैली पार के पारथी, ताकी धुनहीं पिनच नहीं रे।
तो बेली को ढूँक्यों मृग लौ, ता मृग कैसी सनहीं रे॥
मार्‌या मृग जीवता राख्या, यहु गुरु ग्याँन मही रे।
कहै कबीर स्वाँमी तुम्हारे मिलन की, बेली है पर पात नहीं रे॥212॥

धरी मेरे मनवाँ तोहि धरि टाँगौं,
तै तौ कीयौ मेरे खसम सूँ षाँगी॥टेक॥
प्रेम की जेवरिया तेरे गलि बाँधूँ, तहाँ लै जाँउँ जहाँ मेरौ माधौ।
काया नगरीं पैसि किया मैं बासा, हरि रस छाड़ि बिषै रसि माता॥
कहै कबीर तन मन का ओरा भाव भकति हरिसूँ गठजोरा॥213॥

परब्रह्म देख्या हो तत बाड़ी फूली, फल लागा बडहूली।
सदा सदाफल दाख बिजौरा कौतिकहारी भूली॥टेक॥
द्‌वादस कूँवा एक बनमाली, उलट नीर चलावै।
सहजि सुषमनाँ कूल भरावै, दह दिसि बाड़ी पावै॥
ल्यौकी लेज पवन का ढींकू, मन मटका ज बनाया।
सत की पाटि सुरति का चठा, सहजि नीर मुलकाया॥
त्रिकुटी चढ़ांै पाव ढौ ढारै, अरध उरध की क्यारी।
चंद सूर दोऊ पाँणति करिहै, गुर सुषि बीज बिचारी॥
भरी छाबड़ा मन बैकुंठा, साँई सूर हिया रगा।
कहै कबीर सुनहु रे संतो, हरि हँम एकै संगा॥214॥

राम नाम रँग लागौ कुरंग न होई, हरि रंग सौ रंग और न कोई॥टेक॥
और सबै रंग इहि रंग थैं छूटै, हरि रंग लागा कदे न खूटै।
कहै कबीर मेरे रंग राम राँई, और पतंग रंग उड़ि जाई॥215॥

कबीरा प्रेम कूल ढरै, हँमारे राम बिना न सरे।
बाँधि ले धौंरा सीचि लै क्यारी ज्यूँ तूँ पेड़ भरैं॥टेक॥
काया बाड़ी महैं माली, टहल करै दिन राती।
कबहूँ न सोवै काज भँवारे, पाँण तिहारी माती॥
सेझै कुवा स्वाजि अति सीतल, कबहूँ कुवा बनहीं रे।
भाग हँमारे हरि रखवाले, कोई उजाड़ नहीं रे॥
गुर बीज जनाया कि रखि न पाया, मन को आपदा खोई।
औरै स्यावढ़ करै षारिसा, सिला करै सब कोई॥
जौ घरि आया तौ सब ल्याया, सबही काज सँवार्या।
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, थकित भया मैं हार्‌या॥216॥

राजा राम बिना तकती धो धो।
राम बिना नर क्यूँ छूटौगे, जम करै नग धो धो धो॥टेक॥
मुद्रा पहर्या जोग न होई, घूँघट काढ़ा सती न कोई।
मा कै सँगि हिलि मिलि आया, फौकट सटै जनम गँवाया।

कहै कबीर जिनि हरि पद चीन्हाँ, मलिन प्यंड थैं निरमल कीन्हा॥217॥

है कोई राम नाम बतावै, वस्तु अगोचर मोहि लखावै॥टेक॥
राम नाम सब बखानै, राम नाम का मरम जाँनैं॥
ऊपर की मोहि बात न भावै, देखै गावैं तौ सुख पावै।
कहै कबीर कछू कहत न आवै, परचै बिनाँ मरम को पावै॥218॥

गोब्यंदे तूँ निरंजन तूँ निरंजन राया।
तेरे रूप नहीं रेख नाँहीं, मुद्रा नहीं माया॥टेक॥
समद नाँहीं सिषर नाँहीं, धरती नाँहीं गगनाँ।
रबि ससि दोउ एकै नाँहीं, बहता नाँहीं पवनाँ॥
नाद नाँही ब्यँद नाँहीं काल नहीं काया।
जब तै जल ब्यंब न होते, तब तूँहीं राम राया॥
जप नाहीं तप नाहीं जोग ध्यान नहीं पूजा।
सिव नाँहीं सकती नाँहीं देव नहीं दूजा॥
रुग न जुग न स्याँम अथरबन, बेदन नहीं ब्याकरनाँ।
तेरी गति तूँहि जाँनै, कबीरा तो मरनाँ॥219॥

राम कै नाँइ निसाँन बागा, ताका मरक न जानै कोई।
भूख त्रिषा गुण वाकै नाँहीं, घट घट अंतरि लोई॥टेक॥
बेद बिबर्जित भेद बिबर्जित बिबर्जित पाप रु पुंन्यं।
स्वाँन बिबर्जित ध्यान बिबर्जित, बिबर्जित अस्थूल सुंन्यं।
भेष बिबर्जित भीख बिबर्जित, बिबर्जित ड्यंमक रूपं।
कहै कबीरा तिहूँ लोक बिबर्जित, ऐसा तत्त अनूप॥220॥
राम राम राम रमि रहिए, साषित सेती भूलि न कहिये॥टेक॥
का सुनहाँ कौ सुमृत सुनायें, का साषित पै हरि गुन गाँये।
का कऊवा कौं कपूर खवाँयें, का बिसहर कौं दूध पिलाँयें।
साषित सुनहाँ दोऊ भाई, वो नींदे कौ भौंकत जाई।
अंमृत ले ले नींब स्यँचाई, कत कबीर बाकी बाँनि न जाई॥221॥

अब न बसूँ इहि गाँइ गुसाँई, तेरे नेवगी खरे सयाँने हो रामा॥टेक॥
नगर एक तहाँ जीव धरम हता, बसै जु पच किसानाँ।
नैनूँ निकट श्रवनूँ रसनूँ, इंद्री कह्या न मानै हो राम॥
गाँइ कु ठाकुर खेत कु नेपै, काइथ खरच न पारै।
जोरि जेवरी खेति पसारै, सब मिलि मोकौं मारै हो राम॥
खोटी महतौ बिकट बलाही, सिर कसदम का पारै।
बुरा दिवाँन दादि नहिं लागै, इक बाँधे इक मारै हो राम॥
धरमराई जब लेखा माँग्या, बाकी निकसी भारी।
पाँच किसानाँ भाजि गये हैं, जीव धर बाँध्यौ पारी हो राम॥
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, हरि भजि बाँधौ भेरा।
अबकी बेर बकसि बंदे कौं, सब खेत करौ नबेरा॥222॥

ता भै थैं मन लागौ राम तोही, करौ कृपा जिनि बिसरौ मोहीं॥टैक॥
जननी जठर सह्या दुख भारी,

सो संक्या नहीं गई हमारी॥
दिन दिन तन छीजै जरा जनावै,
केस गहे काल बिरदंग बजावै॥
कहै कबीर करुणामय आगैं,
तुम्हारी क्रिपा बिना यहु बिपति न भागै॥223॥

कब देखूँ मेरे राम सनेही, जा बिन दुख पावै मेरी देही॥टेक॥
हूँ तेरी पंथ निहारूँ स्वाँमी,
कब रमि लहुगे अंतरजाँमी॥
जैसैं जल बिन मीन तलपै,
ऐसे हरि बिन मेरा जियरा कलपै॥
निस दिन हरि बिन नींद न आवै,
दरस पियासी राम क्यूँ सचु पावै।
कहै कबीर अब बिलंब न कीजै,
अपनौ जाँनि मोहि दरसन दीजै॥224॥

सो मेरा राम कबै घरि आवै, तो देखे मेरा जिय सुख पावै॥टेक॥
बिरह अगिनि तन दिया जराई, बिन दरसन क्यूँ होइ सराई॥
निस बासुर मन रहे उदासा, जैसैं चातिग नीर पियासा॥
कहै कबीर अति आतुरताई, हमकौं बेगि मिलौ राम राई॥225॥

मैं सामने पीव गौंहनि आई।
साँई संगि साथ नहीं पूगी, गयौ जोबन सुपिनाँ की नाँई॥टेक॥
पंच जना मिलि मंडप छायौ, तीन जनाँ मिलि लगन लिखाई।
सखी सहेली मंगल गावैं, सुख दुख माथै हलद चढ़ाई॥
नाँना रंगयै भाँवरि फेरी, गाँठि जोरि बावै पति ताई।
पूरि सुहाग भयो बिन दूलह, चौक कै रंगि धरो सगौ भाई॥
अपने पुरिष मुख कबहूँ न देख्यौ, सती होत समझी समझाई।
कहै कबीर हूँ सर रचि मरिहूँ, तिरौ कंत ले तूर बजाई॥226॥

धीरैं धीरैं खाइबौ अनत न जाइबौ, राम राम राम रमि रहिबौ॥टेक॥
पहली खाई आई माई, पीछै खैहूँ जवाई।
खाया देवर खाया जेठ, सब खाया ससुर का पेट।
खाया सब पटण का लोग, कहै कबीर तब पाया जोग॥227॥
टिप्पणी: ख-खाया पंच पटण का लोग।

मन मेरौ रहटा रसनाँ पुरइया, हरि कौ नाऊँ लैं लैं काति बहुरिया॥टेक॥
चारि खूँटी दोइ चमरख लाई, सहजि रहटवा दियौ चलाई।
सासू कहै काति बहू ऐसैं, बिन कातैं निसतरिबौ कैसैं॥
कहै कबीर सूत भल काता, रहटाँ नहीं परम पद दाता॥228॥

अब की घरी मेरी घर करसी, साथ संगति ले मोकौं तिरसीं॥टेक॥
पहली को घाल्यौ भरमत डाल्यौ, सच कबहूँ नहीं पायी॥
अब की धरनि धरी जा दिन थैं सगलौ भरम गमायौ॥

पहली नारि सदा कुलवंती, सासू सुसरा मानैं॥
देवर जेठ सबनि की प्यारी, पिव कौ मरम न जाँनैं॥
अब की धरनिधरी जा दिन थैं, पीव सूँ बाँन बन्यूँ रे।
कहै कबीर भग बपुरी कौ, आइ रु राम सुन्यूँ रे॥229॥

मेरी मति बौरी राम बिसारौं, किहि बिधि रहनि रहूँ हौ दयाल॥
सेजै रहूँ नैंन नहीं देखौं, यह दुख कासौं कहूँ हो दयाल॥टेक॥
सासु की दुखी ससुर की प्यारी, जेठ के तरसि डरौं रे॥
नणद सुहेली गरब गहेली, देवर कै बिरह जरौं हो दयाल॥
बाप सावको करैं लराई, माया सद मतिवाली।
सगौ भइया लै सलि चिढ़हूँ तब हनै हूँ पीयहि पियारी॥
सोचि बिचारि देखौं मन माँहीं, औसर आइ बन्यूँ रे।
कहै कबीर सुनहु मति सुंदरि, राजा राम रमूँ रे॥230॥

अवधू ऐसा ग्याँन बिचारी, ताथै भई पुरिष थैं नारी॥टेक॥
ना हूँ परनी नाँ हूँ क्वारी, पून जन्यूँ द्यौ हारी।
काली मूँड कौ एक न छोड़ो, अजहूँ अकन कुवारी॥
बाम्हन के बम्हनेटी कहियौ, जोगी के घरि चेला।
कलमाँ पढ़ि पढ़ि भई तुरकनी, अजहूँ फिरौं अकेली॥
पीहरि जाँऊँ न सासुरै, पुरषहिं अंगि न लाँऊँ।
कहै कबीर सुनहु रे संतौ, अंगहि अँग छुवाँऊँ॥231॥
टिप्पणी: ख-पूत जने जनि हारी।

मीठी मीठी माया तजी न जाई।
अग्याँनी पुरिष कौ भोलि भोलि खाई॥टेक॥
निरगुण सगुण नारी, संसारि पियारी,
लषमणि त्यागी गोरषि निवारी।
कीड़ी कुंजर मैं रही समाई,
तीनि लोक जीत्या माया किनहुँ न खाई॥
कहै कबीर पद लेहु बिचारी,
संसारि आइ माया किन्हूँ एक कही षारी॥232॥

मन कै मैलौ बाहरि ऊजलौ किसी रे,
खाँडे की धार जन कौ धरम इसी रे॥टेक॥
हिरदा कौ बिलाव नैन बगध्यानी,
ऐसी भगति न होइ रे प्रानी॥
कपट की भगति करै जिन कोई,
अंत की बेर बहुत दुख होई॥
छाँड़ि कपट भजौ राम राई,
कहै कबीर तिहुँ लोक बड़ाई॥233॥

चौखौ वनज ब्यौपार, आइनै दिसावरि रे राम जपि लाहौ लीजै॥टेक॥
जब लग देखौं हाट पसारा,
उठि मन बणियों रे, करि ले बणज सवारा।

बेगे ही तुम्ह लाद लदाँनों,
औघट घआ रे चलनाँ दूरि पयाँनाँ॥
खरा न खोटा नाँ परखानाँ,
लाहे कारनि रे सब मूल हिराँनाँ॥
सकल दुनीं मैं लोभ पियारा,
मूल ज राखै रे सोई बनिजारा॥
देस भला परिलोक बिराँनाँ,
जन दोइ चारि नरे पूछौ साथ सयाँनाँ॥
सायर तीन न वार न पारा,
कहि समझावै रे कबीर बणिजारा॥234॥

जौ मैं ग्याँन बिचार न पाया, तौ मैं यौं ही जनम गँवाया॥टेक॥
यह संसार हाट करि जाँनूँ, सबको बणिजण आया।
चेति सकै सो चेतौ रे भाई, मूरिख मूल गँवाया॥
थाके नैंन बैंन भी थाके, थाकी सुंदर काया।
जाँमण मरण ए द्वै थाके, एक न थाकी माया।
चेति चेति मेरे मन चंचल, जब लग घट में सासा।
भगति जाव परभाव न जइयौ, हरि क चरन निवासा॥
जे जन जाँनि जपैं जग जीवन, तिनका ग्याँन नासा।
कहै कबीर वै कबहूँ न हारैं, जाँने न ढारै पासा॥235॥

लावौं बाबा आगि जलावौं घरा रे, ता कारनि मन धंधै परा रे॥टेक॥
इक डाँइनि मेरे मन मैं बसै रे, नित उठि मेरे जिय को डसै रे।
या डाँइन्स ले लरिका पाँच रे, निस दिन मोहि नचावैं नाच रे।
कहै कबीर हूँ ताकौ दास, डाँइनि कै सँगि रहे उदास॥236॥

बंदे तोहि बंदिगी सौ काँम, हरि बिन जानि और हराँम।
दूरि चलणाँ कूँच वेगा, इहाँ नहीं मुकाँम॥टेक॥
इहाँ नहीं कोई यार दोस्त, गाँठि गरथ न दाम।
एक एकै संगि चलणाँ, बीचि नहीं बिश्राँम॥
संसार सागर बिषम तिरणाँ, सुमरि लै हरि नाँम।
कहै कबीर तहाँ जाइ रहणाँ, नगर बसत निधाँन॥237॥

झूठा लोग कहैं घर मेरा।
जा घर माँहैं बोलै डोलैं, सोई नहीं तन तेरा॥टेक॥
बहुत बँध्या परिवार कुटुँब मैं, कोई नहीं किस केरा।
जीवित आँषि मूँदि किन देखौ, संसार अंध अँधेरा॥
बस्ती मैं थैं मारि चलाया, जंगलि किया बसेरा।
घर कौ खरच खबरि नहीं भेजी, आप न कीया फेरा॥
हस्ती घोड़ा बैल बाँहणी, संग्रह किया घणेरा।
भीतरि बीबी हरम महल मैं, साल मिया का डेरा॥
बाजी को बाजीगर जाँनैं कै बाजीगर का चेरा।
चोरा कबहूँ उझकि न देखै चेरा अधिक चितेरा॥
नौ मन सूत उरझि नहीं सुरझै, जनमि जनमि उरझेरा।

कहै कबीर एक राम भजहु रे, बहुरि न हैगा फेरा॥238॥

हावड़ि धावड़ि जनम गवावै, कबहुँ न राम चरन चित लावै॥टेक॥
जहाँ जहाँ दाँम तहाँ मन धावै, अँगुरी, गिनताँ रैंनि बिहावै।
तृया का बदन देखि सुख पावै, साथ की संगति कबहूँ न आवै॥
सरग के पंथि जात सब लोई सिर धरि पोट न पहुँच्या कोई।
कहै कबीर हरि कहा उबारे, अपणैं पाव आप जो मारै॥239॥

प्राँणी काहै कै लोभ लागि, रतन जनम खोयौ।
बहुरि हीरा हाथि न आवै, राम बिना रोयौ॥टेक॥
जल बूँद थैं ज्यानि प्यंड बाँध्या, अगनि कुंढ रहाया।
दस मास माता उदरि राख्या, बहुरि लागी माया॥
एक पल जीवन का आसा नाहीं, जम निहारे सासा।
बाजीगर संसार कबीरा, जाँनि ढारौ पासा॥240॥

फिरत कत फूल्यौ फूल्यौ।
जब दस मास उधर मुखि होते, सो दिन काहै भूल्यौ॥टेक॥
जौ झारै तौ होई भसम तन, रहम कृम हनै जाई॥
काँचै कुंभ उद्यक भरि राख्यौ, तिनकी कौन बड़ाई॥
ज्यूँ माषी मधु संचि करि, जोरि जोरि धन कीनो॥
मूय पीछै लेहु लेहु करि, प्रेत रहन क्यूँ दोनों॥
ज्यू घर नारी संग देखि करि, तब लग संग सुहेली॥
मरघट घाट खैचि करि राखे, वह देखिहु हंस अकेली॥
राम न रमहु मदन कहा भूले, परत अँधेररैं कूवा॥
कहै कबीर सोई आप बँधायौ, ज्यूँ नलनी का सूवा॥241॥

जाइ रे दिन हीं दिन देहा, करि लै बौरी राम सनेहा॥टेक॥
बालापन गयौ जोबन जासी, जुरा मरण भौ संकट आसी।
पलटै केस नैन जल छाया, मूरिख चेति बुढ़ापा आया॥
राम कहत लज्या क्यूँ कीजै, पल पल आउ घटै तन छीजै।
लज्या कहै हूँ जम की दासी, एकै हाथि मूदिगर दूजै हाथि पासी॥
कहै कबीर तिनहूँ सब हार्या, राम नाम जिनि मनहु बिसार्या॥242॥

मेरी मेरी करताँ जनम गयौ, जनम गयौ पर हरि न कह्यौ॥टेक॥
बारह बरस बालापन खोयौ, बीस बरस कछु तप न कयौ।
तीन बरस कै राम न सुमिरौं, फिरि पछितानौं बिरध भयो॥
आयौ चोर तुरंग मुसि ले गयौ, मोरी राखत मगध फिरै॥
सीस चरन कर कंपन लागै, नैन नीर अस राल बहै।
जिभ्या बचन सूध नहीं निकसै, तब सुकरित की बात कहै॥
कहै कबीर सुनहु रे संतौ धन संच्यो कछु संगि न गयौ।
आई तलब गोपाल राइ की, मैंडी मंदिर छाड़ि चल्यौ॥243॥
टिप्पणी: ख-मौरी बाँधत।

जाहि जाती नाँव न लीया, फिरि पछितावैगौ रे जीया॥टेक॥

धंधा करत चरन कर घाटे, जाउ घटि तन खीना।
बिषै बिकार बहुत रुचि माँनी, माया मोह चित दीन्हाँ॥
जागि जागि नर काहें सोवै, सोइ सोइ कब जागेगा।
जब घर भीतरि चोर पड़ैंगे, अब अंचलि किसके लागेगा॥
कहै कबीर सुनहु रे संतो, करि ल्यौ जे कछु करणाँ।
लख चौरासी जोंनि फिरौगे, बिना राम की सरनाँ॥244॥
टिप्पणी: ख-धंधा करत करत कर थाके।

माया मोहि मोह हित कीन्हाँ, ताथैं मेरो ग्याँन ध्याँन हरि लीन्हाँ॥टेक॥
संसार ऐसा सुपिन जैसा, न सुपिन समाँन।
साँच करि नरि गाँठि बाँध्यौं, छाड़ि परम निधाँन॥
नैन नेह पतंग हुलसै, पसू न पेखै आगि।
काल पासि जु मुगध बाँध्या, कलंक काँमिनी लागि॥
करि बिचार बिकार परहरि, तिरण तारण सोइ।
कहै कबीर रघुनाथ भजि नर, दूजा नाँही कोइ॥245॥

तेरा तेरा झूठा मीठा लागा, ताथैं साचे सूँ मन भागा॥टेक॥
झूठे के घरि झूठा आया, झूठै खाना पकाया।
झूठी सहन क झूठा बाहया, झूठै झूठा खाया॥
झूठा ऊठण झूठा बैठण, झूठो सबै सगाई।
झूठे के घरि झूठा राता, साचे को न पत्याई॥
कहै कबीर अलह का पगुरा, साँचे सूँ मन लावौ।
झूठे केरी संगति त्यागौ, मन बंछित फल पावौ॥246॥

कौंण कौण गया राम कौंण कौण न जासी,
पड़सी काया गढ़ माटी थासी॥टेक॥
इंद्र सरीखे गये नर कोड़ी, पाँचौं पाँडौं सरिषी जोड़ी।
धू अबिचल नहीं रहसी तारा, चंद सूर की आइसी वारा॥
कहै कबीर जब देखि संसारा, पड़सी घट रहसी निरकारा॥247॥

ताथैं सेविये नाराँइणाँ प्रभू मेरो दीनदयाल दया करणाँ॥टेक॥
जौ तुम्ह पंडित आगम जाणौं, विद्या व्याकरणाँ।
तंत मंत सब ओषदि जाणौं, अति तऊ मरणाँ॥
राज पाट स्यंघासण आसण, बहु सुंदर रमणाँ।
चंदन चीर कपूर विराजत, अंति तऊ मरणाँ॥
जोगी जती तपी संन्यासी, बहु तीरथ भरमणाँ।
लुंचित मुंडित मोनि जटाधर, अंति तऊ मरणाँ॥
प्रोचि बिचारि सबै जग देख्या, कहूँ न ऊबरणाँ।
कहै कबीर सरणाई आयौ, मेटि जामन मरणाँ॥248॥

पाँड़े न करसि बाद बिबादं, या देही बिना सबद न स्वादं॥टेक॥
अंड ब्रह्मंड खंड भी माटी माटी नवनिधि काया।
माटी खोजत सतगुर भेट्या, तिन कछू अलख लखाया॥
जीवत माटी मूवा भी माटी, देखौ ग्यान बिचारी।

अंति कालि माटी मैं बासा, लेटे पाँव पसारी॥
माटी का चित्र पवन का थंभा, ब्यंद संजोगि उपाया।
भाँनैं घड़े सवारै सोई, यहु गोब्यंद की माया।
माटी का मंदिर ग्यान का दीप पवन बाति उजियारा।
तिहि उजियारै सब जग सूझै कबीर ग्याँन बिचारा॥249॥

मेरी जिभ्या बिस्न नैन नाराँइन, हिरदै जपौं गोबिंदा।
जब दुवार जब लेख माँग्या, तब का कहिसि मुकंदा॥टेक॥
तूँ ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा, चीन्हि न मोर गियाना।
तैं सब माँगे भूपति राजा, मोरे राम धियाना॥
पूरब जनम हम ब्राँह्मन होते, वोछैं करम तप हीनाँ।
रामदेव की सेवा चूका, पकरि जुलाहा कीन्हाँ॥
नौमी नेम दसमी करि संजम, एकादसी जागरणाँ।
द्वादसी दाँन पुन्नि की बेलाँ, सर्व पाप छ्यौ करणाँ॥
भौ बूड़त कछू उपाय करीजै, ज्यूँ तिरि लंघै तीरा।
राम नाम लिखि मेरा बाँधौ, कहै उपदेस कबीरा॥250॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह पद है-
कहु पाँडे कैसी सुचि कीजै, सुचि कीजै तौ जनम न लीजै॥टेक॥
जा सुचि केरा करहु बिचारा, भिष्ट नए लीन्हा औतारा।
जा कारणि तुम्ह धरती काटी, तामै मूए जीव सौ साटी॥
जा कारणि तुम्ह लीन जनेऊ, थूक लगाइ कातै सब कोऊ।
एक खाल घृत केरी साखा, दूजी खाल मैले घृत राखा॥
सो घृत सब देवतनि चढ़ायौ, सोई घृत सब दुनियाँ भायौ।
कहै कबीर सुचि देहु बताई, राम नाम लीजौ रे भाई॥250॥

कहु पाँड़े सुचि कवन ठाँव, जिहि घरि भोजन बैठि खाऊँ॥टेक॥
माता जूठा पिता पुनि जूठा जूठे फल चिल लागे।
जूठ आँवन जूठा जाँनाँ, चेतहु क्यूँ न अभागे॥
अन्न जूठा पाँनी पुनि जूठा, जूठे बैठि पकाया।
जूठी कड़छी अन्न परोस्या, जूठे जूठा खाया॥
चौका जूठा गोबर जूठा, जूठी का ढोकारा।
कहै कबीर तेई जन सूचे, जे हरि भजि तजहिं बिकारा॥251॥

हरि बिन झूठे सब ब्यौहार, केते कोऊ करौ गँवार॥टेक॥
झूठा जप तप झूठा ग्याँन, राम राम बिन झूठा ध्याँन।
बिजि नखेद पूजा आचार, सब दरिया मैं वार न पार॥
इंद्री स्वारथ मन के स्वाद, जहाँ साच तहाँ माँडै बाद।
दास कबीर रह्या ल्यौ लाइ, मर्म कर्म सब दिये बहाइ॥252॥

चेतनि देखै रे जग धंधा,
राम नाम का मरम न जाँनैं, माया कै रसि अंधा॥टेक॥
जतमत हीरू कहा ले आयो, मरत कहा ले जासी।
जैसे तरवर बसत पँखेरू, दिवस चारि के बासी॥
आपा थापि अवर कौ निंदै, जन्मत हो जड़ काटी।

हरि को भगति बिना यहु देही, धब लौटै ही फाटी॥
काँम क्रोध मोह मद मंछर, पर अपवाद न सुणिये।
कहैं कबीर साथ की संगति, राम नाम गुण भणिये॥253॥

रे जम नाँहि नवै व्यापारी, जे भरैं जगाति तुम्हारी॥टेक॥
बसुधा छाड़ि बनिज हम कीन्हों, लाद्यो हरि को नाँऊँ।
राम नाम की गूँनि भराऊँ, हरि कै टाँडे जाँऊँ॥
जिनकै तुम्ह अगिवानी कहियत, सो पूँजी हँम पासा।
अबै तुम्हारी कछु बल नाँहीं, कहै कबीरा दासा॥254॥

मींयाँ तुम्ह सौं बोल्याँ बणि नहीं आवै।
हम मसकीन खुदाई बंदे, तुम्हारा जस मनि भावै॥टेक॥
अलह अवलि दीन का साहिब, जार नहीं फुरमाया।
मुरिसद पीर तुम्हारै है को, कहौ कहाँ थैं आया॥
रोजा करै निवाज गुजारै, कलमैं भिसत न होई।
संतरि काबे इक दिल भीतरि, जे करि जानैं कोई॥
खसम पिछाँनि तरस करि जिय मैं माल मनी करि फीकी।
आपा जाँनि साँई कूँ जाँनै, तब ह्नै भिस्त सरीकी॥
माटी एक भेष धरि नाँनाँ, सब मैं ब्रह्म समानाँ॥
कहै कबीर भिस्त छिटकाई, दाजग ही मन मानाँ॥255॥

अलह ल्यौ लाँयें काहे न रहिये, अह निसि केवल राम नाम कहिये॥टेक॥
गुरमुखि कलमा ग्याँन मुखि छुरि, हुई हलाहल पचूँ पुरी॥
मन मसीति मैं किनहूँ न जाँनाँ, पंच पीर मालिम भगवानाँ॥
कहै कबीर मैं हरि गुन गाऊँ, हिंदू तुरक दोऊ समझाऊँ॥256॥

रे दिल खोजि दिलहर खोजि, नाँ परि परेसाँनीं माँहि।
महल माल अजीज औरति, कोई दस्तगोरी क्यूँ नाँहि॥टेक॥
पीराँ मुरीदाँ काजियाँ, मुलाँ अरू दरबेस।
कहाँ थे तुम्ह किनि कीये, अकलि है सब नेस॥
कुराना कतेबाँ अस पढ़ि पढ़ि, फिकरि या नहीं जाइ॥
दुक दम करारी जे करै, हाजिराँ सुर खुदाइ॥
दरोगाँ बकि बकि हूँहि खुसियाँ, बे अकलि बकहिं पुमाहिं।
इक साच खालिक खालक म्यानै, सो कछू सच सूरति माँहि॥
अलह पाक तूँ नापाक क्यूँ, अब दूसर नाँहीं कोइ।
कबीर करम करीम का, करनीं करै जाँनै सोइ॥257॥
टिप्पणी: क-प्रति में आठवीं पंक्ति का पाठ इस प्रकार है-
साचु खलक खालक, सैल सूरति माँहि॥

खालिक हरि कहीं दर हाल।
पंजर जसि करद दुसमन मुरद करि पैमाल॥टेक॥
भिस्त हुसकाँ दोजगाँ दुंदर दराज दिवाल।
पहनाम परदा ईत आतम, जहर जंगम जाल।

हम रफत रहबरहु समाँ, मैं खुर्दा सुमाँ बिसियार।
हम जिमीं असमाँन खालिक, गुद मुँसिकल कार॥
असमाँन म्यानैं लहँग दरिया, तहाँ गुसल करदा बूद।
करि फिकर रह सालक जसम, जहाँ से तहाँ मौजूद॥
हँम चु बूँद खालिक, गरक हम तुम पेस।
कबीर पहन खुदाइ की, रह दिगर दावानेस॥258॥

अलह राम जीऊँ तेरे नाई, बंदे ऊपरि मिहर करी मेरे साँई॥टेक॥
क्या ले माटी भुँइ सूँ, मारैं क्या जल देइ न्हवायें।
जो करै मसकीन सतावै, गूँन ही रहै छिपायें॥
क्या तू जू जप मंजन कीये, क्याँ मसीति सिर नाँयें।
रोजा करैं निमाज गुजारैं, क्या हज काबै जाँयें॥
ब्राह्मण ग्यारसि करै चौबीसौं, काजी महरम जाँन।
ग्यारह मास जुदे क्यू कीये, एकहि माँहि समाँन॥
जौ रे खुदाइ मसीति बसत है, और मुलिक किस केरा।
तीरथ मूरति राम निवासा, दुहु मैं किनहूँ न हेरा॥
पूरिब दिसा हरी का बासा, पछिम अलह मुकाँमा।
दिल ही खोजि दिलै दिल भीतरि, इहाँ राम रहिमाँनाँ॥
जेती औरति मरदाँ कहिये, सब मैं रूप तुम्हारा।
कबीर पंगुड़ा, अलह राम का, हरि गुर पीर हमारा॥259॥
टिप्पणी: ख-सब मैं नूर तुम्हारा॥

मैं बड़ मैं बड़ मैं बड़ माँटी, मण दसना जट का दस गाँठी॥टेक॥
मैं बाबा का जाध कहाँऊँ, अपणी मारी नींद चलाऊँ।
इनि अहंकार घणें घर घाले, नाचर कूदत जमपुरि चाले॥
कहै कबीर करता ही बाजी, एक पलक मैं राज बिराजी॥260॥

काहे बीहो मेरे साथी, हूँ हाथी हरि केरा।
चौरासी लख जाके मुख मैं, सो च्यंत करेगा मेरा॥टेक॥
कहौ गौन षिबै कहौ कौन गाजै, कहा थैं पाँणी निसरै।
ऐसी कला अनत है जाकैं, सो हँम कौं क्यूँ बिसरै॥
जिनि ब्रह्मांड रच्यै बहु रचना, बाब बरन ससि सूरा।
पाइक पंच पुहमि जाकैं प्रकटै, सो क्यूँ कहिये दूरा॥
नैन नालिक जिनि हरि सिरजे, बसन बसन बिधि काया।
साधू जन कौं क्यूँ बिसरै, ऐसा है राम राया॥
को काहू मरम न जानैं, मैं सरनाँगति तेरी।
कहै कबीर बाप राम राया, हुरमति राखहु मेरी॥261॥

शीर्ष पर वापस

4. राग सोरठि

हरि को नाम न लेइ गँवारा, क्या सोंचे बारंबारा॥टेक॥
पंच चोर गढ़ मंझा, गड़ लूटै दिवस रे संझा॥

जौ गढ़पति मुहकम होई, तौ लूटि न सकै कोई॥
अँधियारै दीपक चहिए, तब बस्त अगोचर लहिये॥
जब बस्त अगोचर पाई, तब दीपक रह्या समाई॥
जौ दरसन देख्या चाहिये, तौ दरपन मंजत रहिये॥
जब दरपन लागै कोई, तब दरसन किया न जाई॥
का पढ़िये का गुनिये, का बेद पुराना सुनिये॥
पढ़े गुने मति होई मैं सहजैं पाया सोई॥
कहैं कबीर मैं जाँनाँ, मैं जाँनाँ मन पतियानाँ॥
पतियानाँ जौ न पतीजै, तौ अंधै कूँ का कीजै॥262॥

अंधै हरि बिन को तेरा, कवन सूँ कहत मेरी मेरा॥टेक॥
तजि कुलाकष्म अभिमाँनाँ, झूठे भरमि कहा भुलानाँ॥
झूठे तन की कहा बड़ाई, जे निमष माँहि जरि जाई॥
जब लग मनहिं विकारा, तब लगि नहीं छूटै संसारा।
जब मन निरमल करि जाँनाँ, तब निरमल माँहि समानाँ।
ब्रह्म अगनि ब्रह्म सोई, अब हरि बिन और न कोई॥
जब पाप पुँनि भ्रँम जारी, तब भयो प्रकास मुरारी।
कहैं कबीर हरि ऐसा, जहाँ जैसा तहाँ तैसा॥
भूलै भरमि परै जिनि कोई, राजा राम करै सो होई॥263॥

मन रे सर्यौ न एकौ काजा, ताथैं भज्यौ न जगपति राजा॥टेक॥
बेद पुराँन सुमृत गुन पढ़ि गुनि भरम न पावा।
संध्या गायत्री अरु षट करमाँ, तिन थैं दूरि बतावा॥
बनखंडि जाइ बहुत तप कीन्हाँ, कंद मूल खनि खावा।
ब्रह्म गियाँना अधिक धियाँनी, जम कै पटैं लिखावा॥
रोजा किया निवाज गुजारी, बंग दे लोग सुनावा।
हिरदै कपट मिलै क्यूँ साँई, क्या हल काबै जावा॥
पहरौं काल सकल जग ऊपरि, माँहै लिखे सब ग्याँनी।
कहै कबीर ते भये षालसे, राम भगति जिनि जाँनी॥264॥

मन रे जब तैं राम कह्यौ, पीछै कहिबे कौ कछू न रह्यौ॥टेक॥
का जाग जगि तप दाँनाँ, जौ तै राम नाम नहीं जाँना॥
काँम क्रोध दोऊ भारे, ताथैं गुरु प्रसादि सब जारे॥
कहै कबीर भ्रम नासी, राजा राम मिले अबिनासी॥265॥

राम राइ सी गति भई हमारी, मो पै छूटत नहीं संसारी॥टेक॥
यूँ पंखी उड़ि जाइ अकासाँ, आस रही मन माँहीं॥
छूटीं न आस टूट्यौ नहीं फंधा उडिबौ लागौ काँहीं॥
जो सुख करत होत दुख तेही, कहत न कछु बनि आवै॥
कुंजर ज्यूँ कस्तूरी का मृग, आपै आप बँधावै॥
कहै कबीर नहीं बस मेरा, सुनिये देव मुरारी॥
इन भैभीत डरौं जम दूतनि, आये सरनि तुम्हारी॥266॥

राम राइ तूँ ऐसा अनभूत तेरी अनभैं थैं निस्तरिये॥

जे तुम्ह कृपा करौ जगजीवन तौ कतहूँ न भूलि न परिये॥टेक॥
हरि पद दुरलभ अगर अगोचर, कथिया गुर गमि बिचारा।
जा कारँनि हम ढूँढ़त फिरते, आथि भर्यो संसारा॥
प्रगटी जोति कपाट खोलि दिये, दगधे जम दुख द्वारा।
प्रगटे बिस्वनाथ जगजीवन, मैं पाये करत बिचारा॥
देख्यत एक अनेक भाव है, लेखत जात अजाती।
बिह कौ देव तजि ढूँढत फिरते मंडप पूजा पाती॥
कहै कबीर करुणामय किया, देरी गलियाँ बह बिस्तारा।
राम कै नाँव परम पद पाया छूटै बिघन बिकारा॥267॥

राम राइ को ऐसा बैरागी, हरि भजि मगन रहै बिष त्यागी॥टेक॥
ब्रह्मा एक जिनि सृष्टि उपाई, नाँव कुनाल धराया।
बहु विधि भाँडै उमही घड़िया, प्रभु का अंत न पाया॥
तरवर एक नाँनाँ बिधि फलिया, ताकै मूल न साखा।
भौजलि भूलि रह्या से प्राणी सो फल कदे न चाखा॥
कहै कबीर गुर बचन हेत करि और न दुनियाँ आथी।
माटी का तन माटी मिलिहै, सबद गुरु का साथी॥268॥

नैक निहारी हो माया बिनती करै,
दीन बचन बोले कर जोरे, फुनि फुनि पाइ परै॥टेक॥
कनक लेहु जेता मनि भावै, कामिन लेहु मन हरनीं।
पुत्र लेहु विद्या अधिकारी राजा लेहु सब धरनीं॥
अठि सिधि लेहु तुम्ह हरि के जनाँ नवैं निधि है तुम्ह आगैं॥
सुर नर सकल भवन के भूपति, तेऊ लहै न मागैं॥
तैं पापणीं सबै संधारे काकौ काज सँवारौं॥
दास कबीर राम कै सरनै छाड़ी झूठी माया।
गुर प्रसाद साथ की संगति, तहाँ परम पद पाया॥269॥

तुम्ह घरि जाहू हँमारी बहनाँ, बिष लागै तुम्हारे नैना॥टेक॥
अंजन छाड़ि निरंजन राते नाँ किसही का दैनाँ।
बलि जाऊँ ताकी जिनि तुम्ह पठई एक महा एक बहनाँ॥
राती खाँडी देख कबीरा, देखि हमारा सिंगारौ॥
सरग लोक थैं हम चलि आई, करत कबीर भरतारौ॥
सर्ग लोक में क्या दुख पड़िया, तुम्हे आई कलि माँहि।
जाति जुलाहा नाम कबीरा, अजहुँ पतीजौ नाँही॥
तहाँ जाहु जहाँ पाट पटंबर, अगर चंदन घसि लीनाँ।
आइ हमारै कहाँ करौगी, हम तौ जाति कमीनाँ॥
जिनि हँम साजे साँज्य निवाजे बाँधे काचै धागै।
जे तुम्ह जतन करो बहुतेरा, पाँणी आगि न लागै॥
साहिब मेरा लेखा मागैं लेखा क्यूँ करि दीजै।
ते तुम्ह जतन करो बहुतेरा, तौ पाँइण नीर न भीजै॥
जाकी मैं मछी मो मेरा मछा, सो मरा रखवालू।
टुक एक तुम्हारै हाथ लगाऊँ, तो राजाँ राँम रिसालू॥
जाति जुलाहा नाम कबीरा, बनि बनि फिरौं उदासी।

आसि पासि तुम्ह फिरि फिरि बैसो, एक माउ एक मासी॥270॥

ताकूँ रे कहा कीजै भाई,
तजि अंमृत बिषै सूँ ल्यौ लाई॥टेक॥
बिष संग्रह कहा सुख पाया,
रंचक सुख कौ जनम गँवाया॥
मन बरजै चित कह्यो न करई,
सकति सनेह दीपक मैं परई॥
कहत कबीर मोहि भगति उमाहा,
कृत करणी जाति भया जुलाहा॥271॥

रे सुख इब मोहि बिष भरि लगा
इनि सुख डहके मोटे मोटे छत्रापति राजा॥टेक॥
उपजै बिनसै जाइ बिलाई संपति काहु के संगि न जाई॥
धन जोबन गरब्यो संसारा, बहु तन जरि बरि ह्नै छारा।
चरन कवल मन राखि ले धीरा, राम रमत सुख कहै कबीरा॥272॥

इब न रहूँ माटी के घर मैं,
इब मैं जाइ रहूँ मिलि हरि मैं॥टेक॥
छिनहर घर अरु झिरहर टाटी, धन गरजत कंपै मेरी छाती॥
दसवैं द्वारि लागि गई तारी, दूरि गवन आवन भयौ भारी॥
चहूँ दिसि बैठे चारि पहरिया, जागत मुसि नये मोर नगरिया॥
कहै कबीर सुनहु रे लोई, भाँनड़ घड़ण सँवारण सोई॥273॥

कबीर बिगर्‌या राम दुहाई,
तुम्ह जिनि बिगरौ मेरे भाई॥टेक॥
चंदन कै ढिग बिरष जु मैला, बिगरि बिगरि सो चंचल ह्नैला॥
पारस कौं जे लोह छिवैगा, बिगरि बिगरि सो कंचन ह्नैला॥
गंगा मैं जे नीर मिलैगा, बिगरि बिगरि गंगोदिक ह्नैला॥
कहै कबीर जे राम कहैला, बिगरि बिगरि सो राँमहि ह्नैला॥274॥

राम राम भई बिकल मति मोरी,
कै यहु दुनी दिवानी तेरी॥टेक॥
जे पूजा हरि नाही भावै सो पूजनहार चढ़ावै॥
जिहि पूजा हरि भल माँनै, सो पूजनहार न जाँनै॥
भाव प्रेम की पूजा ताथै भयो देव थैं दूजा॥
का कीजै बहुत पसारा, पूजी जे पूजनहारा॥
कहै कबीर मैं गावा, मैं गावा आप लखावा॥
जो इहि पद माँहि समाना, सो पूजनहार सयाँना॥275॥

राम राम भई बिगूचनि भारी,
भले इन ग्याँनियन थैं संसारी॥टेक॥
इक तप तीरथ औगाहैं इक मानि महातम चाँहै॥
इक मैं मेरी मैं बीझै, इक अहंमेव मैं रीझै॥

इक कथि कथि भरम जगाँवैं, सँमिता सी बस्त न पावैं।
कहै कबीर का कीजै, हरि सूझे सो अंजन दीजै॥276॥

काया मंजसि कौन गुनाँ,
घट भीतरि है मलनाँ॥टेक॥
जौ तूँ हिरदै सुख मन ग्यानीं, तौ कहा बिरौले पाँनी।
तूँबी अठसठी तीरथ न्हाई, कड़वापन तऊ न जाई॥
कहै कबीर बिचारी, भवसागर तारि मुरारी॥277॥

कैसे तूँ हरि कौ दास कहायौ,
कारे बहु भेषर जनम गँवायौ॥टेक॥
सुध बुध होइ भज्यौ नहिं सोई काछ्यो ड्यँभ उदर कै ताँई॥
हिरदै कपट हरि सूँ नहीं साँचौ, कहो भयो जे अनहद नाच्यौ॥
झूठे फोकट कलू मँझारा, राम कहै ते दास नियारा॥
भगति नारदी मगन सरीरा, इहि बिधि भव तिरि कहै कबीरा॥278॥

राँम राइ इहि सेवा भल माँनें,
जै कोई राँम नाँम तन जाँनैं॥टेक॥
दे नर कहा पषालै काया, सो तन चीन्हि जहाँ थैं आया॥
कहा बिभूति अटा पट बाँधे, का जल पैसि हुतासन साधें॥
राँममाँ दोई आखिर सारा, कहै कबीर तिहुँ लोक पियारा॥279॥

इहि बिधि राँम सूँ ल्यौ लाइ।
चरन पाषें निरति करि, जिभ्या बिना गुँण गाइ॥टेक॥
जहाँ स्वाँति बूँद न सीप साइर सहजि मोती होइ।
उन मोतियन में नीर पीयौ पवन अंबर धोइ॥
जहाँ धरनि बरषै गगन भीजै, चंद सूरज मेल।
दोइ मिलि तहाँ जुड़न लागे, करता हंसा केलि॥
एक बिरष भीतरि नदी चाली, कनक कलस समाइ।
पंच सुवटा आइ बैठे, उदै भई बनराइ॥
जहाँ बिछट्यो तहाँ लाग्यौ, गगन बैठी जाइ।
जन कबीर बटाऊवा, जिनि मारग लियौ चाइ॥280॥

ताथैं मोहि नाचवौ, न आवै,
मेरो मन मंदला न बजावै॥टेक॥
ऊभर था ते सूभर भरिया, त्रिष्णां गागरि फूटी।
हरि चिंतत मेरो मंदला भीनौं, भरम भीयन गयौ छूटी॥
ब्रह्म अगनि मैं जरी जु ममिता, पाषंड अरु अभिमानाँ।
काम चोलना भया पुराना, मोपैं होइ न आना॥
जे बहु रूप कीये ते किये, अब बहु रूप न होई।
थाकी सौंज संग के बिछुरे, राम नाँम मसि धोई॥
जे थे सचल अचल ह्नै थाके, करते बाद बिबाद।
कहै कबीर मैं पूरा पाया, भय राम परसाद॥281॥

अब क्या कीजै ग्यान बिचारा,
निज निरखत गत ब्यौहारा॥टेक॥
जाचिग दाता इक पाया धन दिया जाइ न खाया॥
कोई ले भरि सकै न मूका, औरनि पै जानाँ चूका॥
तिस बाझ न जीब्या जाई, वो मिलै त घालै खाई॥
वो जीवन भला कहाहीं, बिन मूवाँ जीवन नाहीं॥
घसि चंदन बनखंडि बारा, बिन नैननि रूप निहारा॥
तिहि पूत बाप इक जाया, बिन ठाहर नगर बसाया॥
जौ जीवत ही मरि जाँनै, तौ पंच सयल सुख मानैं॥
कहै कबीर सो पाया, प्रभु भेटत आप गँवाया॥282॥

अब मैं पायौ राजा राम सनेही॥टेक॥
जा बिनु दुख पावै मेरी देही॥टेक॥
वेद पुरान कहत जाकी साखी, तीरथि ब्रति न छूटै जंम की पासी॥
जाथैं जनम लहत नर आगैं, पाप पुंनि दोऊ भ्रम लागै॥
कहै कबीर सोई तत जागा, मन भया मगन प्रेम रस लागा॥283॥

बिरहिनी फिरै है नाम अधीरा,
उपजि बिनाँ कछू समझि न परई, बाँझ न जानै पीरा॥टेक॥
या बड़ बिथा सोई भल जाँने राँम बिरह सर मारी।
कैसो जाँने जिनि यहु लाई, कै जिनि चोट सहारी॥
संग की बिछुरी मिलन न पावै सोच करै अरु काहै।
जतन करै अरु जुगति बिचारै, रटै राँम कूँ चाहै॥
दीन भई बूझै सखियन कौं, कोई मोही राम मिलावै।
दास कबीर मीन ज्यूँ तलपै, मिलै भलै सचु पावै॥284॥

जातनि बेद न जानैगा जन सोई,
सारा भरम न जाँनै राँम कोई॥टेक॥
चषि बिन दिवस जिसी है संझा,
ब्यावन पीर न जानै बंझा॥
सूझै करक न लागै कारी,
बैद बिधाता करि मोहि सारी॥
कहै कबीर यहु दुख कासनि कहिये,
अपने तन कीं आप ही सहिये॥285॥

जन की पीर हो राजा राम भल जाँनै,
कहूँ काहि को मानै॥टेक॥
नैन का दुख बैन जाँने, बैन को दुख श्रवनाँ॥
प्यंड का दुख प्रान जानै, प्रान का दुख मरनाँ॥
आस का दुख प्यासा जानै, प्यास का दुख नीर॥
भगति का दुख राम जानैं, कहै दास कबीर॥286॥

तुम्ह बिन राँम कवन सौं कहिये,
लागी चोट बहुत दुख सहिये॥टेक॥

बेध्यौ जीव बिरह कै भालै, राति दिवस मेरे उर सालै॥
को जानै मेरे तन की पीरा, सतगुर बहि गयौ सरीरा॥
तुम्ह से बैद न हमसे रोगी, उपजी बिथा कैसे जीवैं बियोगी॥
निस बासुरि मोहि चितवत जाई, अजहूँ न आइ मिले राँम राई॥
कहत कबीर हमकौं दुख भारी, बिन दरसन क्यूँ जीवहि मुरारी॥287॥
टिप्पणी: ख प्रति में अंतिम पंक्ति इस प्रकार है-
लागी चोट बहुत दुख सहिये॥देखो 287 की टेक।

तेरा हरि नाँमैं जुलाहा,
मेरे राँम रमण को लाहा॥टेक॥
दस सै सूत्रा की पुरिया पूरी, चंद सूर दोइ साखी।
अनत नाँव गिनि लई मजूरी, हिरदा कवल मैं राखी॥
सुरति सुमृति दोइ खूँटी कीन्हीं आरँभ कीया बमेकीं।
ग्यान तत की नली भराई बुनित आतमा पेषीं॥
अबिनासी धन लई मँजूरी, पूरी थापनि पाई।
रस बन सोधि सोधि सब आये, निकटै दिया बताई॥
मन सूधा कौ कूच कियौ है, ग्यान बिरथनीं पाई।
जीव की गाँठि गुढी सब भागी, जहाँ की तहाँ ल्यौ लाई॥
बेठि बेगारि बुराई थाकी, अनभै पद परकासा।
दास कबीर बुनत सच पाया, दुख संसार सब नासा॥288॥

भाई रे सकहु त तनि बुनि लेहु रे,
पीछे राँमहि दोस न देहु रे॥टेक॥
करगहि एकै बिनाँनी, ता भीतरि पंच पराँनी॥
तामैं एक उदासी, तिहि तणि बुणि सबै बिनासी॥
ज तूँ चौसठि बरिया धावा, नहीं होइ पंच सूँ मिलाँवा॥
जे तैं पाँसै छसै ताँणी, तौ सुख सूँ रह पराँणीं॥
पहली तणियाँ ताणाँ पीछ बुणियाँ बाँणाँ॥
तणि बुणि मुरतब कीन्हाँ, तब राम राइ पूरा दीन्हाँ॥
राछ भरत भइ संझा, तरुणीं त्रिया मन बंधा॥
कहै कबीर बिचारा, अब छोछी नली हँमारी॥289॥

वै क्यूँ कासी तजैं मुरारी,
तेरी सेवा चोर भशे बनवारी॥टेक॥
जोगी जती तपी संन्यासी, मठ देवल बसि परसै कासी॥
तीन बार जे निज प्रति न्हावै, काया भीतरि खबरि न पावै॥
देवल देवल फेरी देहीं, नाँव निरंजन कबहुँ न लेहीं॥
चरन बिरद कासी कौं न देहूँ, कहै कबीर भल नरकहिं जैहूँ॥290॥

तब काहे भूलौ बजजारे,
अब आयौ चाहै संगि हँमारे॥टेक॥
जब हँम बनजी लौंग सुपारी, तब तुम्ह काहे बनजी खारी।

जब हम बनजी परमल कस्तूरी, तब तू काहे बनजी कूरी॥
अंमृत छाड़ि हलाहल खाया, लाभ लाभी करि करि मूल गँवाया।
कहै कबीर हँम बनज्या सोई, जाँथै आवागमन न होई॥291॥

परम गुर देखो रिदै बिचारी,
कछू करौ सहाई हमारी॥टेक॥
लावानालि तंति एक सँमि करि जंत्रा एक भल साज।
सति असति कछु नाहीं जानूँ, जैसे बजवा तैसैं बाजा॥
चोर तुम्हारा तुम्हारी आग्या, मुसियत नगर तुम्हारा।
इनके गुनह हमह का पकरौ, का अपराध हमारा॥
सेई तुम्ह सेई हम एकै कहियत, जब आपा पर नाहीं जाँनाँ।
ज्यूँ जल मैं जल पैसि न निकसै, कहै कबीर मन माँनाँ॥292॥

मन रे आइर कहाँ गयौ,
ताथैं मोहि वैराग भयौ॥टेक॥
पंच तत ले काया कीन्हीं, तत कहा ले कीन्हाँ।
करमौं के बसि जीव कहत है, जीव करम किनि दीन्हाँ॥
आकास गगन पाताल गगन दसौं दिसा गगन रहाई ले।
आँनँद मूल सदा परसोतम, घट बिनसै गगन न जाई ले॥
हरि मैं तन हैं तन मैं हरि है, है पुनि नाँही सोई।
कहै कबीर हरि नाँम न छाडू सहजै होई सो होई॥293॥

हँमारै कौन सहै सिरि भारा,
सिर की शोभा सिरजनहारा॥टेक॥
टेढी पाग बड जूरा, जबरि भये भसम कौ कूरा॥
अनहद कीगुरी बाजी, तब काल द्रिष्टि भै भागी॥
कहै कबीर राँम राया, हरि कैं रँगैं मूड़ मुड़ाया॥294॥

कारनि कौन सँवारे देहा,
यहु तनि जरि बरि ह्नै षेहा॥टेक॥
चोवा चंदन चरचत अंगा, सो तन जरत काठ के संगा॥
बहुत जतन करि देह मुट्याई, अगिन दहै कै जंबुक खाई॥
जा सिरि रचि रचि बाँधत पागा ता सिरि चंच सँवारत कागा॥
कहि कबीर सब झूठा भाई, केवल राम रह्यो ल्यौ लाई॥295॥

धन धंधा ब्यौहार सब, मिथ्याबाद।
पाँणीं नीर हलूर ज्यूँ, हरि नाँव बिना अपवाद॥टेक॥
इक राम नाम निज साचा, चित चेति चतुर घट काचा।
इस भरमि न भूलसि भोली, विधना की गति है ओली॥
जीवते कूँ मारन धावै, मरते को बेरि जिआवै।
जाकै हुँहि जम से बैरी, सो क्यूँ न सोवै नींद घनेरी॥
जिहि जागत नींद उपावै तिहि सोवत क्यूँ न जगावै॥
जलजंतु न देखिसि प्रानी, सब दीसै झूठ निदानी॥
तन देवल ज्यूँ धज आछै, पड़ियां पछितावै पाछै॥

जीवत ही कछू कीजै, हरि राम रसाइन पीजै॥
राम नाम निज सार है, माया लागि न खोई॥
अंति कालि सिर पोटली, ले जात न देख्या कोई॥
काहू के संगि न राखी, दीसै बीसल की साखी॥
जब हंस पवन ल्यौ खेलै, पसरो हाटिक जब मेलै॥
मानिष जनम अवतारा, तां ह्नैहै बारंबारा॥
कबहूँ ह्नै किसा बिहाँनाँ, तब पंखी जेम उड़ानाँ॥
सब आप आप कूँ जाई, को काहू मिलै न भाई॥
मूरिख मनिखा जनम गँवाया, बर कौडी ज्यूँ डहकाया॥
जिहि तन धन जगत भुलाया, जग राख्यो परहरि माया॥
जल अंजुरी जीवन जैसा, ताका है किसा भरोसा।
कहै कबीर जग धंधा, काहे न चेतहु अंधा॥296॥

रे चित चेति च्यंति लै ताही, जा च्यंतत आपा पर नाँही॥टेक॥
हरि हिरदै एक ग्याँन उपाया, ताथैं छूटि गई सब माया॥
जहाँ नाँद न ब्यंद दिवस नहीं राती, नहीं नरनारि नहीं कुल जाती॥
कहै कबीर सरब सुख दाता, अविगत अलख अभेद बिधाता॥297॥

सरवर तटि हंसणी तिसाई जुगति बिनाँ हरि जल पिया न जाई॥टेक॥
पीया चाहे तौ लै खग सारी, उड़ि न सकै दोऊ पर भारी॥
कुँभ लीयै ठाढ़ी पनिहारी, गुण बिन नींर भरै कैसे नारीं॥
कहै कबीर गुर एक बुधि बताई, सहज सुभाइ मिलै राम राई॥298॥

भरथरी भूप भंया बैरागी।
बिरह बियोग बनि बनि ढूँढै, वाकी सूरति साहिब सौं लागी॥टेक॥
हसती घोड़ा गाँव गढ़ गूडर, कनडापा इक आगी।
जोगी हूवा जाँणि जग जाता, सहर उजीणीं त्यागी॥
छत्रा सिंघासण चवर ढुलंता, राग रंग बहु आगी॥
सेज रमैणी रंभा होती, तासौं प्रीत न लागी॥
सूर बीर गाढ़ा पग रोप्या, इह बिधि माया त्यागी॥
सब सुख छाड़ि भज्या इक साहिब, गुरु गोरख ल्यौ लागी।
मनसा बाचा हरि हरि भाखै, ग्रंधप सुत बड़ भागी।
कहै कबीर कुदर भजि करता, अमर भणे अणरागी॥299॥
टिप्पणी: ख-प्रति में यह पद नहीं है।

शीर्ष पर वापस

5. राग केदारौ

सार सुख पाइये रे, रंगि रमहु आत्माँराँम॥टेक॥
बनह बसे का कीजिये, जे मन नहीं तजै बिकार।
घर बन तत समि जिनि किया ते बिरला संसार॥
का जटा भसम लेपन किये, कहा गुफा मैं बास।
मन जीत्या जग जीतिये, जौ बिषया रहै उदास॥

सहज भाइ जे ऊपजै, ताका किसा माँन अभिमान।
आपा पर समि चीनियैं, तब मिलै आतमां राम॥
कहै कबीर कृपा भई, गुर ग्यान कह्या समझाइ।
हिरदै श्री हरि भेटियै, जे मन अनतै नहीं जाइ॥300॥

है हरि भजन कौ प्रवान।
नींच पावैं ऊँच पदवी बाजते नीसान॥टेक॥
भजन कौ प्रताप ऐसो, तिरे जल पाषान।
अधम भील अजाति गनिका, चढ़े जात बिवान॥
नव लख तारा चलै मंडल, चलै ससिहर भान।
दास धू कौ अटल पदवी, राम को दीवाँन॥
निगत जाकी साखि बोलै, कहै संत सुजाँन।
जन कबीर तेरी सरनि आयौ, राखि लेहु भगवाँन॥301॥

चलो सखी जाइये तहाँ, जहाँ गये पाइयै परमानंद॥टेक॥
यहु मन आमन धूमनाँ, मेरो तन छीजत नित जाइ।
च्यंतामणि चित चोरियौ, ताथैं कछू न सुहाइ॥
सुँनि लखी सुपनै की गति ऐसी, हरि आए हम पास।
सोवत ही जगाइया, जागत भए उदास॥
चलु सखी बिलम न कीजिये, जब लग सांस सरीर।
मिलि रहिये जमनाथ सूँ, सूँ कहै दास कबीर॥302॥

मेरे तन मन लागी चोट सठोरी।
बिसरे ग्यान बुधि सब नाठी, भई बिकल मति बौरी॥टेक॥
देह बदेह गलित गुन तीनूँ, चलत अचल भई ठौरी।
इत उत चित कित द्वादस चितवत, यहु भई गुपत ठगौरी॥
सोई पै जानै पीर हमारी, जिहिं सरीर यहु ब्यौरी।
जन कबीर ठग ठग्यौ है बापुरौ, सुंनि सँमानी त्यौरी॥303॥

मेरी अँषियाँ जानि सुजान भई।
देवर भरम ससुर संग तजि करि, हरि पीव तहाँ गई॥टेक॥
बालपनै के करम हमारे काटे जानि दई।
बाँह पकरि करि कृपा कीन्हीं, आप समीप लई॥
पानी की बूँद थैं जिनि प्यंड साज्या, तासंगि अधिक करई।
दास कबीर पल प्रेम न घटई, दिन दिन प्रीति नई॥304॥

हो बलियां कब देखोगी तोहि।
अह निस आतुर दरसन कारनि, ऐसी ब्यापै मोहि॥टेक॥
नैन हमारे तुम्ह कूँ चांहै, रती न मांनै हारि।
बिरह अगनि तन अधिक जरावै ऐसी लेहु बिचारि॥
सुनहुं हमारी दादि गुसांई, अब जिन करहु वधीर।
तुम्ह धीरज मैं आतुर स्वामी, काचै भांडै नीर॥
बहुत दिनन के बिछुरै माधौ, मन नहीं बाँधे धीर।
देह छतां तुम्ह मिलहु कृपा करि, आरतिवंत कबीर॥305॥

वे दिन कब आवैगे भाइ।
जा कारनि हम देह धरी है, मिलिबौ अंगि लगाइ॥टेक॥
हौं जाँनूं जे हिल मिलि खेलूँ, तन मन प्राँन समाइ।
या काँमनाँ करौ परपूरन, समरथ हौ राम राइ॥
मांहि उदासी साधौ चाहे, चितवन रैनि बिहाइ।
सेज हमारी स्यंध भई है, जब सोऊँ तब खाइ।
यह अरदास दास की सुनिये, तन को तपति बुझाइ॥
कहैं कबीर मिलै जे साँईं, मिलि करि मंगल गाइ॥306॥

बाल्हा आव हमारे गेहु रे, तुम्ह बिन दुखिया देह रे॥टेक॥
सब को कहै तुम्हारी नारी, मोकौ इहै अदेह रे।
एकमेक ह्नै सेज न सोवै, तब लग कैसा नेह रे॥
आन न भावै नींद न आवै, ग्रिह बन धरै न धीर रे।
ज्यूँ कामी कौ काम पियारा, ज्यूँ प्यासे कूँ नीर रे॥
है कोई ऐसा परउपगारी, हरि सूँ कहै सुनाइ रे॥
ऐसे हाल कबीर भये हैं, बिन देखे जीव जाइ रे॥307॥

माधौ कब करिहौ दाया।
काम क्रोध अहंकार ब्यापै, नां छूटे माया॥टेक॥
उतपति ब्यंद भयौ जा दिन थैं, कबहूँ सच नहीं पायो।
पंच चोर सगि लाइ दिए हैं, दन संगि जनम गँवायो।
तन मन डस्यौ भुजंग भामिनी, लहरी वार न पारा।
सो गारडू मिल्यो नहीं कबहूँ, पसरो बिष बिकराला।
कहै कबीर यहु कासूँ कहिये, यह दुख कोई न जानै।
देहु दीदार बिकार दूरि करि, तब मेरा मन मांनै॥308॥
टिप्पणी: ख-लहरी अंत न पारा।

मैं बन भूला तूँ समझाइ।
चित चंचल रहै न अटक्यौ, बिषै बन कूँ जाइ॥टेक॥
संसार सागर मांहि भूल्यो, थक्यो करत उपाइ।
मोहनी माया बाघनी थैं, राखि लै राम राइ।
गोपाल सुनि एक बीनती, सुमति तन ठहराइ।
कहै कबीर यहु काम रिप है, मारै सबकूँ ढाइ॥309॥

भगति बिन भौजलि डूबत है रे।
बोहिथ छाड़ि बेसि करि डूंडै, बहुतक दुख सहै रे॥टेक॥
बार बार जम पै डहकावै, हरि को ह्नै न रहे रे।
चोरी के बालक की नाई, कासूँ बाप कहे रे॥
नलिनी के सुवटा की नांई, जग सूँ राचि रहे रे।
बंसा अपनि बंस कुल निकसै, आपहिं आप दहे रे॥
खेवट बिनां कवन भौ तारै, कैसे पार गहे रे।

दास कबीर कहै समझावै, हरि की कथा जीवै रे॥
रांम कौ नाँव अधिक रस मीठौं, बारंबार पीवै रे॥310॥

चलत कत टेढौं टेढौं रे।
नउँ दुवार नरक धरि मूँदे, तू दुरगंधि को बैढी रे॥
जे जारे तौ होई भसमतन, तामे कहाँ भलाई॥
सूकर स्वाँन काग कौ भखिन, रहित किरम जल खाई।
फूटे नैन हिरदै नाहीं सूझै, मति एकै नहीं जाँनी॥
माया मोह ममिता सूँ बाँध्यो, बूडि मूवो बिन पाँनी॥
बारू के घरवा मैं बैठी, चेतन नहीं अयाँनाँ।
कहै कबीर एक राम भगति बिन, बूड़े बहुत सयाना॥311॥

अरे परदेसी पीव पिछाँनि।
कहा भयौ तोकौं समझि न परई, लागी कैसी बांनि॥टेक॥
भोमि बिडाणी मैं कहा रातौ, कहा कियो कहि मोहि।
लाहै कारनि मूल गमावै, समझावत हूँ तोहि॥
निस दिन तोहि क्यूँ नींद परत है, चितवत नांही तोहि॥
जम से बैरी सिर परि ठाढे, पर हथि कहाँ बिकाइ।
झूठे परपंच मैं कहा लगौ, ऊंठे नाँही चालि॥
कहै कबीर कछू बिलम न कीजै, कौने देखी काल्हि॥312॥

भयौ रे मन पहुंनड़ौ दिन चारि।
आजिक काल्हिक मांहि चलौगो, ले किन हाथ सँवारि॥टेक॥
सौंज पराई जिनि अपणावै, ऐसी सुणि किन लेह।
यहु संसार इसी रे प्राँणी, जैसी धूँवरि मेह।
तन धन जीवन अंजुरी कौ पानी, जात न लागै बार।
सैवल के फूलन परि फूल्यो, गरब्यो कहाँ गँवार॥
खोटी खाटै खरा न लीया, कछू न जाँनी साटि।
कहै कबीर कछू बनिज न कीयौ, आयौ थौ इहि हाटि॥313॥

मन रे राम नामहिं जांनि।
थरहरी थूँनी परो मंदिर सूतौ खूँटी तानि॥टेक॥
सैन तेरी कोई न समझै, जीभ पकरी आंनि।
पाँच गज दोवटी माँगी, चूँन लीयो साँनि॥
बैसदंर पोषरी हांडी, चल्यौ लादि पलानि।
भाई बंध बोलइ बहु रे, काज कीनौ आँनि।
कहै कबीर या मैं झूठ नाँहीं, छाँड़ि जीय की बाँनि।
राम नाम निसंक भजि रे, न करि कुल की काँनि॥314॥

प्राणी लाल औसर चल्यौ रे बजाइ।
मुठी एक मठिया मुठि एक कठिया, संग काहू कै न जाइ॥टेक॥
देहली लग तेरी मिहरी सगी रे, फलसा लग सगी माइ।
मड़हट लूँ सब लोग कुटुंबी, हंस अकेलो जाइ।
कहाँ वे लोग कहाँ पुर पाटण, बहुरि न मिलबौ आइ।

कहै कबीर जगनाथ भजहु रे, जन्म अकारथ जाइ॥315॥

राम गति पार न पावै कोई।
च्यंतामणि प्रभु निकटि छाड़ि करि, भ्रंमि मति बुधि खोई॥टेक॥
तीरथ बरत जपै तप करि करि, बहुत भाँति हरि सोधै।
सकति सुहाग कहौ क्यूँ पावे, अछता कंत बिरोधै॥
नारी पुरिष बसै इक संगा, दिन दिन जाइ अबोलै।
तजि अभिमान मिलै नहीं पीव कूँ, ढूँढत बन बन डोलै॥
कहै कबीर हरि अकथ कथा है, बिरला कोई जानै।
प्रेम प्रीति बेधी अंतर गति, कहूँ काहि को मानै॥316॥

राम बिनां संसार धंध कुहेरा,
सिरि प्रगट्या जम का फेरा॥टेक॥
देव पूजि पूजि हिंदू मूये, तुरुक मूये हज जाई।
जटा बाँधि बाँधि जोगी मूये, कापड़ी के दारौ पाई॥
कवि कवीवै कविता मूये, कापड़ी के दारौ जाई।
केस लूंचि लूंचि मूये बरतिया, इनमें किनहुँ न पाई॥
धन संचते राजा मूये अरु ले कंचन भारी।
बेद पढे पढ़े पंडित मूये, रूप भूले मूई नारी।
जे नर जोग जुगति करि जाँनै, खोजै आप सरीरा।
तिनकूँ मुकति का संसा नाहीं, कहत जुलाह कबीरा॥317॥

कहूँ रे जे कहिबे की होइ।
नाँ को जाने नाँ को मानै ताथैं अचिरज मोहि॥टेक॥
अपने अपने रंन के राजा, मांनत नाहीं कोइ।
अति अभिमान लोभ के घाले, अपनपौ खोइ॥
मैं मेरी करि यहु तन खोयो, समझत नहीं गँवार।
भौजलि अधफर थाकि रहे हैं, बूड़े बहुत अपार॥
मोहि आग्या दई दयाल दया करि, काहू कूँ समझाइ।
कहै कबीर मैं कहि कहि हार्यो, अब मोहिं दोष न लाइ॥318॥

एक कोस बन मिलांन न मेला।
बहुतक भाँति करै फुरमाइस, है असवार अेकला॥टेक॥
जोरत कटक जु धरत सब गढ़, करतब झेली झेला।
जोरि कटक गढ़ तोरि पातसाह, खेली चल्यो एक खेला॥
कूंच मुकांम जोग के घर मैं, कछू एक दिवस खटांनां।
आसन राखि बिभूति साखि दे, फुनि ले माटी उडांना॥
या जोगी की जुगति जू जांनै, सो सतगुर का चेला।
कहै कबीर उन गुर की कृपा थैं, तिनि सब भरम पछेला॥319॥

शीर्ष पर वापस

6. राग मारू

मन रे राम सुमिरि राम सुमिरि राम सुमिरि भाई।
राम नाम सुमिरन बिनै, बूड़त है अधिकाई॥टेक॥
दारा सुत गेह नेह, संपति अधिकाई॥
यामैं कछु नांहि तेरौ, काल अवधि आई॥
अजामेल गज गनिका, पतित करम कीन्हाँ॥
तेऊ उतरि पारि गये, राम नाम लीन्हाँ॥
स्वांन सूकर काग कीन्हौ, तऊ लाज न आई॥
राम नाम अंमृत छाड़ि काहे बिष खाई।
तजि भरम करम बिधि नखेद, राम नाम लेही॥
जन कबीर गुर प्रसादि, राम करि सनेही॥320॥

राम नाम हिरदै धरि, निरमौलिक हीरा।
सोभा तिहूँ लोक, तिमर जाय त्रिविध पीरा॥टेक॥
त्रिसनां नै लोभ लहरि, काम क्रोध नीरा।
मद मंछर कछ मछ हरषि सोक तीरा॥
कांमनी अरु कनक भवर, बोये बहु बीरा॥
जब कबीर नवका हरि, खेवट गुरु कीरा॥321॥

चलि मेरी सखी हो, वो लगन राम राया।
जब तक काल बिनासै काया॥टेक॥
जब लोभ मोह की दासी, तीरथ ब्रत न छूटै जंभ की पासी।
आवैंगे जम के घालैगे बांटी, यहु तन जरि बरि होइगा माटी।
कहै कबीर जे जन हरि रंगिराता, पायौ राजा राम परम पद दाता॥322॥

शीर्ष पर वापस

7. राग टोड़ी

तू पाक परमानंदे।
पीर पैकबर पनहु तुम्हारी, मैं गरीब क्या गंदे॥टेक॥
तुम्ह दरिया सबही दिल भीतरि, परमानंद पियारे।
नेक नजरि हम ऊपरि नांहि, क्या कमिबखत हमारे॥
हिकमति करै हलाल बिचारै, आप कहांवै मोटे।
चाकरी चोर निवाले हाजिर, सांई सेती खोटे॥
दांइम दूवा करद बजावै, मैं क्या करूँ भिखारी।
कहै कबीर मैं बंदा तेरा, खालिक पनह तुम्हारी॥323॥

अब हम जगत गौंहन तैं भागे,
जग की देखि गति रांमहि ढूंरि लांगे॥टेक॥
अयांनपनै थैं बहु बौराने, समझि पर तब फिर पछिताने।
लोग कहौ जाकै जो मनि भावे, लहै भुवंगम कौन डसावै॥
कबीर बिचारि इहै डर डरिये, कहै का हो इहाँ रै मरिये॥324॥

शीर्ष पर वापस

8. राग भैरूँ

ऐसा ध्यान धरौ नरहरी
सबद अनाहद च्यंत करी॥टेक॥
पहलो खोजौ पंचे बाइ, बाइ ब्यंद ले गगन समाइ।
गगन जोति तहाँ त्रिकुटी संधि, रबि ससि पवनां मेलौ बंधि॥
मन थिर होइ न कवल प्रकासै, कवला माँहि निरंजन बासै।
सतगुरु संपट खोलि दिखावै, निगुरा होइ तो कहाँ बतावै।
सहज लछिन ले तजो उपाधि, आसण दिढ निद्रा पुनि साधि॥
पुहुप पत्रा जहाँ हीरा मणीं, कहै कबीर तहाँ त्रिभुवन धणीं॥325॥

इहि बिधि सेविये श्री नरहरी,
मन ही दुविध्या मन परहरी॥टेक॥
जहाँ नहीं तहाँ कछू जाँणि, जहाँ नहीं तहाँ लेहु पछाँणि॥
नांही देखि न जइये भागि, जहाँ नहीं तहाँ रहिये लागि॥
मन मंजन करि दसवैं द्वारि, गंगा जमुना सधि बिचारि॥
नादहि ब्यंद कि ब्यंदहि नाद, नादहिं ब्यंद मिलै गोब्यंद।
देवी न देवा पूजा नहीं जाप, भाइ न बंध माइ नहीं बाप।
गुणातीत जस निरगुन आप, भ्रम जेवड़ो जन कीया साप॥
तन नांही कब जब मन नांही, मन परतीति ब्रहम मन मांहि।
परहरि बकुला ग्रहि गुन डार, निरखि देखि निधि वार न पार॥
कहै कबीर गुरपरम गियांन, सुनि मंडल मैं धरो धियांन॥
प्यंडं परे जीव जैहैं जहाँ, जीवत ही ले राखी तहाँ॥326॥

अलह अलख निरंजन देव, किहि बिधि करौं तुम्हारी सेव॥टेक॥
विश्न सोई जाको विस्तार, सोई कृस्न जिनि कीयौ संसार।
गोब्यंद ते ब्रहमंडहि नहै, सोई राम जे जुगि जुगि रहै॥
अलह सोई जिनि उमति उपाई, दस दर खोलै सोई खुदाई।
लख चौरासी रब परवरै, सोई करीब जे एती करै।
गोरख सोई ग्यांन गमि गहे, महादेव सोई मन को लहै॥
सिध सोई जो साधै इति, नाथ सोई जो त्रिभवन जती।
सिध साधू पैकंबर हूवा, जपै सू एक भेष है जूवा।
अपरंपार की नांउ अनंत, कहै कबीर सोई भगवंत॥327॥

तहाँ जौ राम नाम ल्यौ लागै,
तो जरा मरण छूटै भ्रम भागै॥टेक॥
अगम निगम गढ़ रचि ले अवास, तहुवां जोलि करै परकास।
चमकै बिजुरी तार अनंत, तहाँ प्रभु बैठे कवलाकंत॥
अखंड मंडित मंडित भंड, त्रि स्नांन करै त्रीखंड॥
अगम अगोचर अभिअंतश, ताकौ पार न पावै धरणीधरा।
अरध उरध बिचि लाइ ले अकास, तहुंवा जोति करै परकास।

टारौं टरै न आवै जाइ, सहज सुंनि मैं रह्यौ समाइ।
अबरन बरन स्यांम नहीं पीत, होहू जाइ न गावै गीत।
अनहद सबद उठे झणकार, तहाँ प्रभु बैठे समरथ सार।
कदली पुहुप दीप परकास, रिदा पंकज मैं लिया निवास।
द्वादस दल अभिअंतरि स्यंत, तहाँ प्रभु पाइसि करिलै च्यंत॥
अमलिन मलिन घाम नहीं छांहां, दिवस न राति नहीं हे ताहाँ।
तहाँ न उगै सूर न चंद, आदि निरंजन करै अनंद॥
ब्रह्मंडे सो प्यंडे जांन, मानसरोवर करि असनांन।
सोहं हंसा ताकौ जाप, ताहि न लिपै पुन्य न पाप॥
काया मांहै जांनै सोई, जो बोलै सो आपै होई।
जोति मांहि जे मन थिर करै, कहै कबीर सो प्रांणी तिरै॥328॥

एक अचंभा ऐसा भया,
करणीं थैं कारण मिटि गया॥टेक॥
करणी किया करम का नास, पावक माँहि पुहुप प्रकास।
पुहुप मांहि पावक प्रजरै, पाप पुंन दोउ भ्रम टरै॥
प्रगटी बास बासना धोइ, कुल प्रगट्यौ कुल घाल्यौ खोइ।
उपजी च्यंत च्यंत मिटि गई, भौ भ्रम भागा ऐसे भई।
उलटी गंग मेर कूँ चली, धरती उलटि अकासहिं मिली॥
दास कबीर तत ऐसी कहै, ससिहर उलटि राह की गहै॥329॥

है हजूरि क्या दूर बतावै,
दुंदर बाँधे सुंदर पावै॥टेक॥
सो मुलनां जो मनसूँ लरै, अह निसि काल चक्र सूँ भिरै।
काल चक्र का मरदै मांन, तां मुलनां कूँ सदा सलाम॥
काजी सो जो काया बिचारे, अहनिसि ब्रह्म अगनि प्रजारै।
सुप्पनै बिंद न देई झरनां, ता काजी कूँ जुरा न मरणां॥
सो सुलितान जु द्वै सुर तानै, बाहरि जाता भीतरि आनै।
गगन मंडल मैं लसकर करै, सो सुलितान छत्रा सिरि धरै॥
जोगी गोरख गोरख करै, हिंदू राम नाम उच्चरै।
मुसलमान कहै एक खुदाइ, कबीरा को स्वांमी घटि घटि रह्यो समाइ॥330॥

आऊँगा न जाऊँगा, न मरूँगा न जीऊँगा।
गुर के सबद मैं रमि रमि रहूँगा॥टेक॥
आप कटोरा आपै थारी, आपै पुरिखा आपै नारी।
आप सदाफल आपै नींबू, आपै मुसलमान आपै हिंदू॥
आपै मछकछ आपै जाल, आपै झींवर आपै काल।
कहै कबीर हम नांही रे नांही, नां हम जीवत न मूवले मांही॥331॥

हम सब मांहि सकल हम मांहीं,
हम थैं और दूसरा नाहीं॥टेक॥
तीनि लोक मैं हमारा पसारा, आवागमन सब खेल हमारा।
खट दरसन कहियत हम मेखा, हमहीं अतीत रूप नहीं रेखा।
हमहीं आप कबीर कहावा, हमहीं अपनां आप लखावा॥332॥

सो धन मेरे हरि का नांउ, गाँठि न बाँधौं बेचि न खांउं॥टेक॥
नांउ मेरे खेती नांउ मेरे बारी, भगति करौं मैं सरनि तुम्हारी।
नांउ मेरे सेवा नांउ मेरे पूजा, तुम्ह बिन और न जानौं दूजा॥
नांउ मेरे बंधव नांव मेरे भाई, अंत कि बेरियां नाँव सहाई।
नांउ मेरे निरधन ज्यूँ निधि पाई, कहैं कबीर जैसे रंक मिठाई॥333॥

अब हरि अपनो करि लीनौं, प्रेम भगति मेरौ मन भीनौं॥टेक॥
जरै सरीर अंग नहीं मोरौ, प्रान जाइ तो नेह तोरौ।
च्यंतामणि क्यूँ पाइए ठोली, मन दे राम लियौ निरमोली॥
ब्रह्मा खोजत जनम गवायौ, सोई राम घट भीतरि पायो।
कहै कबीर छूटी सब आसा, मिल्यो राम उपज्यौ बिसवासा॥334॥

लोग कहै गोबरधनधारी, ताकौ मोहिं अचंभो भारी॥टेक॥
अष्ट कुली परबत जाके पग की रैना, सातौ सायर अंजन नैना॥
ए उपभां हरि किती एक ओपै, अनेक भेर नख उपारि रोपै॥
धरनि अकास अधर जिनि राखी, ताकी मुगधा कहै न साखी।
सिव बिरंचि नारद जस गावै, कहै कबीर वाको पार न पावै॥335॥

राम निरंजन न्यारा रे, अंजन सकल पसारा रे॥टेक॥
अंजन उतपति वो उंकार, अंजन मांड्या सब बिस्तार।
अंजन ब्रह्मा शंकर ईद, अंजन गोपी संगि गोब्यंद॥
अंजन बाणी अंजन बेद, अंजन कीया नांनां भेद।
अंजन विद्या पाठ पुरांन, अंजन फोकट कथाहिं गियांन॥
अंजन पाती अंजन देव, अंजन की करै अंजन सेव॥
अंजन नाचै अंजन गावै, अंजन भेष अनंत दिखावै।
अंजन कहौ कहाँ लग केता, दांन पुनि तप तीरथ जेता॥
कहै कबीर कोई बिरला जागै, अंजन छाड़ि निरंजन लागै॥336॥

अंजन अलप निरंजन सार, यहै चीन्हि नर करहूँ बिचार॥टेक॥
अंजन उतपति बरतनि लोई, बिना निरंजन मुक्ति न होई।
अंजन आवै अंजन जाइ, निरंजन सब घट रह्यौ समाइ।
जोग ग्यांन तप सबै बिकार, कहै कबीर मेरे राम अधार॥337॥

एक निरंजन अलह मेरा, हिंदु तुरक दहू नहीं नेरा॥टेक॥
राखूँ ब्रत न मरहम जांनां, तिसही सुमिरूँ जो रहै निदांनां।
पूजा करूँ न निमाज गुजारूँ, एक निराकार हिरदै नमसकारूँ॥
नां हज जांउं न तीरथ पूजा, एक पिछांणा तौ का दूजा।
कहै कबीर भरम सब भागा, एक निरंजन सूँ मन लागा॥338॥

तहाँ मुझ गरीब की को गुदरावै, मजलिस दूरि महल को पावै॥टेक॥
सत्तरि सहस सलार है जाके, असी लाख पैकंबर ताके।
सेख जु कहिय सहस अठासी, छपन कोड़ि खलिबे खासी।
कोड़ि तेतीसूँ अरु खिलखांनां, चौरासी लख फिरै दिवांना॥

बाबा आदम पै नजरि दिलाई, नबी भिस्त घनेरी पाई।
तुम्ह साहिब हम कहा भिखारी, देत जबाब होत बजगारी॥
जब कबीर तेरी पनह समांनां, भिस्त नजीक राखि रहिमांनां॥339॥

जौ जाचौं तो केवल राम, आंन देव सूँ नांहीं काम॥टेक॥
जाकै सूरिज कोटि करै परकास, कोटि महादेव गिरि कबिलास।
ब्रह्मा कोटि बेद ऊचरै, दुर्गा कोटि जाकै मरदन करैं॥
कोटि चंद्रमां गहै चिराक, सुर तेतीसूँ जीमैं पाक।
नौग्रह कोटि ठाढे दरबार, धरमराइ पौली प्रतिहार॥
कोटि कुबेर जाकै भरैं भंडार, लक्ष्मी कोटि करैं सिंगार।
कोटि पाप पुंनि ब्यौहरै, इंद्र कोटि जाकी सेवा करें।
जगि कोटि जाकै दरबार, गंध्रप कोटि करै जैकार।
विद्या कोटि सबै गुण कहै, पारब्रह्म कौ पार न लहै॥
बासिग कोटि सेज बिसतरै, पवन कोटि चौबारे फिरै।
कोटि समुद्र जाकै पणिहारा, रोमावली अठारहु भारा॥
असंखि कोटि जाकै जमावली, रावण सेन्यां जाथैं चली॥
सहसवांह के हरे परांण, जरजोधन घाल्यौ खै मान।
बावन कोटि जाके कुटवाल, नगरी नगरी क्षेत्रापाल॥
लट छूटी खेलैं बिकराल, अनंत कला नटवर गोपाल।
कंद्रप कोटि जाकै लांवन करै, घट घट भीतरी मनसा हरै।
दास कबीर भजि सारंगपान, देह अभै पद मांगौ दान॥340॥

मन न डिगै ताथैं तन न डराई, केवल राम रहे ल्यौ लाई॥टेक॥
अति अथाह जल गहर गंभीर, बाँधि जँजीर जलि बोरे हैं कबीर।
जल की तरंग उठि कटि है जंजीर, हरि सुमिरन तट बैठे हैं कबीर॥
कहै कबीर मेरे संग न साथ, जल थल में राखै जगनाथ॥341॥

भलै नीदौ भलै नीदौ भले नीदौ लोग, तनौ मन राम पियारे जोग॥टेक॥
मैं बौरी मेरे राम भरतार, ता कारंनि रचि करौ स्यंगार।
जैसे धुबिवा रज मल धोवै, हर तप रत सब निंदक खोवै॥
न्यंदक मेरे माई बाप, जन्म जन्म के काटे पाप।
न्यंदक, मेरे प्रान अधार, बिन बेगारी चलावै भार॥
कहै कबीर न्यंदक बलिहारी, आप रहै जन पार उतारी॥342॥

जो मैं बौरा तौ राम तोरा, लोग मरम का जांनै मोरा॥टेक॥
माला तिलक पहरि मन मानां, लोगनि राम खिलौनां जांना।
थोरी भगति बहुत अहंकारा, ऐसे भगता मिलै अपारा॥
लोग कहै कबीर बीराना, कबीरा कौ भरत रांम भल जाना॥343॥

हरिजन हंस दसा लिये डोलै, निर्मल नांव चवै जस बोलै॥टेक॥
मानसरोवर तट के बासी, राम चरन चित आंन उदासी।
मुकताहल बिन चंच न लावै, मौंनि गहे कै हरि गुन गांवै॥
कउवा कुबधि निकट नहीं आवै, सो हंसा निज दरसन पावै॥
कहै कबीर सोई जन तेरा, खीर नीर का करै नबेरा॥344॥

सति राम सतगुर की सेवा, पूजहु राम निरंजन देवा॥टेक॥
जल कै मंजन्य जो गति होई, मीनां नित ही न्हावै।
जैसा मींनां तैसा नरा, फिरि फिरि जोनी आवै॥
मन मैं मैला तीर्थ न्हावै, तिनि बैकुंठ न जांना।
पाखंड करि करि जगत भुलांनां, नांहिन राम अयांनां॥
हिरदे कठोर मरै बनारसि, नरक न बंच्या जाई।
हरि कौ दास मरै जे मगहरि, सेन्यां सकल तिराई॥
पाठ पुरान बेद नहीं सुमिरत, तहाँ बसै निरकारा।
कहै कबीर एक ही ध्यावो, बावलिया संसारा॥345॥

क्या हनै तेरे न्हाई धाँई, आतम रांम न चीन्हा सोंई॥टेक॥
क्या घट उपरि मंजन कीयै, भीतरि मैल अपारा॥
राम नाम बिन नरक न छूटै, जे धोवै सौ बारा॥
का नट भेष भगवां बस्तर, भसम लगावै लोई।
ज्यूँ दादुर सुरसरी जल भीतरि हरि बिन मुकति न होई॥
परिहरि काम राम कहि बौरे सुनि सिख बंधू मोरी।
हरि कौ नांव अभयपददाता कहै कबीरा कोरी॥346॥

पांणी थे प्रकट भई चतुराई गुर प्रसादि परम निधि पाई॥टेक॥
इक पांणी वांणी कूँ धोवै एक पांणी पांणी कूँ मोहै।
पांणी ऊँचा पांणी नीचां, ता पांणी का लीजै सींचा॥
इसके पांणी थैं प्यंड उपाया, दास कबीर राम गुण गाया॥347॥

भजि गोब्यंद भूमि जिनि जाहु, मनिषा जनम कौ एही लाहु॥टेक॥
गुर सेवा करि भगति कमाई, जौ तै मनिषा देही पाई।
या देही कूँ लौचै देवा, सो देही करि हरि कि सेवा॥
जब लग जरा रोग नहीं आया, तब लग काल ग्रसै नहिं काया।
जब लग हींण पड़े नहीं वाणीं, तब लग भजि मन सांरंगपाणीं॥
अब नहीं भजसि भजसि कब भाई, आवेगा अंत भज्यौ जाई॥
जे कछू करौ सोई तत सार फिरि पछितावोगे बार न पार॥
सेवग सो जो लागे सेवा, तिनहीं पाया निरंजन देवा।
गुर मिलि जिनि के खुले कपाट, बहुरि न आवै जोनी बाट॥
यहु तेरा औसर यहु तरि बार, घट ही भीतरि सोचि बिचारि।
कहै कबीर जीति भावै हारि बहु बिधि कह्यौ पुकारि पुकारि॥348॥

ऐसा ज्ञान बिचारि रे मनां, हरि किन सुमिरै दुख भंजना॥टेक॥
जब लग मैं में मेरी करै, तब लग काज एक नहीं सरै।
जब यहु मैं मेरी मिटि जाइ, तब हरि काज सँवारै आइ।
जब स्यंध रहै बन मांहि, तब लग यहु बन फूलै नांहि।
उलटि स्याल स्यंध कूँ खाइ, तब यहु फूलै सब बनराई॥
जीत्या डूबै हार्‌या तिरै, गुर प्रसाद जीवत ही मरै।
दास कबीर कहै समझाइ, केवल राम रहौ ल्यो लाइ॥349॥

जागि रे जीव जागि रे।
चोरन को डर बात कहत हैं, उठि उठि पहरै लागि रे॥टेक॥
ररा करि टोप समां करि बखतर, ग्यान रतन करि ताग रे।
ऐसै जौ अजराइल मारै, मस्तकि आवै भाग रे॥
ऐसी जागणी जे को जागै, तौ हरि देइ सुहाग रे।
कहै कबीर जग्या ही चाहिए, क्या गृह क्या बैराग रे॥350॥

जागहु रे नर सोवहु कहा,
जम बटपारै रूँधे पंहा॥टेक॥
जागि थेति कछू करौ उपाई, मोआ बैरी है जमराई।
सेत काग आये बन मांहि, अजहु रे नर चेतै नांहि॥
कहै कबीर तबै नर जागै, जंम का डंड मूंड मैं लागै॥351॥

जाग्या रे नर नींद नसाई,
चित चेत्यो च्यंतामणि पाई॥टेक॥
सोवत सोवत बहुत दिन बीते, जन जाग्या तसकर गये रीते।
जन जागे का ऐमहि नांण, बिष से लागे वेद पुराण।
कहै कबीर अब सोवो नांहि, राम रतन पाया घट मांहि॥352॥

संतनि एक अहेरा लाधा, मिर्गनि खेत सबति का खाधा॥टेक॥
या जंगल मैं पाँचौ मृगा, एई खेत सबनि का चरिगा।
पाराधीपनौ जे साधै कोई, अध खाधा सा राखै सोई॥
कहै कबीर जो पंचौ मारै, आप तिरै और कूं तारै॥353॥

हरि कौ बिलोवनो विलोइ मेरी माई,
ऐसै बिलोइ जैसे तत न जाई॥टेक॥
तन करि मटकी मननि बिलोइ, ता मटकी मैं पवन समोइ।
इला पयंगुला सुषमन नारी, बेगि विलोइ ठाढी छलिहारी॥
कहै कबीर गुजरी बौरांनी, मटकी फूटी जोतिं समानी॥354॥

आसण पवन कियै दिढ़ रहु रे,
मन का मैल छाड़ि दे बौरे॥टेक॥
क्या सींगी मुद्रा चमकाये, क्या बिभूति सब अंगि लगाये॥
सो हिंदू सो मुसलमान, जिसका दुरस रहै ईमांन॥
सो ब्रह्मा जो कथै ब्रह्म गियान, काजी सो जानै रहिमान॥
कहै कबीर कछू आन न कीजै, राम नाम जपि लाहा दीजै॥355॥

ताथैं, कहिये लोकोचार,
बेद कतेब कथैं ब्योहार॥टेक॥
जारि बारि करि आवै देहा, मूंवां पीछै प्रीति सनेहा।
जीवन पित्राहि गारहि डंगा, मूंवां पित्रा ले घालैं गंगा॥
जीवत पित्रा कूँ अन न ख्वावै, मूंवां पीछे ष्यंड भरावै॥
जीवत पित्रा कूँ बोलै अपराध, मूंवां पीछे देहि सराध॥
कहि कबीर मोहि अचिरज आवै, कउवा खाइ पित्रा क्यूँ पावै॥356॥

बाप राम सुनि बीनती मोरी, तुम्ह सूँ प्रगट लोगन सूँ चोरी॥टेक॥
पहलै काम मुगध मति कीया, ता भै कंपै मेरा जीया।
राम राइ मेरा कह्या सुनीजै, पहले बकसि अब लेखा लीजै॥
कहै कबीर बाप राम राया, कबहुं सरनि तुम्हारी आया॥357॥

अजहूँ बीच कैसे दरसन तोरा,
बिन दरसन मन मांनै, क्यूँ मोरा॥टेक॥
हमहिं कुसेवग क्या तुम्हहिं अजांनां, दुइ मैं दोस कहौ किन रांमां।
तुम्ह कहियत त्रिभवन पति राजा, मन बंछित सब पुरवन काजा॥
कहै कबीर हरि दरस दिखावौ, हमहिं बुलावौ कै तुम्ह चलि आवौ॥358॥

क्यूँ लीजै गड़ बंका आई, दोवग काट अरू तेवड़ खाई॥टेक॥
काम किवाड़ दुख सुख दरवानी, पाप पुंनि दरवाजा।
क्रोध प्रधान लोभ बड़ दुंदर, मन मैं बासी राजा॥
स्वाद सनाह टोप ममिता का, कुबधि कामांण चढ़ाई।
त्रिसना तीर रहे तन भीतरि, सुबधि हाथि नहीं आई।
प्रेम पलीता सुरति नालि करि, गोला ग्यान चलाया।
ब्रह्म अग्नि ले दियां पलीता, एकैं चोट ढहाया।
सत संतोष लै लरनै लागे, तोरै दस दरवाजा॥
साध संगति अरु गुर की कृपा थैं, पकरो गढ़ को राजा।
भगवंत शीर सकति सुमिरण की, काटि काल की पासी।
दास कबीर चढ़े गढ़ ऊपरि, राज दियौ अबिनासी॥359॥

रैनि गई मति दिन भी जाइ,
भवर उड़े बन बैठे आइ॥टेक॥
कांचै करवै रहै न पानी, हंस उड़ा काया कुमिलांनी।
थरहर थरहर कंपै जीव, नां जांनूं का करिहै पीव।
कऊवा उड़ावत मेरी बहिंयां पिरांनी, कहै कबीर मेरी कथा सिरांनी।॥360॥

काहे कूँ बनाऊँ परिहै टाटी,
का जांनूं कहाँ परिहै माटी॥टेक॥
काहे कूँ मंदिर महल चिणांऊँ, मुवां पीछै घड़ी एक रहण न पाऊँ॥
कहो कूँ छाऊँ ऊँच ऊँचेरा, साढ़े तीनि हाथ घर मेरा॥
कहै कबीर नर गरब न कीजै, जेता तन तेती भुंइ लीजै॥361॥

शीर्ष पर वापस

9. राग बिलावल

बार बार हरि का गुण गावै, गुर गमि भेद सहर का पावै॥टेक॥
आदित करै भगति आरंभ, काया मंदिर मनसा थंभ।
अखंड अहनिसि सुरष्या जाइ, अनहद बेन सहज मैं पाइ॥
सोमवार ससि अमृत झरे, चाखत बेगि तपै निसतरै॥

बाँधी रोक्याँ रहै दुवार, मन मतिवाला पीवनहार॥
मंगलवार ल्यौ मांहीत, पंच लोक की छाड़ौ रीत॥
घर छाँड़ै जिनि बाहरि जाइ, नहीं तर खरौ रिसावै राइ।
बुधवार करै बुधि प्रकास, हिरदा कवल मैं हरि का बास॥
गुर गमि दोउ एक समि करै, उरध पंकज थैं सूधा धरै॥
ब्रिसपति बिषिया देइ बहाइ, तीनि देव एकै संगि लाइ।
तोनि नदी तहाँ त्रिकुटी मांहि, कुसमल धोवै अहनिसि न्हांहि॥
सुक्र सुधा ले इहि ब्रत चढ़ै, अह निस आप आपसूँ लड़ै॥
सुरषी पंच राखिये सबै, तो दूजी द्रिष्टि न पैसे कबै।
थावर थिर करि घट मैं सोइ, जोति दीवटी मेल्है जोइ।
बाहरि भीतरि भया प्रकास, तहाँ भया सकल करम का नास॥
जब लग घट मैं दूजो आँण, तब लग महलि न पावै जाँण॥
रमिता राम सूँ लागै रंग, कहै कबीर ते निर्मल अंग॥362॥

राम भेज सो जांनिये, जाके आतुर नांहीं।
सत संत संतोष लीयै रहै, धीरज मन मांहिं॥टेक॥
जन कौ काम क्रोध ब्यापै नहीं, त्रिष्णां न जरावै।
प्रफुलित आनंद मैं, गोब्यंद गुंण गावै॥
जन कौ पर निंदा भावै नहीं, अरु असति न भाषै।
काल कलपनां मेटि करि, चरनूं चित राखे।
जन सम द्रिष्टि सीतल सदा, दुबिधा नहीं आनै।
कहै कबीर ता दास तूँ मेरा मन मांनै॥363॥

माधौ सो मिलै जासौं मिलि रहिये, ता कारनि बक बहु दुख सहिये॥टेक॥
छत्राधार देखत ढहि जाइ, अधिक गरब थैं खाक मिलाइ।
अगम अगोचर लखीं न जाइ, जहाँ का सहज फिरि तहाँ समाइ॥
कहै कबीर झूठे अभिमान, से हम सो तुम्ह एक समान॥364॥

अहो मेरे गोब्यंद तुम्हारा जोर, काजी बकिवा हस्ती तोर॥टेक॥
बाँधि भुजा भलै करि डारौं, हस्ती कोपि मूंड मैं मारो।
भाग्यौ हस्ती चीसां मारी, वा मूरति की मैं बलिहारी॥
महावत तोकूँ मारौ साटी, इसहि मरांऊँ घालौं काटी॥
हस्ती न तोरै धरै धियांन, वाकै हिरदैं बसै भगवान॥
कहा अपराध संत हौं कीन्हां, बाँधि पोट कुंजर कूँ दीन्हां॥
कुंजर पोट बहु बंदन करै, अजहूँ न सूझैं काजी अंधरै॥
तीनि बेर पतियारा लीन्हां, मन कठोर अजहूँ न पतीनां॥
कहै कबीर हमारे गोब्यंद, चौथे पद ले जन का ज्यंद॥365॥

कुसल खेम अरु सही सलांमति, ए दोइ काकौं दीन्हां रे।
आवत जात दुहूँधा लूटै, सर्व तत हरि लीन्हां रे॥टेक॥
माया मोह मद मैं पीया, मुगध कहै यहु मेरी रे।
दिवस चारि भलै मन रंजै, यहु नाहीं किस केरी रे।
सुर नर मुनि जन पीर अवलिया, मीरां पैदा कीन्हां रे।
कोटिक भये कहाँ लूँ बरनूं, सबनि पयांनां दीन्हां रे॥

धरती पवन अकास जाइगा, चंद जाइगा सूरा रे।
हम नांही तुम्ह नांही रे भाई, रहे राम भरपूरा रे॥
कुसलहि कुसल करत जग खीना, पड़े काल भी पासी रे।
कहै कबीर सबै जग बिनस्या, रहे राम अबिनासी॥366॥

मन बनजारा जागि न सोई लाहे कारनि मूल न खोई॥टेक॥
लाहा देखि कहा गरबांना, गरब न कीजै मूरखि अयांनां।
जिन धन संच्या सो पछितांनां, साथी चलि गये हम भी जाँनाँ॥
निसि अँधियारी जागहु बंदे, छिटकन लागे सबही संधे।
किसका बँधू किसकी जोई, चल्या अकेला संगि न कोई।
एरि गए मंदिर टूटे बंसा, सूके सरवर उड़ि गये हंसा।
पंच पदारथ भरिहै खेहा, जरि बरि जायगी कंचन देहा॥
कहत कबीर सुनहु रे लोई, राम नाम बिन और न कोई॥367॥

मन पतंग चेते नहीं अंजुरी समांन।
बिषिया लागि बिगूचिये दाझिये निदांन॥टेक॥
काहे नैन अनिदियै सूझत, नहीं आगि।
जनम अमोलिक खोइयै, सांपनि संगि लागि।
कहै कबीर चित चंचला, गुर ग्यांन कह्यौ समझाइ॥
भगति हीन न जरई जरै, भावै तहाँ जाइ॥368॥

स्वादि पतंग जर जरी जाइ, अनहद सो मेरौ चित न रहाइ॥टेक॥
माया कै मदि चेति न देख्या, दुबिध्या मांहि एक नहीं पेख्या।
भेष अनेक किया बहु कीन्हां, अकल पुरिष एक नहीं चीन्हो॥
केते एक मूये मरेहिगे केते, केतेक मुगध अजहूँ नहीं चेते।
तंत मंत सब ओषद माया, केवल राम कबीर दिढाया॥369॥

एक सुहागनि जगत पियारी, सकल जीव जंत की नारी॥टेक॥
खसम करै वा नारि न रोवै, उस रखवाला औरे होवै।
रखवाले का होइ बिनास, उतहि नरक इत भोग बिलास॥
सुहागनि गलि सोहे हार, संतनि बिख बिलसै संसार।
पीछे लागी फिरै पचि हारी, संत की ठठकी फिरै बिचारी॥
संत भजै बा पाछी पडै, गुर के सबदूं मारौं डरै।
साषत कै यहु प्यंड पराइनि, हमारी द्रिष्टि परै जैसे डाँइनि॥
अब हम इसका पाया भेद, होइ कृपाल मिले गुरदेव॥
कहै कबीर इब बाहरि परी, संसारी कै अचलि टिरी॥370॥

परोसनि माँगै संत हमारा,
पीव क्यूँ बौरी मिलहि उधारा॥टेक॥
मासा माँगै रती न देऊँ, घटे मेरा प्रेम तो कासनि लेऊँ।
राखि परोसनि लरिका मोरा, जे कछु पाउं सू आधा तोरा।
बन बन ढूँढ़ौ नैन भरि जोऊँ, पीव न मिलै तौ बिलखि करि रोऊँ।

कहै कबीर यहु सहज हमारा, बिरली सुहागनि कंत पियारा॥371॥

राम चरन जाकै हिरदै बसत है, ता जन कौ मन क्यूँ डोलै।
मानौ आठ सिध्य नव निधि ताकै हरषि हरषि जस बोलै॥टेक॥
जहाँ जहाँ जाई तहाँ सच पावै, माया ताहि न झोलै।
बार बार बरजि बिषिया तै, लै नर जौ मन तोलै॥
ऐसी जे उपजै या जीय कै, कुटिल गाँठि सब खोलै॥
कहै कबीर जब मनपरचौ भयौ, रहे राम के बोलै॥372॥

जंगल मैं का सोवनां, औघट है घाटा,
स्यंध बाघ गज प्रजलै, अरु लंबी बाटा॥टेक॥
निस बासुरी पेड़ा पड़ै, जमदानी लूटै।
सूर धीर साचै मते, सोई जन छूटै॥
चालि चालि मन माहरा, पुर परण गहिये।
मिलिये त्रिभुवन नाथ सूँ, निरभै होइ रहिये॥
अमर नहीं संसार मैं, बिनसै नरदेही।
कहै कबीर बेसास सूँ, भजि राम सनेही॥373॥

शीर्ष पर वापस

10. राग ललित

राम ऐसो ही जांनि जपी नरहरी,
माधव मदसूदन बनवारी॥टेक॥
अनुदिन ग्यान कथै घरियार, धूवं धौलह रहै संसार।
जैसे नदी नाव करि संग, ऐसै ही मात पिता सुत अंग॥
सबहि नल दुल मलफ लकीर, जल बुदबुदा ऐसा आहि सरीर।
जिभ्या राम नाम अभ्यास, कहौ कबीर तजि गरम बास॥374॥

रसनां राम गुन रिस रस पीजै, गुन अतीत निरमोलिक लीजै॥टेक॥
निरगुन ब्रहम कथौ रे भाई, जा सुमिरन सुधि बुधि मति पाई।
बिष तजि राम न जपसि अभागे, का बूड़े लालच के लागे॥
ते सब तिरे रांम रस स्वादी, कहै कबीर बूड़े बकवादी॥375॥

निबरक सुत ल्यौ कोरा, राम मोहि मारि, कलि बिष बोरा॥टेक॥
उन देस जाइबा रे बाबू, देखिबो रे लोग किन किन खैबू लो।
उड़ि कागा रे उन देस जाइबा, जासूँ मेरा मन चित लागा लो।
हाट ढूँढि ले, पटनपुर ढूँढि ले, नहीं गाँव कै गोरा लो।
जल बिन हंस निसह बिन रबू कबीर का स्वांमी पाइ परिकै मनैबू लो॥376॥

शीर्ष पर वापस

11. राग बसंत

सो जोगी जाकै सहज भाइ, अकल प्रीति की भीख खाइ॥टेक॥
सबद अनाहद सींगी नाद, काम क्रोध विषया न बाद।
मन मुद्रा जाकै गुर को ग्यांन, त्रिकुट कोट मैं धरत ध्यान॥
मनहीं करन कौं करै सनांन, गुर को सबद ले ले धरै धियांन।
काया कासी खोजै बास, तहाँ जोति सरूप भयौ परकास॥
ग्यांन मेषली सहज भाइ, बंक नालि को रस खाइ।
जोग मूल कौ देइ बंद, कहि कबीर थीर होइ कंद॥377॥

मेरी हार हिरानौ मैं लजाऊँ, सास दुरासनि पीव डराऊँ॥टेक॥
हार गुहयौ मेरौ राम ताग, बिचि बिचि मान्यक एक लाग॥
रतन प्रवालै परम जोति, ता अंतरि लागे, मोति॥
पंच सखी मिलिहै सुजांन, चलहु त जइये त्रिवेणी न्हान।
न्हाइ धोइ कै तिलक दीन्ह, नां जानूं हार किनहूँ लीन्ह॥
हार हिरांनी जन बिमल कीन्ह, मेरौ आहि परोसनि हार लीन्ह।
तीनि लोक की जानै पीर, सब देव सिरोमनि कहै कबीर॥378॥

नहीं छाड़ी बाबा राम नाम, मोहिं और पढ़न सूँ कौन काम॥टेक॥
प्रहलाद पधारे पढ़न साल, संग सखा लीये बहुत बाल।
मोहि कहा पढ़ाव आल जाल, मेरी पाटी मैं लिखि दे श्री गोपाल॥
तब सैनां मुरकां कहयौ जाइ, प्रहिलाद बँधायौ बेगि आइ।
तूँ राम कहन की छाड़ि बांनि, बेगि छुड़ाऊँ मेरो कहयौ मांनि॥
मोहि कहा डरावै बार बार, जिनि जल थल गिर कौ कियौ प्रहार॥
बाँधि मोरि भावै देह जारि, जे हूँ राम छाड़ौ तौ गुरहि गार।
तब काढ़ि खड़ग कोप्यौ रिसाइ, तोहि राखनहारौ मोहि बताइ॥
खंभा मैं प्रगट्यो गिलारि, हरनाकस मार्यो नख बिदारि॥
महापुरुष देवाधिदेव नरस्यंध प्रकट कियौ भगति भेव।
कहै कबीर कोई लहै न पार, प्रहिलाद उबार्यौ अनेक बार॥379॥

हरि कौ नाउँ तत त्रिलोक सार, लौलीन भये जे उतरे पार॥टेक॥
इक जंगम इक जटाधार, इक अंगि बिभूति करै अपार।
इक मुनियर इक मनहूँ लीन, ऐसै होत होत जग जात खीन॥
इक आराधै सकति सीव, इक पड़वा दे दे बधै जीव॥
इक कुलदेव्यां कौ जपहि जाप, त्रिभवनपति भूले त्रिविध ताप॥
अंतहि छाड़ि इक पीवहि दूध, हरि न मिलै बिन हिरदै सूध।
कहै कबीर ऐसै बिचारि, राम बिना को उतरे पार॥380॥

हरि बोलि सूवा बार बार, तेरी ढिग मीनां कछूँ करि पुकार॥टेक॥
अंजन मंजन तजि बिकार, सतगुर समझायो तत सार॥
साध संगति मिली करि बसंत, भौ बंद न छूटै जुग जुगंत॥
कहै कबीर मन भया अनंद, अनंत कला भेटे गोब्यंद॥381॥

बनमाली जानै बन की आदि, राम नाम बिना जनम बादि॥टेक॥
फूल जू फुले रूति बसंत, जामैं मोहिं रहे सब जीव जंत।

फूलनि मैं जैसे रहै बास, यूँ घटि घटि गोबिंद है निवास॥
कहै कबीर मनि भया अनंद, जगजीवन मिलियौ परमानंद॥382॥

मेरे जैसे बनिज सौ कवन काज,
मूल घटै सिरि बधै ब्याज॥टेक॥
नाइक एक बनिजारे पाँच, बैल पचीस कौ संग साथ।
नव बहियां दस गौनि आहि, कसनि बहत्तरि लागै ताहि॥
सात सूत मिलि बनिज कीन्ह, कर्म पयादौ संग लीन्ह॥
तीन जगति करत रारि, चल्यो है बनिज वा बनज झारि॥
बनिज खुटानीं पूँजी टूटि, षाड़ू दह दिसि गयौ फूटि॥
कहै कबीर यहु जन्म बाद, सहजि समांनूं रही लादि॥383॥

माधौ दारन सुख सह्यौ न जाइ, मेरौ चपल बुधि तातैं कहा बसाइ॥टेक॥
तन मन भीतरि बसै मदन चोर, जिनि ज्ञांन रतन हरि लीन्ह मोर।
मैं अनाथ प्रभू कहूँ काहि, अनेक बिगूचै मैं को आहि॥
सनक सनंदन सिव सुकादि, आपण कवलापति भये ब्रह्मादि॥
जोगी जंगम जती जटाधर, अपनैं औसर सब गये हैं हार॥
कहै कबीर रहु संग साथ, अभिअंतरि हरि सूँ कहौ बात॥
मन ग्यांन जाति कै करि बिचार, राम रमत भौ तिरिवौ पार॥384॥

तू करौ डर क्यूँ न करे गुहारि, तूँ बिन पंचाननि श्री मुरारि॥टेक॥
तन भीतरि बसै मदन चोर, तिकिन सरबस लीनौ छोर मोर॥
माँगै देइ न बिनै मांन, तकि मारै रिदा मैं कांम बांन॥
मैं किहि गुहराँऊँ आप लागि, तू करी डर बड़े बड़े गये है भागि॥
ब्रह्मा विष्णु अरु सुर मयंक, किहि किहि नहीं लावा कलंक॥
जप तप संजम सुंनि ध्यान, बंदि परे सब सहित ग्यांन॥
कहि कबीर उबरे द्वे तीनि, जा परि गोबिंद कृपा कीन्ह॥385॥

ऐसे देखि चरित मन मोह्यौ मोर, ताथैं निस बासुरि गुन रमौं तोर॥टेक॥
इक पढ़हिं पाठ इक भ्रमें उदास इक नगन निरंतर रहै निवास॥
इक जोग जुगति तन हूंहिं खीन, ऐसे राम नाम संगि रहै न लीन॥
इक हूंहि दीन एक देहि दांन, इक करै कलापी सुरा पांन॥
इक तंत मंत ओषध बांन, इक सकल सिध राखै अपांन॥
इक तीर्थ ब्रत करि काया जीति, ऐसै राम नाम सूँ करै न प्रीति॥
इक धोम धोटि तन हूंहिं स्यान, यूँ मुकति नहीं बिन राम नाम॥
सत गुर तत कह्यौ बिचार, मूल गह्यौ अनभै बिसतार॥
जुरा मरण थैं भये धीर, राम कृपा भई कहि कबीर॥386॥

सब मदिमाते कोई न जाग, ताथे संग ही चोर घर मुसन लाग॥
पंडित माते पढ़ि पुरांन, जोगी माते धरि धियांन॥
संन्यासी माते अहमेव, तपा जु माते तप के भेव॥
जागे सुक ऊधव अंकूर, हणवंत जागे ले लंगूर॥
संकर जागे चरन सेव, कलि जागे नांमां जेदेव॥

ए अभिमान सब मन के कांम, ए अभिमांन नहीं रही ठाम॥
आतमां रांम कौ मन विश्राम, कहि कबीर भजि राम नाम॥387॥

चलि चलि रे भँवरा कवल पास, भवरी बोले अति उदास॥टेक॥
तैं अनेक पुहुप कौ लियौ भोग, सुख न भयौ तब बढ़ो है रोग॥
हौ जु कहत तोसूँ बार बार, मैं सब बन सोध्यौ डार डार॥
दिनां चारि के सुरंग फूल, तिनहिं देखि कहा रह्यौ है भूल॥
या बनासपती मैं लागैगी आगि, अब तूँ जैहौ कहाँ भागि॥
पुहुप पुरांने भये सूक तब भवरहि लागी अधिक भूख।
उड़ांो न जाइ बल गयो है छूटि, तब भवरी रूंना सीस कूटि॥
दह दिसी जोवै मधुप राइ, तब भवरी ले चली सिर चढ़ाइ॥
कहै कबीर मन कौ सुभाव, राम भगति बिन जम को डाव॥388॥

आवध राम सबै करम करिहूँ,
सहज समाधि न जम थैं डरिहूँ ॥टेक॥
कुंभरा ह्वै करि बासन धरिहूँ, धोबी ह्वै मल धोऊँ।
चमरा ह्वै करि बासन रंगों, अघौरी जाति पांति कुल खोऊँ॥
तेली ह्वै तन कोल्हूं करिहौ, पाप पुंनि दोऊ पेरूँ॥
पंच बैल जब सूध चलाऊँ, राम जेवरिया जोरूँ॥
क्षत्री ह्वै करि खड़ग सँभालूँ, जोग जुगति दोउ सांधूं॥
नउवा ह्वै करि मन कूँ मूंडूं, बाढ़ी ह्वै कर्म बाढूँ॥
अवधू ह्वै करि यह तन धूतौ, बधिक ह्वै मन मारूँ॥
बनिजारा ह्वै तन कूँ बनिजूँ, जूवारी ह्वै जम जारूं॥
तन करि नवका मन करि खेवट, रसना करउँ बाड़ारूँ॥
कहि कबीर भवसागर तरिहूँ आप तिरू बष तारूँ॥389॥

शीर्ष पर वापस

12. राग माली गौड़ी

पंडिता मन रंजिता, भगति हेत त्यौ लाइ लाइ रे॥
प्रेम प्रीति गोपाल भजि नर, और कारण जाइ रे॥टेक॥
दाँम छै पणि कांम नाहीं, ग्याँन छै पणि अंध रे॥
श्रवण छै पणि सुरत नाहीं, नैन छै पणि अंध रे॥
जाके नाभि पदक सूँ उदित ब्रह्मा, चरन गंग तरंग रे॥
कहै कबीर हरि भगति बांछू जगत गुर गोब्यंद रे॥390॥

बिष्णु ध्यांन सनान करि रे, बाहरि अंग न धोई रे।
साच बिन सीझसि नहीं, कांई ग्यांन दृष्टैं जोइ रे॥
जंबाल मांहैं जीव राखै, सुधि नहीं सरीर रे॥
अभिअंतरि भेद नहीं, कांई बाहरि न्हावै नीर रे॥
निहकर्म नदी ग्यांन जल, सुंनि मंडल मांहि रे॥
ओभूत जोगी आतमां, कांई पेड़ै संजमि न्हाहि रे॥
इला प्यंगुला सुषमनां, पछिम गंगा बालि रे॥

कहै कबीर कुसमल झड़ै, कांई मांहि लौ अंग पषालि रे॥391॥

भजि नारदादि सुकादि बंदित, चरन पंकज भांमिनी।
भजि भजिसि भूषन पिया मनोहर देव देव सिरोवनी॥टेक॥
बुधि नाभि चंदन चरिचिता, तन रिदा मंदिर भीतरा॥
राम राजसि नैन बांनी, सुजान सुंदर सुंदरा॥
बहु पाप परबत छेदनां, भौ ताप दुरिति निवारणां॥
कहै कबीर गोब्यंद भजि, परमांनंद बंदित कारणां॥392॥

13. राग कल्याण

ऐसै मन लाइ लै राम रसनाँ,
कपट भगति कीजै कौन गुणाँ॥टेक॥
ज्यूँ मृग नादैं बध्यौ जाइ, प्यंड परे बाकौ ध्याँन न जाइ।
ज्यूँ जल मीन तेत कर जांनि, प्रांन तजै बिसरै नहीं बानि॥
भ्रिंगी कीट रहै ल्यौ लाइ, हनै लोलीन भिंरग हनै जाइ॥
राम नाम निज अमृत सार, सुमिरि सुमिरि जन उतरे पार॥
कहै कबीर दासनि को दास, अब नहीं छाड़ौ हरि के चरन निवास॥393॥

शीर्ष पर वापस

14. राग सारंग

यहु ठग ठगत सकल जग डोलै, गवन करै तब मुषह न बोलै॥
तूँ मेरो पुरिषा हौं तेरी नारी, तुम्ह चलतैं पाथर थैं भारी।
बालपनाँ के मीत हमारे, हमहिं लाडि कत चले हो निनारे॥
हम सूँ प्रीति न करि री बौरी, तुमसे केते लागे ढौरी॥
हम काहू संगि गए न आये, तुम्ह से गढ़ हम बहुत बसाये॥
माटी की देही पवन सरीरा, ता ठग सूँ जन डरै कबीरा॥394॥

धंनि सो घरी महूरत्य दिनाँ, जब ग्रिह आये हरि के जनाँ॥टेक॥
दरसन देखत यहु फल भया, नैनाँ पटल दूरि हनै गया।
सब्द सुनत संसा सब छूटा, श्रवन कपाट बजर था तूटा॥
परसत घाट फेरि करि घड़ा काया कर्म सकल झड़ि पड़ा॥
कहै कबीर संत भल भाया, सकस सिरोमनि घट मैं पाया॥395॥

शीर्ष पर वापस

15. राग मलार

जतन बिन मृगनि खेत उजारे,
टारे टरत नहीं निस बासुरि, बिडरत नहीं बिडारे॥टेक॥
अपने अपने रस के लोभी, करतब न्यारे न्यारे।
अति अभिमान बदत नहीं काहू, बहुत लोग पचि हारे॥

बुधि मेरी फिरषी गुर मेरौ बिझुका, आखिर दोइ रखवारे॥
कहै कबीर अब खान न दैहूँ, बरियां भली सँभारे॥396॥

हरि गुन सुमरि रे नर प्राणी।
जतन करत पतन ह्नै जैहै, भावै जाँणम जाँणी॥टेक॥
छीलर नीर रहै धूँ कैसे, को सुपिनै सच पावै।
सूकित पांन परत तरवर थैं, उलटि न तरवरि आवै॥
जल थल जीव डहके इन माया, कोई जन उबर न पावै॥
राम अधार कहत हैं जुगि जुगि, दास कबीरा गावै॥397॥

शीर्ष पर वापस

16. राग धनाश्री

जपि जपि रे जीयरा गोब्यंदो, हित चित परमांनंदौ रे।
बिरही जन कौ बाल हौ, सब सुख आनंदकंदौ रे॥टेक॥
धन धन झीखत धन गयौ, सो धन मिल्यौ न आये रे॥
ज्यूँ बन फूली मालती, जन्म अबिरथा जाये रे॥
प्रांणी प्रीति न कीजिये, इहि झूठे संसारी रे॥
धूंवां केरा धौलहर जात न लागै बारी रे॥
माटी केरा पूतला, काहै गरब कराये रे॥
दिवस चार कौ पेखनौ, फिरि माटी मिलि जाये रे॥
कांमीं राम न भावई, भावै विषै बिकारी रे॥
लोह नाव पाहन भरी, बूड़त नांही बारी रे॥
नां मन मूवा न मारि सक्या, नां हरि भजि उतर्‌या पारो रे॥
कबीर कंचन गहि रह्यौ, काच गहै संसार रे॥398॥

न कछु रे न कछू राम बिनां।
सरीर धरे की रहै परमगति, साध संगति रहनाँ॥टेक॥
मंदिर रचत मास दस लागै, बिनसत एक छिनां।
झूठे सुख के कारनि प्रांनीं, परपंच करता घना॥
तात मात सुख लोग कुटुंब, मैं फूल्यो फिरत मनां।
कहै कबीर राम भजि बौरे, छांड़ि सकल भ्रमनां॥399॥

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका दस गंठिया, टेढ़ौ टेढ़ौ जात॥टेक॥
कहा लै आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात॥
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूँ बनि हरियल पात॥
राजा भयौ गाँव सौ पाये, टका लाख दस ब्रात॥
रावन होत लंका को छत्रापति, पल मैं गई बिहात॥
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात॥
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात॥400॥

नर पछिताहुगे अंधा।

चेति देखि नर जमपुरि जैहै, क्यूँ बिसरौ गोब्यंदा॥टेक॥
गरभ कुंडिनल जब तूँ बसता, उरध ध्याँन ल्यो लाया।
उरध ध्याँन मृत मंडलि आया, नरहरि नांव भुलाया॥
बाल विनोद छहूँ रस भीनाँ, छिन छिन बिन मोह बियापै॥
बिष अमृत पहिचांनन लागौ, पाँच भाँति रस चाखै॥
तरन तेज पर तिय मुख जोवै, सर अपसर नहीं जानैं॥
अति उदमादि महामद मातौ, पाष पुंनि न पिछानै॥
प्यंडर केस कुसुम भये धौला, सेत पलटि गई बांनीं॥
गया क्रोध मन भया जु पावस, कांम पियास मंदाँनीं॥
तूटी गाँठि दया धरम उपज्या, काया कवल कुमिलांनां॥
मरती बेर बिसूरन लागौ, फिरि पीछैं पछितांनां॥
कहै कबीर सुनहुं रे संतौ, धन माया कछू संगि न गया॥
आई तलब गोपाल राइ की, धरती सैन भया॥401॥

लोका मति के भोरा रे।
जो कासी तन तजै कबीर, तौ रामहिं कहा निहोरा रे॥टेक॥
तब हमें वैसे अब हम ऐसे, इहै जनम का लाहा।
ज्यूँ जल मैं जल पैसि न निकसै, यूँ ढुरि मिलै जुलाहा॥
राम भगति परि जाकौ हित चित, ताकौ अचिरज काहा॥
गुर प्रसाद साध की संगति, जग जीते जाइ जुलाहा॥
कहै कबीर सुनहु रे संतो, भ्रमि परे जिनि कोई॥
जसं कासी तस मगहर ऊसर हिरदै राम सति होई॥402॥

ऐसी आरती त्रिभुवन तारै, तेज पुंज तहाँ प्रांन उतारै॥टेक॥
पाती पंच पहुप करि पूजा, देव निरंजन और न दूजा॥
तन मन सीस समरपन कीन्हां, प्रकट जोति तहाँ आतम लीना॥
दीपक ग्यान सबद धुनि घंटा पर पुरिख तहाँ देव अनंता॥
परम प्रकाश सकल उजियारा, कहै कबीर मैं दास तुम्हारा॥

कबीर ग्रंथावली
संपादक
डॉ.श्याम सुंदर दास

(3) रमैणी - अनुक्रम

मुख्य सूची प्रस्तावना (1)साखी (2)पद परिशिष्ट
1. (राग सूहौ)
2. (सतपदी रमैणी)
3. (बड़ी अष्टपदी रमैणी)
4. (दुपदी रमैणी)

5. (अष्टपदी रमैणी)
6. (बारहपदी रमैणी)
7. (चौपदी रमैणी)

3. रमैणी

[टिप्पणियों के संबंध में स्पष्टीकरण : 'क' - संवत् 1561 में लिखी हस्तलिखित प्रति, 'ख' - संवत् 1881 में लिखी गयी प्रति, देखें- मुख्य सूची/ भूमिका]

(राग सूहौ)

तू सकल गहगरा, सफ सफा दिलदार दीदार॥
तेरी कुदरति किनहूँ न जानी, पीर मुरीद काजी मुसलमानी॥
देवौ देव सुर नर गण गंध्रप, ब्रह्मा देव महेसुर॥
तेरी कुदरति तिनहूँ न जांनी॥टेक॥

काजी सो जो काया बिचारै, तेल दीप मैं बाती जारै॥
तेल दीप मैं बाती रहे, जोति चीन्हि जे काजी कहै॥
मुलनां बंग देइ सुर जाँनी, आप मुसला बैठा ताँनी॥
आपुन मैं जे करै निवाजा, सो मुलनाँ सरबत्तरि गाजा॥
सेष सहज मैं महल उठावा, चंद सूर बिचि तारौ लावा॥
अर्ध उर्ध बिचि आनि उतारा, सोई सेष तिहूँ लोक पियारा॥
जंगम जोग बिचारै जहूँवाँ, जीव सिव करि एकै ठऊवाँ॥
चित चेतनि करि पूजा लावा, तेतौ जंगम नांऊँ कहावा॥
जोगी भसम करै भौ मारी, सहज गहै बिचार बिचारी॥
अनभै घट परचा सू बोलै, सो जोगी निहचल कदे न डोले॥
जैन जीव का करहू उबारा, कौंण जीव का करहु उधारा॥
कहाँ बसै चौरासी मतै संसारी, तिरण तत ते लेहु बिचारी॥
प्रीति जांनि राम जे कहै, दास नांउ सो भगता लहै॥

पंडित चारि वेद गुंण गावा, आदि अंति करि पूत कहावा॥
उतपति परलै कहौ बिचारी, संसा घालौ सबै निवारी॥
अरधक उरधक ये संन्यासी, ते सब लागि रहै अबिनासी॥
अजरावर कौ डिढ करि गहै, सो संन्यासी उम्मन रहै॥
जिहि धर चाल रची ब्रह्मंडा, पृथमीं मारि करी नव खंडां॥
अविगत पुरिस की गति लखी न जाई, दास कबीर अगह रहे ल्यौ लाई॥1॥
टिप्पणी: ख-प्रति में इसके आगे यह रमैणी है-
(ग्रंथ बावनी)
बावन आखिर लोकत्री, सब कुछ इनहीं माँहि॥
ये सब षिरि जाहिगे, सो आखिर इनमें नाँहि॥

ते तौ आधि अनंद सरूपा, गुन पल्लव बिस्तार अनूपा।
साखा तत थैं कुसम गियाँनाँ, फल सो आछा राम का नाँमाँ॥

सदा अचेत चेत जिव पंखी, हरि तरवर करि बास॥
झूठ जगि जिनि भूलसी जियरे, कहन सुनन की आस॥

जिहि ठगि ठगि सकल जग खावा, सो ठग ठग्यो ठौर मन आवा॥
डडा डर उपजै डर जाई, डरही मैं डर रह्यौ समाई॥
जो डर डरै तो फिर डर लागै, निडर होई तो डरि डर भागै॥
ढढा ढिग कत ढूँढै आना, ढूँढत ढूँढत गये परांना॥
चढ़ि सुमर ढूँढि जग आवा, जिमि गढ़ गढ़ा सुगढ़ मैं पावा॥
णणारि णरूँ तौ नर नाहीं, करै ना फुनि नवै न संचरै॥
धनि जनम ताहीं कौ गिणां, मेरे एक तजि जाहि घणां॥
तता अतिर तिस्यौ नहीं गाई, तन त्रिभुवन में रह्यौ समाई॥
जे त्रिभुवन तन मोहि समावै, तो ततै तन मिल्या सचु पावै॥
अथा अथाह थाह नहीं आवा, वो अथाह यहु थिर न रहावा॥
थोरै थलि थानै आरंभै, तो बिनहीं थंभै मंदिर थंभै॥
ददा देखि जुरे बिनसन हार, जस न देखि तस राखि बिचार॥
दसवै द्वारि जब कुंजी दीजै, तब दयालु को दरसन कीजै॥
धधा अरधै उरध न बेरा, अरधे उरधै मंझि बसेरा॥
अरधै त्यागि उरध जब आवा, तब उरधै छाँड़ि अरध कत धावा॥
ननना निस दिन निरखत जाई, निरखत नैन रहे रतबाई॥
निरखत निरखत जब जाइ पावा, तब लै निरखै निरख मिलावा॥
पपा अपार पार नहीं पावा, परम जोति सौ परो आवा॥
पांचौ इंद्री निग्रह करै, तब पाप पुंनि दोऊ न संचरै॥
फफा बिन फूलाँ फलै होई, ता फल फंफ लहै जो कोई॥
दूंणी न पड़ै फूकैं बिचारैं, ताकी फूंक सबै तन फारै॥
बबा बंदहिं बंदै मिलावा, बंदहि बंद न बिछुरन पावा॥
जे बंदा बंदि गहि रहै, तो बंदगि होइ सबै बंद लहै॥
भभा भेदै भेद नहीं पावा, अरभैं भांनि ऐसो आवा॥
जो बाहरि सो भीतरि जाना भयौ भेद भूपति पहिचाना॥

ममाँ मन सो काज है, मनमानाँ सिधि होइ॥

मनहीं मन सौ कहै कबीर, मन सौं मिल्याँ न कोइ॥

ममाँ मूल गह्याँ मन माना, मरमी होइ सूँ मरमही जाना॥
मति कोई मनसौं मिलता बिलमावै, मगन भया तैं सोगति पावै॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

सतपदी रमैणी

कहन सुनन कौ जिहि जग कीन्हा, जग भुलाँन सो किनहुँ न चीन्हा॥
सत रज तम थैं कीन्हीं माया, आपण माझै आप छिपाया॥

तुरक सरीअत जनिये, हिंदू बेद पुरान॥
मन समझन कै कारनै, कछु एक पढ़िये ज्ञान॥

जहाँ बोल तहाँ आखिर आवा, जहाँ अबोल तहाँ मन न लगावा॥
बोल अबोल मंझि है सोई, जे कुछि है ताहि लखै न कोई॥
ओ अंकार आदि मैं जाना, लिखि करि मेटै ताहि न माना॥
ओ ऊकार करै जस कोई, तस लिखि मरेणां न होई॥
ककाँ कवल किरणि मैं पावा, अरि ससि बिगास सपेट नहीं आवा॥
अस जे जहाँ कुसुम रस पावा, तौ अकह कहा कहि का समझावा॥
खखा इहै खोरि मनि आवा, तौ खोरहि छाँड़ चहूँ दिस धावा॥
खसमहिं जानि षिमा करि रहै, तौ हो दून षेव अखै पद लहै॥
गगा गूर के बचन पिछाना, दूसर बात न धरिये काना॥
सोइ बिहंगम कबहुँ न जाई, अगम गहै गहि गगन रहाई॥
घघा घटि निमसै सोई, घट फाटा घट कबहुँ न होई॥
तौ घट माँहि घाट जो पावा, सुघटि छाड़ि औघट कत आवा॥

ननना निरखि सनेह करि, निरवालै संदेह॥
नाहीं देखि न भाजिये, प्रेम सयानप येह॥

चचा चरित चित्र है भारी, तजि बिचित्र चेतहुँ चितकारी॥
चित्र विचित्र रहै औडेरा, तजि बिचित्र चित राखि चितेरा॥
छछा इहै छत्रापति पासा, तिहि छाक न रहै छाड़ि करि आसा॥
रे मन हूं छिन छिन समझाया, तहाँ छाड़ि कत आप बधाया॥
जजा जे जानै तौ दुरमति हारी, करि बासि काया गाँव॥
रिण रोक्या भाजै नहीं, तौ सूरण थारो नाँव॥
झझा उरझि सुरझि नहीं जाना, रहि मुखि झझखि झझखि परवाना॥
कत झषिझिषि औरनि समझावा, झगरौ कीये झगरिबौ पावा॥

ननना निकटि जु घटि रहै, दूरि कहाँ तजि आइ।
जा कारणि जग ढूँढियो, नैड़े पायौ ताहि॥

टटा निकट घाट है माहीं, खोलि कपाट महील जब जाहीं॥

रहै लपटि जहि घटि परो, आई, देखि अटल टलि कतहुँ न जाई।
ठठा ठौर दूरि ठग नीरा, नीठि नीठि मन कीया धीरा॥
सूक बिरख यहु जगत उपाया, समझि न परै बिषम तेरी माया॥
साखा तीनि पत्रा जुग चारी, फल दोइ पापै पुंनि अधिकारी॥
स्वाद अनेक कथ्या नहीं जांहीं, किया चरित सो इन मैं नाहीं॥

तेतौ आहि निनार निरंजना, आदि अनादि न आंन॥
कहन सुन कौ कीन्हु जग, आपै आप भुलाँन॥

जिनि नटवे नटसारी साजी, जो खेलै सो दीसे बाजी॥
मो बपरा थैं जोगपति ढीठो, सिव बिरंचि नारद नहीं दीठी॥
आदि अंति जो लीन भये हैं, सहजै जाँनि संतोखि रहे हैं॥
जजा सुतन जीवतही जरावै, जोबन जारि जुगुति सो पावै॥
अंसंजरि बुजरि जरि बरिहै, तब जाइ जोति उजारा लहै॥
ररा सरस निरस करि जानैं, निरस होइ सुरस करि मानै॥
यहु रस बिसरै सो रस होई, सो रस रसिक लहै जे कोई॥

लला लहौ तो भेद है, कहूँ तो कौ उपगार॥
बटक बीज मैं रमि रह्या, ताका तीन लोक बिस्तार॥

ववा वोइहिं जाणिये, इहि जाँण्याँ वो होइ॥
वो अस यहु जबहीं मिल्या, इहि तब मिलत न जाषे कोइ॥

ससा सो नीको करि सोधै, घट पर्‌या की बात निरोधै॥
घट पर्यो जे उपजै भाव, मिले ताहि त्रिभुवनपति राव॥
षषा खोजि परे जे कोई, जे खोजै सो बहुरे न होई॥
षोजि बूझि जे करै बिचार, तौ भौ जल तिरत न लागे बार॥
शशा शोई शेज नू बारे, शोई शाव संदेह निवारे॥
अति सुख बिसरे परम सुख पावै, सो अस्त्री सो कंत कहावै॥
हहा होइ होत नहीं जानै, जब जब होइ तबै मन मानै॥
ससा उनमन से मन लावै, अनंत न जाइ परम सुख पावै॥
अरु जे तहाँ प्रेम ल्यौ लावै, तो डालह लहैं लैहि चरन समावै॥
षषा षिरत षपत नहीं चेते, षपत षपत गये जुग केते॥
अब जुग जानि जोरि मन रहै, तौ जहाँ थै बिछरो सो थिर रहै॥
बावन अषिर जोरै आनि, एकौ आषिर सक्या न जानि॥
सति का शब्द कबीरा कहै, पूछौ जाइ कहा मन रहै॥
पंडित लोगन कौ बौहार, ग्यानवंत कौं तन बिचारि॥
जाकै हिरदै जैसी होई, कहै कबीर लहैगा सोई॥2॥

सहजै राम नाम ल्यौ लाई, राम नाम कहि भगति दिढाई।
राम नाम जाका मन माँनाँ, तिन तौ निज सरूप पहिचाँनाँ॥

निज सरूप निरंजना निराकार अपरंपार अपार।
राम नाम ल्यौ लाइस जियरे, जिनि भूलै बिस्तार॥

करि बिस्तार जग धंधै लाया, अंत काया थैं पुरिष उपाया।
जिहि जैसी मनसा तिहि तैसा भावा, ताकूँ तैसा कीन्ह उपावा॥
तेतौ माया मोह भुलाँनाँ, खसम राम सो किनहूँ न जांनां॥
ता मुखि बिष आवै बिष जाई, ते बिष ही बिष मैं रहै समाई॥
माता जगत भूत सुधि नांहीं, भ्रमि भूले नर आवैं जाहीं॥
जानि बूझि चेते नहीं अंधा, करम जठर करम के फंधा॥

करम का बाँधा जीयरा, अह निसि आवै जाइ॥
मनसा देही पाइ करि, हरि बिसरै तौ फिर पीछै पछिताइ॥

तौ करि त्राहि चेति जा अंधा, तजि पर कीरति भजि चरन गोब्यंदा॥
उदर कूप तजौ ग्रभ बासा, रे जीव राम नाम अभ्यासा॥
जगि जीवन जैसे लहरि तरंगा, खिन सुख कूँ भूलसि बहु संगा॥
भगति कौ हीन जीवन कछू नांहीं, उतपति परलै बहुरि समाहीं॥

भगति हीन अस जीवनां, जनम मरन बहु काल॥
आश्रम अनेक करसि रे जियरा, राम बिना कोइ न करै प्रतिपाल॥

सोई उपाय करि यहु दुख जाई, ए सब परहरि बिसै सगाई॥
माया मोह जरै जग आगी, ता संगि जरसि कवन रस लागी॥
त्राहि त्राहि करि हरी पुकारा, साधु संगति मिलि करहु बिचारा॥
रे रे जीवन नहीं बिश्रामां, सुख दुख खंउन राम को नामां॥
राम नाम संसार मैं सारा, राम नाम भौ तारन हारा॥

सुम्रित बेद सबै सुनै, नहीं आवै कृत काज।
नहीं जैसे कुंडिल बनित मुख, मुख सोभित बिन राज॥

अब गहि राम नाम अबिनासी, रि तजि जिनि कतहूँ कैं जासी॥
जहाँ जाइ तहाँ तहाँ पतंगा, अब जिनि जरसि संमझि बिष संगा॥
चोखा राम नाम मनि लीन्हा, भिंग्री कीट भ्यंग नहीं कीन्हा॥
भौसागर अति वार न पारा, ता तिरबे का करहु बिचारा॥
मनि भावै अति लहरि बिकारा, नहीं गमि सूझै वार न पारा॥

भौसागर अथाह जल तामैं बोहिथ राम अधार।
कहै कबीर हम हरि सरन, तब गोपद खुद बिस्तार॥3॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

(बड़ी अष्टपदी रमैणी)

एक बिनाँनी रच्या बिनांन, सब अयांन जो आपै जांन॥
सत रज तम थैं कीन्हीं माया, चारि खानि बिस्तार उपाया॥
पंच तत ले कीन्ह बंधानं, पाप पुंनि मांन अभिमानं॥

अहंकार कीन्हें माया मोहू, संपति बिपति दीन्हीं सब काहू॥
भले रे पोच अकुल कुलवंता, गुणी निरगुणी धन नीधनवंता॥
भूख पियास अनहित हित कीन्हो, हेत मोर तोर करि लीन्हा॥
पंच स्वाद ले कीन्हां बंधू, बँधे करम जा आहि अबंधू॥
अचर जीव जंत जे आही, संकट सोच बियापैं ताही॥
निंद्या अस्तुति मांन अभिमांना, इनि झूठै जीव हत्या गियांनां॥
बहु बिधि करि संसार भुलावा, झूठै दोजगि साच लुकावा॥

माया मोह धन जोबना, इनि बँधे सब लोइ॥
झूठै झूठ बियापियां, कबीर अलख न लखई कोइ॥

झूठनि झूठ साँच करि जानां, झूठनि मैं सब साँच लुकानां॥
धंध बंध कीन्ह बहुतेरा, क्रम बिवर्जित रहै न नेरा॥
षट दरसन षट आश्रम कीन्हा, षट रस खाटि काम रस लीन्हां॥
चारि बेद छह सास्त्रा बखानैं, विद्या अनंत कथैं को जांनै॥
तप तीरथ ब्रत कीन्हें पूजा, धरम नेम दान पुन्य दूजा॥
और अगम कन्हें ब्यौहारा, नहीं गमि सूझै वार न पारा॥
लीला करि करि भेख फिरावा, ओट बहुत कछू कहत न आवा॥
गहन ब्यंद नहीं कछू नहीं सूझै, आपन गोप भयौ आगम बूझै॥
भूलि परो जीव अधिक डराई, रजनी अंध कूप ह्नै धाई॥
माया मोह उनवै भरपूरी, दादुर दामिनि पवनां पूरी॥
तरिपै बरिषै अखंड धारा, रैनि भाँमिनी भया अँधियारा॥
तिहि बियोग तजि भये अनाथा, परे निकुंज न पावै पंथा॥
वेद न आहि कहूँ को मानै, जानि बूझि मैं मया अयानै॥
नट बहु रूप खेलै सब जांनै, कला केर गुन ठाकुर मांने॥
ओ खेले सब ही घट मांही, दूसर के लेखै कछु नाहीं॥
जाकें गुन सोई पै जांनै, और को जानै पार अयानै॥
भले रे पोच औसर जब आवा, करि सनामांन पूरि जम पावा॥
दान पुन्य हम दिहूँ निरासा, कब लग रहूँ नटारंभ काछा॥
फिरत फिरत सब चरन तुरांनै, हरि चरित अगम कथै को जानै॥
गण गंध्रप मुनि अंत न पावा, रह्यो अलख जग धंधै लावा॥
इहि बांजी सिव बिरंचि भुलांनां, और बपुरा को क्यंचित जांनां॥
त्राहि त्राहि हम कीन्ह पुकारा, राखि राखि साई इहि बारा॥
कोटि ब्रह्मंड गडि दीन्ह फिराई, फल कर कीट जनम बहुताई॥
ईश्वर जोग खरा जब लीन्हा, टरो ध्यान तप खंड न कीन्हां॥
सिध साधिका उनथै कहु कोई, मन चित अस्थिर कहुँ कैसै होई॥
लीला अगम कथै को पारा, बसहु समीप कि रहौ निनारा॥

खग खोज पीछै नहीं, तूँ तत अपरंपार॥
बिन परसै का जांनिये, सब झूठे अहंकार॥

अलख निरंजन लखै न कोई, निरभै निराकार है सोई॥
सुनि असथूल रूप नहीं रेखा, द्रिष्टि अद्रिष्टि छिप्यौ नहीं पेखा॥
बरन अबरन कथ्यौ नहीं जाई, सकल अतीत घट रह्यौ समाई॥

आदि अंत ताहि नहीं मधे, कथ्यौ न जाई आहि अकथे॥
अपरंपार उपजै नहीं बिनसै, जुगति न जांनिये कथिये कैसे॥

जस कथिये तत होत नहीं, जस है तैसा सोइ॥
कहत सुनत सुख उपजै, अरु परमारथ होइ॥

जांनसि नहीं कस कथसि अयांनां, हम निरगुन तुम्ह सरगुन जानां॥
मति करि हीन कवन गुन आंहीं, लालचि लागि आसिरै रहाई॥
गुंन अरु ग्यान दोऊ हम हीनां, जैसी कुछ बुधि बिचार तस कीन्हां॥
हम मसकीन कछु जुगति न आवै, ते तुम्ह दरवौ तौ पूरि जन पावै॥
तुम्हरे चरन कवल मन राता, गुन निरगुन के तुम्ह निज दाता॥
जहुवां प्रगटि बजावहु जैसा, जस अनभै कथिया तिनि तैसा॥
बाजै जंत्रा नाद धुनि होई, जे बजावै सो औरै कोई॥
बांजी नाचै कौतिग देखा, जो नचावै सो किनहूँ न पेखा॥

आप आप थैं जानिये, है पर नाहीं सोइ॥
कबीर सुपिनै केर धंन ज्यूँ, जागत हाथि न होइ॥

जिनि यहु सुपिनां फुर करि जांनां, और सब दुखियादि न आंनां॥
ग्यांन हीन चेत नहीं सूता, मैं जाया बिष हार भै भूता॥
पारधी बांन रहै सर साँधे, बिषम बांन मारै बिष बाधै॥
काल अहेड़ी संझ सकारा, सावज ससा सकल संसारा॥
दावानल अति जरै बिकारा, माया मोह रोकि ले जारा॥
पवन सहाइ लोभ अति भइया, जम चरचा चहुँ दिसि फिरि गइया॥
जम के चर चहूँ दिसि फिरि लागे, हंस पखेरुवा अब कहाँ जाइवे॥
केस गहै कर निस दिन रहई, जब धरि ऐंचे तब धरि चहई॥
कठिन पासु कछू चलै न उपाई, जंम दुवारि सीझे सब जाई॥
सोई त्रास सुनि राम न गावै, मृगत्रिष्णां झूठी दिन धावै॥
मृत काल कीनहूँ नहीं देखा, दुख कौ सुख करि सबहीं लेखा।
सुख करि मूल न चीन्हसि अभागी, चीन्है बिना रहै दुख लागी॥
नीब काट रस नीब पियारा, यूँ विष कूँ अमृत कहै संसारा॥
अछित रोज दिन दिनहि सिराई, अमृत परहरि करि बिष खाई॥
जांनि अजांनि जिन्हैं बिष खावा, परे लहरि पुकारै धावा॥
बिष के खांये का गुन होई, जा बेद न जानै परि सोई॥
मुरछि मुरछि जीव जरिहै आसा, कांजी अलप बहुखीर बिनासा॥
तिल सुख कारनि दुख अस मेरू, चौरासी लख लीया फैरू॥
अलप सुख दुख आहि अनंता, मन मैंगल भूल्यौ मैमंता॥
दीपक जोति रहै इक संगा, नैन नेह मांनूं परै पतंगा॥
सुख विश्राम किनहूँ नहीं पावा, परहरि साच झूठे दिन धावा॥
लालच लागे जनम सिरावा, अति काल दिन आइ तुरावा॥
जब लग है यहु निज तन सोई, तब लग चेति न देखै कोई॥
जब निज चलि करि किया पयांनां, भयौ अकाज तब फिर पछितांनां॥

मृगत्रिष्णां दिन दिन ऐसी, अब मोहि कछू न सोहाइ॥

अनेक जतन करि टारिये, करम पासि नहीं जाइ॥

रे रे मन बुधिवत भंडारा, आप आप ही करहुँ बिचारा॥
कवन सयाँना कौन बौराई, किहि दुख पइयै किहि दुख जाई॥
कवन सार को आहि असारा, को अनहित को आहि पियारा॥
कवन साच कवन है झूठा, कवन करू को लागै मीठा॥
किहि जरिये किहि करिले अनंदा, कवन मुकति को मल के फंदा॥

रे रे मन मोंहि ब्यौरि कहि, हौ तत पूछौ तोहि॥
संसै मूल सबै भई, समझाई कहि मोहि॥

सुनि हंसां मैं कहूँ बिचारी, त्रिजुग जोति सबै अँधियारी॥
मनिषा जनम उत्तिम जो पावा, जांनू राम तौ सयांन कहावा॥
नहीं चेतै तो जनम गँवाया, परौं बिहान तब फिरि पछतावा॥
सुख करि मूल भगति जो जांनै, और सबै दुखया दिन आनै॥
अंमृत केवल राम पियारा, और सबै बिष के भंडारा॥
हरि आहि जौ रमियै रांमां, और सबै बिसमा के कांमां॥
सार आहि संगति निरवांनां, और सबै असार करि जांनां॥
अनहित आहि सकल संसारा, हित करि जानियै राम पियारा॥
साच सोई जे थिरह रहाई, उपजै बिनसै झूठ हनै जाई॥
मींठा सो जो सहजै पावा, अति कलेस थै करूँ कहावा॥
ना जरियै ना कीजै मैं मेरा, तहाँ अनंद जहाँ राम निहोरा॥
मुकति सोज आपा पर जांनै, सो पद कहाँ जु भरमि भुलानै॥

प्राननाथ जग जीवनाँ, दुरलभ राम पियार।
सुत सरीर धन प्रग्रह कबीर, जीये रे तर्वर पंख बसियार॥

रे रे जीव अपना दुख न संभारा, जिहि दुख ब्याप्या सब संसारा॥
मायां मोह भूले सब लोई, क्यंचित लाभ मांनिक दीयौ खोई॥
मैं मेरी करि बहुत बिगूला, जननी उदर जन्म का सूला॥
बहुत रूप भेष बहु कीन्हां, जुरा मरन क्रोध तन खींना॥
उपजै बिनसै जोनि फिराई, सुख कर मूल न पावै चाही॥
दुख संताप कलेस बहु पावै, सो न मिलै जे जरत बुझावै॥
जिहि हित जीव राखिहै भाई, सो अनहित है जाइ बिलाई॥
मोर तोर करि जरे अपारा, मृगतृष्णा झूठी संसारा॥
माया मोह झूठ रह्यौ लागी, को भयौ इहाँ का हनै है आगी॥
कछु कछु चेति देखि जीव अबहीं, मनिषा जनम ज पावै कबही॥
सारि आहि जे संग पियारा, जब चेतै तब ही उजियारा॥
त्रिजुग जोनि जे आहि अचेता, मनिषा जनम भयौ चित चेता॥
आतमां मुरछि मुरछि जरि जाई, पिछले दुख कहता न सिराई॥
सोई त्रास जे जांनै हंसा, तौ अजहूँ न जीव करै संतोसा॥
भौसागर अति वार न पारा, ता तिरिबे को करहु बिचारा॥
जा जल की आदि अंति नहीं जानिये, ताकौ डर काहे न मानिये॥
को बोहिथ को खेवट आही, जिहि तिरिये सो लीजै चाही॥

समझि बिचारि जीव जब देखा, यहु संसार सुपन करि लेखा॥
भई बुधि कछू ग्यांन निहारा, आप आप ही किया बिचारा॥
आपण मैं जे रह्यौ समाई, नेड दूरि कथ्यौ नहीं जाई॥
ताके चीन्है परचौ पावा, भई समझि तासूँ मन लावा॥

भाव भगति हित बोहिया, सतगर खेवनहार॥
अलप उदिक तब जाँणिये, जब गोपदखुर बिस्तार॥4॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

दुपदी रमैणी

भरा दयाल बिषहर जरि जागा, गहगहान प्रेम बहु लगा॥
भया अनंद जीव भये उल्हासा, मिले राम मनि पूगी आसा॥
मास असाढ़ रबि धरनि जरावै, जरत जरत जल आइ बुझावै॥
रूति सुभाइ जिमीं सब जागी, अंमृत धार होइ झर लागी॥
जिमीं मांहि उठी हरियाई, बिरहनि पीव मिले जन जाई॥
मनिकां मनि के भये उछाहा, कारनि कौन बिसारी नाहा॥
खेल तुम्हारा मरन भया मेरा, चौरासी लख कीन्हां फेरा॥
सेवग संत जे होइ अनिआई, गुन अवगुन सब तुम्हि समाई॥
अपने औगुन कहूँ न पारा, इहै अभाग जे तुम्ह न संभारा॥
दरबो नहीं काँई तुम्ह नाहा, तुम्ह बिछुरे मैं बहु दुख चाहा॥
मेघ न बरिखै जांहि उदासा, तऊ न सारंग सागर आसा॥
जलहर मरौं ताहि नहीं भावै, कै मरि जाइ कै उहै पियावै॥
मिलहु राम मनि पुरवहु आसा, तुम्ह बिछुर्या मैं सकल निरासा॥
मैं रनिरासी जब निध्य पाई, राम नाम जीव जाग्या जाई॥
नलिनीं कै ज्यूँ नीर अधारा, खिन बिछुरयां थैं रवि प्रजारा॥
राम बिनां जीव बहुत दुख पावै, मन पतंग जगि अधिक जरावै॥
माघ मास रुति कवलि तुसारा, भयौ बसंत तब बाग संभारा॥
अपनै रंगि सब कोइ राता, मधुकर बार लेहि मैंमंता॥
बन कोकिला नाद गहगहांना, रुति बसंत सब कै मनि मानां॥
बिरहन्य रजनी जुग प्रति भइया, पिव पिव मिलें कलप टलि गइया॥
आतमा चेति समझि जीव जाई, बाजी झूठ राम निधि पाई॥
भया दयाल निति बाजहिं बाजा, सहज रांम नांम मन राजा॥

जरत जरत जल पाइया, सुख सागर कर मूल॥
गुर प्रसादि कबीर कहि, भागी संसै सूल॥

राम नाम जिन पाया सारा, अबिरथा झूठ सकल संसारा॥
हरि उतंग मैं जानि पतंगा, जंबकु केहरि कै ज्यूँ संगा॥
क्यंचिति ह्नैसुपिनै निधि पाई, नहीं सोभा कौ धरी लुकाई॥
हिरदै न समाइ जांनियै नहीं पारा, लगै लोभ न और हकारा॥
सुमिरत हूँ अपनै उनमानां, क्यंचित जोग रांम मैं जानां॥
मुखां साधं का जानियै असाधा, क्यंचित जोग राम मैं लाधा॥

कुबिज होई अंमृत फल बंछ्या, पहुँचा तब मन पूगी इंछ्या॥
नियर थैं दूरि दूरि थैं नियरा, रामचरित न जानियै जियरा॥
सीत थैं अगिन फुनि होई, रबि थैं ससि ससि थैं रबि सोई॥
सीत थैं अगनि परजई, थल थैं निधि निधि थैं थल करई॥
वज्र थैं तिण खिण भीतरि होई, तिण थैं कुलिस करे फुनि सोई॥
गिरबर छार छार गिरि होई, अविगति गति जानै नहीं कोई॥
जिहि दुरमति डोल्यौ संसारा, परे असूझि बार नहिं पारा॥
बिख अंमृत एक करि लीन्हां, जिनि चीन्हा सुख तिहकूँ हरि दीन्हा॥
सुख दुख जिनि चीन्हा नहीं जांनां, ग्रासे काल सोग रुति मांनां॥
होइ पतंग दीपक मैं परई, झूठै स्वादि लागि जीव जरई॥
कर गहि दीपक परहि जू कूपा, बहु अचिरज हम देखि अनूपा॥
ग्यानहीन ओछी मति बाधा, मुखा साध करतूति असाधा॥
दरसन समि कछू साध न होई, गुर समांन पूजिये सिध सोई॥
भेष कहा जे बुधि बिगूढ़ा, बिन परचे जग बूड़नि बूड़ा॥
जदपि रबि कटिये सुर आटी, झूठे रबि लीन्हा सुर चाही॥
कबहूँ हुतासन होइ जरावे, कबहुँ अखंड धार बरिषावै॥
कबहूँ सीत काल करि राजा, तिहूँ प्रकार बहुत दुख देखा॥
ताकूँ सेवि मूढ सुख पावै, दौरे लाभ कूँ मूल गवावै॥
अछित राज दिने दिन होई, दिवस सिराइ जनम गये खोई॥
मृत काल किनहूँ नहीं देखा, माया माह धन अगम अलेखा॥
झूठै झूठ रह्यौ उरझाई, साचा अलख जग लख्या न जाई॥
साचै नियरै झूठै दूरी, बिष कूँ कहै सजीवन मूरी॥
कथ्यौ न जाइ नियरै अरु दूरी, सकल अतीत रह्या घट पूरी॥
जहाँ देखौ तहाँ राम समांनां, तुम्ह बिन ठौर और नहिं आंनां॥
जदपि रह्या सकल घट पूरी, भाव बिनां अभिअंतरि दूरी॥
लोभ पाप दोऊ जरै निरासा, झूठै झूठि लागि रही आसा॥
जहुवाँ ह्नै निज प्रगट बजावा, सुख संतोष तहाँ हम पावा॥
नित उठि जस कीन्ह परकासा, पावर रहै जैसे काष्ठ निवासा॥
बिना जुगति कैसे मथिया जाई, काष्ठै पावक रह्या समाई॥
कष्टै कष्ट अग्नि पर जरई, जारै दार अग्नि समि करई॥
ज्यूँ राम कहै ते राम होई, दुख कलेस घालै सब खोई॥
जन्म के कलि बिष जांहि बिलाई, भरम करम का कछु न बसाई॥
भरम करम दोऊ बरतै लोई, इनका चरित न जांनै कोई॥
इन दोऊ संसार भुलावा, इनके लागैं ग्यांन गंवावा॥
इनकौ भरम पै सोई बिचारी, सदा अनंद लै लीन मुरारी॥
ग्यांन दृष्टि निज पेखे जोई, इनका चरित जानै पै सोई॥
ज्यूँ रजनी रज देखत अद्दधियारी, डसे भुवंगम बिन उजियारी॥
तारे अगिनत गुनहि अपारा, तऊ कछू नहीं होत अधारा॥
झूठ देखि जीव अधिक डराई, बिना भुवंगम डसी दुनियाई॥
झूठै झूठ लागि रही आसा, जेठ मास जैसे कुरंग पियासा॥
इक त्रिषावंत दह दिसि फिर आवै, झूठै लागा नीर न पावै॥
इक त्रिषावंत अरु जाइ जराई, झूठी आस लागि मरि जाई॥
नीझर नीर जांनि परहरिया करम के बांधे लालच करिया॥
कहै मोर कछु आहि न वाहीं, धरम करम दोऊ मति गवाई॥

धरम करम दोउ मति परहरिया, झूठे नांऊ साच ले धरिया॥
रजनी गत भई रबि परकासा, धरम करम धूँ केर बिनासा॥
रवि प्रकास तारे गुन खींनां, आचार ब्यौहार सब भये मलीनां॥
बिष के दाधे बिष नहीं भावै, जरत जरत सुखसागर पावै॥
अनिल झूठ दिन धावै आसा, अंध दुरगंध सहै दुख त्रासा॥
इक त्रिषावंत दूसरे रबि तपई, दह दिसि ज्वाला चहुंदिसि जरई॥
करि सनमुखि जब ग्यांन बिचारी, सनमुखि परिया अगनि मंझारी॥
गछत गछत तब आगै आवा, बित उनमांन ढिबुआ इक पावा॥
सीतल सरीर तन रह्या समाई, तहाद्द छाड़ि कत दाझै जाई॥
यूं मन बारुनि भया हमारा, दाधा दुख कलेस संसारा॥
जरत फिरे चौरासी लेखा, सुख कर मूल कितहूं नहीं देखा॥
जाके छाड़े भये अनाथा, भूलि परे नहीं पावै पंथा॥
अछै अभि अंतरि नियरै दूरी, बिन चीन्ह्या क्यूद्द पाइये मूरी॥
जा दिन हंस बहुत दुख पावा, जरत जरत गुरि राम मिलावा॥
मिल्या राम रह्या सहजि समाई, खिन बिछुर्या जीव उरझै जाई॥
जा मिलियां तैं कीजै बधाई, परमानंद भेटिये रैनि दिन गाई॥
सखी सहेली लीन्ह बुलाई, रूति परमानंद भेटिये जाई॥
चली सखी जहुंवा निज रांमां, भये उछाह छाड़े सब कामा॥
जानूं की मोरै सरस बसंता, मैं बलि जाऊँतोरि भगवंता॥
भगति हेत गावै लैलीनां, ज्यूं नि नाद कोकिला कीन्हा॥
बाजै संख सबद धुनि बैनां, तन मन चित हरि गोविंद लीना॥
चल अचल पांइंन पंगुरनी मधुकरि ज्यूं लेहि अघरनी॥
सावज सींह रहे सब माँची, चंद अरु सूर रहै रथ खाँची॥
गण गंध्रप सुनि जीवै देवा, आरति करि करि बिनवै सेवा॥
बासि गयंद्र ब्रह्मा करै आसा, हंम क्यूं चित दुर्लभ राम दासा॥
भगति हेतु राम गुन गावै, सुर नर मुनि दुर्लभ पद पावै॥
पुनिम बिमल ससि मात बसंता, दरसन जोति मिले भगवंता॥
चंदन बिलनी बिरहिनि धारा, यूं पूजिये प्रानपति राम पियारा॥
भाव भगति पूजा अरु पाती, आतमराम मिले बहुत भाँती॥
राम राम राम रुचि मांनै, सदा अनंद राम ल्यौ जांनै॥
पाया सुख सागर कर मूला, जो सुख नहीं कहूँ समतूला॥

सुख समाधि सुख भया हमारा, मिल्या न बेगर होइ॥
जिहि लाधा सो जांनिहै, राम कबीर और न जानै कोइ॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

(अष्टपदी रमैणी)

केऊ केऊ तीरथ ब्रत लपटानां, केऊ केऊ केवल राम निज जाना॥
अजरा अमर एक अस्थाना, ताका मरम काहू बिरलै जानां॥
अबरन जोति सकल उजियारा, द्रिष्टि समांन दास निस्तारा॥
जो नहीं उपज्या धरनि सरीरा, ताकै पथि न सींच्या नीरा॥
जा नहीं लागे सूरजि के बांनां, सो मोहि आंनि देहु को दाना॥

जब नहीं होते पवन नहीं पानी, तब नहीं होती सिष्टि उपांनी॥
जब नहीं होते प्यंड न बासा, तब नहीं होते धरनी अकासा॥
जब नहीं होते गरभ न मूला, तब नहीं होते कली न फूला॥
जब नहीं सबद नहीं न स्वादं, तब नहीं होते विद्या न वादं॥
जब नहीं होते गुरु न चेला, तब गम अगमै पंथ अकेला॥

अवगति की गति क्या कहूँ, जिसकर गांव न नांव॥
गन बिहूंन का पेखिये, काकर धरिये नांव॥

आदम आदि सुधि नहीं पाई, मां मां हवा कहाँ थै आई॥
जब नहीं होते रांम खुदाई, साखा मूल आदि नहीं भाई॥
जब नहीं होते तुरक न हिंदू, मांका उदर पिता का ब्यंदू॥
जब नहीं होते गाइ कसाई, तब बिसमला किनि फुरमाई॥
भूलै फिरै दीन ह्नै धांवै, ता साहिब का पंथ न पावै॥

संजोगै करि गुंण धर्या, बिजोगै गुंण जाइ॥
जिभ्या स्वारथि आपणै कीजै बहुत उपाइ॥

जिनि कलमां कलि मांहि पठावा, कुदरत खोजि तिनहं नहीं पावा॥
कर्म करीम भये कर्तूता, वेद कुरान भये दोऊ रीता॥
कृतम सो जु गरभ अवतरिया, कृतम सो जु नाव जस धरिया॥
कृतम सुनित्य और जनेऊ, हिंदू तुरक न जानै भेऊ॥
मन मुसले की जुगति न जांनै, मति भूलै द्वै दीन बखानै॥

पाणी पवन संयोग करि, कीया है उतपाति॥
सुंनि मैं सबद समाइगा, तब कासनि कहिये जाति॥

तुरकी धरम बहुत हम खोजा, बहु बाजगर करै ए बोंधा॥
गाफिल गरब करै अधिकाई, स्वारथ अरथि बधै ए गाई॥
जाकौ दूध धाई करि पीजै, ता माता को बध क्यूं कीजै॥
लुहरै थकै दुहि पीया खीरो, ताका अहमक भकै सरीरो॥

बेअकली अकलि न जांनहीं, भूले फिरै ए लोइ॥
दिल दरिया दीदार बिन, भिस्त कहाँ थै होइ॥

पंडित भूले पढ़ि गुन्य वेदा, आप न पांवै नांनां भेदा॥
संध्या तरपन अरु षट करमां, लागि रहे इनकै आशरमां॥
गायत्री जुग चारि पढ़ाई, पूछौ जाइ कुमति किनि पाई॥
सब में राम रहै ल्यौ सींचा, इन थैं और कहौ को नीचा॥
अति गुन गरब करै अधिकाई, अधिकै गरबि न होइ भलाई॥
जाकौ ठाकुर गरब प्रहारी, सो क्यूँ सकई गरब संहारी॥

कुल अभिमाँन बिचार तजि, खोजौ पद निरबांन॥
अंकुर बीज नसाइगा, तब मिलै बिदेही थान॥

खत्री करै खत्रिया धरमो, तिनकूं होय सवाया करमो॥
जीवहि मारि जीव प्रतिपारैं, देखत जनम आपनौ हारै॥
पंच सुभाव जु मेटै काया, सब तजि करम भजैं राम राया॥
खत्री सों जु कुटुंब सूं सूझै, पंचू मेटि एक कूं बूंझै॥
जो आवध गुर ग्यान लखावा, गहि करबल धूप धरि धावा॥
हेला करै निसांनै घाऊ, जूझ परै तहां मनमथ राऊ॥

मनमथ मरे न जीवई, जीवण मरण न होइ॥
सुनि सनेही रांम बिन, गये अपनपौ खोइ॥

अरु भूले षट दरसन भाई, पाखंड भेष रहे लपटाई॥
जैन बोध अरु साकत सैंना, चारवाक चतुरंग बिहूंना॥
जैन जीव की सुधि न जानै, पाती तोरि देहुरै आंनै॥
अरु पिथमीं का रोम उपारे, देखत जीव कोटि संहारै॥
मनमथ करम करै असराग, कलपत बिंद धसै तिहि द्वारा॥
ताकी हत्या होइ अदभूता, षट दरसन मैं जैन बिगूता॥

ग्यान अमर पद बाहिरा, नेड़ा ही तैं दूरि॥
जिनि जान्याँ तिनि निकटि है, रांम रह्या सकल भरपूरि॥

आपनं करता भये कुलाला, बहु बिधि सिष्टि रची दर हाला॥
बिधनां कुंभ कीये द्वै थाना, प्रतिबिंब ता मांहि समांनां॥
बहुत जतन करि बांनक, सौं मिलाय जीव तहाँ ठाँट॥
जठर अगनि दी कीं परजाली, ता मैं आप करै प्रतिपाली॥
भीतर थैं जब बाहिर आवा, सिव सकती द्वै नाँव धरावा॥
भूलै भरमि परै जिनि कोई, हिंदू तुरक झूठ कुल दोई॥
घर का सुत जो होइ अयाँनाँ, ताके संगि क्यूँ जाइ सयाँनाँ॥
साची बात कहै जे वासूँ, सो फिरि कहै दिवाँनाँ तासू॥
गोप भिन्न है एकै दूधा, कासूँ कहिए बाँम्हन सूधा॥

जिनि यहु चित्र बनाइया, सो साचा सतधार॥
कहै कबीर ते जन भले, जे चित्रवत लेहि बिचार॥5॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

(बारहपदी रमैणी)

पहली मन में सुमिरौ सोई, ता सम तुलि अवर नहीं कोई॥
कोई न पूजै बाँसूँ प्रांनां, आदि अंति वो किनहूँ न जाँनाँ॥
रूप सरूप न आवै बोला, हरू गरू कछू जाइ न तोला॥
भूख न त्रिषां धूप नहीं छांही, सुख दुख रहित रहै सब मांही॥

अविगत अपरंपार ब्रह्म, ग्याँन रूप सब ठाँम॥॥

बहु बिचारि करि देखिया, कोई न सारिख राँम॥

जो त्रिभुवन पति ओहै ऐसा, ताका रूप कहो धै कैसा॥
सेवग जन सेवा कै तांई, बहुत भाँति करि सेवि गुसाई॥
तैसी सेवा चाहौ लाई, जा सेवा बिन रह्या न जाई॥
सेव करंताँ जो दुख भाई, सो दुख सुख बरि गिनहु सवाई॥
सेव करंताँ सो सुख पावा, तिन्य सुख दुख दोऊ बिसरावा॥

सेवक सेव भुलानियाँ, पंथ कुपंथ न जान।
सेवे सो सेवा करै, जिहि सेवा भल माँन॥

जिहि जग की तस की तस के ही, आपै आप आथिहै एही॥
कोई न लखई वाका भेऊ, भेऊ होई तो पावै भेऊ॥
बावैं न दांहिनै आगै न पीछू, अरध उरध रूप नहीं कीछू॥
माय न बाप आव नहीं जावा, नाँ बहु जण्याँ न को वहि जावा॥
वो है तैसा वोही जानै, ओही आहि आहि नहीं आँनै॥

नैनाँ बैंन अगोचरीं, श्रवनाँ करनी सार।
बोलन कै सुख कारनै, कहिये सिरजनहार॥

सिरजनहार नाँउ धूँ तेरा, भौसागर तिरिबै कूँ भेरा॥
जे यहु मेरा राम न करता, तौ आपै आप आवंटि जग मरता॥
राम गुसाई मिहर जु कीन्हाँ, भेरा साजि संत कौ दीन्हाँ॥

दुख खंडणाँ मही मंडणा, भगति मुकुति बिश्रांम॥
विधि करि भेरा साजिया, धर्‌या राम का नाम॥

जिनि यह भेरा दिढ़ करि गहिया, गये पार तिन्हौ सुख लहिया॥
दुमनाँ ह्नै जिनि चित्त डुलावा, करि छिटके थैं थाह न पावा॥
इक डूबे अरु रहे उबारा, ते जगि जरे न राखणहारा॥
राखन की कछु जुगति न कीन्हीं, राखणहार न पाया चीन्हीं॥
जिनि चिन्हा ते निरमल अंगा, जे अचीन्ह ते भये पतंगा॥

राम नाम ल्यौ लाइ करि, चित चेतन ह्नै जागि॥
कहै कबीर ते ऊबरे, जे रहे राम ल्यौ लागि॥

अरचिंत अविगत है निरधारा, जांष्यां जाइ न वार न पारा॥
लोक बेद थै अछै नियारा, छाड़ि रह्यौ सबही संसारा॥
जसकर गांउ न ठांउ न खेरा, कैसें गुन बरनूं मैं तेरा॥
नहीं तहाँ रूप रेख गुन बांनां, ऐसा साहिब है अकुलांनां॥
नहीं सो ज्वान न बिरध नहीं बारा, आपै आप आपनपौ तारा॥

कहै कबीर बिचारि करि, जिन को लावै भंग॥
सेवौ तन मन लाइ करि, राम रह्या सरबंग॥

नहीं सो दूरि नहीं सो नियरा, नहीं सो तात नहीं सो सियरा॥
पुरिष न नारि करै नहीं क्रीरा, धांम न धांम न ब्यापै पीरा॥
नदी न नाव धरनि नहीं धीरा, नहीं सो कांच नहीं सो हीरा॥

कहै कबीर बिचारि करि, तासूँ लावो हेत॥
बरन बिबरजत ह्नै रह्या, नां सो स्यांम न सेत॥

नां वो बारा ब्याह बराता, पीत पितंबर स्यांम न राता॥
तीरथ ब्रत न आवै जाता, मन नहीं मोनि बचन नहीं बाता॥
नाद नबिंद गरंथ नहीं गाथा, पवन न पांणी संग न साथा॥

कहै कबीर बिचार करि, ताकै हाथि न नाहिं॥
सो साहिब किनि सेविये, जाके धूप न छांह॥

ता साहिब कै लागौ साथा, सुख दुख मेटि रह्यौ अनाथा॥
ना दसरथ धरि औतरि आवा, नां लंका का राव संतावा॥
देवै कूख न औतरि आवा, ना जसवै ले गोद खिलावा॥
ना वो खाल कै सँग फिरिया, गोबरधन ले न कर धरिया॥
बाँवन होय नहीं बलि छलिया, धरनी बेद लेन उधरिया॥
गंडक सालिकराम न कोला, मछ कछ ह्नै जलहिं न डोला॥
बद्री वैस्य ध्यांन नहीं लावा, परसरांम ह्नै खत्री न सतावा॥
द्वारामती सरीर न छाड़ा, जगन्नाथ ले प्यंड न गाड़ा॥

कहै कबीर बिचार करि ये ऊले ब्योहार॥
याही थैं जे अगम है, सो बरति रह्या संसारि॥

नां तिस सबद व स्वाद न सोहा, ना तिहि मात पिता नहीं मोहा॥
नां तिहि सास ससुर नहीं सारा, ना तिहि रोज न रोवनहारा॥
नां तिहि सूतिग पातिग जातिग, नां तिहि माइ न देव कथा पिक॥
ना तिहि ब्रिध बधावा बाजै, नां तिहि गीत नाद नहीं साजै॥
ना तिहि जाति पांत्य कुल लीका, नां तिहि छोति पवित्रा नहीं सींचा॥

कहै कबीर बिचारि करि, ओ है पद निरबांन।
सति ले मन मैं राखिये, जहा न दूजी आन॥

नां सो आवै ना सो जाई, ताकै बंध पिता नहीं माई॥
चार बिचार कछु नहीं वाकै, उनमनि लागि रहौ जे ताकै॥
को है आदि कवन का कहिये, कवन रहनि वाका ह्नै रहिये॥

कहै कबीर बिचारि करि, जिनि को खोजै दूरि॥
ध्यान धरौ मन सुध करि, राँम रह्या भरपूरि॥

नाद बिंद रंक इक खेला, आपै गुरु आप ही चेला॥

आपै मंत्रा आपै मंत्रोला, आपै पूजै आप पूजेला॥
आपै गावै आप बजावै, अपनां कीया आप ही पावै॥
आपै धूप दीप आरती, आपनीं आप लगावै जाती॥

कहै कबीर बिचारि करि झूठा लोही चांम॥
जो या देही रहित हैं, सो है रमिता राम॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

(चौपदी रमैणी)

ऊंकार आदि है मूला, राजा परजा एकहिं सूला।
हम तुम्ह मां हैं एकै लोहू, एकै प्रान जीवन है मोहू॥
एकही बास रहै दस मासा, सूतग पातग एकै आसा॥
एकहीं जननीं जान्यां संसारा, कौन ग्यान थैं भये निनारा॥

ग्यांन न पायो बावरे, धरी अविद्या मैड।
सतगुर मिल्या न मुक्ति फल तातैं खाई बैड॥

बालक ह्नै भग द्वारे आया, भग भुगतान कूँ पुरिष कहावा॥
ग्यांन न सुमिरो निरगुण सारा, बिष थैं बिरंचि न किया बिचारा॥

साध न मिटी जनम की, मरन तुराँनाँ आइ॥
मन क्रम बचन न हरि भज्या, अंकुर बीज नसाइ॥

तिण चारि सुरही उदिक जु पीया, द्वार दूध बछ कूँ दीया।
बछा चूखत उपजी न दया, बछा बाँधि बिछोही मया॥
ताका दूध आप दुहि पीया, ग्यान बिचार कछू नहीं कीया॥
जे कुछ लोगनि सोई किया, माला मंत्रा बादि ही लीया॥
पीया दूध रूध ह्नै आया, मुई गाइ तब दोष लगाया॥
बाकस ले चमरां कूँ दीन्हीं, तुचा रंगाई करौती कीन्हीं॥
ले रूकरौती बैठे संगा, ये देखौ पीछे के रंगा॥
तिहि रूकरौती पाँणी पीया, बहु कुछ पाड़े अचिरज कीया॥

अचिरज कीया लोक मैं, पीया सुहागल नीर॥
इंद्री स्वारथि सब किया, बंध्या भरम सरीर॥

एकै पवन एक ही पांणी, करी रसोई न्यारी जाँनी॥
माटी सूं माटी ले पोती, लागी कहाँ धूं छोती॥
धरती लीपि पवित्रा कीन्ही, छोति उपाय लोक बिचि दीन्हीं॥
याका हम सूं कहौ बिचारा, क्यूँ भव तिरिहौ इहि आचारा॥
ए पाँखंड जीव के भरमाँ, माँनि अमाँनि जीव के करमाँ॥
करि आचार जू ब्रह्म सतावा, नांव बिनां संतोष न पावा॥
सालिगराम सिला करि पूजा, तुलसी तोडि भया नर दूजा॥

ठाकुर ले पाटै पौढ़ावा, भोग लगाइ अरु आप खावा॥
सांच सील का चौका दीजै, भाव भगति कीजै सेवा कीजै॥
भाव भगति की सेवा मांनै, सतगुर प्रकट कहै नहीं छाँनै॥
अनभै उपजि न मन ठहराई, परकीरति मिलि मन न समाई॥
जल लग भाव भगति नहीं करिहौ, तब लग भवसागर क्यूँ तिरिहौ॥

भाव भगति बिसवास बिनु, कटै न संसै सूल॥
कहै कबीर हरि भगति बिन, मूकति नहीं रे मूल॥
कबीर ग्रंथावली
संपादक
डॉ.श्याम सुंदर दास
परिशिष्ट

मुख्य सूची प्रस्तावना (1)साखी (2)पद (3) रमैणी
भाग- 1: साखी

भाग-2: पदावली

1-20
21-40
41-60
61-80
81-100

101-120
121-140
141-160
161-180
181-192

1-20
21-40
41-60
61-80
81-100
101-120

121-140
141-160
161-180
181-200
201-221

परिशिष्ट

अर्थात्
श्रीग्रंथसाहब के दिए हुए पदों में से कबीरदास के उन पदों का संग्रह जो इस ग्रंथावली (क/ख प्रति) में नहीं आए हैं।
देखें- मुख्य सूची/भूमिका

1.साखी

आठ जाम चौंसठि घरी तुअ निरखत रहै जीव।
नीचे लोइन क्यों करौ सब घट देखौ पीउ॥1॥

ऊँच भवन कनक कामिनी सिखरि धजा फहराइ।
ताते भली मधूकरी संत संग गुन गाइ॥2॥

अंबर घनहरू छाइया बरिष भरे सर ताल।
चातक ज्यों तरसत रहै, तिनकौ कौन हवाल॥3॥

अल्लह की कर बंदगी जिह सिमरत दुख जाइ।
दिल महि साँई परगटै बुझै बलंती लाइ॥4॥

अवरह कौ उपदेस ते मुख मैं परिहै रेतु।
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु॥5॥

कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेसु।
हम राखे गुरु आपने उन कीनो आदेसु॥6॥

आखी केरे माटूके पल पल गई बिहाइ।
मनु जंजाल न छाड़ई जम दिया दमामा आइ॥7॥

आसा करिये राम की अवरै आस निरास।
नरक परहि ते मानई जो हरिनाम उदास॥8॥

कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि।
नागे पांवहु ते गये जिनके लाख करोरि॥9॥

कबीर इहि तनु जाइगा कवने मारग लाइ।
कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ॥10॥

एक घड़ी आधी घड़ी आधी हूं ते आध।
भगतन सेटी गोसटे जो कीने सो लाभ॥11॥

एक मरंते दुइ मुये दोइ मरंतेहि चारि।

चारि मरंतहि छंहि मुये चारि पुरुष दुइ नारि॥12॥

ऐसा एक आधु जो जीवत मृतक होइ।
निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखौ तत सोइ॥13॥

कबीर ऐसा को नहीं इह तन देवै फूकि।
अंधा लोगु न जानई रह्यौ कबीरा कूकि॥14॥

ऐसा जंतु इक देखिया जैसी देखी लाख।
दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक॥15॥

कबीर ऐसा बीजु सोइ बारह मास फलंत।
सीतल छाया गहिर फल पंखी केल करंत॥16॥

ऐसा सतगुर जे मिलै तुट्ठा करे पसाउ।
मुकति दुआरा मोकला सहजै आवौ जाउ॥17॥

कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीन।
मरने ते क्या डरपना जब हाथ सिधौरा लीन॥18॥

कंचन के कुंडल बने ऊपर लाख जड़ाउ।
दीसहि दाधे कान ज्यों जिन मन नाहीं नाउ॥19॥

कबीर कसौटी राम की झूठा टिका न कोइ।
राम कसौटी सो सहै जो मरि जीवा होइ॥20॥

कबीर कस्तूरी भया भवर भये सब दास।
ज्यों ज्यों भगति कबीर की त्यों त्यों राम निवास॥21॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कागद केरी ओबरी मसु के कर्म कपाट।
पाहन बोरी पिरथमी पंडित थाड़ी बाट॥22॥

काम परे हरि सिमिरिये ऐसा सिमरो चित।
अमरपुरा बांसा करहु हरि गया बहोरै बित्त॥23॥

काया कजली बन भया मन कुंजर मयमंतु।
अंक सुज्ञान रतन्न है खेवट बिरला संतु॥24॥

काया काची कारवी काची केवल धातु।
सावतु रख हित राम तनु माहि त बिनठी बात॥25॥

कारन बपुरा क्या करै जौ राम न करै सहाइ।

जिहि जिहि डाली पग धरौं सोई मुरि मुरि जाइ॥26॥

कबीर कारन सो भयो जो कीनौ करतार।
तिसु बिनु दूसर को नहीं एकै सिरजनुहार॥27॥

कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल।
पाछै कछू न होइगा जौ सिर पर आवै काल॥28॥

कीचड़ आटा गिर पर्‌या किछू न आयो हाथ।
पीसत पीसत चाबिया सोई निबह्‌या साथ॥29॥

कबीर कुकरु भौकता कुरंग पिछैं उठि धाइ।
कर्मी सति गुर पाइया जिन हौ लिया छड़ाइ॥30॥

कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि।
पंडित पंडित जल मुवे मूरख उबरे भागि॥31॥

कोठे मंडल हेतु करि काहे मरहु सँवारि।
कारज साढ़े तीन हथ धनी त पौने चारि॥32॥

कौड़ी कौड़ी जोरि के जोरे लाख करोरि।
चलती बार न कछु मिल्यो लई लँगोटी छोरि॥33॥

खिंथा जलि कोयला भई खापर फूटम फूट।
जोगी बपुड़ा खेलियो आसनि रही बिभूति॥34॥

खूब खाना खीचरी जामै अंमृत लोन।
हेरा रोटी कारने गला कटावै कौन॥35॥

गंगा तीर जू घर करहि पीवहि निर्मल नीर।
बिनु हरि भगति न मुकति होइ यों कहि रमे कबीर॥36॥

कबीर राति होवहि कारिया कारे ऊभे जंतु।
लैं गाहे उठि धावते सिजानि मारे भगवंतु॥37॥

कबीर मनतु न कीजियै चाम लपेटे हाथ।
हैबर ऊपर छत्रा तर ते फुन धरती गाड़॥38॥

कबीर गरबु न कीजियै ऊँचा देखि अवासु।
आजु कालि भुइ लेटना ऊपरि जामै घासु॥39॥

कबीर गरबु न कीजियै रंकु न हसियै कोइ।
अजहु सु नाउ समुद्र महि क्या जानै क्या होइ॥40॥

कबीर गरबु न कीजियै देही देखि सुरंग।
आजु कालि तजि जाहुगे ज्यों कांचुरी भुअंग॥41॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

गहगंच परौं कुटुंब के कंठै रहि गयो राम।
आइ परे धर्म राइ के बीचहिं धूमा धाम॥42॥

कबीर गागर जल भरी आजु कालि जैहै फूटि।
गुरु जु न चेतहि आपुनो अधमाझली जाहिगे लूटि॥43॥

गुरु लागा तब जानिये मिटै मोह तन ताप।
हरष सोग दाझै नहीं तब हरि आपहि आप॥44॥

कबीर बाणी पीड़ते सति गुरु लिये छुड़ाइ।
परा पूरबली भावनी परगति होई आइ॥45॥

चकई जौ निसि बीछुरै आइ मिले परभाति।
जो नर बिछुरै राम स्यों ना दिन मिले न राति॥46॥

चतुराई नहिं अति घनी हरि जपि हिरदै माहि।
सूरी ऊपरि खेलना गिरैं त ठाहुर नाहि॥47॥

चरन कमल की मौज को कहि कैसे उनमान।
कहिबे को सोभा नहीं देखा ही परवान॥48॥

कबीर चावल कारने तुमको मुहली लाइ।
संग कुसंगी बैसते तब पूछै धर्मराइ॥49॥

चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारै।
जैसे बच रहि कुंज मन माया ममता रे॥50॥

चोट सहेली सेल की लागत लेइ उसास।
चोट सहारे सबद की तासु गुरु मैं दास॥51॥

जग कागज की कोठरी अंध परे तिस मांहि।
हौ बलिहारी तिन्न की पैसु जू नीकसि जाहि॥52॥

जग बांध्यौ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर।
जैहहि आटा लोन ज्यों सोन समान शरीर॥53॥

जग मैं चेत्यो जानि कै जग मैं रह्यौ समाइ।
जिनि हरि नाम न चेतियो बादहि जनमें आइ॥54॥

कबीर जहं जहं हौ फिरो कौतक ठाओ ठांइ।
इक राम सनेही बाहरा ऊजरू मेरे भांइ॥55॥

कबीर जाको खोजते पायो सोई ठौर।
सोइ फिरि के तू भया जकौ कहता और॥56॥

जाति जुलाहा क्या करे हिरदै बसै गुपाल।
कबीर रमइया कंठ मिलु चूकहि सब जंजाल॥57॥

कबीर जा दिन ही सुआ पाछै भया अनंद।
मोहि मिल्यो प्रभु अपना संगी भजहि गोबिंद॥॥58॥

जिह दर आवत जातहू हटकै नाही कोइ।
सो दरु कैसे छोड़िये जौ दरु ऐसा होइ॥59॥

जीया जो मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु।
दफतर दई जब काढिहै होइगा कौन हवालु॥60॥

कबीर जेते पाप किये राखे तलै दुराइ।
परगट भये निदान सब पूछै धर्मराइ॥61॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जैसी उपजी पेड़ ते जो तैसी निबहै ओड़ि।
हीरा किसका बापुरा पुजहिं न रतन करोड़ि॥62॥

जो मैं चितवौ ना करै क्या मेरे चितवे होइ।
अपना चितव्या हरि करैं जो मारै चित न होइ॥63॥

जोर किया सो जुलुम है लेइ जवाब खुदाइ।
दफतर लेखां नीकसै मार मुहै मुह खाइ॥64॥

जो हम जंत्रा बजावते टूटि गई सब तार।
जंत्रा बिचारा क्या करे चले बजावनहार॥65॥

जो गृह कर हित धर्म करु नाहिं त करु बैराग।
बैरागी बंधन करै ताकौ बड़ौ अभागु॥66॥

जौ तुहि साध पिरम्म की सीस काटि करि गोइ।
खेलत खेलत हाल करि जौ किछु होइ त होइ॥67॥

जौ तुहि साध पीरम्म की पाके सेती खेलु।
काची सरसो पेलि कै ना खलि भई न तैलु॥68॥

कबीर झंखु न झंखियै तुम्हरो कह्यो न होइ।
कर्म करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ॥69॥

टालै टेलै दिन गया ब्याज बढंतो जाइ।
नां हरि भज्या ना खत फट्यो काल पहूँचो आइ॥70॥

ठाकुर पूजहिं मोल ले मन हठ तीरथ जाहि।
देखा देखी स्वांग धरि भूले भटका खाहि॥71॥

कबीर डगमग क्या करहि कहा डुलावहि जीउ।
सब सुख की नाइ को राम नाम रस पीउ॥72॥

डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि।
परोसी के जो हुआ तू अपने भी जानि॥73॥

डूबा था पै उब्बरो गुन की लहरि झबक्कि।
जब देख्यो बड़ा जरजरा तब उतरि परौं ही फरक्कि॥74॥

तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु।
छाया रूपी साधु है जिन तजिया बादु बिबादु॥75॥

कबीर तासै प्रीति करि जाको ठाकुर राम।
पंडित राजे भूपती आवहि कौने काम॥76॥

तूं तूं करता तूं हुआ मुझ मं रही न हूं।
जब आपा पर का मिटि गया जित देखौ तित तूं॥77॥

थूनी पाई थिति भई सति गुरु बंधी धीर।
कबीर हीरा बनजिया मानसरोवर तीर॥78॥

कबीर थोड़े जल माछली झीरवर मेल्यौ जाल।
इहटौ घनै न छूटिसहि फिरि करि समुद सम्हालि॥79॥

कबीर देखि कै किह कहौ कहे न को पतिआइ।
हरि जैसा तैसा उही रहौ हरखि गुन गाइ॥80॥

देखि देखि जग ढूँढ़िया कहूँ न पाया ठौर।
जिन हरि का नाम न चेतिया कहा भुलाने और॥81॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर धरती साध की तरकस बैसहि गाहि।
धरती भार न ब्यापई उनकौ लाहू लाहि॥82॥

कबीर नयनी काठ की क्या दिखलावहि लोइ।
हिरदै राम न चेतही इक नयनी क्या होइ॥83॥

जा घर साध न सोवियहि हरि की सेवा नांहि।
ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन मांहि॥84॥

ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घर नहीं गाउँ।
मति हरि पूछे कौन है मेरे जाति न नाउँ॥85॥

निर्मल बूँद अकास की लीनी भूमि मिलाइ।
अनिल सियाने पच गये ना निरवारी जाइ॥86॥

नृपनारी क्यों निंदिये क्यों हरिचेरी कौ मान।
ओह माँगु सवारै बिषै कौ ओह सिमरै हरि नाम॥87॥

नैंन निहारै तुझको ôवन सुनहु तुव नाउ।
नैन उचारहु तुव नाम जो चरन कमल रिद ठाउ॥88॥

परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि।
खिंथा जल कुइला भई तागे आँच न लागि॥89॥

परभाते तारे खिसहिं त्यों इहु खिसै सरीरु।
पै दुइ अक्खर ना खिसहिं त्यों गहि रह्यौ कबीरु॥90॥

पाटन ते ऊजरूँ भला राम भगत जिह ठाइ।
राम सनेही बाहरा जमपुर मेरे भाइ॥91॥

पापी भगति न पावई हरि पूजा न सुहाइ।
माखी चंदन परहरै जहँ बिगध तहँ जाइ॥92॥

कबीर पारस चंदनै तिन है एक सुगंध।
तिहि मिलि तेउ ऊतम भए लोह काठ निरगंध॥93॥

पालि समुद सरवर भरा पी न सकै कोइ नीरु।
भाग बड़े ते पाइयो तू भरि भरि पीउ कबीर॥94॥

कबीर प्रीति इकस्यो किए आगँद बद्धा जाइ।
भावै लंबे केस कर भावै घररि मुड़ाइ॥95॥

कबीर फल लागे फलनि पाकन लागै आँव।
जाइ पहूँचै खसम कौ जौ बीचि न खाई काँव॥96॥

बाम्हन गुरु है जगत का भगतन का गुरु नाहिं।
उरझि उरझि कै पच मुआ चारहु बेदहु माहि॥97॥

कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेक हजार।
हरुये हरुये तिरि गये डूबे जिनि सिर भार॥98॥

भली भई जौ भौ पर्‌या दिसा गई सब भूलि।
ओरा गरि पानी भया जाइ मिल्यौ ढलि कूलि॥99॥

कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु।
दावा काहू को नहीं बड़ी देस बड़ राजु॥100॥

भाँग माछुली सुरापान जो जो प्रानी खाहि।
तीरथ बरत नेम किये ते सबै रसातल जांहि॥101॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

भार पराई सिर धरै चलियो चाहै बाट।
अपने भारहि ना डरै आगै औघट घाठ॥102॥

कबीर मन निर्मल भया जैसा गंगा नीर।
पाछै लागो हरि फिरहिं कहत कबीर कबीर॥103॥

कबीर मन पंखी भयो उड़ि उड़ि दह दिसि जाइ।
जो जैसी संगति मिलै सो तैसी फल खाइ॥104॥

कबीर मन मूड्या नहीं केस मुड़ाये काइ।
जो किछु किया सो मन किया मुंडामुंड अजाइ॥105॥

मया तजी तो क्या भया जौ मानु तज्यो नहीं जाइ।
मान मुनी मुनिवर गले मानु सबै को खाइ॥106॥

कबीर महदी करि घालिया आपु पिसाइ पिसाइ।
तैसेई बात न पूछियै कबहु न लाई पाइ॥107॥

माई मूढहू तिहि गुरु जाते भरम न जाइ।
आप डूबे चहु बेद महि चेले दिये बहाइ॥108॥

माटी के हम पूतरे मानस राख्यो नाउ।
चारि दिवस के पाहुने बड़ बड़ रूधहि ठाउ॥109॥

मानस जनम दुर्लभ है होइ न बारै बारि।
जौ बन फल पाके भुइ गिरहिं बहुरि न लागै डारि॥110॥

कबीर माया डोलनी पवन झकोलनहारु।
संतहु माखन खाइया छाछि पियै संसारु॥111॥

कबीर माया डोलनी पवन बहै हिवधार।
जिन बिलोया तिन पाइया अवन बिलोवनहार॥112॥

कबीर माया चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि।
एकु कबीरा ना मुसै जिन कीनी बारह बाटि॥113॥

मारी मरौ कुसंग की केले निकटि जु बेरि।
उह झूलै उह चीरिये नाकत संगु न हेरि॥114॥

मारे बहुत पुकारिया पीर पुकारै और।
लागी चोट मरम्म की रह्यौ कबीरा ठौर॥115॥

मुकति दुबारा संकुरा राई दसएँ भाइ।
मन तौ मंगल होइ रह्यौ निकस्यो क्यौं कै जाइ॥116॥

मुल्ला मुनारे क्या चढ़हि साँई न बहरा होइ।
जाँ कारन बाँग देहि दिल ही भीतरि जोइ॥117॥

मुहि मरने का चाउ है मरौं तौ हरि के द्वार।
मत हरि पूछै को है परा हमारै बार॥118॥

कबीर मेरी जाति की सब कोइ हंसनेहारु।
बलिहारी इस जाति कौ जिह जपियो सिरजनहारु॥119॥

कबीर मेरी बुद्धि को जसु न करै तिसकार।
जिन यह जमुआ सिरजिआ सु जपिया परबदिगार॥120॥

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु।
आदि जगादि सगस भगत ताकौ सब बिश्राम॥121॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जम का ठेगा बुरा है ओह नहिं सहिया जाइ।
एक जु साधु मोहि मिलो तिन लीया अंचल लाइ॥122॥

कबीर यह चेतानी मत सह सारहि जाइ।
पाछै भोग जु भोगवै तिनकी गुड़ लै खाइ॥123॥

रस को गाढ़ो चूसिये गुन को मरिये रोइ।
अवमुन धारै मानसै भलो न कहिये कोइ॥124॥

कबीर राम न चेतिये जरा पहूँच्यौ आइ।
लागी मंदर द्वारि ते अब थ्या कादो जाइ॥125॥

कबीर राम न चेतियो फिरिया लालच माहि।
पाप करंता मरि गया औध पुजी खिन माहि॥126॥

कबीर राम न छोड़िये तन धन जाइ त जाउ।
चरन कमल चित बोधिया रामहि नाम समाउ॥127॥

कबीर राम न ध्याइयो मोटी लागी खोरि।
काया हाड़ी काठ की ना ओह चढ़े बहोरि॥128॥

राम कहना महि भेंदु है तामहिं एकु बिचारु।
सोइ राम सबै कहहिं सोई कौतुकहारु॥129॥

कबीर राम मैं राम कहु कहिबे माहि बिबेक।
एक अनेकै मिलि गया एक समाना एक॥130॥

रामरतन मुख कोथरी पारख आगै भोलि।
कोइ आइ मिलैगो गाहकी लेगी महँगे मोलि॥131॥

लागी प्रीति सुजान स्यों बरजै लोगु अजानु।
तास्यो टूटी क्यों बनै जाके जीय परानु॥132॥

बांसु बढ़ाई बूड़िया यों मत डूबहु कोइ।
चंदन कै निकटें बसे बांसु सुगंधु न होइ॥133॥

कबीर बिकारहु चितवते झूठे करंते आस।
मनोरथ कोइ न पूरियो चाले ऊठि निरास॥134॥

बिरहु भुअंगम मन बसै मंतु न मानै कोइ।
राम बियोगी ना जियै जियै त बौरा होइ॥135॥

बैदु कहै हौं ही भला दारू मेरे बस्सि।
इह तौ बस्तु गोपाल की जब भावै ले खस्सि॥136॥

वैष्णव की कुकरि भली साकत की बुरी माइ।
ओह सुनहिं हर नाम जस उह पाप बिसाहन जाइ॥137॥

वैष्णव हुआ त क्या भया माला मेली चारि।
बाहर कंचनवा रहा भीतरि भरी भंगारि॥138॥

कबीर संसा दूरि करु कागह हेरु बिहाउ।
बावन अक्खर सोधि कै हरि चरनों चित लाउ॥139॥

संगति करियै साध की अंति करै निर्बाहु।

साकत संगु न कीजिये जाते होइ बिनाहु॥140॥

कबीर संगत साध की दिन दिन दूना हेतु।
साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु॥141॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

संत की गैल न छांड़ियै मारगि लागा जाउ।
पेखत ही पुन्नीत होइ भेटत जपियै नाउ॥142॥

संतन की झुरिया भली भठी कुसत्ती गाँउ।
आगि लगै तिह धोलहरि जिह नाहीं हरि को नाँउ॥143॥

संत मुये क्या रोइयै जो अपने गृह जाय।
रोवहु साकत बापुरो जू हाटै हाट बिकाय॥144॥

कबीर सति गुरु सूरमे बाहया बान जु एकु।
लागत की भुइ गिरि पर्या परा कलेजे छेकु॥145॥

कबीर सब जग हौं फिरो मांदलु कंध चढ़ाइ।
कोई काहू को नहीं सब देखी ठोंक बजाइ॥146॥

कबीर सब ते हम बुरे हम तजि भलो सब कोइ।
जिन ऐसा करि बूझिया मीतु हमारा सोइ॥147॥

कबीर समुंद न छाड़ियै जौ अति खारो होइ।
पोखरि पोखरि ढूँढते भली न कहियै कोइ॥148॥

कबीर सेवा की दुइ भले एक संतु इकु राम।
राम जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु॥149॥

साँचा सति गुरु मैं मिल्या सबद जु बाहया एकु।
लागत ही भुइ मिलि गया पर्या कलेजे छेकु॥150॥

कबीर साकत ऐसा है जैसी लसन की खानि।
कोने बैठे खाइये परगत होइ निदान॥151॥

साकत संगु न कीजियै दूरहि जइये भागि।
बासन करा परसियै तउ कछु लागै दागु॥152॥

साद्दचा सतिगुरु क्या करै जो सिक्खा माही चूक।
अंधे एक न लागई ज्यों बासु बजाइयै फूँकि॥153॥

साधू की संगति रहौ जौ की भूसी खाउ।

होनहार सो होइहै साकत संगि न जाउ॥154॥

साधु को मिलने जाइये साधु न लीजै कोइ।
पाछे पाउं न दीजियो आगै होइ सो होइ॥155॥

साधू संग परापति लिखिया होइ लिलाट।
मुक्ति पदारथ पाइयै ठाकन अवघट घाट॥156॥

सारी सिरजनहार की जाने नाहीं कोइ।
कै जानै आपन धनी कै दासु दिवानी होइ॥157॥

सिखि साखा बहुतै किये केसी कियो न मीतु।
चले थे हरि मिलन को बीचै अटको चीतु॥158॥

सुपने हू बरड़ाइकै जिह मुख निकसै राम।
ताके पा की पानही मेरे तन को चाम॥159॥

सुरग नरक ते मैं रह्यौ सति गुरु के परसादि।
चरन कमल की मौज महि रहौ अंति अरु आदि॥160॥

कबीर सूख न एह जुग करहि जु बहुतैं मीत।
जो चित राखहि एक स्यों ते सुख पावहिं नीत॥161॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कबीर सूरज चाद्दद कै उरय भई सब देह।
गुरु गोबिंद के बिन मिले पलटि भई सब खेह॥162॥

कबीर सोई कुल भलो जा कुल हरि को दासु।
जिह कुल दासु न ऊपजे सो कुल ढाकु पलासु॥163॥

कबीर सोई मारिये जिहि मूये सुख होइ।
भलो भलो सब कोइ कहै बुरो न मानै कोइ॥164॥

कबीर सोइ मुख धन्नि है जा मुख कहिये राम।
देही किसकी बापुरी पवित्रा होइगो ग्राम॥165॥

हंस उड़ाौ तनु गाड़िगो सोझाई सैनाह।
अजहूँ जीउ न छाड़ई रंकांई नैनाह॥166॥

हज काबे हौं जाइया आगे मिल्या खुदाइ।
साईं मुझस्यो लर पर्या तुझै किन फुरमाई गाइ॥167॥

हरदी पीर तनु हरे चून चिन्ह न रहाइ।

बलिहारी इहि प्रीति कौ जिह जाति बरन कुल जाइ॥168॥

हरि को सिमरन छाड़िकै पाल्यो बहुत कुंटुब।
धंधा करता रहि गया भाई रहा न बंधु॥169॥

हरि का सिमरन छाड़िकै राति जगावन जाइ।
सर्पनि होइकै औतरे जाये अपने खाइ॥170॥

हरि का सिमरन छाड़िकै अहोई राखे नारि।
गदही होइ कै औतरै भारु सहै मन चारि॥171॥

हरि का सिमरन जो करै सो सुखिया संसारी।
इत उत कतहु न डोलई जस राखै सिरजनहारि॥172॥

हाड़ जरे ज्यों लाकरी केस जरे ज्यों घासु।
सब जग जरता देखिकै भयो कबीर उदासु॥173॥

है गै बाहन सघन घन छत्रापती की नारि।
तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनहारि॥174॥

है गै बाहन सघन घन लाख धजा फहराइ।
या सुख तै भिक्खा भली जौ हरि सिमरन दिन जाइ॥175॥

जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है जहाँ झूठ तहद्द पाप।
जहाँ लाभ तहद्द काल है जहाँ खिमा तहँ आप॥176॥

कबीरा तुही कबीरू तू तेरो नाउ कबीर।
रात रतन तब पाइयै जो पहिले तजहिं सरीर॥177॥

कबीरा धूर सकेल कै पुरिया बाँधी देह।
दिवस चारि को पेखना अंत खेह की खेह॥178॥

कबीरा हमरा कोइ नहीं हम किसहू के नाहि।
जिन यहु रचन रचाइया तितहीं माहिं समाहिं॥179॥

कोई लरका बेचई लरकी बेचै कोइ।
साँझा करे कबीर स्यों हरि संग बनज करेइ॥180॥

जहँ अनभै तहँ भौ नहीं जहँ भै तहं हरि नाहिं।
कह्यौ कबीर बिचारिकै संत सुनहु मन माँहि॥181॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जोरी किये जुलुम है कहता नाउ हलाल।

दफतर लेखा माडिये तब होइगौ कौन हवाल॥182॥

ढूँढत डोले अंध गति अरु चीनत नाहीं अंत।
कहि नामा क्यों पाइयै बिन भगतई भगवंत॥183॥

नीचे लोइन कर रहौ जे साजन घट माँहि।
सब रस खेलो पीव सौ कियो लखावौ नाहिं॥184॥

बूड़ा बंस कबीर का उपज्यो पूत कमाल।
हरि का सिमरन छाड़िकै घर ले आया माल॥185॥

मारग मोती बीथरे अंधा निकस्यो आइ।
जोति बिना जगदीस की जगत उलंघे जाइ॥186॥

राम पदारथ पाइ कै कबिरा गाँठि न खोल।
नहीं पहन नहीं पारखू नहीं गाहक नहीं मोल॥187॥

सेख सबूरी बाहरा क्या हज काबै जाइ।
जाका दिल साबत नहीं ताको कहाँ खुदाइ॥188॥

सुनु सखी पिउ महि जिउ बसै जिउ महिबसै कि पीउ।
जीव पीउ बूझौ नहीं घट महि जीउ की पीउ॥189॥

हरि है खांडू रे तुमहि बिखरी हाथों चूनी न जाइ।
कहि कबीर गुरु भली बुझाई चीटीं होइ के खाइ॥190॥

गगन दमामा बाजिया परो निसानै घाउ।
खेत जु मारो सूरमा जब जूझन को दाउ॥191॥

सूरा सो पहिचानिये जु लरै दीन के हेत।
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहुँ न छाड़ै खेत॥192॥

2.पदावली

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

अंतरि मैल जे तीरथ न्हावै तिसु बैकुंठ न जाना।
लोक पतीणे कछू न होवै नाहीं राम अयाना।

पूजहू राम एकु ही देवा साचा नावण गुरु की सेवा।

जल के मज्जन जे गति होवै नित नित मेडुक न्हावहि॥
जैसे मेडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि।

मनहु कठोर मरै बनारस नरक न बांच्या जाई।
हरि का संत मरै हाँड़वैत सगली सैन तराई॥

दिन सुरैनि बेद नहीं सासतर तहाँ बसै निरकारा।
कहि कबीर नर तिसहि धियावहु बावरिया संसारा॥1॥

अंधकार सुख कबहि न सोइहै। राजा रंक दोऊ मिलि रोइहै॥
जो पै रसना राम न कहिबो। उपजत बिनसत रोवंत रहिबो॥
जम देखिय तरवर की छाया। प्रान गये कछु बाकी माया॥
जस जंती महि जीव समाना। मुये मर्म को काकर जाना॥
हंसा सरबर काल सरीर। राम रसाइन पीउ रे कबीर॥2॥

अग्नि न दहै पवन नहीं गमनै तस्कर नेरि न आवै।
राम नाम धन करि संचौनी सो धन कतही न जावै॥
हमारा धन माधव गोबिंद धरनधर इहै सार धन कहियै।
जो सुख प्रभु गोबिंद की सेवा सो सुख राज न लहियै॥
इसु धन कारण सिव सनकादिक खोजत भये उदासी।
मन मुकुंद जिह्ना नारायण परै न जम की फाँसी॥
निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागी।
जलत अंग थंभि मन धावत भरम बंधन भौ भागी॥
कहै कबीर मदन के माते हिरदै देखु बिचारी।
तुम घर लाख कोटि अस्व हस्ती हम घर एक मुरारी॥3॥

अचरज एक सुनहु रे पंडिया अब किछु कहन न जाई।
सुर नर गन गंध्रब जिन मोहे त्रिभुवन मेखलि लाई।
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै जाकी दृष्टि नाद लव लागै॥
भाठी गगन सिडिया अरु चूंडिया कनक कलस इक पाया॥
तिस महि धार चुए अति निर्मल रस महि रस न चुआया।
एक जु बात अनूप बनी है पवन पियाला साजिया॥
तीन भवन महि एको जागी कहहु कवन है राजा॥
ऐसे ज्ञान प्रगट्या पुरुषोत्तम कहु कबीर रंगराता।
और दुनी सब भरमि भुलाना मन राम रसाइन माता॥4॥

अनभौ कि नैन देखिया बैरागी अड़े।
बिनु भय अनभौ होइ वणाँ हंबै।
सहुह दूरि देखैं ताभौ पावै बैरागी अड़े।
हुक्मै बूझै न निर्भऊ होइ न बेणा हंबै॥
हरि पाखंड न कीजई बैरागी अड़ै।
पाखंडि रता सब लोक बणाँ हंबै॥
तृष्णा पास न छोड़ई बैरागी अड़े।
ममता जाल्या पिंड बणाँ हंबै॥
चिंता जाल तन जालिया बैरागी अड़े।
जे मन मिरतक होइ वणा हंबै॥
सत गुरु बिन वैराग न होवई बैरागी अड़े।

जे लोचै सब कोई बणां हंबै॥
कर्म होवे सतगुरु मिलै बैरागी अड़े।
सहजै पावै सोइ बणा हंबै॥
कब कबीर इक बैरागी अड़े।
मौको भव जल पारि उतारि बड़ा हंबै॥5॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

अब मौको भये राजा राम सहाई । जनम मरन कटि परम गति पाई।
साधू संगति दियो रलाइ । पंच दूत ते लियो छड़ाइ॥
अमृत नाम जपौ जप रसना । अमोल दास करि लीनो अपना॥
सति गुरु कीनों पर उपकारू । काढ़ि लीन सागर संसारू॥
चरन कमल स्यों लागी प्रीति । गोबिंद बसै निता नित चीति॥
माया तपति बुझ्या अग्यारू । मन संतोष नाम आधारू॥
जल थल पूरि रहै प्रभु स्वामी । जत पेखो तत अंतर्यामी॥
अपनी भगति आपही दृढ़ाई । पूरब लिखतु गिल्या मेरे भाई॥
जिसु कृपा करै तिसु पूरन साज । कबीर को स्वामी गरीब निवाज॥6॥

अब मोहि जलत राम जल पाइया । राम उदक तन जलत बुझाइया॥
जेहि पावक सुर नर है जारे । राम उदक जन जलत उबारे॥
मन मारन कारन बन जाइयै । सो जल बिन भगवंत न पाइयै॥
जेहि पावक सुर नर है जारे । राम उदक जन जलत उबारे॥
भवसागर सुखसागर माहीं । पीव रहे जल निखूटत नाहीं॥
कहि कबीर भजु सारिंगपानी । राम उदक मेरी तिषा बुझानी॥7॥

अमल सिरानी लेखा देना । आये कठिन दूत जम लेना॥
क्या तै खटिया कहा गवाया । चलहु सिताब दिवान बुलाया॥
चलु दरहाल दिवान बुलाया । हरि फुर्मान दरगह का आया॥
करौ अरदास गाव किछु बाकी । लेउ निबेर आज की राती॥
किछू भी खर्च तुम्हारा सारौ । सुबह निवाज सराइ गुजारौ॥
साधु संग जाकौ हरि रंग लागा । धन धन सो जन पुरुष सभागा॥
ईत ऊत जन सदा सुहेले । जनम पदारथ जीति अमोले॥
जागत सोया जन्म गंवाया । माल धन जोर्या भया पराया॥
कहु कबीर तेई नर भूले । खसम बिसारि माटी संग रूलें॥8॥

अल्लह एकु मसीति बसतु है अवर मुलकु किसु केरा।
हिंदू मूरति नाम निवासी दुहमति तत्तु न हेरा॥

अल्लह राम जीउ तेरी नाई। तू करीमह राम तिसाई॥

दक्खन देस हरी का बासा पच्छिम अलह मुकामा।
दिल महि खोजि दिलै दिल खोजहु एही ठौर मुकामा॥

ब्रह्म न ज्ञान करहि चौबीसा काजी महरम जाना॥
ग्यारह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना॥

कहाउड़ीसे मज्जन कियाँ क्या मसीत सिर नायें॥
दिल महि कपट निवाज गुजारै क्या हज काबै जायें॥

एते औरत मरदा साजै ये सब रूप तुमारे॥
कबीर पूंगरा राम अलह का सब गुरु पीर हमारे॥

कहत कबीर सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना।
केवल नाम जपहु रे प्रानी तबही निहचै तरना॥9॥

अवतरि आइ कहा तुम कीना । राम को नाम न कबहूँ लीना॥
राम न जपहूँ कवन भनि लागे । मरि जैबे को क्या करहु अभागे॥
दुख सुख करिकै कुटंब जिवाया । मरती बार इकसर दुख पाया॥
कुठ गहन तब कर न पुकारा । कहि कबीर आगे ते न सभारा॥10॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

अवर मुये क्या सोग करीजै । तौ कीजै जो आपन जीजै॥
मैं न मरौ मरिबो संसारा । अब मोहि मिल्यो है जियावनहारा॥
या देही परमल महकंदा । ता सुख बिसरे परमानंदा॥
कुअटा एकु पंच पनिहारी । टूटी लाजु भरैं मतिहारी॥
कहु कबीर इकु बुद्धि बिचारी । नाउ कुअटा ना पनिहारी॥11॥

अव्वल अल्लह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे॥
एक नूर के सब जन उपज्या कौन भले को मंदे॥

लोगा भरमि न भूलहु भाई।
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूर रह्यो सब ठाई।
माटी एक अनेक भाँति करि साजी साजनहारे॥
ना कछु पोच माटी के मांणे, ना कछु पोच कुंभारे॥
सब महि सच्च एको सोई तिसका किया सब किछु होई॥
हुकम पछानै सु एको जानै बंदा कहियै सोई॥
अल्लह अलख न जाई लखिया गुरु गुड़ दीना मीठा॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सर्व निरंजन डीठा॥12॥

अस्थावर जंगम कीट पतंगा। अनेक जनम कीये बहुरंगा॥
ऐसे घर हम बहुत बसाये। जब हम राम गर्भ होइ आये॥
जोगी जपी तपी ब्रह्मचारी। कबहु राजा छत्रापति कबहु भेखारी॥
साकत मरहि संत जन जी वहि। राम रसायन रसना पीवहि॥
कहु कबीर प्रभु किरपा कीजै। हारि परै अब पूरा दीजै॥13॥

अहि निसि नाम एक जौ जागै। केतक सिद्ध भये लव लागै॥
साधक सिद्ध सकल मुनि हारे। एकै नाम कलपतरु तारे॥
जो हरि हरे सु होहि न आना। कहि कबीर राम नाम पछाना॥14॥

आकास गगन पाताल गगन है चहु दिसि गगन रहाइले।
आनंद मूल सदा पुरुषोत्तम घट बिनसै गगन न जाइलै॥
मोहि बैराग भयो इह जीउ आइ कहाँ गयो।
पंच तत्व मिलि काया कीनों तत्व कहां ते कीन रे॥
कर्मबद्ध तुम जीव कहत हौ कर्महि किन जीउ दीन रे॥
हरि महि तनु है तनु महि हरि है सर्व निरंतर सोइ रे॥
कहि कबीर राम नाम न छोड़ो सहज होइ सु होइ रे॥15॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

अगम दुर्गम गढ़ रचियो बास। जामहि जोति करै परगास॥
बिजली चमकै होइ अनंद। जिह पोड़े प्रभु बाल गुबिंद॥
इहु जीउ राम नाम लव लागै। जरा मरन छूटै भ्रम भागै॥
अंबरन बरन स्यों मन ही प्रीति। हौ महि गायत गावहिं गीति॥
अनहद सबद होत झनकार। जिहँ पौड़े प्रभु श्रीगोपाल॥
खंडल मंडल मंडल मंडा। त्रिय अस्थान तोनि तिय खंडा॥
अगम अगोचर रह्या अभ्यंत। पार न पावै कौ धरनीधर मंत॥
कदली पुहुप धूप परगास। रज पंकज महि लियो निवास॥
द्वादस दल अभ्यंतर मत। जहँ पौड़े श्रीकवलाकंत॥
अरध उरध मुख लागो कास। सुन्न मंडल महि करि परगांसु॥
ऊहाँ सूरज नाहीं चंद। आदि निरंजन करै अनंद॥
सो ब्रह्मंडि पिंड सो जानू। मानसरोवर करि स्नानू॥
सोहं सो जाकहुँ है जाप। जाको लिपत न होइ पुन्न अरु पाप॥
अबरन बरन धाम नहिं छाम। अबरन पाइयै गुरु की साम॥
टारी न टरै आवै न जाइ। सुन्न सहज महि रह्या समाइ॥
मन मद्धे जाने जे कोइ। जो बोलै सो आपै होइ॥
जोति मंत्रि मनि अस्थिर करै। कहि कबीर सो प्रानी तरै॥16॥

आपे पावक आपे पवना। जारै खसम त राखै कवना।
राम जपतु तनु जरि किन जाइ। राम नाम चित रह्या समाइ॥
काको जरै काहि होइ हानि। नटवर खेलै सारिंगपानि॥
कहु कबीर अक्खर दुइ भाखि। होइगा खसम त लेइगा राखि॥17॥

आस पास घन तुरसी का बिरवा मांझ बनारस गाऊँ रे।
वाका सरूप देखि मोहीं ग्वारिन मोकौ छाड़ि न आउ न जाहुरे॥
तोहि चरन मन लागी। सारिंगधर सो मिलै जो बड़ भागी॥
वृंदावन मन हरन मनोहर कृष्ण चरावत गाऊँ रे॥
जाका ठाकुर तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊँ रे॥18॥

इंद्रलोक सिवलोकै जैबो। ओछे तप कर बाहरि ऐबो॥
क्या मांगी किछु थिय नाहीं। राम नाम राखु मन माहीं॥
सोभा राज विभव बड़ि पाई। अंत न काहू संग सहाई॥
पुत्र कलत्रा लक्ष्मी माया। इनते कछु कौने सुख पाया॥
कहत कबीर अवर नहिं कामा। हमारे मन धन राम को नामा॥19॥

इक तु पतरि भरि उरकट कुकरट इक तू पतरि भरि पानी॥
आस पास पंच जोगिया बैठे बीच नकटि देरानी॥
नकटी को ठनगन बाड़ाडूं किनहिं बिबेकी काटी तूं॥
सकल माहि नकटी का बासा सकल मारिऔ हेरी॥
सकलिया की हौ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी॥
हमरो भर्ता बड़ो विवेकी आपे संत कहावै॥
आहु हमारे माथे काइमु और हमरै निकट न आवै॥
नाकहु काटी कानहु काटी कूटि कै डारीं॥
कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की प्यारी॥20॥

इन माया जगदीस गुसाई तुमरे चरन बिसारे॥
किंचत प्रीति न उपजै जन को जन कहा करे बेचारे॥
धृग तन धृग धन धृगं इह माया धृग धृग मति बुधि फन्नी॥
इस माया कौ दृढ़ करि राखहु बाँधे आप बचन्नी॥
क्या खेती क्या लेवा देवा परपंच झूठ गुमाना॥
कहि कबीर ते अंत बिगूते आया काल निदाना॥21॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

इसु तन मध्ये मदन चोर। जिन ज्ञानरतन हरि लीन मोर॥
मैं अनाथ प्रभु कहौं काहि। की कौन बिगूतो मैं की आहि॥
माधव दारुन दुख सह्यौ न जाइ। मेरो चपल बुद्धि स्यों बसाइ॥
सनक सनंदन सिव सुकादि। नाभि कमल जाने ब्रह्मादि॥
कविजन जोगी जटाधारि। सब आपन औसर चले धारि॥
तू अथाह मोहि थाह नांहि। प्रभु दीनानाथ दुख कहौं काहि॥
मेरो जनम मरन दुख आथि धीर। सुखसागर गुन रव कबीर॥22॥

इहु धन गोरो हरि को नाउँ। गांठि न बाँधो बेचि न खाँउ॥
नाँउ मेरे खेती नाँउ मेरी बारी। भगति करौ जन सरन तुम्हारी॥
नाँउ मेरे माया नाँउ मेरे पूँजी। तुमहि छोड़ि जानौ नहिं दूजी॥
नाँउ मेरे बंधिय नाँउ मेरे भाई। नाँउ मेरे संगी अति होई सहाई॥
माया महि जिसु रखै उदास। कहि हौं ताकौ दास॥23॥

उदक समुँद सलल की साख्या नदी तरंग समावहिंगे॥
सुन्नहि सुन्न मिल्या ममदर्सी पवन रूप होइ जावहिंगे॥
बहुरि हम काहि आवहिंगे॥
आवनजाना हुक्म तिसै का हुक्मै बुज्झि समावहिंगे॥
जब चूकै पंच धातु की रचना ऐते भर्म चुकावहिंगे॥

दर्सन छोड़ भए समदर्सी एको नाम धियावहिंगे॥
जित हम लाए तितही लागे तैसे करम कमावहिंगे॥
हरि जी कृपा करै जौ अपनी तो गुरु के सबद कमावहिंगे॥
जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जन्म न होइ॥
कह कबीर जो नाम सामने सुन्न रह्याँ लव सोई॥24॥

उपजै निपजै निपजिस भाई। नयनहु देखत इह जग जाई॥
लाज न मरहु कहौ घर मेरा। अंत के बार नहीं कछु तेरा॥
अनेक जतन कर काया पाली। मरती बार अगनि संग जाली॥
चोवा चंदन मर्दन अंगा। सो तनु जले काठ के संगा॥
कहु कबीर सुनहु रे गुनिया। बिनसैगो रूप देखै सब दुनियां॥25॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

उलटत पवन चक्र षट भेदै सुरति सुन्न अनुरागी॥
आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोज बैरागी॥

मेरा मन मनहीं उलटि समाना।
गुरु परसादि अकल भई अवरै नातरु था बेगाना॥
निबरै दूरि दूरि फनि निबरैं जिन जैसा करि मान्या॥
अलउती का जैसे भया बरेडा जिन पिया तिन जान्या॥
तेरी निर्गुण कथा काहि स्यों कहिये ऐसा कोई बिबेकी॥
कहु कबीर निज दया पलीता तिनतै सीझल देखी॥26॥

उलटि जात कुल दोऊ बिसारी। सुन्न सहजि महि बुनत हमारी॥
हमरा झगरा रहा न कोऊ। पंडित मुल्ला छाड़ै दोऊ॥
बुनि बुनि आप आप परिरावौं। जहँ नहीं आप तहाँ हनै गावौं॥
पंडित मुल्ला जो लिखि दिया। छाड़ि चले हम कछू न लिया॥
रिदै खलासु निरिखि ले मीरा। आपु खोजि खोजि मिलै कबीरा॥27॥

उस्तुति निंदा दोउ बिबरजित तजहू मानु अभिमान।
लोहा कांचन सम करि जानहि ते मुरति भगवान॥

तेरा जन एक आध कोइ।
काम क्रोध लोभ मोह बिबरजित हरिपद चीन्हैं सोई।
रजगुण तमगुण सतगुण कहियै इह तेरी सब माया॥
चौथे पद को जो नर चीन्है तिनहिं परम पद पाया।
तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा॥
त्रिस्ना अरु माया भ्रम चूका चितवत आतमरामा॥
जिह मंदिर दीपक परिगास्या अंधकार तह नासा॥
निरभौ पूरि रहे भ्रम भागा कहि कबीर जनदासा॥28॥

ऋद्धि सिद्ध जाकौ फुरी तब काहु स्यो क्या काज॥
तेरे कहिने कौ गति क्या कहौं मैं बोलत ही बड़ लाज॥

राम जह पाया राम ते भवहि न बारे बार॥
झूठा जग डहकै घना दिन दुइ बर्तन की आज॥

राम उदक जिह जन पिया तिह बहुरि न भई पियासा॥
गुरु प्रसादि जिहि बुझिया आसा तें भया निरासा॥

सब सचुन दरि आइया जो आतम भया उदास॥
राम नाम रस चाखिया हरि नामा हरि तारि॥
कहु कबीर कंचन भया भ्रम गया समुद्रै पारि॥29॥

एक कोटि पंचसिक दारा पंचे मांगहि हाला।
जिमि नाहीं मैं किसी की बोई ऐसा देव दुखाला॥

हरि के लोगा मोकौ नीति डसे पटवारी॥
ऊपर भुजा करि मैं गुरु पहि पुकारा तिनकौ लिया उबारी॥

नव डाडी दस मुंसफ धावहि रहयति बसन न देही॥
डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिष्टाला लेही॥

बहुतरि घर इक पुरुष समाया उन दीया नाम दिखाई॥
धर्मराय का दफ्तर सोध्या बाकी रिज मन काई॥

संता को मति कोई निंदहु संत राम है एको।
कहु कबीर मैं सो गुरु पाया जाका नाउ बिबेकौ॥30॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

एक जोति एका मिली किबा होइ न होइ॥
जितु घटना मन उपजै फूटि मरै जन सोइ॥

सावल सुंदर रामय्या मेरा मन लागा तोहि॥

साधु मिलै सिधि पाइयै कियेहु योग कि भोग॥
दुहु मिलि कारज ऊपजै राम नाम संयोग॥

लोग जानै इहु गीता है इह तो ब्रह्म बिचार॥
ज्यो कासी उपदेस होइ मानस मरती बार।

कोई गावै कोई सुनै हरि नामा चितु लाइ।
कहु कबीर संसा अंत परम गति पाइ॥31॥

एक स्वान कै धर गावण, जननी जानत सुत बड़ा होत है।
इतंना कुन जानै जि दिन दिन अवध घटत है॥

मोर मोर करि अधिक लाहु धरि पेखत ही जमराउ हँसै॥
ऐसा तैं जगु भरम भुलाया कैसे मुझे जब मोह्या है माया॥
कहत कबीर छोड़ि बिषया रस इतु संगति निहची मरना॥
रमय्या जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भवसाग तरना॥
जाति सुभावै ता लागे भाउं। मर्म भुलावा बिचहु जाइ॥
उपजै सहज ज्ञान मति जागै। गुरु प्रसाद अंतरं लव लागै॥
इतु संगति नाहीं मरण। हुकुम पछाणि ता खसमै मिलणा॥32॥

ऐसौ अचरज देख्यौ कबीर। दधि कै भोलै बिरोलै नीर॥
हरी अंगूरी गदहा चरै। नित उठि हासै हीगै मरै॥
माता भैसा अम्मुहा जाइ। कुदि कुदि चरै रसातल पाइ॥
कहु कबीर परगट भई खेड़। ले लै कौ चूधे नित भेड़॥
राम रमत मति परगटि आई। कहु कबीर गुरु सोझी पाई॥33॥

ऐसो इहु संसार पेखना रहन न कोऊ पैहे रे॥
सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवैहै रे॥
सारे बूढ़े तरुने भैया सबहु जम लै जैहै रे॥
मानस बपुरा मूसा कीनौं मींच बिलैया खैहै रे॥
धनवंता अरु निर्धन मनई ताकी कछू न कानी रे॥
राज परजा सम करि मारै ऐसो काल बढ़ानी रे॥
हरि के सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारी रे॥
आवहि न जाहि न कबहूँ मरती पारब्रह्म संगारी रे॥
पुत्र कलत्रा लच्छमी माया इहै तजहु जिय जानी रे॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु मिलिहै सारंगपानी रे॥34॥

ओई जूं दीसहि अंबरि तारे। किन ओइ चीते चीतन हारे॥
कहु रे पंडित अंबर कास्यो लागा। बूझे बूझनहार सभागा॥
सूरज चंद्र करहि उजियारा। सब महि पसर्या ब्रह्म पसार्या॥
कहु कबीर जानैगा सोई। हिरदै राम मुखि रामै होई॥35॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कंचन स्यो पाइयै नहीं तोलि। मन दे राम लिया है मोलि॥
अब मोहि राम अपना करि जान्या। सहज सुभाइ मेरा मन मान्या॥
ब्रह्मै कथि कथि अंत न पाया। राम भगति बैठे घर आया॥
बहु कबीर चंचल मति त्यागी। केवल राम भक्ति निज भागी॥36॥

कत नहीं ठौर मूल कत लावौ। खोजत तनु महिं ठौर न पावौ॥
लागी होइ सो जानै पीर। राम भगत अनियाले तीर॥
एक भाइ देखौ सब नारी। क्या जाना सह कौन पियारी॥
कहु कबीर जाके मस्तक भाग। सब परिहरि ताको मिले सुहाग॥37॥

करवतु भया न करवट तेरी। लागु गले सुन बिनती मेरी॥
हौ बारी मुख फेरि पियारे। करवट दे मोकौ काहे को मारे॥

जौ तन चीरहि अंग न मोरी। पिंड परै तो प्रीति न तोरी॥
हम तुम बीच भयो नहीं कोई। तुमहि सुंकत नारि हम सोई॥
कहत कबीर सुनहु रे होई। अब तुमरी परतीति न होई॥38॥

कहा स्वान कौ सिमृति सुनाये। कहा साकत पहि हरि गुन गाये॥
राम राम रमे रमि रहियै। साकत स्यों भूलि नहिं कहियै॥
कौआ कहा कपूर चराये। कह बिसियर को दूध पिआये॥
सत संगति मिलि बिबेक बुधि होई। पारस परस लोहा कंचन सोई॥
साकत स्वान सब करै कहाया। जो धूरि लिख्या सु करम कमाया॥
अभिरत लै लै नीम सिंचाई। कहत कबीर वाको सहज न जाई॥39॥

काम क्रोध तृष्णा के लीने गति नहिं एकै जाना।
फूटी आंखै कछू सूझै बूड़ि मुये बिनु पानी॥
चलत कत टेढ़े टेढ़े टेढ़े।
अस्थि चर्म बिष्टा के मूँदे दुरगंधहिं के बेढ़े॥
राम न जपहु कौन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे॥
अनेक जतन करि इह तन राखहु रहे अवस्था पूरे॥
आपन कीया कछू न होवै क्या को करै परानी॥
जाति सुभावै सति गुरु भेटै एको नाम बखानी॥
बलुवा के धरुआ मैं बसत फुलवते देह अयाने॥
कहु कबीर जिह राम न चेत्यो बूड़े बहुत सयाने॥40॥

काया कलालनि लादनि मेलै गुरु का सबद गुड़ कीनु रे।
त्रिस्ना काल क्रोध मद मत्सर काटि काटि कसु दीन रे॥
कोई हेरै संत सहज सुख अंतरि जाको जप तप देउ दलाली रे॥
एक बूँद भरि तन मन देवो जोमद देइ कलाली रे॥
भुवन चतुरदस भाठी कीनी ब्रह्म अगिन तन जारी रे॥
मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे॥
तीरथ बरत नेम सचि संजम रवि ससि गहनै देउ।
सुरति पियास सुधारस अमृत एहु महारसु पेउ रे॥
निर्झर धार चुऔ अति निर्मल इह रस मुनआ रातो रे॥
कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महारस साचो रे॥41॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कालबूत की हस्तनी मन बौरा रे चलत रच्यो जगदीस।
काम सुजाइ गज बसि परे मन बौरा रे अकसु सहियो सीस॥
बिषय बाचु हरि राचु समझु मन बौरा रे।
निर्भय होइ न हरि भजे मन बौरा रे गह्यो न राम जहाज॥
मर्क्कट मुष्टी अनाज की बन बौरा रे लीनी हाथ पसारि॥
छूटन को संसा पर्या मन बौरा रे नाच्यो घर घर बारि॥
ज्यो नलनी सुअटा गह्यो मन बौरा रे माया इहु ब्योहारु॥
जैसा रंग कसुंम का मन बौरा रे त्यों पसरो पासारु॥
न्हावन को तीरथ घने मन बौर रे पूजन को बहु देव॥

कबीर छूटत नहीं मन बौर रे छूट न हरि की सेव॥42॥

काहू दीने पाट पटंबर काहू पलघ निवारा।
काहू गरी गोदरी नाहीं काहू खान परारा॥
अहि रख बादु न कीजै रे मन सुकृत करि करि लीजै रे मन॥
कुमरै एक जु माटी गंधी बहु बिधि बानी लाई॥
काहू कहि मोती मुकताहल काहू ब्याधि लगाई॥
सूमहि धन राखन कौ दीया मुगध कहै धन मेरा॥
जम का दंड मुंड महि लागै खिन महि करै निबेरा॥
हरि जन ऊतम भगत सदावै आज्ञा मन सुख पाई॥
जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंत्रा बसाई॥
कहै कबीर सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी॥
चिरगट फारि चटारा लै गयो तरी तागरी छूटी॥43॥

किनहीं बनज्या कांसा तांबा किनही लोग सुपारी।
संतहु बनज्या नाम गोबिंद का ऐसी खेप हमारी॥
हरि के नाम व्यापारी।
हीरा हाथ चढ़ा निर्मोलक छूटि गई संसारी॥
साँचे लाए तो संच लागे सांचे के ब्योपारी॥
सांची वस्तु के भार चलाए पहुँचे जाइ भंडारी॥
आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी॥
आपै ह्नै दस दिसि आप चलावै निहचल है ब्यापारी॥
मन करि बैल सुरति करि पेडा ज्ञान गोनि भरी डारी।
कहत कबीर सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी॥44॥

कियौ सिंगार मिलन के ताई। हरि न मिले जगजीवन गुसाई॥
हरि मेरौ पितर हौं हरि की बहुरिया। राम बड़े मैं तनक लहुरिया॥
धनि पिय एकै संग बसेरा। सेज एक पै मिलन दुहेरा॥
धन्न सुहागिन जो पिय भावै। कहि कबीर फिर जनमि न आवै॥45॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कूटन सोइ जु मन को कूटै। मन कूटै तो जम तै छूटै॥
कुटि कुटि मन कसवही लावे। सो कूटनि मुकति बहु पावै॥
कूटन किसै कहहु संसार। सकल बोलन के माहि बिचार॥
नाचन सोइ जु मन स्यौ नाचै। झूठ न पतियै परचै साचै॥
इसु मन आगे पूरै ताल। इसु नाचन के मन रखवाल॥
बाजारी सो बजारहिं सोधै। पाँच पलीतह को परबोधै॥
नव नायक की भगतिप छाने। सो बाजारी हम गुरु माने॥
तस्कर सोइ जिता तित करै। इंद्री कै जतनि नाम ऊचरै॥
कहु कबीर हम ऐसे लक्खन। धन्न गुरुदेव अतिरूप बिचक्खन॥46॥

कोऊ हरि समान नहीं राजा।
ए भूपति सब दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा॥

तेरो जन होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा॥
हात पसारि सकस्ै को जन को बोलि सकै न अंदाजा॥
चेति अचेति मूढ़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा॥
कहि कबीर संसा भ्रम चूको ध्रुव प्रह्लाद निवाजा॥47॥

कोटि मूर जाके परगास। कोटि महादेव अरु कविलास॥
दुर्गा कोटि जाकै मर्दन करै। ब्रह्मा कोटि बेद उच्चरै॥
जौ जांनौ तौ केवल राम। आन देव स्यो नाहीं काम॥
कोटि चंद्र में करहि चराक। सूर तेतीसौ जेवहि पाक॥
नवग्रह कोटि ठाढे दरबार। धर्म कोटि जाके प्रतिहार॥
पवन कोटि चौबारे फिरहिं। बासक काटि सेज बिस्तरहिं॥
समुंद्र कोटि जाके पनिहार। रोमावलि कोटि अठारहि भार॥
कोटि कुबेर भरहिं भंडार। कोटिक लखमी करै सिंगार॥
कोटिक पाप पुन्य बहु हिराहि। इंद्र कोटि जाके सेवा कराहि॥
छप्पन कोटि जाके प्रतिहार। नगरी नगरी खियत अपार॥
लट छूटी बरतै बिकराल। कोटि कला खेलै गोपाल॥
कोटि जग जाकै दरबार। गंधर्व कोटहिं करहिं जयकार॥
बिद्या कोटि सबे गुन कहै। ताउ पारब्रह्म का अंत न लहै॥
बावन कोटि जाकै रोमवली। रावन सैना जहँ ते छली॥
सहस कोटि बहु कहत पुरान। दुर्योधन का मथिया मान॥
कंद्रप कोटि जाकै लवै न धरहिं। अंतर अंतर मनसा हरहिं॥
कहि कबीर सुनि सारंगपान। देहि अभयपद मानो दान॥48॥

कोरी को काहु भरम न जाना। सब जग आन तनायो ताना।
जब तुम सुनि ले बेद पुराना। तब हम इतनकु पसरो ताना॥
धरनि अकास की करगह बनाई। चंद सुरज दुह साथ चलाई॥
पाई जोरि बात इक कीनी तह ताती मन माना॥
जोलाहे घर अपना चीना घट ही राम पछाना॥
कहत कबीर कारगह तोरी। सूतै सूत मिलाये कौरी॥49॥

भव निधि तरनतारन चिंतामनि इक निमिष इहु मन लागा॥
गोबिंद हम ऐसे अपराधी।
जिन प्रभु जीउ पिंड था दीया तिसकी भाव भगति नहिं साधी।
परधन परतन परतिय निंद्रा पर अपवाद न छूटै॥
आवागमन होत है फुनि फुनि इहु पर संग न छूटै॥
जिह घर कथा होत हरि संतन इक निमष न कीनो मैं फेरा॥
लंपट चोर धूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा॥
दया धर्म औ गुरु की सेवा ए सुपनंतरि नाहीं॥
दीन दयाल कृपाल दमोदर भगति बछल भैहारी॥
कहत कबीर भीर जनि राखहु हरि सेवा करौं तुमारी॥50॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

कौन तो पूत पिता को काकौ। कौन मेरे को देइ संतापौ।

हरि ठग जग कौ ठगौरी लाई। हरि के बियोग कैसे जियों मेरी माई॥
कौन को पुरुष कौन को नारी। या तत लेहु सरीर बिचारी॥
कहि कबीर ठग स्यों मन मान्या। गई ठगौरी ठग पहिचान्या॥51॥

क्या जप, क्या तप, क्या ब्रत पूजा। जाकै रिदै भाव है दूजा॥
रे जन मन माधव स्यों लाइयै। चतुराई न चतुर्भुज पाइयै।
परिहरि लोभ अरु लोकाचार। परिहरि काम क्रोध अहंकार॥
कर्म करत बद्धे अहंमेव। मिल पाथर की करही सेव।
कहु कबीर भगत कर पाया। भोलै भाइ मिलै रघुराया॥52॥

क्या पढ़िये क्या गुनियै। क्या वेद पुराना सुनियै।
पढ़े सुनै क्या होई। जो सहज न मिलियो सोई॥
हरि का नाम न जपसि गंवारा। क्या सोचहिं बारंबारा॥
अंधियारे दीपक चहियै। इक वस्तु अगोचर लहियै॥
वस्तु अगोचर पाई। घट दीपक रह्या समाई॥
कहि कबीर अब जान्या। जब जान्या तौ मन मान्या॥
मन माने लोग न पतीजै। न पतीजै तौ क्या कीजै॥53॥

खसम मरे तौ नारी न रोवै। उस रखवारा औरो होवै॥
रखवारे का होइ बिनास। आगे नरक इहा भोग बिलास॥
एक सुहागिन जगत पियारी। सगले जीव जंत की नारी॥
सोहागिन गल सोहै हार। संत कौ विष बिगसै संसार॥
करि सिंगार बहै पखियारी। संत की ठिठकी फिरै बिचारी॥
संत भागि ओह पाछै परै। गुरु परसादी मारहु डरै॥
साकत को ओह पिंड पराइणि। हमसो दृष्टि परै त्राखि डाइणि॥
हम तिसका बहु जान्या भेव। जबहु कृपाल मिले गुरु देव॥
कहु कबीर अब बाहर परी। संसारै कै अंचल लरी॥54॥

गंग गुसाइन गहिर गंभीर। जंजीर बाँधि करि खरे कबीर।
मन न डिगै तन काहे को डराइ। चरन कमल चित रह्यो समाइ॥
गंगा की लहरि मेरी टूटी जंजीर। मृगछाला पर बैठे कबीर॥
कहि कबीर कोऊ संग न साथ। जल थल राखन है रघुनाथ॥55॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

गंगा के संग सलिता बिगरी। सो सलिता गंगा होइ निबरी॥
बिगरो कबीरा राम दुहाई। साचु भयो अन कतहिं न जाई॥
चंदन के संगि तरवर बिगरो। सो तरवर चंदन ह्नै निबरो॥
पारस के संग तांबा बिगरो। सो तांबा कंचन ह्नै निबरो॥
संतन संग कबीरा बिगरो। सो कबीर राम ह्नै निबरो॥56॥

गगन नगरि इक बूँद न वर्षे नाद कहा जु समाना॥
पारब्रह्म परमेसर माधव परम हंस ले सिधाना॥
बाबा बोलते ते कहा गये देही कै संगि रहते॥

सुरति माहि जो निरते करते कथा वार्ता कहते॥
बबजावनहारी कहाँ गयी जिन इहु मंदर कीना॥
साखी सबद सुरत नहीं उपजै खिच तेज सब लीना॥
òवननि बिकल भये संगि तेरे इंद्री का बल थाका॥
चरन रहे कर ढरग परे हैं मुखहु न निकसै बाता॥
थाके पंचदूत सब तस्कर आप आपणै भ्रमते॥
थाका मम कुंजर उर थाका तेज सूत धरि रमते॥
मिरतक भये दसै बंद छूटे मित्रा भाई सब छोरे।
कहत कबीरा जो हरि ध्यावै जीवन बंधन तोरे॥57॥

गगन रसाल चुए मेरी भाठी। संचि महारस तन भया काठी॥
वाकौ कहिये सहज मतवारा। पीवत राम रस ज्ञान बिचारा॥
सहज कलाननि जौ मिलि आई। आनंदि माते अनदिन जाई॥
चीन्हत चीत निरंजन लाया। कहु कबीर तौ अनभव पाया॥58॥

गज नव गज दस गज इक्कीस पुरी आये कत नाई॥
साठ सूत नव खंड बहत्तर पाटु लगो अधिकाई॥
गई बुनावन माहो घर छोड़ांो जाइ जुलाहो॥
गजी न मिनियै तोलि न तुलियै पाँच न सेर अढ़ाई॥
जौ जरि पाचन बेगि न पावै झगरू करै घर आई॥
दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई॥
छूटे कुंडे भीगै पुरिया चल्यो जुलाहो रिसाइ॥
छोछी नली तंतु नहीं निकसै नतरु रही उरझाही॥
छोड़ि पसारई हारहु बपुरी कहु कबीर समुझाही॥59॥

गज साढ़े तै तै धोतिया तिहरे पाइनि तग्गा।
गली जिना जपमालिया लौटे हत्थिनि बग्गा॥
ओइ हरिके संतन आखि यदि बानारसि के ठग्गा॥
ऐसे संत न मोकौ भावहि डाला स्यों पेड़ा गटकावहिं॥
बासन माजि चरावहिं ऊपर काठी धोइ जलावहिं॥
बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहिं॥
ओई पापी सदा फिरहि अपराधौ मुखहु अपरस कहावहिं॥
सदा सदा फिरहि अभिमानी सकल कुटुंब डूबावहिं॥
जित को लाया तितही लागा तैसे करम कमावै॥
कहु कबीर जिस सति गुरु भेटे पुनरपि जनमि न आवै॥60॥

गर्भ बास महि कुल नहिं जाती। ब्रह्म बिंद ते सब उतपाती॥
कहु रे पंडित बामन कब क होये। बामन कहि कहि जनम मति खोये॥
जौ तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया। तौ आन बाट काहे नहीं आया॥
तुम कत ब्राह्मण हम कत शूद। हम कत लोहू तुम कत दूध॥
कहु कबीर जो ब्रह्म बिचारै। सो ब्राह्मण कहियत है हमारे॥61॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

गूड़ करि ज्ञान ध्यान करि महुआ भाठी मन धारा।
सुषमन नारी सहज समानी पीवै पीवन हारा॥

अवधू मेरा मन मतवारा।
उन्मद चढ़ा रस चाख्या त्रिभुवन भया उजियारा।
दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महारस भारी॥
काम क्रोध दुइ किये जलेता छूटि गई संसारी॥
प्रगट प्रगास ज्ञान गम्मित सति गुरु ते सुधि पाई।
दास कबीर तासु मदमाता। उचकि न कबहूँ जाई॥62॥

गुरु चरण लागि हम बिनवत पूछत कह जीव पाया॥
कौन काज जग उपजै बिनसै कहहु मांहि समझाया॥
देव करहु दया मोहि मारग लावहु जित भवबंधन टूटै॥
जनम मरण दुख फेड़ कर्म सुख जीव जनम ते छूटै॥
माया फाँस बंधन ही फारै अरु मन सुन्नि न लूके॥
आपा पद निर्वाण न चीन्हा इन बिधि अमिउ न चूके॥
कही न उपजै उपजी जाणे भाव प्रभाव बिहूण।
उदय अस्त की मन बुधि नासी तो सदा सहजि लवलीण॥
ज्यों प्रतिबिंब बिंब कौ मिलिहै उदक कुंभ बिगराना॥
कहु कबीर ऐसा गुण भ्रम भागा तौ मन सुन्न समाना॥63॥

गुरु सेवा ते भगति कमाई। तब इह मानस देही पाई॥
इस देही कौ सिमरहिं देव। सो देही भुज हरि की सेव॥
भजहु गुबिंद भूल मत जाहु। मानस जनम की रही चाहु॥
जब लग जरा रोग नहीं आया। जब लग काल ग्रसी नहिं काया॥
जब लग विकल भई नहीं बानी। भजि लेहि रे मन सारंगपानी॥
अब न भजसि भजसि कब भाई। आवैं अंत न भजिया जाई॥
जो किछु करहिं सोई अवि सारू। फिर पछताहु न पावहु पारू॥
जो सेवक जो लाया सेव। तिनही पाये निरंजन देव॥
गुरु मिलि ताके खुले कपाट। बहुरि न आवै योनी वाट॥
इही तेरा अवसर इह तेरी वार। घट भीतर तू देखु बिचारि॥
कहत कबीर जीति कै हारि। बहुबिधि कह्यौ पुकारि पुकारि॥64॥

गृह तजि बन खंड जाइयै चुनि खाइयै कंदा।
अजहु बिकार न छोड़ई पापी मन मंदा॥
क्यौं छूटा कैसे तरौ भवनिधि जल भारी॥
राखु राख मेरे बीठुला, जन सरनि तुमारी॥
बिषम बिषय बासना तजिय न जाई॥
अनिक यत्न करि राखियै फिरि लपटाई॥
जरा जीवन जोबन गया कछु कीया नीका।
इह जीया निर्मोल को कौड़ी लगि मीका॥
कहु कबीर मेरे माधवा तू सर्वव्यापी॥
तुम सम सरि नाहीं दयाल मो सम सरि पापी॥65॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

गृह शोभा जाकै रे नाहीं। आवत पहिया खूदे जाहि॥
वाकै अंतरि नहीं संतोष। बिन सोहागिन लागे कोष॥
धन सोहागनि महा पबीत। तपे तपीसर डालै चीत॥
सोहागनि किरपन की पूती। सेवक तजि जग तस्यो सूती॥
साधू कै ठाढ़ी दरबारि। सरनि तेरी मोके निस्तारि॥
सोहागनि है अति सुंदरी। पगनेवर छनक छन हरी॥
जौ लग प्रान तऊ लग संगे। नाहिन चली बेगि उठि नंगे॥
सोहागिन भवन त्रौ लीया। दस अष्टपुराण तीरथ रसकीया॥
ब्रह्मा विष्णु महेसर बेधे। बड़ भूपति राजै है छेधे॥
सोहागिन उर पारि न पारि। पाँच नारद कै संग बिधबारि॥
पाँच नारद के मिठवे फूटे। कहु कबीर गुरु किरपा छूटे॥66॥

चंद सूरज दुइ जोति सरूप। जीता अंतरि ब्रह्म अनूप॥
करु रे ज्ञानी ब्रह्म बिचारु। जोति अंतरि धरि आप सारु॥
हीरा देखि हीरै करो आदेस। कहै कबीर निरंजन अलेखु॥67॥

चरन कमल जाके रिदै। बसै सो जन क्यौं डोलै देव।
मानौ सब सुख नवनिधि ताके सहजि जस बोलै देव॥
तब इह मति जौ सब महि पेखै कुटिल गाँठि जब खोलै देव॥
बारंबार माया ते अटकै लै नरु जो मन तौलै देव॥
जहँ उह जाइ तहीं सुख पावै माया तासु न झोलै देव॥
कहि कबीर मेरा मन मान्या राम प्रीति को ओलै देव॥68॥

हरि बिन बैल बिराने ह्नैहै।
चार पाव दुई सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गैहै॥
ऊठत बैठत ठैगा परिहै तब कत मूडलुकेहै॥
फाटे नाक न टूटै का धन कोदौ कौ भूस खैहै॥
सारो दिन डोलत बन महिया अजहु न पेट अघैहै॥
जन भगतन को कही न मानी कीयो अपनो पैहै॥
दुख सुख करत महा भ्रम बूड़ौ अनिक योनि भरमैहै॥
रतन जनम खोयो प्रभु बिसरौं इह अवसर कत पैहैं॥
भ्रमत फिरत तेलक के कपि ज्यों गति बिनु रैन बिहैहै॥
कहत कबीर राम नाम बिन मुंड धूनै पछितैहै॥69॥

चारि दिन अपनी नौबति चले बजाइ।
इतनकु खटिया गठिया मठिया संगि न कछु लै जाइ।
देहरी बैठी मेहरी रोवै हारे लौ संग माइ॥
मरहट लगि सब लोग कुटुंब मिलि हंस इकेला जाइ॥
वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आई॥
कहत कबीर राम को न सिमरहु जन्म अकारथ जाई॥70॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

चोवा चंदन मर्दन अंगा। सो तन जलै काठ के संगा।
इसु तन धन की कौन बड़ाई। धरनि परै उरबारि न जाई॥
रात जि सोवहि दिन करहि काम। इक खिन लेहि न हरि का नाम।
हाथि त डोर मुख खायो तंबोर। मरती बार कसि बांध्यौ चोर॥
गुरु मति रहि रसि हरि गुन गावै। रामै राम रमत सुख पावै॥
किरपा करि के नाम दृढ़ाई। हरि हरि बास सुगंध बसाई॥
कहत कबीर चेते रे अंधा। सत्य राम झूठ सब धंधा॥71॥

जग जीवत ऐसा सूपनौ जैसा जीव सुपन समान।
साचु करि हम गांठ दीनी छोड़ि परम निधान॥
बाबा माया मोह हितु कीन जिन ज्ञान रतन हरि लीन।
नयन देखि पतंग उरझै पसु न देखै आगि॥
काल फास न मुगध चेतै कनि काँमिनि लागि॥
करि बिचारि बिकार परिहरि तुरन तारेन सोइ॥
कहि कबीर जग जीवन ऐसा दुतिया नहीं कोइ॥72॥

जन्म मरन का भ्रम गया गोविंद लिव लागी।
जीवन सुन्नि समानिया नुरु साखी जागी॥
कासी ते धुनी उपजै धुनि कांसी जाई॥
त्रिकुटी संधि मैं पेखिया घटहू घट जागी॥
ऐसी बुद्धि समाचरी घट माही तियागी॥
आप आप जे जागिया तेज तेज समाना॥
कहु कबीर अब जानिया गोविंद मन माना॥73॥

जब जरिये तब होइ भसम तन रहे किरम दल खाई॥
काची गागरि नीर परतु है या तन की इहै बड़ाई॥
काहे भया फिरतो फूला फूला।
जब दस मास उरध मुख रहता सो दिन कैसे भूला॥
ज्यों मधु मक्खी त्यों सठोरि रसु जोरि जोरि धन कीया॥
मरती बार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया॥
देहुरी लौ बरी नारि संग भई आगि सजन सुहेला॥
मरघट लौ सब लगे कुटुंब भयो आगै हंस अकेला॥
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ॥
झूठी माया आप बँधाया ज्यों नलनी भ्रमि सुआ॥74॥

जब लग तेल दीवै मुख बाती तब सूझै सब कोई।
तेल जलै बाती ठहरानी सूना मंदर होई॥
रे बौरे तुहि घरी न राखै कोई तूं राम नाम जपि सोई॥
काकी माता पिता कहु काको कौन पुरुष की जोई॥
घट फूटे कोउ बात न पूछै काढ़हु काढ़हु होई॥
देहुरी बैठ माता रोवै खटिया ले गये भाई॥
लट छिटकाये तिरिया रोवै हंस ईकेला जाई॥

कहत कबीर सुनहु रे संतहु भौसागर के ताईं॥
इस बदे सिर जुलम होत है जम नहीं घटै गुसाईं॥75॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जब लगी मेरी मेरी करै। तब लग काज एक नहि सरै॥
जब मेरी मेरी मिट जाई। तब प्रभु काज सवारहिं आई॥
ऐसा ज्ञान बिचारु मना। हरि किन सिमरहु दुख भंजना॥
जब लगि सिंध रहे बन माहि। तब लग बन फूनई नाहि॥
जब ही स्यार सिंघ कौ खाई। फूल रहीं सगली बनराई॥
जीतौ बूड़े हारो लरै। गुरु परसादि पार उतरै।
दास कबीर कहै समझाई। केवल राम रहहु लिव लाई॥76॥

जब हम एकौ एक करि जानिया। तब लोग कहै दुख मानिया॥
हम अपतह अपनौ पति खोई। हमरै खोज परहु मति कोई॥
हम मंदे मंदे मन माहीं। सांझपाति काहु स्यौं नाहीं॥
पति मा अपति ताकी नहीं लाज। तब जानहुगे जब उधरैगा पाज॥
कहु कबीर पति हरि पखानु। सबर त्यागी भजु केवल रामु॥77॥

जल महि मीन माया के बेधे। दीपक पतंग माया के छेदे॥
काम मया कुंजर को ब्यापै। भुवंगम भुंग माया माहि खापै॥
माया ऐसी मोहनी भाई। जेते जीय तेते डहकाई॥
पंखी मृग माया महि राते। साकर माँखी अधिक संतापे॥
तुरे उष्ट माया महिं मेला। सिध चौरासी माया महि खेला॥
छिय जती माया के बंदा। भवै नाथु सूरज अरु चंदा॥
तपे रखीसर माया महि सूता। माया महि कास अरु पंच दूता॥
स्वान स्याल माया महि राता। बंतर चीते अरु सिंघाता॥
माजर गाडार अरु लूबरा। बिरख सूख माया महि परा॥
माया अंतर भीने देव। नागर इंद्रा अरु धरतेव॥
कहि कबीर जिसु उदर तिसु माया। तब छूटै जब साधु पाया॥78॥

जल है सूतक थल है सूतक सूतक आपति होई॥
जनमे सूतक मूए फुनि सूतक सूतक परज बिगोई॥
कहुरे पंडित कौन पबीता ऐसा ज्ञान जपहु मेरे मीता॥
नैनहु सूतक बैनहु सूतक लागै सूतक परै रसोई॥
ऊठत बैठत सूतक सूतक ôवनी होई॥
फांसन की बिधि सब कोऊ जानै छूटन की इकु कोई॥
कहि कबीर राम रिदै बिचारै सूतक तिनैं न होई॥79॥

जहँ किछू अहा तहाँ किछु नाहीं पंच तत तह नाहीं॥
इड़ा पिंगला सुषमन बदे ते अवगुन कंत जाहीं॥
तागा तूटा गगन बिनसि गया तेरा बोलत कहा समाई।
एह संसा मौको अनदिन ब्यापै मोको कौन कहै समझाई॥
जह ब्रह्मांड पिंड तह नाहीं रचनहार तह नाहीं॥

जोड़नहारी सदा अतीता इह कहिये किसु माहीं॥
जोड़ी जुड़े न तोड़ी तूटै जब लग होइ बिनासी॥
काको ठाकुर काको सेवक को काहू के जासी॥
कहु कबीर लिव लागि रही है जहाँ बसै दिन राती।
वाका मर्म वोही पर जानै ओहु तौ सदा अबिनासी॥80॥

जाके निगम दूध के ठाटा। समुद बिलोवन की माटा।
ताकी होहु बिलोवनहारी। क्यों मिटैगी छाछि तुम्हारी॥
चेरी तू राम न करसि भरतारा। जग जीवन प्रान अधारा॥
तेरे गलहि तौक पग बेरी। तू घर घर रमिए फेरी॥
तू अजहु न चेतसि चेरी। तू जेम बपुरी है हेरी॥
प्रभु करन करावन हारी। क्या चेरी हाथ बिचारी॥
सोई सोई जागी। जितु लाई तितु लागी।
चेरी तै सुमति कहाँ ते पाई। जाके भ्रम की लीक मिटाई॥
सुरसु कबीरै जान्या। मेरो गुरु प्रसाद मन मान्या॥81॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जाकै हरि सा ठाकुर भाई। सु कति अनत पुकारन जाई।
अब कहु राम भरोसा तोरा। तब काहूँ को कौन निहोरा॥
तीनि लोक जाके इहि भार। मो काहे न करै प्रतिपार।
कहु कबीर इक बुद्धि बिचारी। क्या बस जौ बिष दे महतारी॥82॥

जिन गढ़ कोटि किए कंचन के छोड़ गया सो रावन।
काहे कीजत है मन भावन।
जब जम आइ केस ते पकरै तहँ हरि का नाम छुड़ावन॥
काल अकाल खसम का कीना इहु परपंच बधावन॥
कहि कबीर ते अंते मुक्ते जिन हिरदै राम रसायन॥83॥

जिह मुख बेद गायत्री निकसै सो क्यों ब्राह्मन बिसरु करै॥
जाके पाय जगत सब लागै सो क्यों पंडित हरि न कहै॥
काहे मेरे ब्राह्मन हरि न कहहिं रामु न बोलहि पांडे दोजक भरहिं।
आपन ऊँच नीच घरि भोजन हठे करम करि उदर भरहिं।
चौदस अमावस रचि रचि माँगहिं कर दीपक लै कूप परहिं॥
तूँ ब्राह्मन मैं कासी का जुलाहा मोहि तोहिं बराबरि कैसे कै बनहि॥
हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पांडे डूब मरहिं॥84॥

जिह कुल पूत न ज्ञान बिचारी। बिधवा कस न भई महतारी॥
जिह नर राम भगति नहीं साधी। जनमत कस न मुयो अपराधी॥
मुच मुच गर्भ गये कौन बचिया। बुड़भुज रूप जीवे जग मझिया॥
कहु कबीर जैसे सुंदर स्वरूप। नाम बिना जैसे कुबज कुरूप॥85॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

लिह मरनै कब जगत तरास्या। सो मरना गुरु सबद प्रगास्या।
अब कैसे मरो मरम सब मान्या। मर मर जाते जिन राम न जान्या॥
मरनौ मरन कहै सब कोई। सहजे मरै अमर होइ सोई॥
कहु कबीर मन भयो अनंदा। गया भरम रहा परमानंदा॥86॥

जिह सिमरनि होइ मुक्ति दुवारि। जाहि बैकुंठ नहीं संसारि॥
निर्भव के घर बजावहिं तूर। अनहद बजहिं सदा भरपूर॥
ऐसा सिमरन कर मन माहिं। बिनु सिमरन मुक्ति कत नाहिं॥
जिह सिमरन नाहीं ननकारू। मुक्ति करै उतरै बहुभारू॥
नमस्कार करि हिरदय मांहि। फिर फिर तेरा आवन नाहिं॥
जिह सिमरन कहहिं तू केलि। दीपक बाँधि धरो तिन तेल॥
सो दीपक अमर कु संसारि। काम क्रोध बिष काढ़ि ले मार॥
जिह सिमरन तेरी गति होइ। सो सिमरन रखु कंठ पिरोइ॥
सो सिमरन करि नहीं राखि उतारि। गुरु परसादी उतरहिं पार॥
जिह सिमरन नहीं तुहि कान। मंदर सोवहि पटंबरि तानि॥
सेज सुखाली बिगसै जीउ। सो सिमरन तू अनहद पीउ॥
जिह सिमरन तेरी जाइ बलाई। जिह सिमरन तुझ पोह न माई॥
सिमरि सिमरि हरि हरि मन गाइयै। इह सिमरन सति गुरु ते पाइयै॥
सदा सदा सिमरि दिन राति। ऊठत बैठत सासि गिरासि॥
जागु सोई सिमरन रस भोग। हरि सिमरन पाइयै संजोग॥
जिहि सिमरन नाहीं तुझ भाऊ। सो सिमरन राम नाम अधारू॥
कहि कबीर जाका नहीं अंतु। तिसके आगे तंतु न मंतु॥87॥

जिह मुख पाँचो अमृत खाये। तिहि मुख देखत लूकट लाये।
इक दुख राम राइ काटहु मेरा। अग्नि दहै अरु गरभ बसेरा॥
काया बिमति बहु बिधि माती। को जारे को गड़ले मादी॥
कहु कबीर हरि चरण दिखावहु। पाछे ते जम को पठावहु॥88॥

जिह सिर रचि बाँधत पाग। सो सिर चुंच सवारहिं काग॥
इसु तन धन को दया गर्बीया। राम नाम वहि न दृढ़ीया॥
कहत कबीर सुनहु मन मेरे। इही हवाल होहिंगे तेरे॥89॥

जीवत पितरन माने कोऊ मुएं सराद्ध कराहीं।
पीतर भी बपुरे कहु क्यों पावहिं कौआ कूकर खाहीं॥
मोंकौ कुसल बतावहु कोई।
कुसल कुसल करते जग बिनसे कुसल भी कैसे होई।
माटी के करि देवी देवा तिसु आगे जीउ देही॥
ऐसे पितर तुम्हरे कहियहिं आपन कहया न लेही।
सरजीव काटहिं निरजीव पूजहि अंत काल कौ भारी॥
राम नाम की गति नहीं जानी भय डूबे संसारी।
देवी देवा पूजहिं डोलहिं पारब्रहम नहीं जाना॥
कहत कबीर अकुल नहीं चेत्या विषया त्यौं लपटाना।
जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुन्नि समाया।
अंजन माहि निरंजन रहियै बहुरि न भव जल पाया॥90॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

मेरे राम ऐसा खीर बिलोइये।
गुरु मति मनुवा अस्थिर राखहु इन विधि अमृत पिओइये।
गुरु कै बाणी बजर कलछेदी प्रगट्या पर परगासा॥
सक्ति अधेर जेवणी भ्रम चूका निहचल सिव घर बासा॥
तिन बिन बाणै धनुष चढ़ाइयै इहु जग बेध्या भाई।
दस दिसि बूड़ी पावन झुलावै डोरि रही लिव लाई॥
जनमत मनुवा सुन्नि समाना दुबिधा दुर्मति भागी।
बहु कबीर अनुभौ इकु देख्या राम नाम लिव लागी॥91॥

जो जन भाव भगति कछु जाने ताको अचरज काहो।
बिनु जल जल महि पैसि न निकसै तो ढरि मिल्या जुलाहो॥
हरि के लोग मैं तो मति का भोरा।
जो तन कासी तजहिं कबीरा रामहि कहा निहोरा।
कहतु कबीर सुनहु रे लोई भरम न भूलहु कोई॥
क्या कासी क्या ऊसर मगहर राम रिदय जौ होई॥92॥

जेते जतन करत ते डूबे भव सागर नहीं तारौं रे॥
कर्म धर्म करते बहु संजम अहं बुद्धि मन जारो रे॥
सांस ग्रास को दाता ठाकुर सो क्यों मनहुँ बिसारौं रे॥
हीरा लाल अमोल जमन है कौड़ी बदलै हारौं रे॥
तृष्णा तृषा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहिं बिचारौं रे॥
उनमत मान हिरौं मन माही गुरु का सबद न धारौं रे॥
स्वाद लुभंत इंद्री रस प्रेरौं मद रन लेत बिकारौं रे॥
कर्म भाग संतन संगा ते काष्ठ लोह उद्धारौं रे॥
धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारौं रे॥
कहि कबीर गुरु मिलत महा रस प्रेम भगति निस्तारौं रे॥93॥

जेइ बाझु न जीया जाई। जौ मिलै तौ घाल अघाई॥
सद जीवन भलो कहाही। मुए बिन जीवन नाहीं॥
अब क्या कथियै ज्ञान बिचारा। निज निर्खत गत ब्यौहारा॥
घसि कुंकम चंदन गार्या। बिन नयनहु जगत निहार्या॥
पूत पिता इक जाया। बिन ठाहर नगर बनाया।
जाचक जन दाता पाया। सो दिया न जाई खाया॥
छोड़ा जाइ न मूका। औरन पहि जाना चूका॥
जो जीवन मरना जानै। सो पंच सैल सुख मानै॥
कबीरै सो धन पाया। हरि भेट आप मिटाया॥94॥

जैसे मंदर महि बल हरना ठाहरै। नाम बिना कैसे पार उतारै॥
कुंभ बिना जल ना टिकावै। साधू बिन ऐसे अवगत जावै॥
जारौ तिसै जु राम न चेतै। तन तन रमत रहै महि खेतै॥
जैसे हलहर बिना जिमी नहि बोइये। सूत बिना कैसे मणी परोइयै॥

घुंडी बिन क्या गंठि चढ़ाइये। साधू बिन तैसे अवगत जाइयै॥
जैसे मात पिता बिन बाल न होई। बिंब बिना कैसे कपरे धोई॥
घोर बिना कैसे असवार। साधू बिन नाहीं दरबार॥
जैसे बाजे बिन नहीं लीजै फेरी। खमस दुहागनि तजिहौ हेरी॥
कहै कबीर एकै करि जाना। गुरुमुखि होइ बहुरि नहीं मरना॥95॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जोइ खसम है जाया।
पूत बाप खेलाया। बिन रसना खीर पिलाया।
देखहु लोगा कलि को भाऊ। सुति मुकलाई अपनी माऊ॥
पग्गा बिन हुरिया मारता। बदनै बिन खिन खिन हासता॥
निद्रा बिन नरु पै सोवै। बिन बासन खीर बिलोवै॥
बिनु अस्थन गऊ लेबेरी। पंडे बिनु घाट घनेरी॥
बिन सत गुरु बाट न पाई। कहु कबीर समझाई॥96॥

जो जन लेहि खमस का नाउ। तिनकै सद बलिहारै जाउ॥
सो निर्मल हरि गुन गावै। सो भाई मेरे मन भावै॥
जिहि घर राम रह्या भरपूरि। तिनकी पग पंकज हम धूरि॥
जाति जुलाहा मति का धीरू। सहजि सहजि गुन रमै कबीरू॥
जो जन परमिति परमनु जाना। बातन ही बैकुंठ समाना॥
ना जानौं बैकुंठ कहाहीं। जान न सब कह हित हाही॥
कहन कहावत नहिं पतियैहै। तौ मन मानै जातेहु मैं जइहै॥
जब लग मन बैकुंठ की आस। तब लगि होहिं नहीं चरन निवास॥
कहु कबीर इह कहियै काहि। साध संगति बैकुंठै आहि॥97॥

जो पाथर को कहिते देव। ताकी बिरथा होवै सेव॥
जो पाथर की पांई पाई। तिस की घाल अजाई जाई॥
ठाकुर हमरा सद बोलंता। सबै जिया को प्रभ दान देता॥
अंतर देव न जानै अंधु। भ्रम को मोह्या पावै फंधु॥
न पाथर बोलै ना किछु देइ। फोकट कर्म निहफल है सेइ॥
जे मिरतक के चंदन चढ़ावै। उससे कहहु कौन फल पावैं॥
जो मिरतक को विष्टा मांहिं सुलाई। तौ मिरतक का क्या घटि जाई॥
कहत कबीर हौ करहुँ पुकार। समझ देखु साकत गावार॥
दूजै भाइ बहुत घर घाले। राम भगत है सदा सुखाले॥98॥

जो मैं रूप किये बहुतेरे अब फुनि रूप न होई।
ताँगा तंत साज सब थाका राम नाम बसि होई॥
अब मोहि नाचनो न आवै। मेरा मन मंदरिया न बजावै॥
काम क्रोध काया लै जारौ तृष्णा गागरि फूटी।
काम चोलना भया है पुराना गया भरम सब छूटी॥
सर्व भूत एक करि जान्या चूके बाद बिबादा।
कहि कबीर मैं पूरा पाया भये राम परसादा॥99॥

जो तुम मोकौ दूरि करत हौ तौ तुम मुक्ति बतावहुगे॥
एक अनेक होइ रह्यो सकल महि अब कैसे भर्मावहुगे॥
राम मोकौ तारि कहाँ लै जैहै।
सोधौ मुक्ति कहा देउ कैसी करि प्रसाद मोहि पाइहै।
तारन तरन कबै लगि कहिये जब लगि तत्व न जान्या॥
अब तौ विमल भए घट ही महि कहि कबीर मन मान्या॥100॥

ज्यों कपि के कर मुष्टि चरन की लुब्धि न त्यागि दयो।
जो जो कर्म किये लालच स्यों ते फिर गरहि परो॥
भगति बिनु बिरथे जनम गयो।
साध संगति भगवान भजन बिन कही न सच्च रह्यो॥
ज्यों उद्यान कुसुम परफुल्लित किनहि न घ्राउ लयो॥
तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हयो॥
या धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कौ जु दयो॥
तिनहीं माहि अटकि जो उरझें इंद्री प्रेरि लयो॥
औध अनल तन तिन को मंदर चह दिसि ठाठ ठयो॥
कहि कबीर भव सागर तरन कौ मैं सति गुरु ओट लयो॥101॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

ज्यों जल छोड़ि बाहर भयो मीना। पूरब जनम हौं तप का हीना॥
अब कहु राम कवन गति मोरी। तजीले बनारस मति भई थोरी॥
सकल जनम सिवपुरी गवाया। मरती बार मगहर उठि आया॥
बहुत बरस तप कीया कासी। मरन भया मगहर कौ बासी॥
कासी मगहर सम बीचारी। ओछी भगति कैसे उतरसि पारी॥
कहु गुरु गजि सिव सबको जामै। मूवा कबीर रमत श्रीरामै॥102॥

ज्योति की जाति जाति की ज्योति। तितु लागे कंचुआ फल मोती।
कौन सुघर जो निभौं कहियै। भव भजि जाइ अभय ह्नै रहियै॥
तट तीरथ नहि मन पतियाइ। चार अचार रहे उरझाइ।
पाप पुन्य दुइ एक समान। निज घर पारस तजहु गुन आन॥103॥

टेढ़ी पाग टेढ़े चले लागे बीरे खान॥
भाउ भगति स्यो काज न कछु ए मेरो काम दीवान॥
राम बिसारौं है अभिमानी।
कनक कामिनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानी।
लालच झूठ बिकार महा मद इह विधि औध बिहानी॥
कहि कबीर अंत की बेर आई लागौ काल निदानी॥104॥

डंडा मुद्रा खिंथा आधारी। भ्रम कै भाई सबै भेषधारी।
आसन पवन दूरि करि बवरे। छोड़ि कपट नित हरि भज बवरे॥
जिह तू याचहि सो त्रिभुवन भोगी। कहि कबीर कैसो गज जोगी॥105॥

तन रैनी मन पुनरपि करिहौ पाचौ तत्व बराती॥

राम राइ स्यों भांवरि लैंहो आतम तिह रंगराती॥
गाउ गाउ री दुलहिनी मंगलचारा।
मेरे गृह आये राजा राम भतारा॥
नाभि कमल मुहि बेदी रचि ले ब्रह्म ज्ञान उच्चारा॥
राम राइ स्यों दूल्हो पायो अस बड़ भाग हमारा॥
सुर नर मुनि जन कौतक आये कोटि तैतीसो जाना॥
कहि कबीर मोहि ब्याहि चले हैं पुरुष एक भगवाना॥106॥

तरवर एक अनंत डार साखा पुहुप पत्रा रस भरिया॥
इह अमृत की बाड़ी है रे तिन हरि पूरै करिया॥
जानी जानी रे राजा राम की कहानी।
अंतर ज्योति राम परगासा गुरु मुख बिरलै जानी॥
भवर एक पुहुप रस बीधा बार हले उर धरिया॥
सोरह मध्ये पवन झकोरो आकासे फर फरिया॥
सहज सुन्न इक बिरवा उपज्या धरती जलहर सोख्या॥
कहि कबीर हौ ताका सेवक जिनका इहु बिरवा देख्या॥107॥

टूटे तागे निखुटी पानि। द्वार ऊपर झिलिकावहि कान॥
कूच बिचारे फूए फाल। या मुंडिया सिर चढ़िबो कान॥
इहु मुंडिया सगलो द्रव खोई। आवत जात ना कसर होई॥
तुरी नारि की छोड़ि बाता। राम नाम वाका मन राता॥
लरिकी लरिकन खैबो नाहि। मुंडिया अनुदिन धाये जाहि॥
इक दुइ मंदर इक दुइ बाट। हमकौ साथरु उनको खाट॥
मूंड पलोसि कमर बंधि पोथी। हमकौ चाबन उनकौ रोटी॥
मुंडिया मुंडिया हुए एक। ए मुंडिया बूडत की टेक॥
सुनि अधली लोई बेपीर। इस मुंडियन भजि सरन कबीर॥108॥

तू मेरो मेरु परबत सुवामी ओट गही मैं तेरी॥
ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी॥
अब तब जब तूही तूही। हम तुम परसाद सुखी सदाहीं॥
तोरे भरोसे मगहर बसियो। मेरे तन की तपति बुझाई॥
पहिले दर्सन मगहर पायो। फुनि कासी बसे आई।
जैसा मगहर तैसा कासी हम एकै करि जानी॥
हम निर्धन ज्यों इह धन पाया मरते फूटि गुमानी॥
करे गुमान चुभहिं तिसु सूला कोऊ काढ़न कौ नाहीं॥
अजै सुचोभ को बिलल बिलाते नरके घोर पचाहीं॥
कौन नरक क्या स्वर्ग बिचारा संतन दोऊ रादे॥
हम काहू की काणि न कढ़ते अपने गुरु परसादे॥
अब तौ जाइ चढ़े सिंहासन मिलिहैं सारंगपानी॥
राम कबीरा एक भये हैं कोई न सकै पछानी॥109॥

थरथर कंपै बाला जीउ। ना जानौ क्या करसी पीउ॥
रैनि गई मति दिन भी जाइ। भवर गये बग बैठे आइ॥
काचै करबै रहै न पानी। हंस चला काया कुम्हिलानी॥

क्वारी कन्या जैसे करत सिंगारा। क्यों रलिया मानै बोझ भतारा॥
काग उड़ावत भुजा पिरानी। कहि कबीर इह कथा सिरानी॥110॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

थाके नयन òवण सुनि थाके थाकी सुंदर काया।
जरा हाक दी सब मति थाकी एक न थाकिस माया॥
बावरै तै ज्ञान बिचार न पाया बिरथा जनम गंवाया॥
तब लगि प्रानी तिसे सरेबहु जब लगि मही सांसां॥
जे घट जाइत भाव न जासी हरि के चरन निवासा॥
जिसको सबद बसावै अंबर चूकहि तिसहि पियासा॥
हुक्मैं बूझै चौपड़ी खेलै मन जिन ढाले पासा॥
जो मन जनि भजहि अवगति कौ तिनका कछू न नासा॥
कहु कबीर ते जन कबहु न हारहिं ढालि जु जानहिं पासा॥111॥

दरमादे ठाढ़े दरबारि।
तुझ बिन सुरति करै को मेरी दर्सन दीजै खोलि किवार॥
तुम धन धनी उदार तियारी òवनन सुनियत सुजस तुमार॥
माँगौ काहि रंक सब देखौ तुम ही ते मेरो निसतार।
जयदेव नामा बिष्प सुदामा तिनकौ कृपा भई है अपार॥
कहि कबीर तुम समरथ दाते चारि पदारथ देत न बार॥112॥

दिन ते पहर पहर ते घरियाँ आयु घटै तनु छीजै।
कौल अहेरी फिरहि बधिक ज्यों कहहु कौन बिधि कीजै॥
सो दिन आवन लागा।
माता पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है काका।
जग लगु जोति काया महि बरतै आपा पसू न बूझै॥
लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै।
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोड़हु मन के भरमा॥
केवल नाम जपहु रे प्रानी परहु एक ही सरना॥113॥

दीन बिसारो रे दीवाने दीन बिसारो।
पेट भरो पसुआ ज्यों सोयो मनुष जनम है हारो॥
साध संगति कबहु नहिं कीनी रचियो धंधै झूठ॥
स्वान सूकर बायस सम जीवै भटकत चाल्यो ऊठि॥
आपन की दौरघ करि जानै औरन कौ लघु मान॥
मनसा वाचा करमना मैं देखे दोजक जान॥
कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम॥
निंदा करते जनम सिरानी कबहु न सिमरो राम॥
कहि कबीर चेतै नहिं मूरख मुगंध गवार।
राम नाम जानियो नहीं, कैसे उतरसि पार॥114॥

दुइ दुइ लोचन पेखा। हौं हरि बिन और न देखा॥
नैन रहे रंग लाई। अब बेगल कहन न जाई॥

हमारा भर्म गया भय भागा। जब राम नाम चितु लागा॥
बाजीगर डंक बजाई। सब खलक तमासे आई॥
बाजीगर स्वांग सकेला। अपने रंग रवै अकेला॥
कथनी कहि धर्म न जाई। सब कथि कथि रही लुकाई॥
जाकौ गुरु मुखि आप बुझाई। ताके हिरदै रह्या समाई॥
गुरु किंचित किरपा कीनी। सब तन मन देह हरि लीनी॥
कहि कबीर रंगि राता। मिल्यो जग जीवनदाता॥115॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

दुनिया हुसियार बेदार जगत मुसियत हौरे भाई॥
निगम हुसियार पहरुआ देखत जम ले जाई॥
नीबु भयो आंबु आंबु भयो नींबा केला पाका झारि॥
नालिएर फल सेबरिया पाका मूरख मुगध गवार॥
हरि भयो खांडु रे तुमहि बिखरियो हस्ती चुन्यो न जाई।
कहि कबीर कुल जाति पांति तजि चींटी होइ चुनि खाई॥116॥

देखो भाई ज्ञान की आई आँधी।
सबै उड़ानी भ्रम की टाटी रहै न माया बाँधी॥
दुचिते की दुई थूनि गिरानीं मोह बलेड़ा टूटा॥
तिष्णा छानि परी घर ऊपर दुमिति भाँड़ा फूटा॥
आँधी पाछै जो जल बर्षै तिहि तेरा जन भींना॥
कहि कबीर मग भया प्रगासा उदय भानु जब चीना॥117॥

देइ मुहार लगाम पहिरावौ। सगल के पावड़े पग धरि लीजै॥
अपने बिचारै असवारी कीजै। सहज के पावड़े पग धरि लीजै॥
चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारी। हित चित प्रेम के चाबुक मारी॥
कहत कबीर भले असवारा। बेद कतेब ते रहहि निरारा॥118॥

देही गावा जीउ धर्म हत उवसहि पंच किरसाना॥
नैनू नकटू ôवन रसपति इंद्री कह्या न माना॥
बाबा अब न बसहु इहु गाउ।
घरी घरी का लेखा माँगै काइथु चेतू नाउ।
धर्मराय जब लेखा माँग बाकी निकसी भारी॥
पच कृसनवा भागि गये लै बाध्यौ जोउ दरबारी॥
कहहि कबीर सुनहु रे संतहु खेतहि करौ निबेरा॥
अबकी बार बखसि बंदे कौ बहुरि न भव जल फेरा॥119॥

धन्न गुपाल धन्न गुरुदेव। धन्न अनादि भूखे कब लुटह केव॥
धन औहि संत जिन ऐसी जानी। तिनको मिलिबो सारंगपानी॥
आदि पुरुष ते होई अनादि। जपियै नाम अन्न कै सादि॥
जपियै नाम जपियै अन्न। अभै कै संग नीका बन्न॥
अन्ने बाहर जो नर होवहिं। तीनि भवन महि अपनो खोवहिं॥
छोड़हि अन्न करै पाखंड। ना सोहागनि ना बोहि रंग॥

जग महि बकते दूधाधारी। गुप्ती खावहि बटिका सारी॥
अन्नै बिना न होइ सुकाल। तजियै अन्न न मिलै गुपाल॥
कहु कबीर हम ऐसे जान्या। धन्न अनादि ठाकुर मन मान्या॥120॥

नगन फिरत जो पाइये जोग। बनका मिरग मुकति सब होग॥
क्या नागे क्या बांधे चाम। जब नहिं चीन्हसि आतम राम॥
मूँड़ मुडांए जो सि;ि पाई। मुक्ती भेड़ न गय्या काई॥
बिंदु राख जो तरयै भाई। खुसरै क्यों न परम गति पाई॥
कहु कबीर सुनहु नर भाई। राम नाम बिन किन गति पाई॥121॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

नर मरै नर काम न आवै। पशु मरैदस काज संवारे॥
अपने कर्म की गति मैं क्या जानी। मैं क्या जानौ बाबा रे॥
हाड़ जले जैसे लकड़ी का तूला। केस जले जैसे घास का पूला॥
कहत कबीर तबही नर जागै। जम का डंड मुँड़ महि लागै॥122॥

नाँगे आवत नाँगे जाना। कोई न रहिहै राजा राना॥
राम राजा नव निधि मेरे। संपै हेतु कलतु धन तेरै॥
आवत संग न जात संगाती। कहा भयो दर बाँधे हाथी॥
लंका गढ़ सोने का भया। मूरख रावन क्या ले गया॥
कह कबीर कुछ गुन बीचारि। चलै जुआरी दुइ हथ झारि॥123॥

नाइक एक बनजारे पांच। बरध पचीसक संग काच॥
नव बहियाँ दस गोनी आहि। कसन बहत्तरि लागी ताहि॥
मोहि ऐसे बनज स्यो ही काजु। जिह घटै मूल नित बढ़ै ब्याजु॥
सत सूत मिलि बनजु कीन। कर्म भावनी संग लीन॥
तीनि जगाती करत रारि। चलो बनजारा हाथ झारि॥
पूँजी हिरानी बनजु टूटि। दह दिस टाँडो गयो फूटि॥
कहि कबीर मन सरसी काज। सहज समानी त भर्म भाजि॥124॥

ना इहु मानुष ना इहु देव। ना इहु जती कहावै सेव॥
ना इहु जोगी ना अवधूता। ना इसु माइ न काहू पूता॥
या मंदर मह कौन बसाई। ता का अंत न कोऊ पाई॥
ना इहु गिरही ना ओदासी। ना इहु राज न भीख मँगासी॥
ना इहु पिंड न रकत् राती। ना इहु ब्रह्मन ना इहु खाती॥
ना इहु तया कहावै सेख। ना इहु जीवै न मरता देख॥
इसु मरते को जे कोऊ रोवै। जो रोवै सोई पति खोवै॥
गुरु प्रसादि मैं डगरो पाया। जीवन मरन दोऊ मिटवाया॥
कहु कबीर इहु राम की अंसु। उस कागद पर मिटै न मंसु॥125॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

ना मैं जोग ध्यान चित लाया। बिन बैराग न छूटसि माया॥

कैसे जीवन होइ हमारा। जब न होइ राम नाम अधारा॥
कहु कबीर खोजौं असमान। राम समान न देखौ आन॥126॥

निंदौ निंदौ मोकौ लोग निंदौ। निंदौ निंदौ मोकौ लोग निंदौ॥
निंदा जन को खरी पियारी। निंदा बाप निंदा महतारी॥
निंदा होय त बैकुंठ जाइयै। नाम पदारथ मनहि बसाइयै॥
रिदै सुद्ध जौ निंदा होइ। हमरे कमरे निंदक धोइ॥
निंदा करै सु हमरा मीत। निंदक माहिं हमारा चीत॥
निंदक सो जो निंदा होरै। हमरा जीवन निंदक लोरै॥
निंदा हमरी प्रेम प्रियार। निंदा हमरा करै उधार॥
जन कबीर कौ निंदा सार। निंदक डूबा हम उतरे पार॥127॥

नित उठि कारि गागरिया लै लीपत जनम गयो॥
ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रस लपट्यो॥
हमरे कुल कौने राम कह्यो॥
जब की माला लई निपूते तब ते सुख न भयो॥
सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो॥
सात सूत इन मुंडिये खोये इहु मुंडिया क्यों न भयो॥
सर्व सखा का एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दयो॥
संत प्रह्लाद की पैज निज राखी हरनाखसु नख बिदरो॥
घर के देव पितर की छोड़ो गुरु को सबद लयो॥
कहत कबीर सकल पाप खंडन संतह ले उधरो॥128॥

निर्धन आदर कोई न देई। लाख जतन करै ओहु चित न धरेई॥
जौ निर्धन सरधन कै जाई। आगै बैठा पीठ फिराई॥
जौ सरधन निर्धन कै जाई। दीया आदर लिया बुलाई॥
निर्धन सरधन दोनों भाई। प्रभु की कला न मेटी जाई।
कहि कबीर निर्धन है सोई। जाकै हिरदै नाम न होई॥129॥

पंडित जन माते पढ़ि पुरान। जोगि माते जोग ध्यान॥
संन्यासी माते अहमेव। तपसी माते तप के भेव॥
सब मदमाते कोऊ न जाग। संग ही चोर घर मुसन लाग॥
जागै सुकदेव अरु अक्रूर। हणवंत जाग धरि लंकूर॥
संकर जागे चरन सेव। कलि जागे नामा जैदेव॥
जागत सोवत बहु प्रकार। गुरु मुखि जागे सोई सार॥
इह देही के अधिक काम। कहि कबीर भजि राम नाम॥130॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

पंडिया कौन कुमति तुम लागे।
बूड़हु गे परवार सकल स्यो राम न जपहु अभागे॥
वेद पुरान पढे का किया गुन खर चंदन जस भारा॥
राम नाम की गति नहीं जानी कैसे उतरसि पारा॥
जीव बधहु सुधर्म करि थापहु अधर्म कहौ कत भाई॥

आपस को मुनि वर करि थापहु काकहु कहौ कसाई॥
मन के अंधे आपि न बूझहु का कहि बुझावहु भाई।
माया कारन विद्या बेचहु जनम अबिर्था जाई॥
नारद बचन बियास कहत है सुक कौ पूछहु जाई॥
कहि कबीर रामहि रमि छूटहु नाहिं त बूड़े भाई॥131॥

पंथ निहारै कामनी लोचनि भरि लेइ उसासा॥
उर न भीजै पग ना खिसै हरि दर्सन की आसा॥
उड़हु न कागा कारे बेग। मिलीजै अपने राम प्यारे॥
कहि कबीर जीवन पद कारन हरि की भक्ति करीजै॥
एक अधार नाम नारायण रसना राम रबीजै॥132॥

पंद्रह तिथि सात बार। कहि कबीर उर वार न पार॥
साधक सिद्ध लखै जौ भेउ। आपे करता आपे देउ॥
अम्मावस महि आय निवारौ। अंतर्यामी राम समारहु॥
जीवत पावहु मोख दुबारा। अनभौ सबद तत्व निज सारा॥

चरन कमल गोविंद रंग लागा।
संत प्रसाद भये मन निर्मल। हरि कीर्तन महिं अनदिन जागा॥
परवा प्रीतम करहु बीचार। घट महिं खेलै अघट अपार॥
काल कल्पना कदे न खाइ। आदि पुरुष महि रहै समाइ॥
दुतिया दुइ करि जानै अंग। माया ब्रह्म रमै सब संग॥
ना ओहु बढ़ै न घटता जाइ। अकुल निरंजन एकै भाइ॥
तृतीया तीने सम करि ल्यावै। आनंद मूल परम पद पावै॥
साध संगति उपजै बिस्वास। बाहर भीतर सदा प्रगास॥
चौथहि चंचल मन को गहहु। काम क्रोध संग कबहु न बहहू॥

टिप्पणी : एक दूसरे स्थान पर यह पद इस प्रकार आरंभ होता है, 'बड़ी आकबत कुमति तुम लोग' शेष सब ज्यों का त्यों है। मूल प्रति में जो 39 नंबर का पद है वह भी कुछ थोड़े से हेर फेर के साथ ऐसा ही है।

जल थल माहें आपही आप। आपै जपहु अपना जाप॥
पांचे पंच तत्त बिस्तार। कनक कामिनि जुग ब्योहार॥
प्रेम सुधा रस पीवै कोई। जरा मरण दुख फेरि न होई॥
छटि षट चक्र चहूँ दिसि धाइ। बिनु परचै नहीं थिरा रहाइ॥
दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु। कर्म धर्म की सूल न सहहु॥
सातै सति करि बाचा जाणि। आतम राम लेहु परवाणि॥
छूटै संसा मिटि जाहि दुक्ख। सुन्य सरोवरि पावहु सुक्ख॥
अष्टमी अष्ट धातु की काया। तामहिं अकुल महा निधि राया॥
गुरु गम ज्ञान बतावै भेद। उलटा रहै अभंग अछेद॥
नौमी नवै द्वार कौ साधि। बहती मनसा राखहु बाँधि॥
लोभ मोह सब बीसरी जाहु। जुग जुग जीवहु अमर फल खाहु॥
दसमी दस दिसि होइ अनंदा। छूटै भर्म मिलै गोबिंदा॥
ज्योति स्वरूप तत्त अनूप। अमल न मल न छाँह नहिं धूप॥
एकादसी एक दिसि धावै। तौ जोनी संकट बहुरि न आवै॥

सीतल निर्मल भया सरीरा। दूरि बतावत पाया नीरा॥
बारसि बारहौ गवै सूर। अहि निसि बाजै अनहद तूर॥
देख्या तिहूँ लोक का पीउ। अचरज भया जीव ते सीउ॥
तेरसि तेरह अगम बखाणि। अर्द्ध अर्द्ध बिच सम पहिचाणि॥
नीच ऊँच नह मान प्रमान। ब्यापक राम सकल सामान॥
चौदसि चौदह लोक मझारि। रोम रोम महि बसहिं मुरारि॥
सत संतोष का धरहु धियान। कथनी कथियै ब्रह्म गियान॥
पून्यो पूरा चंद्र अकास। पसरहिं कला सहज परगास॥
आदि अंत मध्य होइ रह्या बीर। सुखसागर महि रमहिं कबीर॥133॥

पहिला पूत पिछैरी माई। गुरु लागो चेले की पाई॥
अचंभौ सुनहु तुम भाई। देखत सिंह चरावत गाई॥
जल की मछुली तरवर ब्याई। देखत कुतरा लै गई बिलाई॥
तलेरे वैसा ऊपर सूला। तिसकै पेड़ लगै फल फूला॥
घोरै चरि भैस चरावन जाई। बाहर बैल गोनि घर आई॥
कहत कबीर जो इस पद बूझै। राम रमत तिसु सब किछु सूझै॥134॥

पहिली कुरूप कुजाति कुलक्खनी साहुरै पेइयै बुरी।
अब की सरूप सुजाति सुलक्खनी सहजे उदरधरी॥
भत्ती सरी मुई मेरी पहली बरी।
जुग जुग जीवो मेरी अबकी धरी॥
कहु कबीर जब लहुरी आई बड़ी का सुहाग टरो।
लहुरी संग भई अब मेरे जेठी और धरो॥135॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

पाती तैरे मालिनी पाती पाती जीउ।
जिसु पाहन कौ पाती तोरै सो पाहनु निरजीउ॥
भूली मालिनी है एउ सति गुरु जागता है दोउ।
ब्रह्म पाती बिस्नु डारी फूल संकर देव।
तीन देव प्रतख्य तोरहि करहिं किसकी सेव॥
पाषान गढ़ि के मूरति कीनी देकै छाती पाउ।
जे एइ मूरति साची है तो गड़णहारे खाउ॥
भातु पहिति और लापसी करकरा का सारु॥
भोगनु हारे भोगिया इसु मूरति के मुख छार॥
मालिन भूलि जग भुलाना हम भुलाने नाहि॥
कहु कबीर हम राम राखे कृपा करि हरि राइ॥136॥

पानी मैला माटी गोरी। इस माटी को पुतरी जोरी॥
मैं नाहीं कछु आहि न मोरा। तन धन सब रस गोबिंद तोरा॥
इस माटी महि पवन समाया। झूठा परपंच जोरि चलाया॥
किनहू लाख पाँच की जोरी। अंत की बाट गगरिया फोरी॥
कहि कबीर इक नीवौ सारी। खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी॥137॥

पाप पुन्य दोइ बैल बिसाहे पवन पूँजी परगास्यो॥
तृष्णा गूणि भरी घट भीतर इन बिधि टाँड बिसाह्यो॥
ऐसा नायक राम हमारा सकल संसार कियो बंजारा॥
काम क्रोध दुइ भये जगाती मन तरंग बटवारा॥
पंच तत्तु मिलि दान निबेरहिं टाडा उतरो पारा॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई॥
घाटी चढ़त बैल इक थाका चलो गोनि छिटकाई॥138॥

पंड मुए जिउ किहि घर जाता। सबद अतीत अनाहद राता॥
जिन राम जान्या तिन्ही पछान्या। ज्यों गूँगे साकर मन मान्या॥
ऐसा ज्ञान कथै बनवारी। मन रे पवन दृढ़ सुषमन नाड़ी॥
सो गुरु करहु जि बहुरि न करना। सो पद रवहु जि बहुरि न रवना॥
सो ध्याना धरहु जि बहुरि न धरना। ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना॥
उलटी गंगा जमुन मिलावौ बिनु जल संगम मन महिं नावौ॥
लोचा सम सरिहहु ब्योहारा। तत्तु बिचारि क्या अवर बिचारा॥
अप तेज वायु पृथवी अकासा। ऐसी रहनि रहौ हरि पासा॥
कहै कबीर निरंजन ध्यावौ। तित घर जाहु जि बहुरि न आवौ॥139॥

पेवक दै दिन चारि है साहुरडे जाणा।
अंधा लोक न जाणई मूरखु एयाणा॥
कहु डडिया बाँधे धन खड़ी। याहूँ घर आये मूकलाऊ आये॥
ओह जि दिसै खूहड़र कौ न लाजु बहारी।
लाज घड़ी स्यो टूटि पड़ी उठि चलि पनिहारी॥
साहिब होइ दयाला कृपा करे अपना कारज सवारें
ता सोहागणि जानिए गुरु सबद बिचारै॥
किरत कौ बाँधी सब फिरै देखहु बिचारी।
एसनो क्या आखियै क्या करे बिचारी॥
भई निरासी उठि चली चित बँधी न धीरा।
हरि का चरणी लागि रहु भजु सरण कबीरा॥140॥

प्रहलाद पठाये पठन साल। संगि सखा बहु लिए बाल॥
मोकौ कहा पढ़ावसि आल जाल। मेरी पटिया लिखि देहु श्रीगोपाल॥
नहीं छोड़ौ रे बाबा राम नाम। मेरो और पढ़न स्यो नहीं काम॥
संडै मरकै कह्यौ जाइ। प्रहलाद बुलाये बेगि धाइ॥
तू राम कहन की छोडु बानि। तुझ तुरत छड़ाऊँ मेरो कह्यो मानि॥
मोकौ कहा सतावहु बार बार। प्रभु भज थल गिर किये पहार॥
इक राम न छोड़ौ गुरुहि गारि। मोकौ घालि जारि भाखै मारि डांरि॥
काढ़ि खड्ग कोप्यो रिसाइ। तुझ राखनहारो मोहि बताइ॥
प्रभु थंभ ते निकसे कै बिस्तार। हरनाखस छेद्यो नख बिदार॥
ओइ परम पुरुष देवाधिदेव। भगत हेत नरसिंघ भेव॥
कहि कबीर का लखै न पार। प्रहलाद उबारे अनिक बार॥141॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

फील रबाबी बलुद पखावज कौआ ताल बजावै।
पहरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै॥
राजा राम क करिया बरपे काये। किनै बूझन हारे खाय॥
बैठि सिंघ घर पान लगावहिं घीस गल्योरे लावै॥
घर घर मुसरी मंगल गावहि कछुआ संख बजावै॥
बंस को पूत बिआहन चलिया सुइने मंडप छाये॥
रूप कन्निया सुंदर बेधी ससै सिंह गुन गाये॥
कहत कबीर सुनहु रे पंडित कीटी परबत खाया॥
कछुआ कहै अंगार भिलोरौ लूकी सबद सुनाया॥142॥

फुरमान तेरा सिरै ऊपर फिरि न करत बिचार।
तुही दरिया तुही करिया तुझै ते निस्तार॥
बंदे बंदगी इकतीयार। साहिब रोष धरौ कि पियार॥
नाम तेरा अधार मेरा जिउ फूल जइहै नारि॥
कहि कबीर गुलाम घर का जीआइ भावै मारि॥143॥

बंधचि बंधनु पाइया। मुकतै गुरि अनल बुझाइया।
जब नख सिख इहु मनु चीना। तब अंतर मंजनु कीना॥
पवन पति उनमनि रहनु खरा। नहीं मिसु न जनमु जरा।
उलटौ ले सकति संहार। फैसीले गगन मझार॥
बेधिय ले चक्र भुअंगा। भेटिय ले राइन संगा॥
चूकिय ले मोह मइ आसा। ससि कीनो सूर गिरासा॥
जब कुंभ कुभरि पुरि जीना। तब बाजे अनहद बीना॥
बकतै बकि सबद सुनाया। सुनतै सुन माल बसाया॥
करि करता उतरसि पारं। कहै कबीरा सारं॥144॥

बटुआ एक बहत्तरि आधारी एको जिसहि दुबारा।
नवै खंड की प्रथमी माँगै सो जोगी जगसारा॥
ऐसो जोगी नव निधि पावै तल का ब्रह्म ले गगन चरावै॥
खिंथा ज्ञान ध्यान करि सूई सबद ताग मथि घालै॥
पंच तत्व की करि मिरगाणी गुरु कै मारग चालै॥
दया फाहुरी काया करि धूई दृष्टि की जलावै॥
तिसका भाव लए रिद अंतर चहु जुग ताड़ी लावै॥
सभ जोगत्तण राम नाम है जिसका पिंड पराना।
कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना॥145॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

बनहि बसे क्यों पाइये जौ लौ मनहु न तजै बिकार॥
जिह घर बन समसरि किया ते पूरे संसार॥
सार सुख पाइये रामा रंगि रवहु आतमै रामा॥
जटा भस्म लै लेपन किया कहा गुफा महि बास॥
मन जीते जग जीतिया ते बिषिया ते होइ उदास॥
अंजन देइ सब कोई टुक चाहन माहिं विडानु॥

ज्ञान अंजन जिह पाइया ते लोइन परवानु॥
कहि कबीर अब जानिया गुरु ज्ञान दिया समुझाइ॥
अंतर मति हरि भेटिया अब मेरा मन कतहु न जाइ॥146॥

बहुत प्रपंच करि परधन ल्यावै। सुत दारा पहि आनि लुटावै॥
मन मेरे भूले कपट न कीजै। अंत निबेरा तेरे जोय पहि लीजै॥
छिन छिन तन छीजै जरा जनावै। तब तेरी ओक कोई पानियो न पावै॥
कहत कबीर कोई नहीं तेरा। हिरदै राम किन जपहि सबेरा॥147॥

बाती सूखी तेल निखूटा। मंदल न बाजै नट सूता॥
बुझि गई अगनि न निकस्यो धूआ। रवि रह्या एक अवर नहीं दूजा॥
तूटी तंतु न बजै रबाव। भूलि बिगरो अपना काज॥
कथनी बदनी कहन कहावन। समझ परी तो बिसरौं गावन॥
कहत कबीर पंच जो चूरे। तिनते नाहिं परम पद दूरे॥148॥

बाप दिलासा मेरो कीना। सेज सुखाली मुखि अमृत दीना॥
तिसु बाप कौ मनहु बिसारी। आगे गया न बाजी हारी॥
मुई मेरी माई हौ खरा सुखाला। पहिरौ नहीं दगली लगै न पाला॥
बलि तिसु बापै जिन हौ जाया। पंचा ते तेरा मेरा संग चुकाया॥
पंच मारि पावा तलि दीने। हरि सिमरन मेरा मन तन भीने॥
पिता हमारो बहु गोसाई। तिसु पिता पहिं हौ क्यों करि जाई॥
सति गुरु मिले ता मारग दिखाया। जगत पिता मेरे मन भाया॥
हौ पूत तेरा तू बाप मेरा। एकै ठाहरि दुहा बसेरा॥
कह कबीर जनि एको बूझिया। गुरु प्रसाद मैं कछु सूझिया॥149॥

बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कियो।
तीस बरस कछु देव न पूजा फिर पछुताना बिरध भयो॥
मेरी मेरी करते जनम गयो। साइर सोखी भुंज बलयो॥
सूके सरबर पालि बँधावै लूणे खेत हथवारि करै॥
आयो चोर तुरत ही ले गयो मेरी राखत मुगध फिरै॥
चरन सीस कर कंपन लागे नैनों नीर असार बहै॥
जिहिवा बचन सुद्ध नहीं निकसै तब रे धरम की आस करै॥
हरि जी कृपा करि लिव लावै लाहा हरि हरि नाम लियो॥
गुरु परसादी हरि धन पायो अंते चल दिया नालि चल्यो॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु अन धन कछु ऐलै न गयो।
आई तलब गोपाल राइ की माया मंदर छोड़ चल्यौ॥150॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

बावन अक्षर लोक त्राय सब कछु इनहीं माहि।
जे अक्खर खिरि जाहिगे ओइ अक्खर इन महिं नाहिं॥

जहाँ बोल तह अक्खर आवा। जहँ अबोल तहं मन न रहावा॥
बोल अबोल मध्य है सोई। जस ओहु है तस लखै न कोई॥

अलह लहौ तौ क्या कहौ कहौ तो को उपकार।
बटक बीजि महि रबि रह्यौ जाको तीनि लोक बिस्तार॥
अलह लहता भेद छै कछु कछु पाया भेद।
उलटि भेद मन बेधियो पायो अभंग अछेद॥॥
तुरक तरीकत जानियै हिंदू बेद पुरान॥
मन समझावन कारनै कछु यक पढ़ियै ज्ञान॥

ओअंकार आदि मैं जाना। लिखि और मेटै ताहि न माना॥
ओअंकार लखै जो कोई। सोई लखि मेटणा न होई॥
कक्का किरणि कमल महि पावा। ससि बिगास संपट नहिं आवा॥
अरु जे तहा कुसुम रस पावा। अकह कहा कहि का समझावा॥
खक्खा इहै खोड़ि मन आवा। खोड़े छाड़ि न दह दिसि धावा॥
खसंमहिं जाणि खिसा करि रहै। तो होइ निरबओ अखै पद लहै॥
गग्गा गुरु के बचन पछाना। दूजी बात न धरई काना॥
रहै बिहंगम कतहि न जाई। अगह गहै गहि गगन रहाई॥
घघ्घा घट घट निमसै सोई। घट फूटे घट कबहिं न होई॥
ता घट माहिं घाट जौ पावा। सो घट छाँड़ि अक्घट कत धावा॥

डंडा निग्रह सनेह करि निरवारो संदेह।
नाही देखि न भाजिये परम सियानप एह॥

चच्चा रचित चित्र है भारी। तजि चित्रौ चेतहु चितकारी॥
चित्र बिचित्र इहै अवझेरा। तजि चित्रौ चितु राखि चितेरा॥
छछ्छा इहै छत्रापति पासा। छकि किन रहहु छाड़ि किन आसा॥
रे मन मैं तो छिन छिन समझावा। ताहि छोड़ि कत आप बधावा॥
जज्जा जौ तन जीवत जरावे। जीवन जारि जुगति सो पावै॥
अस जरि परजरि जरि जब रहै। तब जाइ ज्योति उजारी लहै॥
झझ्झा उरझि सुरझि नहिं जाना। रह्यौ झझकि नाही परवाना॥
कत झकि झकि औरन समझावा। झगर किये झगरौ ही पावा॥

ञंञा निकट जु घट रह्यो दूरि कहा तजि जाइ।
जा कारण जा ढूँढ़ियौ नेरौ पायो ताहि॥

टट्टा बिकट घाट घाट माही। खोलि कपाट महल किन जाही॥
देखि अटल टलि कतहि न जावा। रहै लपटि घट परचौ पावा॥
ठट्ठा इहै दूरि ठग नीरा। नीठि नीठि मन कीया धीरा॥
जिन ठग ठग्या सकल जग खावा। सो ठग ठग्या ठौर मन आवा॥
डड्डा डर उपजै डर जाई। ता डर महि डर रह्या समाई॥
जौ डर डरै तौ फिरि डर लागै। निडर हुआ डर उर होइ भागै॥
ढढ्ढा ढि ढूँढहिं कत आना। ढूँढ़त ही ढहि गये पराना॥
चढ़ि सुमेर ढूँढ़ि जब आवा। जिह गढ़ गढ्यो सुगढ़ महि पावा॥
णण्णा रणि रूतौ नर नेही करै। नानि बैना फुनि संचरै॥
धन्य जनम ताही को गणै। मारे एकहि तजि जाइ घणै॥

तत्ता अतर तरो नइ जाई। तन त्रिभुवन मैं रह्यो समाई॥
जौ त्रिभुवन तन माहि समावा। तौ ततहि तत मिल्या सचु पावा॥
थथ्था अथाह थाह नहीं पावा। ओहु अथाह इहु थिर न रहावा॥
थोड़े थल थानक आरंभै। बिनु ही थाहर मंदिर थंभै॥
दद्दा देखि जु बिनसन हारा। जस अदेखि तस राखि बिचारा॥
दसवै द्वार कुंजी जब दीजै। तौ दयाल कौ दर्सन कीजै॥
धद्धा अर्द्धहि अर्द्ध निबेरा। अद्धहि उर्द्धह मंझि बसेरा॥
अर्द्धह छाड़ि अर्द्ध जो आवा। तो अर्द्धहि उर्द्ध मिल्या सुख पावा॥
नन्ना निसि दिन निरखत जाई। निरख नयन रहे रतवाई॥
निरखत निरखत जब जाइ पावा। तब ले निरखहिं निरख मिलावा॥
पप्पा अपर पार नहीं पावा। परम ज्योति स्यो परचौ लावा॥
पाँचो इंद्री निग्रह करई। पाप पुण्य दोऊ निरबरई॥
फफ्फा बिनु फूलै फल होई। ता फल फंक लखै जो कोई॥
दूणि न परई फंक बिचारै। ता फल फंक सबै नर फारै॥
बब्बा बिंदहि बिंद मिलावा। बिंदहि बिंद न बिछुरन पावा॥
बंदौ होइ बंदगी गहै। बंधक होइ बंधु सुधि लहै॥
भभ्भा भेदहि भेद मिलावा। अब भौ भांति भरौसौ आवा॥
जो बाहर सो भीतर जान्या। भया भेद भूपति पहिचाना॥
मम्मा मूल रह्या मन मानै। मर्मी हो सो मन कौ जानै॥
मत कोइ मन मिलना बिलमावै। मगन भया तेसो सचु पावै॥

मम्मा मन स्यो काजु है मन साधै सिधि होइ॥
मनही मन स्यो कहै कबीरा मनसा मिल्या न कोइ॥

हुई मन सकती इहु मन सीउ। इहु मन मंच तत्व को जीउ।
इहु मन ले जौ उनमनि रहै। तौ तीनि लोक की बातै कहै॥

यय्या जौ जानहि तौ दुर्मति हनि बसि काया गाउ।
रणि रूतौ भाजै तहीं सूर उधारौ नाउ॥

रारा रस निरस्स करि जान्या। होइ निरस्स सुरस पहिचान्या।
इह रस छोड़े उह रस आवा। उह रस पीया इह रस नहीं भावा।
लल्ला ऐसे लिव मन लावै। अनत त जाइ परम सचु पावै॥
अरु जौ तहा प्रेम लिव लावै। तौ अलह लहै लहि चरन समावै।
ववा बार बार बिष्णु समारि। बिष्णु समारि न आवै हारि॥
बलि बलि जे बिष्णु तना जस गावैं। बिष्णु मिलै सबही सचु पावै॥

वावा वाही जानियै वा जाने इहु होइ।
इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ॥

शश्शा सो नीका करि सोधहु। घट परचा की बात निरोधहु॥
घट परचै जो उपजै भाउ। पूरि रह्या तह त्रिभुवन राउ॥
षष्षा खोजि परै जो कोई। जो खोजै सो बहुरि न होई॥
खोजि बूझि जो करै बिचारा। तौ भवजल तरत न लावै बारा॥

सस्सा सो सह सेज सवारै। सोई सही संदेह निवारै॥
अल्प सुख छाड़ि परम सुख पावा। तब इह त्रिय ओहु कंत कहावा॥
हाहा होत होइ नहीं जाना। जबही होइ तबहि मन माना॥
है तो सही लखौ जो कोई। तब ओही उह एहु एहु न होई॥
लिउँ लिउँ करत फिरै सब लोग। ता कारण ब्यापै बहु सोग॥
लक्ष्मीबर स्यो जौ लिव लागै। सोग मिटै सब ही सुख पावै॥
खख्खा खिरत खपत गये केते। खिरत खपत अजहूँ नहिं चेते॥
अब जग जानि जो मना रहै। जह का बिछुरा तहँ थिरु लहै॥
बावन अक्खर जोरे आन। सकया म अक्खरु एक पछानि॥
सत का सबद कबीरा कहै। पंडित होइ सो अनभै रहै॥
पंडित लोगह कौ ब्यवहार। दानवंत कौ तत्व बिचार॥
जाकै जीय जैसी बुधि होई। कहि कबीर जानैगा सोई॥151॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

बिंदु ते जिन पिंड किया अगनि कुछ रहाइया।
दस मास माता उदरि राख्या बहुरि लागी माइया॥
प्रानी काहै को लोभि लागै रतन जनम खोया।
पूरब जनम करम भूमि बीजु नाहीं बायो॥
बारिक ते बिरध भया होना सो हाया।
जा जम आइ झोट पकरै तबहि काहे रोया॥
जीवन की आसा करै जम निहारै सासा।
बाजीगरी संसार कबीरा चेति ढालि पासा॥152॥

बुत पूजि हिंदू मुये तुरक मूये सिर नाई।
ओइ ले जारे ओइ ले गाड़े तेरौ गति दुहूँ न पाई।
मन रे संसार अंध गहेरा। चहुँ दिसि पसरो है जम जेवरा॥
कबित पढ़े पढ़ि कविता मूये पकड़ के दारै जाई।
जटा धारि धारि जोगी मूये मेरी गति इनहि न पाई॥
द्रव्य संचि संचि राजे मूये गड़िले कंचन भारी।
बेद पढ़े पढ़े पंडित मूये रूप देखि देखि नारी॥
राम नाम बिन सबै बिगूते देखहु निरखि सरीरा।
हरि के नाम बिन किन गति पाई कहि उपदेस कबीरा॥153॥

भुजा बाँधि मिला करि डारौं। हस्ती कोपि मूँड महि मारो।
हस्ती भगि के चीसा मारै। या मूरति कै हौ बलिहारै॥
आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर। काजी बकिबो हस्ती तोर।
हस्त न तोरै धरै ध्यान। वाकै रिदै बसै भगवान॥
क्या अपराध संत है कीना। बाँधि पाट कुंजर को दीना॥
कुंजर पोटलै लै नमस्कारै। बूझी नहीं काजी अंलियारै॥
तीन बार पतिया भरि लीना। मन कठोर अजहू न पतीना॥
कहि कबीर हमारा गोबिंद। चौथे पद महि जन की जिंद॥154॥

भूखे भगति न कीजै। यह माला अपनी लीजै।

हौं माँगो संतन रेना। मैं नाहीं किसी का देना॥
माधव कैसी बने तुम संगै। आपि न देउ तले बहु मंगे॥
दुइ सेर माँगौ चूना। पाव घीउ संग लूना।
अधसेर माँगौ दाले। मोको दोनों बखत जिवालै।
खाट माँगौ चौपाई। सिरहाना और तुलाई॥
ऊपर कौ माँगौ खींधा। तेरी भगति करै जनु बींधा॥
मैं नाहीं कीता लब्बो। इक नाउ तेरा मैं फब्बो॥
कहि कबीर मन मान्या। मन मान्या तो हरि जान्या॥155॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

मन करि मक्का किबला करि देही। बोलनहार परस गुरु एही।
कह रे मुल्ला बाँग निवाज। एक मसीति दसै दरवाज॥
मिसभिलि तामसु भर्म क दूरी। भाखि ले पंचे होइ सबूरी॥
हिंदू तुरक का साहिब एक। कह करै मुल्ला कह करै सेख॥
कहि कबीर हो भया दिवाना। मुसि मुसि मनुआ सहजि समाना॥156॥

मन का स्वभाव मनहिं बियापी। मनहि मार कवन सिधि थापी।
कवन सु मनि जो मन को मारै। मन को मारि कबहुँ किस तारै॥
मन अंतर बोलै सब कोई। मन मारै बिन भगत न होई।
कबु कबीर जो जानै भेउ। मन मधुसूदन त्रिभुवन देउ॥157॥

मन रे छाड़हु मर्म प्रगट होई नाचहु या माया के डाड़े।
सूर कि सनमुख रन ते डरपै सती की साँचे भाँड़े॥
डगमग छाँड़ि रे मन बौरा।
अब तो जरै मरै सिधि पाइये लीनो हाथ सिधोरा।
काम क्रोध माया के लीने या बिधि जगत बिगूचा॥
कहि कबीर राजा राम न छोड़ौ सगल ऊँच ते ऊँचा॥158॥

माता जूठी पिता भी जूठा जूठा फल लागे॥
आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे॥
कबु पंडित सूचा कवन ठाउ। जहाँ बैसि हौ भोजन खाउ।
जिहवा जूठी बोलन जूठा करन नेत्रा सब जूठे।
इंद्री की जूठी उतरसि नाहि ब्रह्म अगनि के जूठे॥
अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइया।
जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइया॥
गोबर जूठा चौका जूठा जूठी दीनों कारा॥
कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा॥159॥

मरन जीवन की संका नासी। आपन रंगि सहज परगासी॥
प्रकटी ज्योति मिट्या अँधियारा। राम रतन पाया करता बिचारा॥
जहँ अनंद दुख दूर पयाना। मन मानुक लिव ततु लुकाना॥
जौ किछु होआ सू तेरा भाणा। जौ इन बूझे सु सहजि समाणा॥
कहत कबीर किलबिष गये खीणा। मन माया जग जीवन लीणा॥160॥

माई मोहि अवरु न जान्यो आनाँ।
सिव सनकादिक जासु गुन गावहि तासु बसहि मेरे प्रानाँ।
हिरदै प्रगास ज्ञान गुरु गम्मित गगन मंडल महि ध्यानाँ॥
बिषय रोग भव बंधन भागे मन निज घर सुख जानाँ॥
एक सुमति रति जानि मानि प्रभु दूसर मनहि न आना।
चंदन बास भये मन बास न त्यागि घट्यो अभिमानाँ॥
जो जन गाइ ध्याइ जस ठाकुर तासु प्रभु है थानाँ॥
तिह बड़ भाग बस्यो मन जाके कर्म प्रधान मथानाँ॥
काटि सकति सिव सहज प्रगास्यौ एकै एक समानाँ॥
कहि कबीर गुरु भेटि महासुख भ्रमत रहे मन मानाँ॥161॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

माथे तिलक हथि माला बाँना। लोगन राम खिलौना जानाँ॥
जौ हौं बौरा तौ राम तोरा। लोग मर्म कह कह जानै मोरा॥
तोरौ न पाती पूजौ न देवा। राम भगति बिन निहफल सेवा॥
सतिगुरु पूजौ सदा मनावौ। ऐसी सेव दरगह सुख पावौ॥
लोग कहै कबीर बौराना। कबीर का मर्म राम पहिचाना॥162॥

माधव जल की प्यास न जाइ। जल महि अगनि उठी अधिकाइ॥
तू जलनिधि हौ जल का मीन। जल महि रहौ जलै बिन खीन॥
तू पिंजर हौ सुअटा तोर। जम मंजार कहा करे मोर॥
तू तरवर हौ पंखी आहि। मंदभागी तेरो दर्शन नाहि॥163॥

मुंद्रा मोनि दया करि झोली पत्रा का करहु बिचारू रे॥
खिंथा इहु तन सीओ अपना नाम करो आधारू रे॥
ऐसा जोगु कमावै जोगी जप तप संजम गुरु मुख भोगी॥
बुद्धि बिभूति चढ़ाओ अपनी सिंगी सुरति मिलाई॥
करि बैराग फिरौ तन नगर मन की किंगुरी बजाई॥
पंच तत्त्व लै हिरदै राखहु रहै निराल मताड़ी॥
कहत कबीर सुनहु रे संतहु धर्म दया करि बाढ़ी॥164॥

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई। ऐ बारिक कैसे जीवहि रघुराई।
तनना बुनना सब तज्या है कबीर। हरि का नाम लिखि लियो सरीर॥
जब लग तागा बाहउ बेही। तब लग बिसरै राम सनेही॥
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा। हरि का नाम लह्यो मैं लाहा॥
कहत कबीर सुनहु मेरी माई। हमरा इनका दाता एक रघुराई॥165॥

मेरी बहुरिया को धनिया नाउ। ले राख्यौ रामजनिया नाउ॥
इन मुंडिन मेरा घर धुधरावा। बिटवहि राम रमौआ लावा॥
कहत कबीर सुनहु मेरी माई। इन मुंडियन मेरी जाति गवाई॥166॥

मैला ब्रह्म मैला इंदु। रबि मैला है मैला चंदु।

मैला मलता इहु संसार। इक हरि निर्मल जाका अंत न पार॥
मैला ब्रह्मंडा इक्कै ईस। मैले निसि बासुर दिन तीस॥
मैला मोती मैला हीरु। मैला पवन पावक अरु नीरु॥
मैले सिव संकरा महेस। मैले सिध साधिक अरु भेष॥
मैले जोगी जंगम जटा समेति। मैली काया हंस समेति॥
कहि कबीर ते जन परवान। निर्मल ते जो रामहि जान॥167॥

मौलो धरती मौला आकास। घटि घटि मौलिया आतम प्रगास॥
राज राम मौलिया अनत भाइ। जब देखो तहँ रहा समाइ॥
दुतिया मौले चारि बेद। सिमृति मौली सिवउ कतेब॥
सकर मौल्यौ जोग ध्यान। कबीर को स्वामी सब समान॥168॥

जम ते उलटि भये हैं राम। दुख बिनसे सुख कियो बिश्राम।
बेरी उलटि भये हैं मीता। साकल उलटि सुजन भये चीता॥
अब मोंहि सर्ब कुसल करि मान्या। सांति भई जब गोबिंद जान्या॥
तन महि होती कोटि उपाधि। उलटि भई सुख सहजि समाधि॥
आप पछानै आपै आप। रोग न ब्यापै तीनौं ताप॥
अब मन उलटि सनातन हूआ। तब जान्या जब जीयत मूआ॥
कहु कबीर सुख सहज समाओ। आपि न डरो न अवर डराओ॥169॥

जोगी कहहिं जोग भल मीठी अवर न दूजा भाई।
रुंडित मुंडित एकै सबदी एकहहि सिधि पाई।
हरि बिन भरमि भूलानै अंधा।
जा पहि जाउ आप छुटकावनि ते बाँधे बहु फंदा।
जह ते उपजी तही समानी इहि बिधि बिसरी तबही॥
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहिं बड़ हमही।
जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझैं क्यों रहिये॥
तिस गुरु मिलै अंधेरा चूके इन बिधि प्राण कु लहियै।
तजिवा बेदा हने बिकारा हरि पद दृढ़ करि रहियै॥
कह कबीर गूँगैं गुण खाया पूछे ते क्या कहियै॥170॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

जोगी जती तपी सन्यासी बहु तीरथ भ्रमना।
लुंजि मुंजित मौनि जटा धरि अंत तऊ मरना॥
ताते सेविए ले रामना।
रसना राम नाम हितु जाकै कहा करे जमना।
आगम निगम जोतिक जानहि बहु वह ब्याकरना।
तंत्रा मंत्रा सब औषध जानहि अंत तऊ मरना।
राजा भोग अरु छत्रा सिंहासन बहु सुंदरि रमना॥
पान कपूर सुबासक चंदन अंत तऊ मरना॥
बेद पुरान सिमृति सब खोजे कहँू न ऊबरना।
कहु कबीर यों रामहिं जपौं मेटि जनम मरना॥171॥

जोनि छाड़ि जौ जग महि आयो। लागत पवन खसम बिसरायो।
जियरा हरि के गुन गाउ।
गर्भ जोनि महि ऊर्ध्व तपु करता। तौं जठर अग्नि महि रहता।
लख चौरासहिं जोनि भ्रमि आयो। अब के छुटके ठौर न ठायो॥
कहु कबीर भजु सारंगपानी। आवत दीसै जात न जानी॥172॥

रहु रहु री बहुरिया घूँघट जिनि काढ़ै। अंत की बान लहैगी न आढ़ै।
घुँघट काढ़ि गई तेरो आगै। उनकी गैल तोहिं जिनि लागै॥
घुँघट काढ़ि की इहै बड़ाई। दिन दस पांच बहु भले आई॥
घूँघट तेरी तौपरि सांचै। हरि गुन गाइ कूदहिं अरु नाचै॥
कहत कबीर बहू तब जीतै। हरि गुन गावत जनम ब्यतीतैं॥173॥

राखि लेहु हमते बिगरी।
सील धरम जप भगति न कीनी हौ अभिमन टेढ़ पगरी।
अमर जानि संची इह काया इह मिथ्या काची गगरी॥
जिनहि निवाजि साजि हम कीये तिनही बिसारि औ लगरी।
संधि कोहि साध नहीं कहियौ सरनि परे तुमरी पगरी।
कह कबीर इहि बिनती सुनियहु मत घालहु जम की खबरी॥174॥

राजन कौन तुमारे आवै।
ऐसा भाव बिनुर को देख्यो ओहु गरीब केहि भावै।
हस्ती देखि भर्म ते भूला री भगवान न जान्या॥
तुमरी दूध बिदुर को पानी अमृत करि मैं मान्या॥
खीर समान सागु मैं पाया गुन गावत रैनि बिहानी॥
कबीर को ठाकुर अनद बिनोदी जाति न काहूँ की मानी॥175॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

राजा राम तू ऐसा निर्भव तरन तारन राम राया।
जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही।
अब हम तुम एक भये इहि एकै देखति मन पतियाही।
जब बुधि होती तब बल कैसा अब बुद्धि बल न खटाई॥
कही कबीर बुधि हरि लई मेरी बुद्धि बदली सिधि पाई॥176॥

राजा राम òिमामति नहीं जानी तोरी। तेरे संतन की हौ चेरी।
हसतो जाइ सु रोवत आवै रोवत जाइ सु हँसै॥
बसतो होइ सो ऊजरु उजरु होइ सु बसै।
जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावें।
धरती ते आकास चढ़ावै चढ़े अकास गिरावै॥
भेख़ारी ते राज करावै राजा ते भेखारी।
खल मूरख ते पंडित करिबो पंडित ते मगधारी॥
नारी ते जे पुरुख करावै पुरखन ते जो नारी॥
कहुँ कबीर साधू का प्रीतम सुमूरति बलिहारी॥177॥

राम जपो जिय ऐसे ऐसे। धुव प्रह्लाद जंप्यो हरि जैसे।
दीनदयाल भरोसे तेरे। सब परवार चढ़ाया बेड़े॥
जाति सुभावै ताहु कम मनावै। इस बेड़े कौ पार लंथावै॥
गुरु प्रसादि ऐसी बुद्धि समानी। चूँकि गई फिरि आवन जानी।
कहु कबीर भजु सारिंगपानी। उरबार पार सब एको दानी।॥178॥

राम सिमरि राम सिमरि राम सिमिरि भाई।
राम नाम सिमिरन बिनु बूड़ते अधिकाई॥
बनिता सुत देह ग्रेह संपति सुखदाई।
इनमें कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई॥
अजामल गज गनिका पतित कर्म कीने।
तेऊ उतरि पार परे राम नाम लीने।
सूकर कूकर जोनि भ्रमतेऊ लाज न आई।
राम नाम छाड़ि अमृत काहे बिष खाई॥
तजि भर्म कर्म बिधि निषेध राम नाम लेही।
गुरु प्रसाद जन कबीर राम करि सनेही॥179॥

री कलवारि गवारि मूढ़ मति उलटी पवन फिरावो।
मन मतवार मेर सर भाठी अमृत धार चुवावौ॥
बोलहु भैया राम की दुहाई।
पीवहु सत सदा मति दुर्लभ सहजे प्यास बुझाई।
भय बिच भाउ भाई कोउ बूझहिं हरि रस पावै भाई।
जेते घट अमृत सबही महि भावै तिसहि पियाई॥
नगरी एकै नव दरवाजै धारत बर्जि रहाई।
त्रिकुटी छूटै दस बादर खूलै ताम न खींवा भाई।
अभय पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी॥
उबट चलते इहु मद पाया जैसे खोद खुमारी॥180॥

रे जिय निलज्ज लाज तोहि नाहीं। हरि तजि कत काहू के जाही।
जाको ठाकुर ऊँचा होई। सो जन पर घर जात न सोही॥
सो साहिब रहिया भरपूरि। सदा संगि नाहीं हरि दूरि॥
कवला चरन सरन है जाके। कहू जन का नाहीं घर ताके।
सब कोउ कहै जासु की बाता। जौ सम्भ्रथ निज पति है दाता॥
कहै कबीर पूरन जग सोई। जाकै हिरदै अवरु न होई॥181॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

रे मन तेरा कोइ नहीं खिचि लेइ जिन भार।
बिरख बसेरा पंखि कर तैसो इहु संसार॥
राम रस पीया रे जिह रस बिसरे गये रस और।
और मुये क्या रोइये जा आपा थिर न रहाइ॥
जा उपजै सो बिनसिहे दुख करि रोवै बलाइ।
जह की उपजी तह रची पीवतु मरद न लाग॥
कह कबीर चित चेतिया राम सिमिर बैराग॥182॥

रोजा धरै मनावै अल्लहु स्वादति जीय सँघारै।
आपा देखि अवर नहीं देखै काहे कौ झख मारै॥
काजी साहिब एक तोही महि तेरा सोच बिचार न देखै।
खबरि न करहिं दीन के बौरे ताते जनम अलेखै॥
साँच कतेब बखनै अल्लहु नारि पुरुष नहिं कोई।
पढ़ै गुनै नाहीं कछू बौरे जो दिल महि खबरि न होई॥
अल्लहु गैव सगल घट भीतर हिरदै लेहु बिचारी।
हिंदू तुरक दुइ महि एकै कहै कबीर पुकारी॥183॥

लंका सा कोट समुद्र सी खाई। तिह रावन घर खबरि न पाई।
क्या माँगै किछू थिरु न रहाई। देखत नयन चल्यो जग जाई॥
इक लख पूत सवा लख नाती। तिह रावन घर दिया न बाती॥
चंद सूर जाके तपत रसोई। बैसंतर जाके कपरे धोई॥
गुरुमति रामै नाम बसाई। अस्थिर रहै कतहू जाई॥
कहत कबीर सुनहु रे लोई राम नाम बिन मुकुति न होई॥184॥

लख चौरासी जीअ जोनि महि भ्रमन नंदुबहु थाको रे।
लगति हेतु अवतार लियो है भाग बड़ी बपुरा को रे॥
तुम जो कहत हौ नंद को नंदन नंद सु नंदन काको रे॥
धरनि अकास दसों दिसि नाहीं तब इहु नंद कहायो रे॥
संकट नहीं परै जोनि नहिं आवै नाम निरंजन जाको रे।
कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाकै माई न बापो रे॥185॥

विद्या न पढ़ो वाद नहीं जानो। हरि गुन गथत सुनत बैरानो।
मेरे बाबा मैं बौरा, सब खलक सयानो, मैं बौरा॥
मैं बिगरो बिगरै मति औरा। आपन बौरा राम कियौ बौरा॥
सतिगुरु जारि गयो भ्रम मोरा॥
मैं बिगरे अपनी मति खोई। मेरे भर्मि भूलो मति कोई।
सो बौरा आपु न पछानै। आप पछानै त एकै जानै॥
अबहिं न माता सु कबहुँन भाता। कहि कबीर रामै रंगि राता॥186॥

बिनु तत सती होई कैसे नारि। पंडित देखहु रिदे बिचारि॥
प्रीति बिना कैसे बँधे सनेहू। जब लग रस तब लग नहिं नेहू॥
साह निसत्तु करै जिय अपनै। सो रमय्यै कौ मिलै न स्वपनै॥
तन मन धन गृह सौंपि सरीरू। सोई सोहागनि कहै कबीरू॥187॥

बिमल अस्त्रा केते है पहिरे क्या बन मध्ये बासा॥
कहा भया नर देवा धोखे क्या जल बौरो गाता॥
जीय रे जाहिगा मैं जाना अविगत समझ इयाना।
जत जत देखौ बहुरि न पेखौ संग माया लपटना॥
ज्ञानी ध्वानी बहु उपदेसी इहु जन सगली धंधा।
कहि कबीर इक राम नाम बिनु या जग माया अंधा॥188॥

बिषया ब्यापा सकल संसारू। बिषया लै डूबा परवारू।
रे नर नाव चौंडि कत बोड़ी। हरि स्यो तोड़ि बिषया संगि जोड़ी॥
सुर नर दाधे लागी आगि। निकट नीर पसु पीवसि न झागि॥
चेतत चेतत निकस्यो नीर। सो जल निर्मल कथन कबीर॥189॥

बद कतेब इकतरा भाई दिल का फिकर न जाई।
टुक दम करारी जौ करहु हाजिर हजूर खुदाई।
बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरि परेसाना माहि।
इह जु दुनिया सहरु मेला दस्तगीरी नाहि॥
दरोग पढ़ि पढ़ि सुखी होह बेखबर बाद बकाहिं।
हक सच्च खालक खलक म्याने स्याममूरति नाहि॥
असमान म्याने लहंग दरिया गुसल करद त बूंद।
करि फिकरु दाइम लाइ चसमें जहँ तहाँ मौजूद॥
अल्लाह पाक पाक हैं सक करो जे दूसर होइ।
कबीर कर्म करीम का उहु करे जानै सोइ॥190॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

बेद कतेब कहहु मत झूठेइ झूठा जो न बिचारै।
जो सब मैं एकु खुदा कहत हौ तौ क्यों मुरगी मारै॥
मुल्ला कहहु नियाउ खुदाई तेरे मन का भरम न जाई।
पकरि जीउ आन्या देह बिनती माटी कौ बिसमिल किया॥
जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलाला क्यों कीया॥

क्या उज्जू पाक किया मुह धोया क्या मसीति सिर लाया।
जौ दिले मैंहि कपट निवाजे छूजारहु क्या हज काबै जाया॥
तू नापाक पाक नहीं सूक्ष्या तिसका मरम न जान्या॥191॥

बेद की पुत्री सिंमृति भाई। सांकल जबरी लैहै आई।
आपन नगर आप ते बाँध्या। मोह कै फाधि काल सरु साध्या॥
कटी न कटै तूटि नह जाई। सो सापनि होइ जग को खाई॥
हम देखत जिन्ह सब जग लूट्या। कहु कबीर मैं राम कहि छूट्या॥192॥

बेद पुरान सबै मत सुनि के करी करम की आसा।
काल ग्रस्त सब लोग सियाने उठि पंडित पै चले निरासा॥
मन रे सरो न एकै काजा। भाज्यो न रघुपति राजा।
बन खंड जाइ जोग तप कीनो कंद मूल चुनि खाया।
नादी बेदी गबदी मौनी जम के परै लिखाया॥
भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तन दीना।
राम रागनी डिंभ होइ बैठा उन हरि पहि क्या लीना॥
अरयो काल सबै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम ज्ञानी।
कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिह जानी॥193॥

षट नेम कर कोठड़ी बाँधी बस्तु अनूप बीच पाई॥
कुंजी कुलफ प्रान करि राखे करते बार न लाई॥

अब मन जागत रहु रे भाई।
गाफिल होय कै जनम गवायो चोर मुसै घर जाई।
पंच पहरुआ दर महि रहते तिनका नहीं पतियारा।
चेति सुचेत चित्त होइ रहूँ तौ लै परगासु उबारा॥
नव घर देखि जु कामिनि भूली बस्तु अनूप न पाई।
कहत कबीर नवै घर मूसे दसवें तत्व समाई॥194॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये। मिलै असंत मष्ट करि रहियै।
बाबा बोलना कया कहियै। जैसे राम नाम रमि रहियै॥
संतन स्यों बोले उपकारी। मूरख स्यों बोले झक मारी॥
बोलत बोलत बढ़हिं बिकारा। बिनु बोले क्या करहिं बिचारा॥
कह कबीर छूछा घट बोलै। भरिया होइ सु कबहु न डोलै॥195॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

संतहु मन पवनै सुख बनिया। किछु जोग परापति गनिया।
गुरु दिखलाई मोरी। जितु मिरग पड़त है चोरी॥
मूँदि लिये दरवाजै। बाजिले अनहद बाजे॥
कुंभ कमल जल भरिया। जलौ मेट्यो ऊमा करिया॥
कहु कबीर जन जान्या। जौ जान्या तौ मन मान्या॥196॥

संता मानौ दूता डानौ इह कुटवारी मेरी॥
दिवस रैन तेरे पाउ पलोसो केस चवर करि फेरी॥
हम कूकर तेरे दरबारि। भौकाई आगे बदन पसारि॥
पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक अब तौ मिट्या न जाई॥
तेरे द्वारे धनि सहज की मथै मेरे दगाई॥
दागे होहि सुरन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई॥
साधू होई सुभ गति पछानै हरि लये खजानै पाई॥
कोठरे महि कोठरी परम कोठरी बिचारि॥
गुरु दीनी बस्तु कबीर कौ लेवहु वस्तु सम्हारि॥
कबीर दोई संसार कौ लीनी जिसु मस्तक भाग॥
अमृत रस जिनु पाइया थिरता का सोहाग॥197॥

संध्या प्रात स्नान कराही। स्यों भये दादुर पानी माहीं।
जो पै राम नाम रति नाहीं। ते सवि धर्मराय कै जाहीं॥
काया रति बहु रूप रचाहीं। तिनकै दया सुपनै भी नाहीं॥
चार चरण कहहि बहु आगर। साधु सुख पावहि कलि सागर॥
कहु कबीर बहु काय करीजै। सरबस छोड़ि महा रस पीजै॥198॥

सत्तरि सै इसलारू है जाके। सवा लाख है कावर ताके॥
सेख जु कही यही कोटि अठासी। छप्पन कोटि जाके खेल खासी॥

सो गरीब की को गुजरावै। मजलसि दूरि महल को पावै॥
तेतसि करोडि है खेल खाना। चौरासी लख फिरै दिवाना॥
बाबा आदम कौ कछु न हरि दिखाई। उनभी भिस्त घनेरी पाई॥
दिल खल हलु जाकै जर दरुबानी। छोड़ि कतेब करै सैतानी॥
दुनिया दोस रोस है लोई। अपना कीया पावे सोई॥
तुम दाते हम सदा भिखारी। देउ जवाब होइ बजगारी॥
दास कबीर तेरी पनह समाना। भिस्त नजीक राखु रहमाना॥199॥

सनक आनंद अंत नहीं पाया। बेद पढ़ै ब्रह्मै जनम गवाया।
हरि का विलोबना विलोबहु मेरे भाई। सहज विलोबहु जैसे तत्व जाई॥
तन करि मटकी मन माहि बिलोई। इसु मटकी महि सबद संजोई॥
हरि का बिलोना तन का बीचारा। गुरु प्रसाद पावै अमृत धारा॥
कहु कबीर न दर करे जे मीरा। राम नाम लगि उतरे तीरा॥200॥

सनक सनंद महेस समाना। सेष नाग तेरी मर्म न जाना॥

संत संगति राम रिदै बसाई।
हनुमान सरि गरुड़ समाना। सुरपति नरपति नहिं गुन जाना॥
चारि बेद अरु सिमृति पुराना। कमलापति कमल नहिं जाना॥
कह कबीर सो धरमैं नाहीं। पग लगि राम रहै सरनाहीं॥201॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

सब कोई चलन कहत है ऊँहा। ना जानी बैकुठ है कहाँ॥
आप आपका मरम न जाना। बातन ही बैकुंठ बखानाँ॥
जब लग मन बैकुंठ की आस। तब लग नाही चरन निवास॥
खाई कोटि न परल पगारा। ना जानौ बैकुंठ दुआरा॥
कहि कबीर अब कहिये काहि। साधु संगति बैकुंठे आहि॥202॥

सर्पनि ते ऊपर नहीं बलिया। जिन ब्रह्मा बिष्णु महादेव छलिया।
मारु मारु सर्पनी निर्मल जल पैठी। जिन त्रिभुवन डसिले गुरु प्रसाद डीठी॥
सर्पनी सर्पनी क्या कहहु भाई। जिन साचु पछान्या तिन सर्पनी खाई॥
सर्पनी ते आन छूछ नहीं अवरा। सर्पनी जीति कहा करै जमरा॥
इहि सर्पनी ताकी कीती होई। बल अबल क्या इसते होई॥
एह बसती ता बसत सरीरा। गुरु प्रसादि सहजि तरे कबीरा॥203॥

सरीर सरोवर भीतरै आछै कमल अनूप।
परस ज्योति पुरुषोत्तमो जाकै रेख न रूप।
रे मन हरि भजु भ्रम तजहु जग जीवन राम॥
आवत कछू न दीसई न दीसै जात॥
जहाँ उपजै बिनसै तहि जैसे पुरवनि पात।
मिथ्या करि माया तजा सुख सहज बीचारि॥
कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि॥204॥

सासु की दुखी ससुर की प्यारी जेठ के नाम डरौं रे।
सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरौं रे॥
मेरी मति बौरी मैं राम बिसारो किन विधि रइनि रहौं रे॥
सेजै रमत नयन नहीं पेखौं इहु दुख कासौं कहौं रे॥
बाप सबका करै लराई मया मंद मतवारी॥
बड़े भाई के जग संग होती तब ही नाह पियारी॥
कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनम गवाया॥
झूठी माया सब जग बाँध्या पै राम रमत सुख पाया॥205॥

सिव की पुरी बस बुधि सारु। यह तुम मिलि कै करहु बिचार॥
ईत ऊत की सोझौ परै। कौन कर्म मेरा करि करि मरै॥
निज पद ऊपर लागौ ध्यान। राजा राम नाम मेरा ब्रह्म ज्ञान॥
मूल दुआरै बंध्या बंधु। रवि ऊपर गहि राख्या चंदु॥
पंचम द्वारे की सिल ओड़। तिह सिल ऊपर खिड़की और॥
खिड़की ऊपर दसवा द्वार। कहि कबीर ताका अंतु न पार॥206॥

सुख माँगत दुख आगै आवै। सो सुख हमहुँ न माँग्या भावै॥
बिषगा अजहु सुरति सुख आसा। कैसे होइ है राजाराम निवासा॥
इसु सुख ते सिव ब्रह्म हराना। सो सुख हमहुँ साँच करि जाना॥
सनकादिक नारद मुनि सेखा। तिन भी तन महि मन नहीं पेखा॥
इस मन कौ कोई खोजहु भाई। तन छूटै मन कहा समाई॥
गुरु परसादी जयदेव नामा। भगति कै प्रेम इनहीं है जाना॥
इस मन कौ नहीं आवन जाना। जिसका भम गया तिन साचु पछाना॥
इस मन कौ रूप न रेख्या काई। हुकुमे होया हुकुम बूझि समाई॥
इस कन का कोई जानै भेउ। इहि मन लीण भये सुखदेउ॥
जींउ एक और सगल सरीरा। इस मन कौ रबि रहै कबीरा॥207॥

सुत अवराध करल है जेते। जननी चीति न राखसि तेते॥
रामज्या हौं बारिक तेरा। काहे न खंडसि अवगुन मेरा॥
जे अति कोप करे करि धाया। ताभी चीत न राखसि माया॥
चित्त भवन मन परो हमारा। नाम बिना कैसे उतरसि पारा॥
देहि बिमल मति सदा सरीरा। सहजि सहजि गुन रवै कबीरा॥208॥

सुन्न संध्या तेरी देव देवा करि अधपति आदि समाई।
सिद्ध समादि अंत नहीं पाया लागि रहे सरनाई॥
लेहु आरति हो पुरुष निरंजन सति गुरु पूजहु जाई॥
ठाढ़ा ब्रह्मा निगम बिचारै अलख न लखिया जाई॥
तत्तु तेल नाम कीया बाती दीपक देह उज्यारा॥
जोति लाई जगदीस जगाया बूझे बूझनहारा॥
पंचे सबद अनाहत बाजै संगे सारिंगपानी।
कबीरदास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी॥209॥

सुरति सिमृति दुई कन्नी मंदा परमिति बाहर खिंथा॥
सुन्न गुफा महि आसण बैसण कल्प विवर्जित पंथा॥

मेरे राजन मैं बैरागी जोगी मरत न साग बिजोरी॥
खंड ब्रह्मांड महि सिंडी मेरा बटुवा सब जग भसमाधारी।
ताड़ी लागी त्रिपल पलटिये छूटै होइ पसारी॥
मन पवन्न दुई तूंबा करिहै जुग जुग सारद साजी॥
थिरु भई नंती टूटसि नाहीं अनहद किंगुरी बाजी॥
सुनि मन मगन भये है पूरे माया डोलत लागी॥
कहु कबीर ताकौ पुनरपि जनम नहीं खेलि गयो बैरागी॥210॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

सुरह की सैसा तेरी चाल। तेरा पूछट ऊपर झमक बाल॥
इस घर मह है सु तू ढुढ़ि खाहि। और किसही के तू मति ही जाहि॥
चाकी चाटै चून चाहि। चाकी का चीथरा कहा लै जाहि॥
छीके पर तेरी बहुत डीठ। मत लकरी सोंटा परै तेरी पीठ॥
कहि कबीर भोग भले कीन। मति कोऊ मारै ईट ठेम॥211॥

सो मुल्ला जो मन स्यो लरै। गुरु उपदेश काल स्यो जुरै॥
काल पुरुष का मरदै मान। तिस मुल्ला को सदा सलाम॥
है हुजूर कत दूरि बतावहु। दुंदर बाधहु मुंदर पावहु॥
काजी सो जो काया बिचारै। काया की अग्नि ब्रह्म पै जारै॥
सुपनै बिंदु न देई जरना। तिस काजी कौ जरा न मरना॥
सो सुरतान जो दुइ सुर तानै। बाहर जाता भीतर आनै॥
गगन मंडल महि लस्कर करै। सो सुरतान छत्रा सिर धरै॥
जोगी गोरख गोरख करै। हिंदू राम नाम उच्चरै॥
मुसलमान का एक खुदाई। कबीर का स्वामी रह्या समाई॥212॥

स्वर्ग वास न बाछियै डारियै न नरक निवासु।
होना है सो होइहै मनहि न कीजै आसु॥
रमय्या गुन गाइयै जाते पाइयै परम निधानु॥
क्या जप क्या तप संयमी क्या ब्रत क्या इस्नान॥
जब लग जुक्ति न जानिये भाव भक्ति भगवान॥
संपै देखि न हर्षियौ बिपति देखि न रोइ।
ज्यो संपै त्यों बिपत है बिधि ने रच्या सो होइ॥
कहि कबीर अब जानिया संतन रिदै मझारि॥
सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि॥213॥
हज्ज हमारी गोमती तीर। जहाँ बसहि पीतंबर पीर॥
वाहु वाहु क्या खुद गावता है। हरि का नाम मेरे मन भावता है।
नारद सारद करहि खवासी। पास बैठि बिधि कवला दासी॥
कंठे माला जिह्वा नाम। सुहस नाम लै लै करो सलाम॥
कहत कबीर राम नाम गुन गावौ। हिंदु तुरक दोऊ समझावौ॥214॥

हम घर सूत तनहि नित ताना कंठ जनेऊ तुमारे॥
तुम तो बेद पढ़हु गायत्री गोबिंद रिदै हमारे॥
मेरी जिह्ना विष्णु नयन नारायण हिरदै बसहि गोबिंदा॥

जम दुआर जब पूँछसि बबरे तब क्या कहसि मुकुंदा॥
हम गोरू तुम ग्वार गुसाइ जनम जनम रखवारे॥
कबहूँ न पार उतार चराइह कैसे खसम हमारे॥
तू बाम्हन मैं कासी का जुलाहा बूझहु मोर गियाना॥
तुम तौ पाचे भूपति राजे हरि सो मोर धियाना॥215॥

(शीर्ष पर वापस जाएँ)

हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राचसु मन भावै।
अल्लह अबलि दीन को साहिब जोर नहीं फुरमावै॥

काजी बोल्या बनि नहीं आवै।
रोजा धरै निवाजु गुजारै कलमा भिस्त न होई।
सत्तरि काबा घर ही भीतर जे करि जानै कोई॥
निवाजु सोई जो न्याइ बिचारै कलमा अकलहि जानै॥
पाँचहु मुसि मुसला बिछावै तब तौ दीन पछानै॥
खसम पछानि तरस करि जीय महि मारि मणी करि फीकी॥
आप जनाइ और को जानै तब होई भिस्त सरीकी॥
माटी एक भेष धरि नाना तामहि ब्रह्म पछाना।
कहै कबीर भिस्त छोड़ि करि दोजक स्यों मनमाना॥216॥

हरि बिन कौन सहाई मन का।
माता पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सब फन का॥
आगै कौ किछु तुलहा बाँधहु क्या भरोसा धन का॥
कहा बिसासा इस भाँडे का इत नकु लगै ठनका॥
सगल धर्म पुन्न फल पावहु धूरि बाँछहु सब जन का॥
कहै कबीर सुनहु रे संतहु इहु मन उड़न पखेरू बन का॥217॥

हरि जन सुनहि न हरि गुन गावहिं। बातन ही असमान गिरावहिं॥
ऐसे लोगन स्यों क्या कहिये।
जो प्रभु कीये भगति ते बाहज। तिनते सदा डराने रहिय॥
आपन देहि चुरू भरि पानी। तिहि निंदहि जिह गंगा आनी॥
बैठत उठत कुटिलता चालहिं। आप गये औरनहू घालहिं॥
छाड़ि कुचर्चा आन न जानहिं। ब्रह्माहू का कह्यो न मानहिं॥
आप गये औरनहू खोवहि। आगि लगाइ मंदिर में सोवहिं॥
औरन हँसत आप हहिं काने। तिनको देखि कबीर लजाने॥218॥

हिंदू तुरक कहाँ ते आये किन एह राह चलाई।
दिल महि सोच बिचार कवादे भिस्त दोजक कित पाई॥

काजी तै कौन कतेब बखानी॥
पढ़त गुनत ऐसे सब मारे किनहू खबरू न जानी॥
सकति सनेह करि सुन्नति करियै मैं न बदौगा भाई॥
जौ रे खुदाई मोहि तुरक करैगा आपन ही कटि जाई॥

सुन्नत किये तुरक जे होइगा औरत का क्या करियै॥
अर्द्ध सरीरी नारि न छोड़े तातें हिंदू ही रहिये॥
छाड़ि कतेब राम भजु बौरे जुलम करत है भारी॥
कबीर पकरी टेक राम की तुरक रहे पचि हारी॥219॥

हीरै हीरा बेधि पवन मन सहजे रह्या समाई।
सकल जोति इन हीरै बेधी सतिगुरु बचनी मैं पाई॥
हरि की कथा अनाहद बानी हंस हनै हीरा लेइ पछानी॥
कह कबीर हीरा अस देख्यो जग महि रह्या समाई॥
गुपता हीरा प्रकट भयो जब गुरु गम दिया दिखाई॥220॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी। झूठे कहा बिलोवसि पानी॥
काया मांजसि कौन गुना। जो घट भीतर है मलनाँ॥
लौकी अठ सठि तीरथ न्हाई। कौरापन तऊ न जाई॥
कहि कबीर बीचारी। भव सागर तारि मुरारी॥221॥